और तुम ज़ादे राह ले लिया करो
कि बेशक बेहतरीन ज़ादे राह तक़्वा है।

ज़ादे मोमिन

शैख़े तरीक़त दाओये सुन्नत आलिमे रब्बानी
हज़रत अक़्दस अश्शाह मौलाना मुनीर अहमद
साहब मद्दज़िल्लहु आली

ख़लीफ़ये अजल मुर्शिदि उम्मत हज़रत अक़्दस
अश्शाह अब्दुल हलीम साहब रह०

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ
FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
Corp. Off.: 2158, M.P. Street, Pataudi House, Darya Ganj, New. Delhi-2
Phones: 23289786, 23280786, 23289159 Fax: 23279998
E-mail: faridexport@gmail.com ; faridexport@aol.com

और तुम ज़ादे राह ले लिया करो कि बेशक बेहतरीन ज़ादे राह तक़्वा है।

ज़ादे मोमिन

इफ़ादात

शैख़े तरीक़त दाऊीये सुन्नत आलिमे रब्बानी
हज़रत अक़दस अश्शाह मौलाना मुनीर अहमद
साहब मद्दजिल्हु आली

ख़लीफ़ये अजल मुर्शिदि उम्मत हज़रत अकदस
अश्शाह अब्दुल हलीम साहब रह०

فرید بُک ڈپو (پرائیویٹ) لمیٹڈ

FARID BOOK DEPOT (Pvt.) Ltd.
NEW DELHI-110002

सिलसिलये इशाअत

नाम : ज़ादे मोमिन

अज़ इफादात : हज़रत अक़दस अल हाज मौलाना मुनीर अहमद साहब

नाशिर : इदारा फैज़े हलीमी कालीना मुम्बई - 4000098

ऐडिशन : 2013

तादाद : 3100

फेहरिस्त

पेश लफ्ज़

तअल्लुक़ मअल्लाह के लिए दो चीज़ें अज़ हद ज़रूरी हैं, एक तो तज़्किया (यानी नफ़्स को रज़ाइल से पाक व साफ करना) और दूसरी तहलिया(यानी नफ्स को ख़साइले हमीदा से संवारना) उन दोनों के हुसूल के लिए किसी मुतबअे. सुन्नत, शैख़े कामिल से बैयत व इस्लाह का तअल्लुक़ क़ायम करना ज़रूरी होता है, जिसकी निगरानी में तालिबे हक़ राहे सुलूक तय करता है और बिफ़ज़ले इलाही मंज़िले मक़सूद तक पहुंच जाता है, लेकिन बसा औक़ात ऐसा भी होता है कि अपनी मुनासिबत का शैख़े कामिल तलाश व जुस्तजू के बावजूद नहीं मिल पाता लिहाज़ा ऐसे शख़्स के लिए ज़रूरी है कि वह तलाश और जुस्तजू में लगा रहे और जब तक कामियाबी न हो तब तक मुअतबर उलमाये हक़ की तसानीफ के ज़रिया अपनी इस्लाह करता रहे, और उस से बिल्कुल ग़ाफिल न रहे, धुन और ध्यान की वजह से इंशा अल्लाह उसे ज़रूर कामियाबी हासिल होगी।

इसी ज़रूरत और हक़ीक़त को सामने रख कर इस किताब के आइन्दा सफहात में मुख़्तसर अंदाज़ में उन अहम चीज़ों को पेश किया जा रहा है, जिन की हर उस शख़्स को अशद ज़रूरत पड़ती है जो

अपनी ज़िंदगी दीनी तर्ज़ पर गुज़ारना चाहता है, इसी मुनासिबत से इस किताब को 'ज़ादे मोमिन' के नाम से मौसूम किया गया है, इस को पढ़ कर अपनी ज़िंदगी में लाने की कोशिश की जाऐ, इंशा अल्लाह उसके अच्छे असरात मुरत्तब होंगे।

२००१ ई० में किताब का पहला ऐडिशन और २००६ ई० में किताब का दूसरा ऐडिशन शाये हुआ था जो अल हम्दुलिल्लाह क़बूल और मक़बूल होने की शान ज़ाहिर करता हुआ जल्द ही ख़त्म हो गया, फिर अहबाब व तालिबीन के तक़ाज़े होते रहे जिस की बिना पर अल हम्दुलिल्लाह इस किताब का तीसरा ऐडिशन कई अहम चीज़ों के इज़ाफा के साथ २००८ ई० में शाये हुआ जो अल हम्दुलिल्लाह माह दो माह के अंदर ख़त्म हो गया अब उसके बाद अल्लाह पाक की तौफीक़ व इनायत से किताब का चौथा ऐडिशन भी शाये हुआ। किताब के इफादये आम को मद्दे नज़र रखते हुये इस को हिन्दी ज़बान में कर दिया गया है जो आपके हाथों में है, किताब के शुरू में कुछ हिदायात भी दी गई हैं उन को सामने रख कर इस किताब को हम सब पढ़ें और उन बातों को अमली ज़िंदगी में लायें तो इंशा अल्लाह हमारी दुनिया व आख़िरत दोंनों संवर जायेंगी। हक़ तआला तौफीक़े अमल मरहमत फरमाये। और क़बूलिय्यत से नवाज़े। आमीन!

इदारा फेज़े हलीम

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ज़रूरी हिदायत

१) पेज नम्बर २१ से पेज ५१ तक मज़कूरा हिदायात को हर माह में एक बार पढ़ लिया करें।

२) मुनाजाते मक़्बूल की एक मंज़िल रोज़ाना पढ़ लिया करें।

३) जादू और दूसरें ख़तरात से हिफाज़त के लिए कुरआनी आयात की मंज़िल रोज़ाना पढ़ लिया करें।

४) चहल सलात व सलाम अगर मौक़ा हो तो रोज़ाना वरना जुमा को ज़रूर पढ़ लिया करें।

५) हर मौक़े की सुन्नतें और दुआयें याद कर के उस पर अमल की कोशिश करें।

६) मुनाजात मंज़ूम और शजरह हस्बे ज़ौक़ पढ़ लिया करें।

☆☆☆

الحمد لله رب العالمين والعاقبة للمتقين
والصلوٰة والسلام على سيد المرسلين و علىٰ آله
اجمعين ومن تبعهم باحسان الى يوم الدين۔أمابعد!

बैयत होना सुन्नत और उस से दीन में आसानी

१) बैयत होना सुन्नत है। पूरे दीन पर अमल करना फ़र्ज़ है। हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने सहाबये किराम रिज़वानुल्लाहि अलैहिम अजमईन से ईमान, जिहाद और आमाल पर बैयत ली थी। (हयातुस्सहाबा: जि. १ स: ३१०, ३३६) में उसकी तफ्सील मौजूद है। बैयत होने से दीन पर अमल करना आसान हो जाता है, लेकिन दीन में तरक़्क़ी के लिए ज़रूरी है कि अपने हालात की इत्तिला अपने शैख़ को करते रहा करें, फिर जो जवाब आये उसके मुताबिक़ अमल करें, डॉक्टर से कितनी ही दोस्ती क्यों न हो जब तक अपना मर्ज़ ज़ाहिर कर के उनकी तजवीज़ की हुई दवा इस्तेमाल नहीं करेंगे तो फायदा नहीं होगा।

तरक़्क़ी के दो गुर

इत्तिला और इत्तिबा तरक़्क़ी के दो गुर हैं। इस

लिए हर माह में अपने हालात की इत्तिला ज़रूर दे दिया करें। ज़रूरत हो तो एक माह में कई खुतूत भी तहरीर कर सकते हैं। डॉक्टर सिर्फ दवा देता है, शिफा अल्लाह तआला देता है। ऐसे ही शैख़ सिर्फ इलाज बतलाता है, नफा अल्लाह तआला ही अता फरमाता है।

कुछ पाबंदियाँ कुछ ज़िम्मेदारियाँ

यह बात याद रहे कि बैयत होने से दुनिया के काम में तरक्क़ी और मर्ज़ की शिफा का कोई तअल्लुक़ नहीं है। यह और बात है कि बरकत वाले आमाल करने से बरकत आ जाती है। बैयत होना और सिलसिला में दाख़िल होना यह कोई रस्मी और शौक़िया चीज़ नहीं है। जिस के लिए कुछ मानना और कुछ करना न पड़े, बल्कि यह एक अहद व मुआहिदा और एक नई दीनी व ईमानी ज़िंदगी का आग़ाज़ है, जिस से मक़सूदे ज़िंदगी में कुछ तबदीलियाँ कुछ पाबंदियाँ और कुछ ज़िम्मेदारियाँ हैं, जिन का पूरा करना ज़रूरी है।

दुरुस्त अक़ीदा पुख़्ता ईमान

सब से पहले ज़रूरी बात यह है कि अक़ीदा दुरुस्त और पुख़्ता किया जाये और इस बात का

इक़रार और इस बात पर ईमान हो कि अल्लाह के सिवा किसी के हाथ में जिलाने और मारने, सेहत और शिफा देने, औलाद देने, रोज़ी देने और क़िस्मत अच्छी बुरी करने का इख़्तियार नहीं है। अल्लाह के सिवा कोई बंदगी का मुस्तहिक़ नहीं है और न उसके सिवा किसी के सामने सजदा किया जा सकता है। न हाजत रवाई और न मुश्किल कुशाई का सवाल किया जा सकता है।

तमाम नबियों (अलैहिमुस्सलाम) के ख़ातिम और सब के लिए वसीलये निजात

२) सय्यदुल मुरसलीन व ख़ातिमुन्नबीय्यीन हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को अल्लाह का आख़िरी नबी और ज़रिअये हिदायत, वसीलयें शिफाअत और सब से ज़्यादा मुहब्बत व अज़मत और इत्तिबअ व पैरवी का मुस्तहिक़ समझा जाये और हर अमल में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतों पर अमल करने की कोशिश की जाए।

एक और मामूल

दीनी और दुनियावी मामलात में आप की हिदायात, मामूलात और दस्तूर पर अमल करने की

कोशिश की जाए, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सीरते पाक के मुतालआ का ऐहतिमाम किया जाए और अहादीस पाक के मुतालआ का भी शौक़ पैदा किया जाए।

सब से अहम फरीज़ा

३) सब से अहम फरीज़ा और ज़रूरी चीज़ नमाज़ों को अपने वक़्त पर ऐहतिमाम और सुन्नतों की पाबंदी के साथ अदा करना है, उस में गफलत और तसाहुल की तलाफी कोई चीज़ नहीं कर सकती। नमाज़ पंजगाना जमात और तकबीरे ऊला के साथ हत्तल इम्कान मस्जिद में अदा की जाए, और नमाज़ें दिल लगा कर पढ़ने की कोशिश की जाए। मस्तूरात उन नमाज़ों को अपने वक़्त पर घर में पढ़ने की कोशिश करें। घर के कामों की मसरूफियात और ज़िम्मेदारियों की वजह से नमाज़ों में सुस्ती और ताख़ीर न करें।

तहज्जुद का ऐहतिमाम

नफ्लि नमाज़ों में तहज्जुद का ख़ास तौर से ऐहतिमाम करें। अख़ीर रात में अगर न उठ सकें तो बाद नमाज़े इशा कम अज़ कम चार रकअत तहज्जुद की निय्यत से पढ़ लें। उसके अलावा

इशराक़, चाश्त, अव्वाबीन, सलातुत्तस्बीह हस्बे मौक़ा पढ़ते रहा करें। अगर क़ज़ा नमाज़ बाक़ी है तो नफ्लों के बजाए उसको अदा करने का ऐहतिमाम करें।

उलमाये किराम से मालूम करें

इसी तरह रमज़ान शरीफ के रोज़ों के अलावा नफ्ली रोज़ों की अदायगी सेहत व कुव्वत की रिआयत के साथ करें और अगर अपने ज़िम्मे रोज़े बाक़ी हों तो पहले उनको अदा करें। अपने माल की ज़कात और हज के मसाइल उलमाये किराम से मालूम कर के उसके मुताबिक़ अमल करें।

आदात पर इबादात का सवाब लें

४) दीनी और दुनियवी दोनों कामों में सवाब और रिज़ाये इलाही की निय्यत की मश्क़ की जाए। अख़्लाक़ व मामलात और ज़िंदगी के मामूलात में भी उसका ऐहतिमाम किया जाए ताकि उन पर इबादत का सवाब मिले। उनको हत्तल इम्कान शरीअत और सुन्नत के मुताबिक़ करने की कोशिश की जाए। यह बात याद रहे कि सही निय्यत और शरीअत के मुताबिक़ अमल करने से आदात इबादात बन जाती हैं, मुबाह काम सवाब का अमल बन

जाता है।

उसके बग़ैर कोई बंदा वली नहीं हो सकता

५) अख़्लाक़ी व मिज़ाजी कमज़ोरियों, गुनाह और मआसी से बचने का बहुत ऐहतिमाम करें। ज़ाहिरी व बातिनी दोनों गुनाहों से बचने की कोशिश करे। हसद व कीना, हद से बढ़े हुए गुस्से, बद गोई और बद ज़बानी, रिया, ग़िबत, किब्र, उजब अैर माल व दौलत और दुनिया की हद से बढ़ी हुई मुहब्बत से बचने की हत्तल इम्कान कोशिश करें। यह बात याद रखें कि अल्लाह तआला की ना फरमानी व गुनाह के साथ कोई अल्लाह का वली और मक़बूल बंदा नहीं हो सकता।

यह हर हाल में ज़रूरी है

यह बात भी याद रखने की है कि अज़कार व औराद और तिलावत के मामूलात में फुरसत व हिम्मत और सेहत व कुव्वत के लिहाज़ से कमी बेशी कर सकते हैं। लेकिन मामलात की सफाई, मुआशरत की पाकीज़गी और अख़्लाक़ की दुरुस्तगी का ऐहतिमाम हर हाल में ज़रूरी है। आम तौर पर लोग इबादात और मामूलात का ऐहतिमाम कर लेते हैं लेकिन मामलात की सफाई और मुआशरत की

अच्छाई का ऐहतिमाम नहीं करते। हालांकि जिस तरह शरीअत के अहकाम इबादात से मुतअल्लिक़ हैं वैसे ही मामलात, मआशरत और अख़्लाक़ से भी मुतअल्लिक़ हैं। उन के मसाइल और अहकाम उलमाये किराम से मालूम कर के अमल करने की कोशिश करें।

गिर पड़े, गिर कर उठे और फिर चले

६) एक ज़रूरी बात यह है कि जिन उमूर से तौबा की गई है उन से बचने का बहुत ऐहतिमाम किया जाए, अगर कोई लग़्ज़िश हो जाये तो दोबारह उस से जल्द अज़ जल्द तौबा की जाए। अगर इबादात वाजिबह नमाज़ रोज़ाह वग़ैरह फौत हुई हैं तो उनको अदा करना शुरू कर दे क्योंकि तौबा से वक़्त पर अदा न करने का गुनाह माफ होता है। अस्ल फर्ज़ बाक़ी रहता है। इसी तरह अगर बंदों के हुक़ूक़ जानी या माली फौत हुए हों तो उनको अदा करने की फिक्र में लग जाये या अहले हुक़ूक़ से माफ कराये, क्योंकि बग़ैर मख़्लूक़ का हक़ अदा किए हुए अगर उम्र भर रियाज़त व मुजाहिदा करेगा हरगिज़ मक़सूदे हक़ीक़ी तक रिसाई न होगी।

हुक़ूक़ की एक तफ्सील

जानी हुक़ूक़ में मुसलमानों की आबरू रेज़ी,

उलमाये किराम की ऐहानत, किसी को गाली गलोच, ग़ीबत व चुगुलख़ोरी वग़ैरह सब शामिल हैं। माली हुकूक़ में किसी का हक़ दबा लेना या दुनियावी क़ानून की आड़ ले कर किसी साहिबे हक़ का हक़ अदा न करना, तर्का में बहनों का हिस्सा न देना, ख़रीद व फरोख़्त में धोका देना, ताक़त व कुव्वत के ज़ोर से दूसरों की ज़मीन जायदाद ग़सब कर लेना और रिश्वत वग़ैरह सब शामिल हैं।

ऐहानत से बचना लाज़िम है

७) आम मुसलमानों की ऐहानत से उमूमन और उलमाये किराम की ऐहानत से ख़ुसूसन परहेज़ करे। जिन में सहाबये किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन, औलिया अल्लाह, अइम्मये मुजतहिदीन, मुहद्दीसीन, उलमाये हक़ (मौजूदा व गुज़िश्ता) और दीनी काम करने वाले ख़्वाह किसी भी शोअबे के हों सब शामिल हैं। यह ज़रूरी नहीं कि हर आलिम की इत्तिबा की जाये। इत्तिबा और चीज़ है और ऐहतिराम दूसरी चीज़ है। इस लिए दिल से हर एक का ऐहतिराम और अमल से इकराम ज़रूरी है।

दो अहम रिसाले

इस मौज़ू पर रिसाला 'तौक़ीरुल उलमा' मोअल्लिफहू हजरत मुसलहे उम्मत मौलाना शाह वसीउल्लाह साहब रह० और रिसाला 'ऐतिदाल' मारूफ बिही 'इस्लामी सियासत' मुअल्लिफहू हजरत शैखुल हदीस मौलाना ज़करिया साहब रह० क़ाबिले दीद और हिर्ज़े जान बनाने के लायक़ हैं। इसी तरह तमाम दीनी काम करने वालों का ऐहतिराम, उन की ताइद और उनके लिए दुआ करना चाहिए। दावत व तबलीग, तसनीफ व तालीफ, मदारिस व मकातिब, वाअज़ व तक़रीर, बैयत व इर्शाद और इस्लामी ख़ानकाहें यह सब दीनी काम हैं।

एक बहुत कार आमद उसूल

हर आदमी अमलन सब काम में शरीक नहीं हो सकता। लेकिन दुआ और ताईद से उसकी बरकत हासिल कर सकता है। इस लिए तमाम दीनी काम करने वालों को रफीक़ समझे, फरीक़ न समझे। हर एक के लिए मुईन और मुफीद बनने की कोशिश करे, किसी के लिए मानेअ और मुज़िर न हो। तन्क़ीद और इन्कार से हमेशा बचता रहे

क्योंकि तन्क़ीद से आदमी इस काम की बरकत से महरूम हो जाता है।

अपनी इस्लाह की फ़िक्र के साथ काम करने की ज़रूरत

८) दावत व तबलीग़ में लगे हुए अहबाब जमात के काम को मक्सद बना कर उसूल की पाबंदी, लगन और फ़िक्र व तड़प से करते रहें। और अपनी इस्लाह की फ़िक्र के साथ करें। इस काम में मरकज़ के मशवरे के ताबेअ रहें क्योंकि शैतान दीनी काम करने वालों को ज़ाहिरी बड़े गुनाह में मुब्तिला नहीं करता बल्कि रूहानी व क़ल्बी गुनाह जैसे: किब्र, हसद, बुग्ज़, अदावत, कीना, कपट, उजब वग़ैरह में मुब्तिला कर देता है। इस लिए अपनी रूहानी व क़ल्बी और बातिनी कैफ़ियात के बारे में अपने शैख़ की हिदायात के पाबंद रहें, रूहानी और क़ल्बी अमराज़ के इलाज के बारे में हमेशा फ़िक्र मंद रहें।

शैख़ से फ़ौरन राब्ता करें

अगर आप को अपने ज़ाहिरी या बातिनी कोई मर्ज़ समझ में आये मसलन हमारी ही तशकील से लगा हुआ साथी जो बरसों बाद लगा मगर

मुजाहिदह व कुरबानी और इख़्लास की वजह से तरक़्क़ी कर गया। उसके बयानात सुन कर लोग उसकी तारीफ करते हैं और हमारी तारीफ नहीं करते तो दिल में जलन होती है तो ऐसी हालत में फौरन शैख़ को इत्तिलअ करें क्योंकि उन गुनाहों का इलाज़ किए बग़ैर इकरामे मुस्लिम पर पूरा अमल नहीं हो सकता, हालांकि तबलीग़ व दावत के छः नम्बरों में यह बहुत अहम नम्बर है। उसका तअल्लुक़ अल्लाह तआला के बंदों से है और हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की उम्मत से है। याद रखें इस्लामी तअलीमात का खुलासा कुल दो बातें हैं, हक़्क़े ख़ालिक़ अदा करना और हक़्क़े मख़्लूक़ अदा करना।

मस्जिदवार जमात के पाँच कामों को अकाबिर के बताये हुए तरीक़े पर करने की कोशिश करें।

ज़िक्र से पहले की निय्यत और दुआ

या अल्लाह! मैं इस निय्यत से आप का ज़िक्र कर रहा हूँ कि उस से हमारे दिल का ज़ंग साफ हो जाए और ज़ाहिरी, बातिनी तमाम बुराईयाँ हमेशा के लिए छूट जायें और आप की कामिल इताअत पर इस्तिक़ामत हासिल हो जाए। या अल्लाह! आप हमें यह दौलत नसीब फरमा दीजिए और क़बूल कर ले

और अपनी मअरफत व मुहब्बत का कामिल नूर भी अता फरमा दीजिए।

९) मामूलाते ज़िक्र

सुबह व शाम अपने हालात के ऐतिबार से वक़्त तैय कर के:

१) तीसरा कलिमा:

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْم.

सुबहानल्लाहि वल हम्दुलिल्लाहि वला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिइइल अज़ीम। सौ बार।

२) दुरूद शरीफ

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ يَاصَلَّى اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَسَلَّمْ.

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम या सल्लल्लाहु अलन्नबीय्यील उम्मी व सल्लम। या जो दुरूद शरीफ याद हो सौ बार और

३) इस्तिग़फार

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا اِلٰـهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ.

अस्तग़्फिरुल्लाहल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैह। सौ बार।

तवज्जुह और ध्यान से पढ़ लिया करें। जिन हज़रात को ज्यादा फुरसत हो और मौक़ा हो और पाबंदी कर सकें वह कलिमये तैय्यबा तीन सौ बार और दुरूद शरीफ तीन सौ बार का इज़ाफा कर लें।

उलमाये किराम के लिए दवाज़दह तस्बीह

उलमाये किराम और जिन हज़रात को मज़ीद मौक़ा व फुरसत हो तो मशवरे के बाद दवाज़दह तस्बीह की पाबंदी करें। उसके लिए बेहतर और अच्छा वक़्त तहज्जुद के बाद फज्र से पहले का है। और अगर उस वक़्त पाबंदी न हो सके तो बाद फज्र पढ़ लिया करें या जब मौक़ा हो पढ़ लिया करें। उसका तरीक़ा यह है कि बा वुज़ू क़िब्ला रू चहार ज़ानों बैठ कर तीन बार :

اَللّٰهُمَّ طَهِّرْ قَلْبِىْ عَنْ غَيْرِكَ وَنَوِّرْ قَلْبِىْ بِنُوْرِ مَعْرِفَتِكَ يَااَللّٰهُ يَا اَللّٰهُ يَااَللّٰهُ.

अल्लाहुम्म तह्हिर क़ल्बी अन ग़ैरिक व नव्विर क़ल्बी बिनूरि मारिफतिक या अल्लाहु या अल्लाहु या अल्लाह।

पढ़ें ताकि क़ल्ब ज़िक्र की तरफ मुतवज्जह हो जाये। उसके बाद ग्यारह बार इस्तिग्फार:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لاَ اِلٰـهَ اِلاَّ هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ.

अस्तग़िफरुल्लाहल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैह।

और ग्यारह बार दुरूद शरीफ :

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلاَنَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِهٖ وَاَصْحَابِهٖ وَبَارِكْ وَسَلِّمْ

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यदिना व मौलाना मुहम्मदिंव्व अला आलिही व अस्हाबिही व बारिक व सल्लिम। पढ़ें।

उसके बाद ला इलाह इल्लल्लाह दो सौ बार दरमियानी आवाज़ और थोड़ी ज़र्ब के साथ पढ़ें। नौ दस दफा के बाद 'मुहम्मद रसूलुल्लाह' सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मिला लिया करें।फिर 'इल्लल्लाह' चार सौ मर्तबा कभी कभी पूरा 'लाइलाह इल्लल्लाह'

कह लें, फिर 'अल्लाहु अल्लाहु' छः सौ बार उसके बाद 'अल्लाह' सौ बार पढ़ें, फिर दुरूद शरीफ ग्याराह बार और इस्तिग्फार ग्यारह बर पढ़ कर दुआ माँग कर ख़त्म करें। सेहत व कुव्वत फुरसत वगैरह को देखते हुए मामूलात मुक़र्रर करना चाहिए।

शैख की हिदायात पर चलना ज़रूरी

इस बाब में शैख़ की हिदायात की इत्तिबा बहुत ज़रूरी है। उसके अलावा ख़ाली औक़ात को अल्लाह तआला के ज़िक्र से मामूर रखें कि वह आख़िरत का सहारा और दिलों के इतमिनान का ज़रिया है और चलते फिरते उठते बैठते तबीअत जिस ज़िक्र से मानूस हो उसको पढ़ते रहा करें। आक़ा मौला हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से ख़ास औक़ात में सुबह व शाम, खाने पीने, सोने वग़ैरह की जो दुआयें नक़ल की गई हैं उन को याद कर के मामूल बनाने की कोशिश करें। मामूलात की पाबंदी के साथ मामलात की सफाई की भी फिक्र करें।

इत्तिबाये सुन्नत ही असल बुजुर्गी का मैआर

१०) इत्तिबाओ सुन्नत का बहुत ज़्यादा ऐहतिमाम करें। इबादात, मामलात, अख़्लाक़ व मुआशरत सब

में नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नत पर नज़र रखें। सुन्नतों की इत्तिबा कर के आदमी अल्लाह का महबूब बन जाता है, विलायत और बुजुर्गी और इन्दल्लाह मक़बूलियत का मैआर व कसौटी इत्तिबाये सुन्नत ही है। उसके लिए हज़रत डॉक्टर अब्दुल हई साहब की किताब "उसवये रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम' से बड़ी मदद मिलेगी और किताब 'गुलदस्तये सुन्नत' नीज़ रिसाला 'रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की सुन्नतें' और 'शमाइले कुबरा' (मोअल्लिफ जनाब मौलाना मुफ्ती इर्शाद अहमद साहब क़ासमी) को अपने पास रखें, उस से अमल में आसानी होगी।

अपने जाने वालों को याद रखें

११) रोज़ाना के मामूलात में अपने ज़िंदा व मुर्दा वालिदैन, अइज़्ज़ा व अक़्रबा, असातज़ा व मशाइख़, मुहसिनीन व मुख़्लीसीन और तमाम मुसलमानों के लिए दुआ और ईसाले सवाब को शामिल कर लें। हस्बे मौक़ा और हस्बे हैसीयत एक दो रूपये से भी सदक़ा ख़ैरात कर के सवाब पहुंचाते रहें। यह बात याद रखें कि यह अदले बदले की दुनिया है, अगर आप जाने वालों के लिए ईसाले सवाब करते रहेगे

तो आप के मरने के बाद लोग आप के लिए भी ईसाले सवाब करेंगे और अगर आप जाने वालों को भूल गये तो लोग आप को भी भूल जायेंगे। अपने ईमान पर ख़ात्मा और हिदायत पर बाक़ी रहने, नीज़ सारी इंसानियत की हिदायत के लिए अल्लाह तआला शानहू से दुआ मांगते रहें। तमाम दीनी कामों की तरक़्क़ी और उसकी हिफाज़त और दीनी काम करने वालों की हिमायत और ग़लबा के लिए अल्लाह तआला से दुआ करते रहें।

एक मामूल यह भी रखें

१२) एक मामूल यह भी रखें कि उलमाये अहले हक़ की किताबें, औलिया अल्लाह की सवानहे हयात, उन के मवाइज़ व मलफ़ूज़ात पढ़ने और सुनने सुनाने का ऐहतिमाम करें। हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ अली साहब थानवी रह० मुसलहे उम्मत हजरत शाह वसीउल्लाह साहब हज़रत शैख़ुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब की किताबें इसी तरह दूसरे अकाबिर की इस्लाही तसानीफ उलमा से पूछ कर मुताअला करें। 'तफसीर मआरिफुल कुरआन' अज हजरत मुफ्ती शफी साहब और 'मआरिफुल हदीस' अज हज़रत मौलाना मुहम्मद मंज़ूर नोमानी साहब और हज़रत हकीमुल

उम्मत मौलाना अशरफ अली साहब की 'बहिश्ती ज़ेवर' ज़रूर घर में रखें। उसको पढ़ते रहें। जो बात समझ में न आये उलमाये किराम से पूछ लें। ज़िंदगी को इस्लामी साँचे में ढालने, ज़िंदगी का सही मक़सद मालूम करने और शरीअत का मिज़ाज समझने के लिए हकीमुल उम्मत अशरफ अली साहब थानवी के मवाअिज़ और मलफ़ूज़ात का मुताला करें।

औरतों के लिए निहायत ज़रूरी बात

औरतों के लिए बहिश्ती ज़ेवर का पढ़ना और जो न पढ़ी हों उन के लिए बहिश्ती ज़ेवर का सुनना बहुत ज़रूरी है। उस में पैदाइश से ले कर मौत तक के अहकाम और मसाइल, बच्चों की तालीम व तर्बीयत और शौहर के हुक़ूक़ वग़ैरह की हिदायात हैं। उन पर अमल करने से ज़िंदगी ख़ुश गवार होगी, और दुनिया व आख़िरत संवर जायेंगी।

रहमते इलाहिया को मुतवज्जह करने वाली एक सिफत

१३) बैयत होने के बाद मामूलात की पाबंदी के साथ अपनी ज़ाहिरी व बातिनी इस्लाह की फ़िक्र, तवाज़ु व इनकिसारी, आजिज़ी व ज़ारी, अल्लाह

तआला के नज़दीक पसंदीदा अमल है। अपनी कोताही और आजिज़ी और अपनी ना अहली का ऐहसास और अपने को सब से अदना और किसी क़ाबिल न समझना इस की सब से ऊँची बात है और उसी में सालिक की हिफाज़त और उसकी तरक़्क़ी का राज़ है। यह बात याद रहे कि जब तक इंसान अपने को नाअहल और निकम्मा समझता रहता है तब तक ही उसकी तरफ रहमते इलाहिय्या मुतवज्जह रहती है। वरना फिर वह तरक़्क़ी करने से रुक जाता है।

अधूरी और नाक़िस मुहब्बत है

१४) एक और अहम ज़रूरी बात यह है कि घर के ज़िम्मेदारों, बच्चों के वालिदैन और मौजूदा नस्ल के सर परस्तों को अपनी दीनी फिक्र के साथ साथ अपने बच्चों और अपनी आइन्दा नस्ल को दीन की ज़रूरियात यानी इस्लामी अक़ाइद, दीनी फराइज़ और इस्लामी अख़्लाक़ से वाक़िफ कराने और उसकी तालीम देने की फिक्र और इंतिज़ाम ख़ुद करना है। उसको अपना ऐसा ही इंसानी और इस्लामी फर्ज़ समझें जैसा कि बच्चों की ख़ूराक व ग़िज़ा, लिबास व सेहत और बीमारी के इलाज़ की ज़िम्मेदारी को समझते हैं और उसका इंतिज़ाम

करते हैं। बल्कि हक़ीक़त में दीन की ज़रूरत, इमानियात और अक़ाइद की तलीम और सही इस्लामी अक़ीदे की हिफाज़त और तक़वियत का काम उन जिस्मानी व तबअी ज़रूरीयात की तक्मील और उनके इंतिज़ाम से भी ज़्यादा ज़रूरी है और उस से गफलत उन इंसानी व जिस्मानी ज़रूरियात की तकमील से ग़फलत बरतने से ज़्यादा ख़तरनाक और बुरे दाइमी नताइज का सबब है। इस लिए कि दीनी तालीम व तर्बीय्यत और सही इस्लामी अक़ाइद का मआमला एक लाफानी व अबदी ज़िंदगी के अंजाम और अच्छे बुरे नताइज से तअल्लुक़ रखता है। अल्लाह तआला शानहू का पाक इर्शाद है:

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ نَارًا.

(سورۂ تحریم پارہ ۲۹ آیت ٦)

ऐ ईमान वालो! बचाओ अपने आप को और अपने घर वालों को दोज़ख की आग से, और हमारे आक़ा व मौला, अल्लाह के आख़िरी रसूल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पाक इर्शाद है :

كُلُّكُمْ رَاعٍ وَكُلُّكُمْ مَسْئُوْلٌ عَنْ رَعِيَّتِهٖ (بخاری و مسلم)

तुम में से हर एक हाकिम और अपने ज़ेरे दस्त और ज़ेरे फरमाँ लोगों के लिए ज़िम्मेदारी की हैसीयत रखता है और हर एक से उसकी अपनी इस रअय्यत (ज़ेरे असर लोगों) के बारे में सवाल किया जायेगा। याद रखें! औलाद और मुतअल्लिक़ीन के साथ यह नाक़िस और अधूरी मुहब्बत है कि उन की दुनिया की फिक्र की जाए और आख़िरत की फिक्र न की जाए। इस लिए जिस तरह उनकी दुनिया की फिक्र करते हैं ऐसे ही उनकी आख़िरत की फिक्र करें।

अब मज़ीद इंतिज़ार नहीं करना चाहिए

(१५) सोने से पहले दिन भर के कामों का मुहासबा कर लिया करें, अच्छे कामों पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा करें और अगर नाफरमानी और गुनाह हो गये हों तो फौरन तौबा कर लें। दुनिया की ज़िंदगी ख़्वाह कितनी ही तवील हो जाए बहर हाल ख़त्म होने वाली है और आख़िरत की ज़िंदगी हमेशा की है जो कभी ख़त्म होने वाली नहीं इस लिए दुनिया की फिक्र से ज़्यादा आख़िरत की फिक्र ज़रूरी है। हर लम्हा उम्र घट रही है इस लिए उम्रे अज़ीज़ को गनीमत समझा जाये और अपने औक़ात की निगरानी की जाए। ज़िंदगी

बेकार और फुज़ूल कामों में ज़ाया न की जाए। ज़िंदगी का कोई भरोसा नहीं मौत इंतेज़ार कर रही है। लिहाज़ा आख़िरत की तैयारी के लिए अब इंतेज़ार नहीं करना चाहिए बल्कि आख़िरत के कामों में लग जाना चाहिए।

बैयत होने वाली मस्तूरात इस का ख़्याल रखें

(१६) बैयत होने वाली मसतूरात को चाहिए कि अपनी दीनी व ईमानी ज़िंदगी की फिक्र के साथ अपने बच्चों की दीनी तालीम व तर्बीयत की फिक्र करें। शौहर की ख़िदमत, उनकी फरमाँ बरदारी के साथ घर में फजाइले आमाल की तालीम की आदत डालें। हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ अली थानवी की बहिश्ती ज़ेवर का मुलाअला ज़रूर किया करें और उसके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारने की कोशिश करें। सुबह व शाम और मुख़्तलिफ औक़ात की मसनून दुआओं का ऐहतिमाम करें। जो भी काम करें सुन्नत के मुताबिक़ करने की कोशिश करें। शादी बयाह के रस्म व रिवाज से ख़ास तौर से बचती रहें और शरअी परदे के मसाइल मालूम कर के अमल की कोशिश करें। घर की रिआयत

करते हुए दुरूद शरीफ, कलिमा तय्यबा का ज़िक्र करती रहें। ग़ीबत, शिकायत शौहर की नाशुक्री, बच्चों को बद दुआ देने और कोसने से बहुत ज़्यादा बचती रहें। कामिल ईमान पर ख़ात्मा की दुआ का ऐततिमाम करती रहें। दुरूद शरीफ और 'कुल हुवल्लाहु' शरीफ पढ़ कर अपने आबा व अजदाद, असातज़ा व मशाइख़ और तमाम मुसलमानों को ईसाले सवाब करती रहें, किसी क़िस्म के नाविल और अफसाने की किताबें बच्चों को हरगिज़ न पढ़ने दें और न घर में लाने दें। अपनी और शौहर की मिलकिय्यत की चीज़ों के साफ और वाज़ेह तरीक़ा से मालूम कर लें इस से ज़कात की अदायगी और मामलात की सफाई और तर्क़ा की तक़्सीम में आसानी होती है और अपने ज़िम्मे किसी का हक़ बाक़ी नहीं रहता।

बैयत के कलिमात

(१७) बैयत होते वक़्त जो कलिमात अक्सार कहलाये जाते हैं वह यहाँ तहरीर कर दिए जाते हैं ताकि याद रहे कि किन बातों से तौबा की गई है और क्या इरादे किये गये हैं। ख़ुतबये मसनूनह के बाद अकसर यह अलफाज़ कहलाये जाते हैं। तौबा करते हैं हम कुफ्र से, शिर्क से, बिदअत से, ग़ीबत

करने से, झूठ बोलने से, चोरी करने से, ज़िना करने से, पराया माल नाहक़ खाने से, और किसी मुसलमान को नाहक़ सताने से और हर छोटे बड़े गुनाह से। ईमान लाते हैं हम अल्लाह पाक पर और उस के रसूलों पर और उसके सब फरिश्तों पर और उस की सब किताबों पर और आख़िरत के दिन पर और तक़दीर पर भली हो या बुरी सब अल्लाह की तरफ से है।

اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَـهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُـهٗ

अश्हदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू व अश्हदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलहू।

इक़रार करते हैं हम पाँचों वक़्त की नमाज़ पढ़ेंगे। रमज़ान शरीफ के रोज़े रखेंगे। अगर माल होगा तो ज़कात देंगे। ज़्यादा गुंजाइश होगी हज करेंगे। अल्लाह व रसूल के सब हुक्मों को जहाँ तक हो सकेगा बजा लायेंगे। अगर कोई नाफरमानी हो जायेगी फौरन तौबा करेंगे, बैयत होते हैं हम चारों सिलसिलों में चिश्तिया, क़ादरिया, नक़्शबंदिया और सहरवरदिया में। या अल्लाह! इन चारों ख़ानदानों की बरकत हम को नसीब फरमा और

क़यामत में हम को उन बुज़ुर्गों के साथ उठा। या अल्लाह! हमारी तौबा क़बूल फरमा हमें अपने नेक बंदों में शामिल फरमा।

तिलावते कुरआन ज़रूरी

(१८) जो साहब हाफिज़े कुरआन हों वह रोज़ाना तीन पारा और अगर तीन पारे न हो सकें तो नमाज़ों में एक पारा पढ़ लिया करें और जो हाफिज़ न हों वह एक पारा तिलावत की कोशिश करें। अगर फुरसत व मौक़ा न हो तो जितना हो सके रोज़ाना तिलावत करते रहा करें। उसके लिए हजरत शाह वसीउल्लाह साह की किताब 'तिलावते कुरान' का मुताला बेहद मुफीद व नाफे है और जो हज़रात कुरआन पाक बिल्कुल न पढ़े हों वह कुछ वक़्त कुरआन पाक सीखने में ख़र्च करें और जो सूरतें और दुआयें नमाज़ में पढ़ने के लिए याद की हों उनको किसी आलिम को सुना कर सही कर लें

मुनाजाते मक़बूल की एक मंज़िल

तिलावत के बाद मुनाजाते मक़बूल जो इसी रिसाले में शामिल है उसकी एक मंज़िल रोज़ाना इस कैफियत के साथ पढ़ें जैसे कि यह दुआयें अल्लाह तआला से माँग रहे हैं, अगर किताब से

पढ़ने का मौक़ा न मिले या किताब पास न हो तो रोज़ाना जिस वक़्त मौक़ा हो दस मिनट दुआ का मामूल मुक़र्रर कर लें।

पाँच मिनट की बात

पाँच मिनट अपने लिए और अपने मुतअल्लिक़ीन के लिए और पाँच मिनट सारी उम्मत और सारी इंसानिय्य के लिए दिल लगा कर दुआ मांगें। यह बात याद रखनी चाहिए कि सूरते दुआ और है हक़ीक़ते दुआ और है। दुआ में क़िब्ला रू होना वुज़ू और पाकी वग़ैरह शर्त नहीं है। सिर्फ दिल की हाज़िरी और तवज्जुहे क़ल्बी शर्त है।

इसी मुनासिबत से दुआ से मुतअल्लिक़ एक मज़मून आइन्दा सुतूर में नक़ल किया गया है उसको ग़ौर से पढ़ लिया करें।

बहुत आसान और निहायत मुअस्सिर तरीक़ा

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इंसान अपनी हाजात व ज़रूरियात पूरा करने के लिए मुख़्तलिफ तरीक़े इख़्तियार करता है उस में एक आसान और बिला ज़रर तरीक़ा अल्लाह से मांगना और दुआ करना भी है और दुआ एक ऐसा

अमल है कि दुनिया व आख़िरत की किसी ज़रूरत के लिए किया जाये तो इबादत ही इबादत है। हदीस शरीफ में आया है:

اَلدُّعَاءُ هُوَ الْعِبَادَةُ

अद्दुआउ हुवल इबादत

कुरआन पाक में अल्लाह तआला शानहू ने अपने महबूब और मक़बूल बंदों की दुआयें नक़ल फरमाई है। अल्लाह तआला को चूँकि वह अलफाज़ भी महबूब हैं इस लिए जब उन अलफाज़ के साथ दुआ की जायेगी तो ज़रूर क़बूल होगी क्योंकि हाकिम जब ख़ुद दरख़्वास्त का मज़मून बतला दे तो दरख़्वास्त ज़रूर क़बूल कर ली जायेगी। दुआ की अहमियत और ज़रूरत के बारे में हजरत मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी रह० का बहुत ही मुफीद और मुअस्सिर मज़मून निगाह से गुज़रा जो ज़ेल में नक़ल किया जाता है।

दुआ से मुतअल्लिक़ एक अहम मज़मून

हजरत तहरीर फरमाते हैं:

"अल्लाह तबारक व तआला ने जिन इनआमाते ख़ास्सा से इंसान को नवाज़ा है उन में से एक दुआ भी है। दुआ ईमान का निशान, तअल्लुके इलाही

की दलील है। मग़्ज़े इबादत, हक़ीक़ते उबूदिय्यत, जाने बंदगी, रूहे फ़िक्र और रौनक़े दुरवेशी है। दुआ बंदा व रब का राब्तये क़विय्या, मोमिन का असलहा है। रूह की ग़िज़ा, जाने हज़ीं का क़रार, ज़ख़्मी दिल का मरहम और सोख़्ता सामान उश्शाक़ की नामुरादियों का मुदावा है। दुआ फ़क़ीरों का ख़ज़ाना, मिसकीनों का तोशा, नादारों की ढारस, लाचारों की तस्कीन, बेनवाओं की तसल्ली, ज़ईफ़ों की क़ुव्वत, राहे हक़ के तलबगारों की ढारस और सालिकाने तरीक़ का ज़ादे राह है। दुआ का शग़फ़ व इश्तिग़ाल, उस में इलहाह व ज़ारी, तज़र्रू व ख़ुशूअ और इबतिहाल व तबत्तुल, तौहीद व लिल्लाहिय्यत और सिफ़ाते इलाहिय्या पर ईमाने कामिल और यक़ीने रासिख़ का नतीजा है। दुआ जामिउल असबाब, उम्मुज़्ज़राओे, कलीदे ख़ैर और मतलब बरारी की अहसन व अकमल तदबीर है। दुआ दारैन की हाजात व ज़रूरियात के अंजाह व हुसूल का अक़वा व अजमल सबब है। दुआ दर मान्दह बंदा की अपने रहीम व करीम आक़ा के दरबार में मुनाजात व पुकार और गर्ज़ दाश्त है जिस का हर बोल बंदा व आक़ा के तअल्लुक़ को क़वी तर करता है। एक फ़क़ीर व बेनवा का

सरमाया ही दुआ और कुव्वते दुआ है कि फ़िक्र की हक़ीक़त 'अल हमीद' में सब कुछ देख कर अपनी बे मायगी हेच दर हेच होने का यक़ीन रखते हुए दुआ व रज़ा, तफवीज़ व तसलीम, अबदिय्यत व उबूदिय्यत के वज़ीफा में अपनी ज़िंदगी गुज़ार देना है। महबूबे अज़ल का मुहिब्बे सादिक़ और हमीदे मुतलक़ का तालिबे हक़ीक़ी हर आन क़लबन व हालन अपने रब के सामने सजदा रेज़ उसके साथ मुनाजात व दुआ में मशगूल रहता है। इस लिए फख़्रुल फुक़रा सय्यदुल अंबिया हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ज़िंदगी का जुज़ व कुल दुआ व मुनाजात से ममलू मिलता है कि जिस क़द्र हक़ीक़ते फ़िक्र व अबदिय्यत मयस्सर आयेगी इंसान में तबत्तुल और इलतिजा इलल्लाह और ऐहतियाज की कैफियत बढ़ जायेगी। सहीफये इस्लामी दुआ की अज़मत व बरकत पर दाल और क़िससे अंबिया अलैहिमुस्सलाम इजाबते दुआ पर नातिक़ और उसवये नबविय्या और अहादीसे मुबारका दुआ के फज़ाइल व अहमियत पर शाहिद हैं''

ज़रूरी गुज़ारिश

रोज़ाना जिस तरह नमाज़ व तिलावत और तस्बीहात का वक़्त मुक़र्रर है ऐसे ही अल्लाह तआला से दुआ मांगने का वक़्त मुक़र्रर कर लीजिए और एक मंज़िल रोज़ाना इस तरह पढ़ीए गोया अल्लाह से माँग रहे हैं। याद रखिये दुआ पढ़ना और है दुआ मांगना और है। सूरते दुआ और हक़ीक़ते दुआ में फ़र्क़ है। जिस वक़्त भी दुआ मांगिये इस बात का यक़ीन कर के मांगिये कि अल्लाह के अलावा हमारी ज़रूरत पूरी करने वाला नहीं है मांगिये और मुसलसल मांगिये।

रहमत व बरकत के दरवाज़े खुलवा लें

हदीस शरीफ में आता है जिस शख़्स को दुआ की तौफ़ीक़ हो गई उसके लिए क़बूलिय्यत के दरवाज़े खुल गये। एक रिवायत में है कि जन्नत के दरवाज़े खुल गये। एक रिवायत में है कि रहमत के दरवाज़े खुल गये और इर्शाद फरमाया कि दुआ में हिम्मत न हारो। क्योंकि दुआ करते हुए कोई ज़ाअे नहीं होता और इर्शाद फरमाया कि दुआ मुसलमान का हथियार है और दीन का सुतून है और आसमान व ज़मीन का नूर है। अल्लाह तआला हम सब को

ऐहतिमाम के साथ दिल लगा कर दुआ करने की तौफीक़ अता फरमाये और हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की कामिल इत्तिबा की तौफीक़ अता फरमाये और इस किताब को क़बूल फरमा कर इसके नफा को आम व ताम फरमाये। आमीन!

उन हालतों का बयान जिन में दुआयें क़बूल होती हैं

(१) अज़ान होने के बाद (२) अज़ान और तकबीर के दरमियान। (३) फर्ज़ नमाज़ के बाद (४) कुरआन की तिलावत, ख़ास कर ख़त्मे कुरआन के बाद (५) ज़म ज़म का पानी पीने की हालत में (६) मुर्ग़ की अज़ान के बाद (७) काबतुल्लाह के देखने के बाद।

मुनाजाते मक़बूल की सात मंज़िलें

इन दुआओं के विर्द का अंसब तरीक़ा यह है कि हर मंज़िल के साथ अव्वल ख़ुतबा ज़ेल पढ़ें और शंबा से शुरू कर के हर रोज़ एक मंज़िल तर्तीबवार पढ़ कर जुमा को ख़त्म करें अहक़र को भी दुआ में याद रखें तो ऐहसाने अज़ीम होगा।

बंदा मुहम्मद शफी

بسم اللّٰهِ الرحمن الرحيم

نَحْمَدُكَ يَاخَيْرَ مَأمُوْلٍ. وَاَكْرَمَ مَسْئُوْلٍ عَلٰى مَا عَلَّمْتَنَا مِنَ الْمُنَاجَاةِ الْمَقْبُوْلِ. مِن قُرُبَاتٍ عِنْدَ اللّٰهِ وَصَلَوَاتِ الرَّسُوْلِ. فَصَلِّ عَلَيْهِ مَا اخْتَلَفَ الدَّبُوْرُ وَالْقَبُوْلُ. وَانْشَعَبَتِ الْفُرُوْعُ مِنَ الْاُصُوْلِ. ثُمَّ نَسْئَلُكَ بِمَا سَنَقُوْلُ. وَمِنَّا السُّؤَالُ وَمِنْكَ الْقَبُوْلُ.

तर्जुमा:

हम्द करते हैं हम तेरी ऐ बेहतर उनके जिन से उम्मीद की जाए और सख़ी तर उनके जिन से सवाल किया जाये। इस बात पर कि सिखाई तूने हमें मुनाजाते मक़बूल। कि वह मुजिबे क़ुरबत है अल्लाह के यहाँ और दुआयें हैं रसूलुल्लाह

सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की। तो रहमत कामिला भेज आप पर जब तक कि चले पछुवा और पुरवा। और निकलीं शाख़ें जड़ों से। बाद अर्ज़ी मांगते हैं हम तुझ से वह जो आगे कहते हैं और हमारा काम सवाल है और तेरा काम क़बूल।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

اَلْمَنْزِلُ الْاَوَّلُ يَوْمَ السَّبْتِ

मंज़िल अव्वल बरोज़ शंबा (हफ्ता)

١-رَبَّنَا اٰتِنَا فِى الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِى الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ٥

१. रब्बना आतिना फिद्दुनिया हसनतंव्व फिल आख़िरति हसनतंव्व क़िना अज़ाबन्नार।

ऐ रब हमारे दे हमें दुनिया में भलाई और आख़िरत में भलाई और बचा हमें दोज़ख़ के अज़ाब से।

٢-رَبَّنَا اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ٥

२. रब्बना अफरिग़ अलैना सबरंव्व सब्बित अक़दामना वनसुरना अलल क़ौमिल काफिरीन।

ऐ रब डाल दे हम पर सब्र और जमा हमारे क़दम और ग़ालिब कर हम को काफिर लोगों पर।

٣-رَبَّنَا لَاتُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَا اَوْ اَخْطَاْنَا ج رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَا اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ج رَبَّنَا وَلَاتُحَمِّلْنَا مَالَا

طَاقَــــةَ لَنَا بِـــهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّـــا وَاغْفِــرْ لَنَـــا. وَارْحَـمْنَـا. اَنْـتَ مَوْلٰنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

३. रब्बना ला तुआख़िज़ना इन नसीना औ अख़्ताना रब्बना वला तहमिल अलैना इसरन कमा हमलतहू अलल लज़ीना मिन क़ब्लिना रब्बना वला तुहम्मिलना माला ताक़त लना बिही वअफु अन्ना वग़्फिर लना वरहम्ना। अन्त मौलाना फन्सुरना अलल क़ौमिल काफिरीन।

ऐ रब हमारे न पकड़ हम को अगर भूल जायें या चूक जायें ऐ रब हमारे और न रख हम पर बोझ भारी जैसा कि रखा था हम से पहले लोगों पर ऐ रब हमारे और न उठवा हम से वह चीज़ जिस की ताक़त हम को नहीं और दर गुज़र कर हम से और बख़्श दे हमें और रहम कर हम पर तू ही हमारा मालिक है तू ग़ालिब कर हम को काफिर लोगों पर।

٤-رَبَّنَـــا لَاتُـزِغْ قُلُوْبَنَـا بَعْـدَ اِذْ هَـــدَيْتَنَا وَهَـبْ لَنَـامِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْـتَ الْوَهَّابُ ۝ رَبَّنَـــا اِنَّنَـــا اٰمَنَّا فَاغْفِــرْلَنَا ذُنُـــوْبَنَـــا وَقِـنَـــا عَـــذَابَ الـــنَّـــارِ ۝

४. रब्बना ला तुज़िग़ कुलूबना बाद इज़ हदैतना वहब लना मिल लदुनक रहमतन इन्नक अन्तल वह्हाब। रब्बना इन्नना आमन्ना फग़िफरलना जुनूबना वक़िना अज़ाबन्नार।

ऐ रब हमारे न फेर हमारे दिल बाद हिदायत करने के और दे हमें अपने पास से एक रहमत कि बेशक तू ही है देने वाला ऐ रब हमारे हम ईमान लाये हैं पस बख़्श दे हमारे गुनाह और बचा हम को दोज़ख़ के अज़ाब से।

٥-رَبَّنَا مَاخَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَکَ فَقِنَا
عَذَابَ النَّارِ ۝ رَبَّنَا اِنَّکَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ
اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝ رَبَّنَآ اِنَّنَا
سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِىْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا
بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا رَبَّنَا فَاغْفِرْلَنَا ذُنُوْبَنَا
وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ۝
رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِکَ وَلَا
تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّکَ لَاتُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ۝

५. रब्बना मा ख़लक़्त हाज़ा बातिला। सुबहानक फक़िना अज़ाबन्नार। रब्बना इन्नक मन तुदख़िलिन्नार फक़द अख़्ज़ैतहू। वमा लिज़्ज़ालिमीन

मिन अंसार। रब्बना इन्नना समीना मुनादियंय्यु नादी लिल ईमानी अन आमनू बिरब्बिकुम फआमन्ना रब्बना फग़्फिर लना ज़ुनूबना व क़फ्फिर अन्ना सय्यिआतिना व तवफ्फना मअल अबरार। रब्बना व आतिना मा वअत्तना अल रुसुलिक वला तुख़्ज़िना यवमल क़ियामति। इन्नक ला तुख़्लिफुल मीआद।

ऐ रब हमारे तूने यह अबस नही पैदा किया तू पाक है पस बचा हमें दोज़ख़ के अज़ाब से ऐ रब हमारे तू जिसे दोज़ख़ में डाले तो तूने वाक़िअतन उसे रुसवा कर दिया और सियाह कारों का कोई साथी नहीं। ऐ रब हमारे हम ने एक पुकारने वाले को ईमान के लिए पुकारते हुऐ सुना कि अपने परवरदिगार पर ईमान लाओ सो हम ईमान ले आये। ऐ रब हमारे अब हमारे गुनाह बख़्श दे और हमारी बुराइयों को उतार दे और हमारा नेकों के साथ ख़ात्मा कर। ऐ रब हमारे और दे हमें जो अपने रसूलों की मारफत तूने हम से वादा किया और हमें क़यामत के दिन रुसवा न कर। तू वादा को ख़िलाफ नहीं करता।

٦-رَبَّنَا ظَلَمْنَا اَنْفُسَنَا. وَاِنْ لَّمْ تَغْفِرْلَنَا

وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ○

६. रब्बना ज़लमना अनफुसना व इल्लम तग़्फिर लना व तरहम्ना लनकूनन्न मिनल ख़ासिरीन।

ऐ रब हमारे हम ने अपनी जानों पर ज़्यादती की और अगर तू हमें बख़्शेगा और हम पर रहम न करेगा तो हम ना मुरादों में से हो जायेंगे।

٧-رَبَّنَا اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ○

७. रब्बना अफ्रिग़ अलैना सब्रंव्व तवफ्फना मुसलिमीन।

ऐ रब हमारे हम पर सब्र डाल दे और मुसलमान कर के मौत दे।

٨- اَنْتَ وَلِيُّنَا فَاغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الْغَافِرِيْنَ○

८. अन्त वलिय्युना फग़्फिरलना वर हमना व अन्त ख़ैरुल ग़ाफिरीना।

तू ही हमारा मददगार पस बख़्श दे हम को और रहम कर हम पर और तू सब से अच्छा बख़्शने वाला है।

٩-رَبَّنَا لَاتَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ○ وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِکَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ○

९. रब्बना ला तजअलना फितनताल लिल क़ौमिज़ ज़ालिमीना। व नज्जिना बिरहमतिक मिनल क़ौमिल काफिरीन।

ऐ रब हमारे न कीजियो हमें सितम सहने वाला ज़ालिम लोगों का। और छुड़ा ले हमें अपनी रहमत से काफिर लोगों से।

١٠-فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَنْتَ وَلِيّ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ج تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصَّالِحِيْنَ ٥

१०. फातिरस्समावाति वल अर्ज़ि अन्त वलिय्यिही फिद्दुनिया वल आख़िरति। तवफ्फनी मुसलिमंव्व अल हिक्नी बिस्सालिहीन।

ऐ पैदा करने वाले आसमानों और ज़मीनों के तू ही है रफीक़ मेरा दुनिया और आख़िरत में उठाना मुझ को मुसलमान और शामिल करना मुझे नेकों के साथ।

١١-رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ. رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ٥ رَبَّنَا اغْفِرْلِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ٥

११. रब्बिज अलनी मुक़ीमस्सलाति व मिन ज़ुर्रिय्यती। रब्बना व तक़ब्बल दुआ।।

रब्बनग़्फिरली व लिवालिदय्या व लिल मुमिनीन यवम यकूमुल हिसाब।

ऐ रब मेरे कर दे मुझे नमाज़ दुरुस्त रखने वाला और मेरी नस्ल को भी। ऐ रब हमारे और मेरी दुआ क़बूल कर। ऐ रब हमारे बख़्शना मुझ को और मेरे माँ बाप को और तमाम मुमिनीन को जिस दिन हिसाब क़ायम हो।

١٢- رَبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا رَبَّيٰنِىْ صَغِيْرًا ٥

१२. रब्बिर हमहुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा।

ऐ रब रहम कर मेरे वालिदैन पर जैसा उन्हों ने मुझ पर छोटे को पाला।

١٣- رَبِّ اَدْخِلْنِىْ مُدْخَلَ صِدْقٍ وَّاَخْرِجْنِىْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ لِّىْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ٥

१३. रब्बि अद ख़िलनी मुदख़ल सिदक़िंव्व अख़रिजनी मुख़रज सिदक़िंव्वजअल्ली मिल्लदुंक सुलतानन्नसीरा।।

ऐ रब मेरे अंदर ले जा मुझे ले जाना साफ और निकाल मुझे निकालना साफ और जजवीज़ कर मेरे लिए अपने पास से एक कुव्वत मदद देने वाली।

١٤- رَبَّنَا اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ

لَــنَــا مِــنْ اَمْــرِنَا رَشَــدًا٥

१४. रब्बना आतिना मिल लदुन्नक रहमतंव्व हय्यि लना मिन अमरिना रशदा।

ऐ रब हमारे दे हमें अपने पास से एक रहमत और सामान कर दे हमारे लिए काम में दुरुस्ती का।

١٥-رَبِّ اشْــرَحْ لِـىْ صَدْرِىْ ٥وَيَسِّــرْلِـىْ اَمْـرِىْ ٥ وَاحْـلُـلْ عُـقْــدَةً مِّنْ لِّسَـانِىْ ٥ يَـفْـقَـهُـوْا قَوْلِىْ ٥

१५. रब्बिशरह ली सदरी व यस्सिर ली अमरी वहलुल उक़दतम मिल्लिसानी यफ़क़्हू क़ौली।

ऐ रब मेरे खोल दे सीना मेरा। और आसान कर मुझ पर मेरा काम। और खोल दे गंजलक मेरी ज़बान से कि मेरी बात को लोग समझ लें।

١٦-رَبِّ زِدْنِــىْ عِــلْـمًــا ٥

१६. रब्बि ज़िदनी इल्मा।

ऐ रब मेरे बढ़ा मुझे इल्म में।

١٧-اَنِّىْ مَسَّـنِــىَ الـضُّـرُّ وَاَنْـتَ اَرْحَـمُ الرّٰحِمِيْنَ ٥

१७. अन्नी मस्सनीज़ ज़ुर्रु व अन्त अरहमुर्राहिमीन।

मुझे लग गई है बीमारी और तू सब से बड़ा

मेहरबान है।

۱۸- رَبِّ لَاتَذَرْنِیْ فَرْدًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْوَارِثِیْنَ ٥

१८. रब्बि ला तज़रनी फर्दव्व अन्त ख़ैरुल वारिसीन।

ऐ रब मेरे न छोड़ मुझे अकेला और तू सब से अच्छा वारिस है।

۱۹-رَبِّ اَنْزِلْنِیْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ خَیْرُ الْمُنْزِلِیْنَ ٥

१.९ रब्बि अंज़िलनी मुंज़लम मुबारकंव्व अंत ख़ैरूल मुनज़िलीन।

ऐ रब मेरे उतार मुझे मुबारक जगह में और तू सब से बेहतर उतारने वाला है।

۲۰-رَبِّ اَعُوْذُبِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّیٰطِیْنِ ٥ وَاَعُوْذُبِكَ رَبِّ اَنْ یَّحْضُرُوْنِ ٥

२०. रब्बि अऊज़ुबिक मिन हमज़ातिश्शयातीन। व अऊज़ुबिक रब्बि अंय्यहज़ुरून।

ऐ रब मेरे मैं पनाह चाहता हूँ तेरी शैतान की छेड़ से और पनाह चाहता हूँ तेरी ऐ रब उस से कि वह मेरे पास आयें।

۲۱-رَبَّنَا اٰمَنَّا فَاغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ خَیْرُالرّٰحِمِیْنَ ٥

२१. रब्बना आमन्ना फग़्फिर लना वरहमना व अन्त ख़ैरुर्राहिमीन।

ऐ रब हमारे हम ईमान लाये तू बख़्श दे हमें और रहम कर हम पर और तू सब मेहरबानों से बेहतर है।

٢٢-رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ جَهَنَّمَ. اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا○

२२. रब्बनस्रिफ अन्ना अज़ाब जहन्नम, इन्न अज़ाबहा कान ग़रामा।

ऐ रब हमारे टाल दे हम से दोज़ख़ का अज़ाब कि उस का अज़ाब गुलूगीर है।

٢٣-رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ اَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ اَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا لِلْمُتَّقِيْنَ اِمَامًا○

२३. रब्बना हब लना मिन अज़्वाजिना व ज़ुर्रियातिना कुर्रत अयुनिंव्वजअलना लिल मुत्तक़ीन इमामा।

ऐ रब हमारे दे हमारी बीबियों और औलाद की तरफ से आँखों की ठंडक और कर दे हमें परहेज़गारों का मुक़्दता।

٢٤-رَبِّ اَوْزِعْنِىْ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِىْ

اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰهُ وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ○

२४. रब्बि औज़िनी अन अशकुर नेमतकल्लती अनअमत अलिय्य व अला वादिलदय्य व अन अमल सालिहन तर्ज़ाहू व अद ख़िलनी बिरहमतिक फी इबादिकस्सालिहीन।

ऐ रब मेरे मुझे नसीब कर कि शुक्र करूँ तेरे ऐहसान का जो तूने किया मुझ पर और मेरे माँ बाप पर और यह कि करूँ नेक काम जो तू पसंद करे और दाख़िल कर दे मुझे अपनी रहमत से अपने नेक बंदों में।

٢٥-رَبِّ اِنِّيْ لِمَآ اَنْزَلْتَ اِلَيَّ مِنْ خَيْرٍ فَقِيْرٌ ○

२५. रब्बि इन्नी लिमा अंज़लत इलय्या मिन ख़ैरिन फक़ीर।

ऐ रब मेरे मैं इस भलाई का जो तू मेरी तरफ उतारे मुहताज हूँ

٢٦-رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ○

२६. रब्बिन सुरनी अलल क़ौमिल मुफसीदीन।

ऐ रब मेरे ग़ालिब कर मुझे मुफसिद लोगों पर।

٢٧-رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّ عِلْمًا

فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ○ رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ۨالَّتِىْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ط وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ط وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ○

२७. रब्बना वसिअत कुल्ला शैइर रहमतंव्व इल्मन फग़्फिर लिल्लज़ीना ताबू वत्तबऊ सबीलक वक़िहिम अज़ाबल जहीम। रब्बना व अदख़िलहुम जन्नाति अदनिनल लती व अत्तहुम व मन सलह मि आबाइहिम व अज़वाजिहिम व ज़ुर्रियातिहिम इन्नक अन्तल अज़ीज़ुल हकीम। वक़िहिमुस्सय्यिात। व मन तक़िस्सय्यिआति यवमइज़िन फक़द रहिमतहू व ज़ालिक हुवल फौज़ुल अज़ीम।

ऐ रब हमारे मुहीत हुआ है हर चीज़ को तेरा रहम और इल्म तू बख़्श दे उन लोगों को जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और बचा उन्हें दोज़ख के अज़ाब से। ऐ रब हमारे और दाख़िल कर उन्हें हमेशा रहने की जन्नतों में जिन का तूने उन से वादा किया है और जो कोई नेक हो उनके

आबा व अजदाद और उनकी बीवियों और उनकी औलाद में से क्योंकि तूही है ज़बरदस्त हिक्मत वाला और बचा उन को ख़राबियों से। और जिन को तू ख़राबियों से उस दिन बचा ले तो उस पर तूने रहम किया। और यही तो है बड़ी कामिबयाबी।

٢٨- وَاَصْلِحْ لِیْ فِیْ ذُرِّیَّتِیْ ؕ اِنِّیْ تُبْتُ اِلَیْکَ وَاِنِّیْ مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ۝

२८. व असलिह ली फी ज़ुर्रिय्यती इन्नी तुबतु इलैक व इन्नी मिनल मुस्लिमीन।

और सलाहियत दे मेरे औलाद में। मैंने तेरी तरफ रुजू किया और मैं फरमाँ बरदारों में से हूँ।

٢٩- اَنِّیْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ۝

२९. अन्नी मग़लूबुन फन्तसिर।

मैं हारा हुआ हूँ पस तू मेरा बदला ले ले।

٣٠- رَبَّنَا اغْفِرْلَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِیْنَ سَبَقُوْنَا بِالْاِیْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِنَا غِلًّا لِّلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّکَ رَءُوْفٌ رَّحِیْمٌ۝

३०. रब्बनग़ फिरलना व लि इख़्वानिनल लज़ीन सबकूना बिल ईमान वला तजअल फी कुलूबिना ग़िल्लल लिल्लज़ीना आमनू रब्बना इन्नका

रऊफुर्रहीम।

ऐ रब हमारे बख़्श दे हमें और हमारे उन भाइयों को जो हम से आगे पहुंचे ईमान में और न कर हमारे दिलों में कुदूरत ईमान वालों के साथ ऐ रब हमारे तू बहुत मेहरबान रहम वाला है।

३١- رَبَّنَا عَلَيْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَيْكَ اَنَبْنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ○ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ج اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○

३१. रब्बना अलैक तवक्कलना व इलैक अनबना व इलैकल मसीर। रब्बना ला तजअलना फितनतल लिल्लज़ीन कफरू वग़्फिर लना रब्बना इन्नक अन्तल अज़ीज़ुल हकीम।

ऐ रब हमारे तुझी पर हम ने भरोसा किया और तेरी ही तरफ हम रुजूअ हुये और तेरी ही तरफ लौटना है। ऐ रब हमारे न कर हमें सितम कश काफिर लोगों का और बख़्श दे हमें। ऐ रब हमारे तू ही है ज़बरदस्त हिक्मत वाला।

٣٢- رَبَّنَا اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ج اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○

३२. रब्बना अतमिम लना नूरना वग़्फिर लना

इन्नक अल कुल्लि शैइन क़दीर।

ऐ रब हमारे कामिल कर दे हमारे लिए हमारा नूर और बख़्श दे हमें क्योंकि तू हर चीज़ पर क़ादिर है।

٣٣-رَبِّ اغْفِرْلِىْ وَلِوَالِدَىَّ وَلِمَنْ دَخَلَ بَيْتِىَ مُؤْمِنًا وَّ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ط

३३. रब्बिग़्फिरली वलिवालिदय्या व लिमन दख़ल बैतिया मुमिनंव्व लिल मुमिनीन वल मुमिनात।

ऐ रब मेरे बख़्श दे मुझे और मेरे माँ बाप को और जो कोई मेरे घर में ईमानदार हो कर आये और तमाम ईमानदार मर्दों और औरतों को।

٣٤-اَللّٰهُمَّ اغْسِلْ خَطَايَاىَ بِمَآءِ الثَّلْجِ وَالْبَرَدِ وَنَقِّ قَلْبِىْ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا يُنَقَّى الثَّوْبُ الْاَبْيَضُ مِنَ الدَّنَسِ وَبَاعِدْ بَيْنِىْ وَبَيْنَ خَطَايَاىَ كَمَا بَاعَدْتَّ بَيْنَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ.

३४. अल्लाहुम्मग़्सिल ख़तायाय बिमाइस्सल्जि वल बरदि व नक़्क़ि क़ल्बी मिनल ख़ताया कमा युनक़्क़स्सौबुल अबयज़। मिनद्दनसि व बाअिद बैनी व बैन ख़तायाय कमा बाअत्त बैनल मुश्रिक़ि वल मग़्रिब।

या अल्लाह! धो दे गुनाह मेरे बरफ और ओले के पानी से और पाक कर दे मेरे दिल को गुनाहों से जैसा कि सफेद कपड़ा मैल से साफ किया जाता है और मुझ में और मेरे गुनाहों में ऐसा फस्ल कर दे जैसा कि मशरिक़ और मग़रिब में तूने फस्ल किया है।

٣٥- اَللّٰهُمَّ اٰتِ نَفْسِىْ تَقْوٰهَا وَزَكِّهَآ اَنْتَ خَيْرُ مَّنْ زَكّٰهَا اَنْتَ وَلِيُّهَا وَمَوْلاٰهَا.

३५. अल्लाहुम्म आति नफ्सी तक़्वाहा व ज़क्किहा अन्त ख़ैरुम मन ज़क्काहा अन्त वलिय्युहा व मौलाहा।

ऐ अल्लाह दे मेरे नफ्स को उसकी परहेज़गारी और पाक कर दे उसे तू ही सब से बेहतर उसको पाक करने वाला है तू ही मालिक और आक़ा उस का है।

٣٦- اِنَّا نَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِمَا سَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ.

३६. इन्ना नस्अलुक मिन ख़ैरि मा सअलक मिन्हु नबिय्युक मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

हम मांगते हैं तुझ से वह सब भलाइयाँ जो माँगी

हैं तुझ से तेरे नबी मुहम्मद सल्लललाहु अलैहि व सल्लम ने।

۳۷-اِنَّا نَسْــأَلُکَ عَـزَآئِـمَ مَـغْـفِرَتِکَ وَمُنْجِيَاتِ اَمْـرِکَ وَالسَّلَامَةَ مِـنْ كُـلِّ اِثْـمٍ وَّالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّ الْفَوْزَ بِالْجَنَّةِ وَالنَّجَـاةَ مِنَ النَّارِ.

३७. इन्ना नस्अलुक अज़ाइम मग़्फिरतिक व मुन्जियति अम्रिक वस्सलामत मिन कुल्लि इस्मिंव्वल ग़नीमत मिन कुल्लि बिर्रिंव्वल फौज़ बिल जन्नति वन्नजात मिन्नार।

हम माँगते हैं तुझ से तेरी मग्फिरत के असबाब और निजात देने वाले काम और बचा रहना हर गुनाह से और हर नेकी में से हिस्सा लेने का और कामियाबी बहिश्त की और निजात दोज़ख़ से।

۳۸-اَسْــأَ لُــکَ عِــلْــمًــا نَّـافِــعًــا.

३८. अस्अलुक इल्मन्नाफिआ।

मैं माँगता हूँ तुझ से इल्म कार आमद।

۳۹- اَللّٰهُـمَّ اغْـفِـرْلِـیْ ذُنُـوْبِیْ وَخَطَیٔ وَعَـمَدِیْ.

३९. अल्लाहुम्मग्फिरली ज़ुनूबी व ख़तई व अमदी।

या अल्लाह बख़्श दे मेरे गुनाह नादानिस्ता व

दानिस्ता।

٤٠-اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ خَطِيْئَتِىْ وَجَهْلِىْ وَاِسْرَافِىْ فِىٓ اَمْرِىْ وَمَآ اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّىْ.

४०. अल्लाहुम्मग्फिरली ख़तीअती व जहली व इसराफी फी अम्री वमा अन्त आलमु बिही मिन्नी।

या अल्लाह बख़्श दे मेरी ख़ता व नादानी और मेरी ज़्यादती अपने बारे में और वह कि तू ज़्यादा जानता है उसे मुझ से।

٤١- اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ جِدِّىْ وَهَزْلِىْ.

४१. अल्लाहुम्मग्फिरली जिद्दी व हज़ली।

या अल्लाह बख़्श दे जो गुनाह मुझ को मक़सूद था और जो ग़ैर मक़सूद था।

٤٢-اَللّٰهُمَّ مُصَرِّفَ الْقُلُوْبِ صَرِّفْ قُلُوْبَنَا عَلٰى طَاعَتِكَ.

४२. अल्लाहुम्म मुसर्रिफुल कुलूबि सर्रिफ कुलूबना अला ताअतिक।

ऐ अल्लाह फेरने वाले दिलों को फेर दिल हमारे अपनी ताअत की तरफ।

٤٣-اَللّٰهُمَّ اهْدِنِىْ وَسَدِّدْنِىْ.

४३. अल्ला हुम्महदिनी व सद्दिदनी।

या अल्लाह मुझ को हिदायत कर और मुझ को इसतवार रख।

۴۴-اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الْهُدٰی وَالتُّقٰی وَالْعَفَافَ وَالْغِنٰی.

४४. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल हुदा वत्तुक़ा वल अफाफ वल ग़िना।

या अल्लाह मैं माँगता हूँ तुझ से हिदायत और परहेज़गारी और पारसाई और सैर चश्मी।

۴۵- اَللّٰهُمَّ اَصْلِحْ لِیْ دِیْنِیَ الَّذِیْ هُوَ عِصْمَةُ اَمْرِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ دُنْیَایَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَاشِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ اٰخِرَتِیَ الَّتِیْ فِیْهَا مَعَادِیْ وَاجْعَلِ الْحَیٰوةَ زِیَادَةً لِّیْ فِیْ کُلِّ خَیْرٍوَّاجْعَلِ الْمَوْتَ رَاحَةً لِّیْ مِنْ کُلِّ شَرٍّ.

४५. अल्लाहुम्म अस्लिह दीनियल लज़ी हुव इसमतु अमरी व असलिह ली दुनियायल्लती फीहा मआशी व असलिह ली आख़िरतियल्लती फीहा मआदी वज अलिल हयात ज़ियादल्ली फी कुल्लि ख़ैरिव्वजअलिल मौत राहतल्ली मिन कुल्लि शर।

या अल्लाह दुरुस्त रख मेरा दीन जो मेरे हक़ में बचाव है और दुरुस्त रख मेरी दुनिया जिस में मेरी मआश है और दुरुस्त रख मेरी आख़िरत जहाँ मुझे

लौटना है और कर ज़िंदगी को मेरे लिए तरक़्क़ी हर भलाई में और कर मौत को मेरे लिए चैन हर बुराई से।

٤٦-اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَعَافِنِیْ وَارْزُقْنِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْعَجْزِ وَالْکَسَلِ وَالْجُبْنِ وَالْهَرَمِ وَالْمَغْرَمِ وَالْمَأْثَمِ وَمِنْ عَذَابِ النَّارِ وَفِتْنَةِ النَّارِ وَفِتْنَةِ الْقَبْرِ وعَذَابِ الْقَبْرِ وَشَرِّ فِتْنَةِ الْغِنٰى وَشَرِّ فِتْنَةِ الْفَقْرِ وَمِنْ شَرِّفِتْنَةِ الْمَسِيْحِ الدَّجَّالِ وَمِنْ فِتْنَةِ الْمَحْيَا وَالْمَمَاتِ وَمِنَ الْقَسْوَةِ وَالْغَفْلَةِ وَالْعَيْلَةِ وَالذِّلَّةِوَالْمَسْكَنَةِ وَالْکُفْرِ وَالْفُسُوْقِ وَالشِّقَاقِ وَالسُّمْعَةِ وَالرِّيَآءِ وَمِنَ الصَّمَمِ وَالْبَکَمِ وَالْجُنُوْنِ وَالْجُذَامِ وَسَيِّءِ الْاَسْقَامِ وَضِلَعِ الدَّيْنِ وَمِنَ الهَمِّ وَالْحُزْنِ وَالْبُخْلِ وَغَلَبَةِ الرِّجَالِ وَمِنْ اَنْ اُرَدَّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ وَفِتْنَةِ الدُّنْيَا وَمِنْ عِلْمٍ لَّا يَنْفَعُ وَقَلْبٍ لَّا يَخْشَعُ وَمِنْ نَّفْسٍ لَّا تَشْبَعُ وَمِنْ دَعْوَةٍ لَّا يُسْتَجَابُ لَهَا.

४६. अल्लाहुम्मग्फिरली वरहम्नी व आफिनी वरज़ुक़नी अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल

अजज़ि वल कसलि वल जुबनि वल हरमि वल मग़रमि वल मासमि व मिन अज़ाबिन्नारि व फितनतिन्नारि व फित्नतिल क़ब्रि व अज़ाबिल क़ब्रि व शर्रि फित्नतिल ग़िना व शर्रि फित्नतिल फक़्री व मिन शिर्रि फित्नतिल मसीहिद्दज्जालि व मिन फित्नतिल महया वल ममाति व मिनल क़स्वति वल ग़फ्लति वल अैलति वज़्ज़िल्लति वल मस्कनति वल कुफ्री वल फुसूक़ि वश्शिकाक़ि वस्सुमअति वर्रियाई व मिनस्सममि वल बकमि वल जुनूनि वल जुज़ामि व सय्यिइल असक़ामि व ज़िलअिद्दैनि व मिनल हम्मि वल हुज़नि वल बुख़्लि व ग़लबतिर्रिजालि व मिन अन उरद्द इला अरज़लिल उमुरि व फित्नतिद्दुनिया व मिन इल्मिल्ला यन्फउ व क़ल्बिल्ला यख़्शउ व मिन्नफसिल्ला तशबउ व मिन दावतिल्ला युस्तजाबु लहा।

या अल्लाह बख़्श दे मुझे और रहम कर मुझ पर और अमन दे मुझे और रिज़्क़ दे मुझे। या अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ कम हिम्मती से और सुस्ती से और बुज़दिली से और बहुत बुढ़ापे से और क़र्ज़ से और गुनाह से और दोज़ख़ के अज़ाब से और दोज़ख़ के फित्ना से और क़ब्र के फित्ना से और क़ब्र के अज़ाब से और मालदारी के बुरे

फित्ना से और मुहताजी के बुरे फित्ना से और मसीह दज्जाल के बुरे फित्ना से और जिंदगी व मौत के फित्ना से और सख़्त दिली से और ग़फलत से और तंगदस्ती से और ज़िल्लत से और ख़्वारी से और कुफ्र से और फिस्क़ से और ज़िद्दा ज़िद्दी से और सुनाने से और दिखाने से और बहरे होने से और गूंगे होने से और जुनून से और जुज़ाम से और बुरी बीमारियों से और बारे क़र्ज़ से और फिक्र से और ग़म से और बुख़्ल से और लोगों के दबा लेने से और उस से कि नाकारा उम्र तक पहुंचूँ और दुनिया के फितना से और उस इल्म से जो नफा न दे और उस दिल से जिस में खुशूअ न हो और उस नफ्स से जा सैर न हो और उस दुआ से जो मक़बूल न हो।

☆☆☆

अल मंज़िलुस्सानी यवमल अहद

दूसरी मंज़िल बरोज़ यक शंबा (इतवार)

٤٧-رَبِّ اَعِنِّیْ وَلَاتُعِنْ عَلَیَّ وَانْصُرْنِیْ وَلَا تَنْصُرْ عَلَیَّ وَامْکُرْلِیْ وَلَا تَمْکُرْ عَلَیَّ وَاهْدِنِیْ وَیَسِّرِ الْهُدٰی لِیْ وَانْصُرْنِیْ عَلٰی مَنْ بَغٰی عَلَیَّ رَبِّ اجْعَلْنِیْ لَکَ ذَکَّارًا لَّکَ شَکَّارًا لَّکَ رَهَّابًا لَّکَ مِطْوَاعًا لَّکَ مُطِیْعًا اِلَیْکَ مُخْبِتًا اِلَیْکَ اَوَّاهًا مُّنِیْبًا. رَبِّ تَقَبَّلْ تَوْبَتِیْ وَاغْسِلْ حَوْبَتِیْ وَاَجِبْ دَعْوَتِیْ وَثَبِّتْ حُجَّتِیْ وَسَدِّدْ لِسَانِیْ وَاهْدِ قَلْبِیْ وَاسْلُلْ سَخِیْمَةَ صَدْرِیْ.

४७. रब्बि अइन्नी वला तुअिन अलय्या वनसुरनी वला तनसुर अलय्या वमकुरली वला तम्कुर अलय्य वहदिनी व यस्सिरिल हुदा ली वनसुरनी अला मन बग़ा अलय्य रब्बिजअलनी लक ज़क्कारल्लक शक्कारल्लक रह्हाबल्लक मितवा अल्लक मुतीअतन इलैक मुख़्बितन इलैक अव्वाहम्मुनीबा। रब्बि तक़ब्बल तौबती वग़्सिल हौबती व अजिब दावती व सब्बित हुज्जती व सद्दिद

लिसानी वहदि क़ल्बी वस्लुल सख़ीमत सदरी।

ऐ रब मेरे मदद कर मेरी और मेरे मुक़ाबला में किसी की मदद मत कर और फतह दे मुझे और मेरे ऊपर किसी को फतह न दे और तदबीर कर मेरे लिए और मेरे ऊपर किसी की तदबीर न चला और हिदायत कर मुझे और आसान कर हिदायत को मेरे लिए और मुझ को मदद दे उस पर जो मुझ पर ज़्यादती करे ऐ रब मेरे कर दे मुझे ऐसा कि मैं तुझे बहुत याद किया करूँ तेरा बहुत शुक्र किया करूँ तुझ से बहुत डरा करूँ तेरी बहुत फरमांबरदारी किया करूँ तेरा बहुत मुतीअ रहूँ तुझ ही से सुकून पानेवाला तेरी ही तरफ मुतवज्जेह होने वाला रूजूह रहने वाला ऐ रब मेरे क़बूल कर मेरी तौबा और धो दे मेरे गुनाह और क़बूल कर मेरी दुआ और क़ायम रख मेरी हुज्जत और रास्त रख मेरी ज़बान और हिदायत दे मेरे दिल को और निकाल दे मेरे सीने की कुदूरत।

٤٨-اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلَنَا وَارْحَمْنَا وَارْضَ عَنَّاوَاَدْخِلْنَا الْجَنَّةَ وَنَجِّنَا مِنَ النَّارِ وَاَصْلِحْ لَنَا شَأْنَنَا كُلَّهُ.

४८. अल्लाहुम्मग्फिरलना वरहमना वर्ज़ अन्ना व अदख़िलनल जन्नत व नज्जिना मिनन्नारि व

असलिह लना शानना कुल्लहू।

या अल्लाह बख़्श दे हमें और रहम कर हम पर और राज़ी हो जा हम से और दाख़िल कर हमें बहिश्त में और बचा हमें दोज़ख़ से और दोस्त कर दे हमारे हाल सब।

۴۹-اَللّٰهُمَّ اَلِّفْ بَيْنَ قُلُوْبِنَا وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَيْنِنَا وَاهْدِنَا سُبُلَ السَّلَامِ وَنَجِّنَا مِنَ الظُّلُمَاتِ اِلَى النُّوْرِ وَجَنِّبْنَا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَابَطَنَ وَبَارِكْ لَنَا فِیْ اَسْمَاعِنَا وَاَبْصَارِنَا وَقُلُوْبِنَا وَ اَزْوَاجِنَا وَ ذُرِّيَّاتِنَا وَتُبْ عَلَيْنَآ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ وَاجْعَلْنَا شَاكِرِيْنَ لِنِعْمَتِكَ مُثْنِيْنَ بِهَا قَابِلِيْهَا وَاَتِمَّهَا عَلَيْنَا.

४९. अल्लाहुम्म अल्लिफ बैन कुलूबिना वअस्लिह ज़ात बैनिना वहदिना सुबुलस्सलाम व नज्जिना मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि व जन्निबनल फवाहिश मा ज़हर मिन्हा वमा बतन व बारिक लना फी असमाअीना व अबासारिना व कुलूबिना व अज़वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना व तुब अलैना इन्नक अन्तत्तव्वाबुर्रहीम वजअलना शकिरीन लिनेअमतिक मुसनीन बिहा क़ाबिलीहा व अतिम्महा अलैना।

या अल्लाह उलफत दे हमारे दिलों में और इस्लाह कर दे हमारे बाहमी तअल्लुक़ात की और दिखा हमें सलामती के रास्ते और निकाल ले हमें अंधेरियों से नूर की तरफ और अलाहिदा रख हमें बे हयाईयों से जो ज़ाहिरी हों और जो बातिनी हो और बरकत दे हमें हमारी शुनवाइयों में और हमारी बीनाइयों में और हमारे दिलों में और बीबीयों में और हमारी औलाद में और तौबा क़बूल कर हमारी क्योंकि तू ही है तौबा क़बूल करने वाला मेहरबान और कर दे हमें अपनी नेमत का शुक्र गुज़ार और सना ख़्वाँ नेमत के क़ाबिल और पूरा कर दे हम पर उसे ।

٥٠- اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ الثَّبَاتَ فِی الْاَمْرِ وَاَسْأَلُکَ عَزِیْمَةَ الرُّشْدِ وَاَسْأَلُکَ شُکْرَ نِعْمَتِکَ وَ حُسْنَ عِبَادَتِکَ وَاَسْأَلُکَ لِسَانًا صَادِقًاوَّ قَلْبًا سَلِیْمًا وَّخُلُقًا مُّسْتَقِیْمًا وَّاَسْأَلُکَ مِنْ خَیْرِ مَاتَعْلَمُ وَ اَسْتَغْفِرُکَ مِمَّا تَعْلَمُ اِنَّکَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ.

५०. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकस्सबात फिल अमरी व अस्अलुक अज़ीमतर्रुशदि व अस्अलुक शुक्र नेअमतिक व हुस्न इबादतिक व अस्अलुक लिसानन

सादिक़ंव्व क़ल्बन सलीमंव्व ख़ुलुक़म मुस्तक़ीमंव्व अस्अलुक मिन ख़ैरि मा तअलमु व अस्तग़्फिरुक मिम्मा तअलमु इन्नक अन्त अल्लामुल ग़ुयूब।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से साबित क़दमी अमर दीन में और मांगता हूँ तुझ से आला दर्जा की सलाहियत और मांगता हूँ तुझ से तेरी नेमत का शुक्र और तेरी इबादत की ख़ूबी और माँगता हूँ मैं तुझ से ज़बान सच्ची और क़ल्बे सलीम और अख़्लाक़े मतीन और माँगता हूँ तुझ से वह भलाई जिस को तू जानता है और माफी चाहता हूँ उस गुनाह से जिस को तू जानता है तू ही छुपी हुई चीज़ों का जानने वाला है।

٥١-اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ مَاقَدَّمْتُ وَمَآ اَخَّرْتُ وَمَآ اَسْرَرْتُ وَمَآ اَعْلَنْتُ وَمَآ اَنْتَ اَعْلَمُ بِهٖ مِنِّىْ.

५१. अल्लाहुम्मग़्फिरली मा क़द्दमतु वमा अख़्ख़रतु वमा असररतु वमा आलनतु वमा अन्त आलमु बिही मिन्नी।

या अल्लाह बख़्श दे जो कुछ पहले किया मैंने और जो कुछ बाद में किया और जो कुछ पोशिदा किया और जो कुछ किया ऐलानिया तू उसे ज़्यादा जानता है मुझ से।

۵۲-اَللّٰھُمَّ اقْسِمْ لَنَا مِنْ خَشْیَتِکَ مَا تَحُوْلُ بِہٖ بَیْنَنَا وَبَیْنَ مَعَاصِیْکَ وَمِنْ طَاعَتِکَ مَا تُبَلِّغُنَا بِہٖ جَنَّتَکَ وَ مِنَ الْیَقِیْنِ مَاتُھَوِّنُ بِہٖ عَلَیْنَامَصَائِبَ الدُّنْیَا وَمَتِّعْنَا بِاَسْمَاعِنَا وَاَبْصَارِنَا وَقُوَّتِنَا مَآ اَحْیَیْتَنَا وَاجْعَلْہُ الْوَارِثَ مِنَّا وَاجْعَلْ ثَأْرَنَا عَلٰی مَنْ ظَلَمَنَا وَانْصُرْنَا عَلٰی مَنْ عَادَانَا وَلَا تَجْعَلْ مُصِیْبَتَنَا فِیْ دِیْنِنَا وَلَا تَجْعَلِ الدُّنْیَآ اَکْبَرَھَمِّنَاوَلَا مَبْلَغَ عِلْمِنَا وَلَا غَایَۃَ رَغْبَتِنَا وَلَاتُسَلِّطْ عَلَیْنَا مَنْ لَا یَرْحَمُنَا.

५२. अल्लाहुम्माक़सिम लना मिन ख़शयतिक मा तहूलु बिही बैनना व बैन माआसिक व मिन ताअतिक मा तुबल्लिग़ुना बिही जन्नतक व मिनल यक़ीनि मा तुहव्विनु बिही अलैना मसाइबद्दुनिया व मत्तिअना बिअस्माअिना व अबसारिना व कुव्वतिना मा अहयैतना वजअलहुल वारिस मिन्ना वजअल सारना अला मन ज़लमना वनसुरना अला मन आदाना वला तजअल मुसीबतना फी दीनिना वला तजअलिद्दुनिया अकबर हम्मिना वला मबलग़ इल्मिना वला ग़ायत रग़बतिना वला तुसल्लित अलैना

मल ला यरहमुना।

या अल्लाह हिस्सा दे हमें ख़ौफ से इतना कि तू हायल हो जाये उसके ज़रिये हम में और तेरे गुनाहों में और अपनी इबादत से इतना कि पहुंचा दे तू हमें बज़रिया उसके अपनी जन्नत में और यक़ीन से इतना कि सहल कर दे उस से हम पर दुनिया की मुसीबतें और कार आमद रख हमारी शुनवाइयाँ और हमारी बीनाइयाँ और हमारी कुव्वत जब तक हमें ज़िंदा रखे और करना उसकी ख़ैर को बाक़ी बाद हमारे और हमारा इंतिक़ाम ले उस से जो हम पर जुल्म करे और मदद दे हमें उस पर जो हम से दुश्मनी करे और मत कर मुसीबत हमारी हमारे दीन में और मत कर दुनिया को मक़सूदे आज़म हमारा और न इंतिहा हमारी मालूमात की और न इंतिहा हमारी रग़बत की और न मुसल्लत कर हम पर उसको जो हम पर रहम न करे।

٥٣-اَللّٰهُمَّ زِدْنَا وَلَا تَنْقُصْنَا وَاَكْرِمْنَا وَلَاتُهِنَّا وَاَعْطِنَا وَلَا تَحْرِمْنَا وَاٰثِرْنَاوَلَا تُؤْثِرْ عَلَيْنَا وَاَرْضِنَا وَارْضَ عَنَّا.

५३. अल्लाहुम्म ज़िदना वला तन्कुसना व

अकरिमना वला तुहिन्ना व आतैना वला तहरिमना व आसिरना वला तूसिर अलैना व अर्ज़िना वर्ज़ा अन्ना।

या अल्लाह हमें ज़्यादा कर और घटा मत और आबरू दे हमें और ख़्वार न कर और अतिया दे हमें और महरूम न कर और हमें बढ़ाये रख और औरों को हम पर न बढ़ा और हमें ख़ुश कर और हम से राज़ी हो जा।

٥٤- اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِىْ رُشْدِىْ.

५४. अल्लाहुम्म अल हिम्नी रुश्दी।

या अल्लाह दिल में डाल दे मेरे मेरी सलाहियत।

٥٥- اَللّٰهُمَّ قِنِىْ شَرَّ نَفْسِىْ وَاعْزِمْ لِىْ عَلٰى رُشْدِ اَمْرِىْ.

५५. अल्लाहुम्म क़िनी शर्र नफ्सी वअज़िम ली अला रुश्दी अम्री।

या अल्लाह महफ़ूज़ रख मुझे मेरे नफ्स की बुराई से और हिम्मत दे मुझे अपने काम की इस्लाह पर।

٥٦- اَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَافِيَةَ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ.

५६. अस्अलुल्लाहल आफियत फिद्दुनिया वल आख़िरति।

मांगता हूँ मैं ख़ुदा तआला से अमन दुनिया और आख़िरत में।

٥٧- اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ فِعْلَ الْخَیْرَاتِ وَ تَرْکَ الْمُنْکَرَاتِ وَحُبَّ الْمَسَاکِیْنِ وَاَنْ تَغْفِرَ لِیْ وَتَرْحَمَنِیْ وَاِذَآ اَرَدْتَّ بِقَوْمٍ فِتْنَةً فَتَوَفَّنِیْ غَیْرَ مَفْتُوْنٍ وَّ اَسْئَلُکَ حُبَّکَ وَحُبَّ مَنْ یُّحِبُّکَ وَحُبَّ عَمَلٍ یُّقَرِّبُ اِلٰی حُبِّکَ.

५७. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक फेअलल ख़ैराति व तर्कल मुन्कराति व हुब्बल मसाकीनि व अन तग़्फिरली व तरहमनी व इज़ा अरत्त बि क़ौमिन फितानतन फतवफ्फनी ग़ैर मफतूनंव्व अस्अलुक हुब्बक व हुब्ब मंय्युहिब्बुक व हुब्ब अमलिंय्युक़र्रिबु इला हुब्बिक।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से तौफीक़ नेक कामों के करने की और बुराइयों के छोड़ने की और मुहब्बत ग़रीबों की और यह कि बख़्श दे तू मुझे और रहम करे तू मुझ पर और जब इरादा करे तू किसी क़ौम पर बला नाज़िल करने का तो उठा लेना मुझे क़ब्ल उसके कि बला में पड़ूँ और माँगता हूँ मैं तुझ से तेरी मुहब्बत और उस शख़्स की मुहब्बत जो तुझ से मुहब्बत रखता हो और उस

अमल की मुहब्बत जो क़रीब कर दे तेरी मुहब्बत से।

٥٨-اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ اَحَبَّ اِلَيَّ مِنْ نَّفْسِيْ وَاَهْلِيْ وَمِنَ الْمَآءِ الْبَارِدِ.

५८. अल्लाहुम्मजअल हुब्बक अहब्ब इलय्या मिन नफ्सी व अहली व मिनल माइल बारिद।

या अल्लाह कर दे अपनी मुहब्बत ज़्यादा प्यारी मुझे मेरी जान से और घर वालों से और ठंडे पानी से।

٥٩- اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِيْ حُبَّكَ وَحُبَّ مَنْ يَّنْفَعُنِيْ حُبُّهٗ عِنْدَكَ اَللّٰهُمَّ فَكَمَا رَزَقْتَنِيْ مِمَّآ اُحِبُّ فَاجْعَلْهُ قُوَّةً لِّيْ فِيْمَا تُحِبُّ اَللّٰهُمَّ وَمَا زَوَيْتَ عَنِّيْ مِمَّا اُحِبُّ فَاجْعَلْهُ فَرَاغًا لِيْ فِيْمَا تُحِبُّ.

५९. अल्लाहुम्मरजुक़नी हुब्बक व हुब्ब मंय्यन फउनी हुब्बुहू इन्दक अल्लाहुम्म फकमा रज़क़तनी मिम्मा उहिब्बु फजअलहू कुव्वतल्ली फीमा तुहिब्बु अल्लाहुम्म वमा ज़वैत अन्नी मिम्मा उहिब्बु फजअलहु फराग़न ली फीमा तुहिब्बु।

या अल्लाह नसीब कर मुझे अपनी मुहब्बत और उस शख़्स की मुहब्बत जिस की मुहब्बत तेरे

नज़दीक मेरे कार आमद हो या अल्लाह जिस तरह दिया है तूने मुझे जो कुछ मुझे पसंद है तू कर दे उसे मुईन मेरा उस काम में जो तुझे पसंद है या अल्लाह और जो कुछ दूर किया तूने मुझ से उन चीज़ों में से जो मुझ को पसंद है तू कर दे उस से मेरे हक़ में उन चीज़ों के लिए जो तुझे पसंद हैं।

٦٠-يَامُقَلِّبَ الْقُلُوْبِ ثَبِّتْ قَلْبِىْ عَلٰى دِيْنِکَ.

६०. या मुक़ल्लिबल कुलूबि सब्बित क़ल्बी अल दीनिक।

ऐ पलटने वाले दिलों के मज़बूत रखना दिल मेरा अपने दीन पर।

٦١-اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُکَ اِيْمَانًا لَّايَرْتَدُّ وَنَعِيْمًا لَّا يَنْفَدُ وَمُرَافَقَةَ نَبِيِّنَا مُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ فِىْ اَعْلٰى دَرَجَةِ الْجَنَّةِ جَنَّةِ الْخُلْدِ.

६१. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ईमानल्ला यरतद्दु व नईमल्ला यनफदु व मुराफक़त नबिय्यिना मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फी आला दरजतिल जन्नतिल ख़ुल्द।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से ऐसा ईमान कि फिर न फिरे और ऐसी नेमत कि ख़त्म न हो और मईयत अपने नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम की बर तरीन मुक़ाम जन्नत में यानी जन्नतुल ख़ुल्द में।

٦٢-اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ صِحَّةً فِیْ اِیْمَانٍ وَّاِیْمَانًا فِیْ حُسْنِ خُلُقٍ وَّنَجَاحًا تُتْبِعُهٗ فَلَاحًا وَّرَحْمَةً مِّنْکَ وَعَافِیَةً وَّمَغْفِرَةً مِّنْکَ وَرِضْوَانًا.

६२. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक सिह्हतन फी ईमानिंव्व ईमानन फी हुस्नि ख़ुलुकिंव्व नजाहन तुतबिउहू फलाहंव्व रहमतम मिनक व आफियतंव्व मग़्फिरतम मिनक व रिज़वाना।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से तंदुरुस्ती ईमान के साथ और ईमान हुस्ने ख़ुल्क़ के साथ और कामियाबी जिस के पीछे फलाह भी दे तू मुझे रहमत तेरी तरफ से और अमन और बख़्शिश तेरी तरफ से और खुशनुदी।

٦٣-اَللّٰھُمَّ انْفَعْنِیْ بِمَا عَلَّمْتَنِیْ وَعَلِّمْنِیْ مَایَنْفَعُنِیْ

६३. अल्लाहुम्मनफअनी बिमा अल्लमतनी व अल्लिमनी मा यनफउनी।

या अल्लाह नफा दे मुझे उस इल्म से जो तूने मुझे दिया और दे मुझे वह इल्म कि नफा दे मुझे।

٦٤-اَللّٰھُمَّ بِعِلْمِکَ الْغَیْبَ وَقُدْرَتِکَ عَلَی الْخَلْقِ

اَحْيِنِىْ مَا عَلِمْتَ الْحَيٰوةَ خَيْرًا لِّىْ وَتَوَفَّنِىْ اِذَا عَلِمْتَ الْوَفَاةَ خَيْرًا لِّىْ وَ اَسْأَلُكَ خَشْيَتَكَ فِىْ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ وَكَلِمَةَ الْاِخْلَاصِ فِى الرِّضٰى وَالْغَضَبِ وَاَسْأَلُكَ نَعِيْمًا لَا يَنْفَدُ وَ قُرَّةَ عَيْنٍ لَا تَنْقَطِعُ وَاَسْأَلُكَ الرِّضَاءَ بِالْقَضَاءِ وَبَرْدَ الْعَيْشِ بَعْدَ الْمَوْتِ وَلَذَّةَ النَّظَرِ اِلٰى وَجْهِكَ وَالشَّوْقَ اِلٰى لِقَائِكَ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ ضَرَّآءَ مُضِرَّةٍ وَّ فِتْنَةٍ مُّضِلَّةٍ اَللّٰهُمَّ زَيِّنَّا بِزِيْنَةِ الْاِيْمَان وَاجْعَلْنَا هُدَاةً مُّهْتَدِيْنَ.

६४. अल्लाहुम्म बि इल्मिकल ग़ैब व क़ुदरतिक अलल ख़ल्क़ि अहयनी मा अलिमतल हयात ख़ैरल्ली व तवफ्फनी इज़ा अलिमतल वफात ख़ैरल ली व अस्अलुक ख़ाश्यतक फिल ग़ैबि वश्शहादति व कलिमतल इख़्लासि फिर्रिज़ा वल ग़ज़बि व अस्अलुक नअीमन ला यनफदु व क़ुर्रत अैनिन वला तन्क़तिअु व अस्अलुकर्रिज़ा बिल क़ज़ाइ व बरदल अैशि बादल मौति व लज़्ज़तन्नज़रि इला वजहिक वश्शौक़ इला लिक़ाइक व अअूज़ुबिक मिन ज़र्राअ मुज़िर्रतिंव फितनतिम मुज़िल्लतिन अल्लाहुम्म ज़ैय्यिना बिज़िनतिल ईमानि वजअलना हुदातम मुहतदीन।

या अल्लाह बवसीला अपने आलिमुल ग़ैब होने के

और मख़्लूक़ पर क़ादिर होने के ज़िंदा रखना मुझे जब तक तेरे इल्म में ज़िंदगी बेहतर हो मेरे लिए और उठा लेना मुझे जब तेरे इल्म में मौत बेहतर हो मेरे लिए और मांगता हूँ मैं तुझ से तेरा डर ग़ायब और हाज़िर में और इख़्लास का बोल अैश और तैश में और मांगता हूँ तुझ से ऐसी नेमत कि ख़त्म न हो और ऐसी आँखों की ठंडक कि जाती न रहे और मांगता हूँ मैं तुझ से तेरी रज़ा मंदी तेरे हुक्म पर और ख़ुश अैशी मौत के बाद और मज़ा तेरे दीदार का और तड़प तेरे विसाल की और पनाह चाहता हूँ मैं बज़रिया तेरी ज़ात के मुसीबत आज़ार देने वाली से और बला गुमराह करने वाली से, या अल्लाह आरास्ता कर दे हमें ईमान की ज़ीनत से और कर दे हमें राह नुमा और राहबीं

٦٥-اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ مِنَ الْخَیْرِ کُلِّهٖ عَاجِلِهٖ وَ اٰجِلِهٖ مَا عَلِمْتُ مِنْهُ وَ مَا لَمْ اَعْلَمْ.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिनल ख़ैरि कुल्लिही आजिलिही व आजिलिही मा अलिम्तु मिन्हु वमा लम आलम।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से भलाई सब की सब इस वक़्त की और आइंदा की उस में से जिस

का मुझे इल्म है और जिस का नहीं।

٦٦-اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ مِنْ خَيرِ مَا سَالَكَ عَبْدُكَ وَنَبِيُّكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ الْجَنَّةَ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَا مِنْ قَوْلٍ اَوْ عَمَلٍ وَّ اَسْاَلُكَ اَنْ تَجْعَلَ كُلَّ قَضَاءٍ لِّىْ خَيْرًا.

६६.अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन ख़ैरि मा सअलक अब्दुक व नबिय्युक अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल जन्नत वमा क़र्रब इलैहा मिन क़ौलिन औ अमलिंव्व अस्अलुक अन तजअल कुल्ल क़ज़ाइल ली ख़ैरा।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से वह सब भलाई जिस को मांगा है तुझ से तेरे बंदे और तेरे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से जन्नत और जो चीज़ उसकी तरफ क़रीब करने वाली हो, क़ौल या अमल और मांगता हूँ मैं तुझ से यह कि कर दे अपने हुक्म को मेरे हक़ में बेहतर।

٦٧-وَ اَسْاَلُكَ مَا قَضَيْتَ لِىْ مِنْ اَمْرٍ اَنْ تَجْعَلَ عَاقِبَتَهُ رُشْدًا.

६७. व अस्अलुक मा क़ज़ैत ली मिन अम्रिन अन तजअल आक़िबतहू रुशदा।

और मांगता हूँ मैं तुझ से जो कुछ जारी करे तू मेरे हक़ में कोई बात कि करे तू अंजाम उसका भलाई।

٦٨-اَللّٰھُمَّ اَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِی الْاُمُوْرِ کُلِّھَا وَاَجِرْنَا مِنْ خِزْیِ الدُّنْیَا وَعَذَابِ الْاٰخِرَۃِ.

६८. अल्लाहुम्म अहसिन आक़िबतना फिल उमूरि कुल्लिहा व अजिरना मिन ख़िज़यिद्दुनिया व अज़ाबिल आख़िरति।

या अल्लाह अच्छा कर अंजाम हमारा तमाम कामों में और पनाह में रख हमें रुसवाई से दुनिया की और अज़ाबे आख़िरत से।

٦٩-اَللّٰھُمَّ احْفَظْنِیْ بِالْاِسْلَامِ قَآئِمًا وَّاحْفَظْنِیْ بِالْاِسْلَامِ قَاعِدًا وَّاحْفَظْنِیْ بِالْاِسْلَامِ رَاقِدًا وَّلَا تُشْمِتْ بِیْ عَدُوًّا وَّلَا حَاسِدًا اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ مِنْ کُلِّ خَیْرٍ خَزَائِنُہٗ بِیَدِکَ.

६९. अल्लाहुम्महफज़नी बिल इस्लामि क़ाइमांव्वह फज़नी बिल इस्लामि क़ाइदंव्वहफज़नी बिल इस्लामि राक़िदंव्वला तुशमित बी अदुव्वंव्वला हासिदन

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन कुल्लि ख़ैरिन ख़ज़ाइनुहू बियदिक।

या अल्लाह इस्लाम के साथ निगाह रख मुझे जब खड़ा हूँ और निगाह रख मेरी इस्लाम पर जब बैठा हूँ और निगाह रख मेरी इस्लाम के साथ जब लेटा हूँ और न तअना का मौक़ा दे मुझ पर किसी दुश्मन को और न किसी हासिद को या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से हर भलाई जिस के ख़ज़ाने तेरे क़ब्ज़ये कुदरत में हैं।

٧٠-وَاَسْأَلُکَ مِنَ الْخَیْرِ الَّذِیْ هُوَ بِیَدِکَ کُلِّهٖ.

७०. व अस्अलुक मिनल ख़ैरिल लज़ी हुव बियदिक कुल्लिही।

और मैं मांगता हूँ तुझ से वह सब की सब भलाई कि वह तेरे क़ब्ज़े में है।

٧١. اَللّٰهُمَّ لَا تَدَعْ لَنَا ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا دَیْنًا اِلَّا قَضَیْتَهٗ وَلَا حَاجَةً مِّنْ حَوَائِجِ الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ اِلَّا قَضَیْتَهَا یَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ.

७१. अल्लाहुम्म ला तदअ लना ज़ंबन इल्ला ग़फरतहू वला हम्मन इल्ला फर्रजतहू वला दैनन इल्ला क़ज़ैतहू वला हाजतम मिन हवाइजिद्दुनिया वल आख़िरति इल्ला क़ज़ैतहा या अरहमर्राहिमीन।

या अल्लाह मत छोड़ना हमारा कोई गुनाह मगर कि बख़्श देना उसे और न कोई फ़िक्र मगर कि ज़ाइल कर देना उसे और न कुछ क़र्ज़ मगर कि अदा कर देना उसे और न कोई हाजत दुनिया और आख़िरत की हाजतों से मगर कि पूरा कर देना उसे ऐ सब से बढ़ कर रहम करनेवाले।

۷۲-اَللّٰھُمَّ اَعِنَّا عَلٰی ذِکْرِکَ وَشُکْرِکَ وَحُسْنِ عِبَادَتِکَ.

७२. अल्लाहुम्म अइन्ना अला ज़िक्रिक व शुक्रिक व हुस्नि इबादतिक।

ऐ अल्लाह मदद कर हमारी अपने ज़िक्र और अपने शुक्र और अपनी इबादत की ख़ूबी पर।

۷۳. اَللّٰھُمَّ قَنِّعْنِیْ بِمَا رَزَقْتَنِیْ وَبَارِکْ لِیْ فِیْہِ وَاخْلُفْ عَلٰی کُلِّ غَائِبَۃٍ لِّیْ بِخَیْرٍ.

७३. अल्लाहुम्म क़न्नीनी बिमा रज़क़तनी व बारिक ली फीहि वख़्लुफ अला कुल्लि ग़ायबतिल ली बिख़ैर।

या अल्लाह क़नाअत दे मुझे उस पर जो नसीब किया तूने मुझे और बरकत दे मेरे लिए उस में और निगराँ रह मेरी हर उस चीज़ पर जो मेरे सामने नहीं है ख़ैरियत के साथ।

۷۴. اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ عِیْشَۃً نَّقِیَّۃً وَّ مِیْتَۃً سَوِیَّۃً

وَّ مَــــرَدًّا غَـــيْـــرَ مَـخْـزِيٍّ وَّلاَ فَـاضِـحٍ.

७४. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ईशतन नकि़य्यतंव्व मीततन सविय्यतंव्व मरद्दन ग़ैर मख़्ज़िय्यिंव्वला फाज़िहिन।

ऐ अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से ज़िंदगी साफ और मौत ढंग की और इंतेक़ाल जिस में रुसवाई और फज़ीहत न हो।

٧٥. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ ضَعِيْفٌ فَقَوِّفِىْ رِضَاكَ ضُعْفِىْ وَخُذْ اِلَى الْخَيْرِ بِنَاصِيَتِىْ وَاجْعَلِ الْاِسْلَامَ مُنْتَهٰى رِضَآئِىْ وَ اِنِّىْ ذَلِيْلٌ فَاَعِزَّنِىْ وَاِنِّىْ فَقِيْرٌ فَارْزُقْنِىْ.

७५. अल्लाहुम्म इन्नी ज़ईफुन फक़व्वि फी रिज़ाक ज़ुअफी व ख़ुज़ इलल ख़ैरि बिनासियती वजअलिल इस्लाम मुन्तहा रिज़ाई व इन्नी ज़लीलुन फअइज़्ज़नी व इन्नी फक़ीरुन फरज़ुकनी।

या अल्लाह मैं कमज़ोर हूँ पस कुव्वत से बदल दे अपनी मरज़ियात में ज़ोफ मेरा और कुशाँ कुशाँ ले जो मुझे ख़ैर की तरफ और कर दे इस्लाम को इन्तिहा मेरी पसंद का और मैं ज़लील हूँ पस इज़्ज़त दे मुझे और मैं मुहताज हूँ पस रिज़्क़ दे मुझे।

٧٦. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَسْأَلَةِ وَ خَيْرَ

الــــدُّعَــاءِ وَ خَـيْـرَ الـنَّـجَاحِ وَخَيرَ الْعَمَلِ وَخَيْرَ الثَّوَابِ وَ خَيْـرَالْـحَيَاةِ وَ خَـيْـرَ الْمَمَاتِ وَ ثَبِّتْنِىْ وَ ثَـقِّـلْ مَـوَازِيْنِىْ وَ حَـقِّقْ اِيْـمَـانِـىْ وَارْفَعْ دَرَجَتِىْ وَ تَـقَبَّـلْ صَلاَتِـىْ وَاَسْأَلُكَ الدَّرَجَاتِ الْعُلٰى مِـنَ الْـجَـنَّةِ اٰمِيْنَ اَللّٰهُـمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ فَوَاتِـحَ الْخَيْرِ وَ خَـوَاتِـمَـهٗ وَ جَوَامِعَهٗ وَاَوَّلَهٗ وَ اٰخِرَهٗ وَظَاهِرَهٗ وَبَاطِنَهٗ اَلـلّٰهُـمَّ اِنِّـىْ اَسْأَلُكَ خَـيْـرَ مَـا اٰتِىْ وَخَيْرَ مَا اَفْعَلُ وَخَيْـرَ مَـا اَعْـمَـلُ وَخَيْـرَ مَابَطَنَ وَخَـيْـرَمَـا ظَـهَـرَ.

७६. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैरल मस्अलति व ख़ैरद्दुआइ व ख़ैरन्नजाहि व ख़ैरल अमलि व ख़ैरस्सवाबि व ख़ैरल हयाति व ख़ैरल ममाति व सब्बितनी व सक़्क़िल मवाज़ीनी व हक़्क़िक ईमानी वरफ़अ दरजती व तक़ब्बल सलाती व अस्अलुकद्दर्जा तिल ऊला मिनल जन्नति आमीन अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक फवातिहल ख़ैरि व ख़्वातिमहू व जवामिउहू व अव्वलहू व आख़िरहू व ज़ाहिरहू व बातिनहू अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैर मा आती व ख़ैर मा अफ़अलु व ख़ैर मा आमलु व ख़ैर मा बतन व ख़ैर मा ज़हर।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से सब से अच्छा

सवाल और सब से अच्छी दुआ और सब से अच्छी कामियाबी और सब से अच्छा अमल और सब से अच्छा सवाब और सब से अच्छी ज़िंदगी और सब से अच्छी मौत और साबित क़दम रख मुझे और भारी कर मेरी नेकियों का पल्ला और सच्चा कर दे मेरे ईमान को और बलंद कर मेरा दर्जा और क़बूल कर मेरी नमाज़ और मांगता हूँ तुझ से बलंद दर्जे जन्नत के आमीन या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से भलाई की इब्तिदायें और इन्तिहायें और उसकी जामे चीज़ें और उसका अव्वल और उसका आख़िर और उसका ज़ाहिर और उसका बातिन या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से उन चीज़ों की भलाई जो करूँ दहरों में और उसकी भलाई जो अमल में लाऊँ मैं और उसकी भलाई जो पोशीदा है और उसकी भलाई जो ज़ाहिर है।

۷۷. اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ اَوْسَعَ رِزْقِكَ عَلَيَّ عِنْدَ كِبَرِ سِنِّيْ وَانْقِطَاعِ عُمُرِيْ.

७७. अल्लाहुम्मज अल अवअ रिज़्क़िक अलय्य इन्द किबरि सिन्नी वन्क़िताअी उमुरी।

या अल्लाह करना सब से फराख़ रिज़्क़ मेरा मेरे बुढ़ापे और मेरी उम्र के ख़त्म होने के वक़्त।

٧٨.وَاجْعَلْ خَيْرَ عُمُرِیْ اٰخِرَهٗ وَخَيْرَ عَمَلِیْ خَوَاتِيْمَهٗ وَخَيْرَ اَيَّامِیْ يَوْمَ اَلْقَاکَ فِيْهِ.

७८. वजअल ख़ैर उमुरी आख़िरहू व ख़ैर अमली ख़्वातीमहू व ख़ैर अय्यामी यवम अल क़ाक फीही।

और करना बेहतरीन उम्र मेरी आख़िर हिस्सा उसका और बेहतरीन अमल मेरा पिछले अमल और सब से बेहतर मेरे दिनों का वह दिन जिस में तुझ से मिलूँ।

٧٩.يَا وَلِیَّ الْاِسْلَامِ وَاَهْلِهٖ ثَبِّتْنِیْ بِهٖ حَتّٰى اَلْقَاکَ.

७९. या वलिय्यल इस्लामि व अहलिही सब्बितनी बिही हत्ता अल क़ाक।

ऐ मददगार इस्लाम के और अहले इस्लाम के साबित क़दम रख मुझे यहाँ तक कि मैं तुझ से मिलूँ।

٨٠.اَسْأَلُکَ غِنَایَ وَغِنَا مَوْلَایَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ سُوْءِ الْعُمُرِ وَ فِتْنَةِ الصَّدْرِ وَ اَعُوْذُ بِعِزَّتِکَ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَنْ تُضِلَّنِیْ وَ مِنْ جُهْدِ الْبَلَاءِ وَ دَرْکِ الشَّقَآءِ وَسُوْٓءِ الْقَضَآءِ وَشَمَاتَةِ الْاَعْدَآءِ وَمِنْ شَرِّ مَا عَمِلْتُ وَمِنْ شَرِّ مَا لَمْ

اَعْمَلْ وَ مِنْ شَرِّ مَا عَلِمْتُ وَ مِنْ شَرِّ مَا لَمْ اَعْلَمْ وَمِنْ زَوَالِ نِعْمَتِكَ وَ تَحَوُّلِ عَافِيَتِكَ وَ فُجَآءَةِ نِقْمَتِكَ وَ جَمِيْعِ سَخَطِكَ وَمِنْ شَرِّ سَمْعِىْ وَ مِنْ شَرِّ بَصَرِىْ وَ مِنْ شَرِّ لِسَانِىْ وَ مِنْ شَرِّ قَلْبِىْ وَ مِنْ شَرِّ مَنِيِّىْ وَ مِنَ الْفَاقَةِ وَ مِنْ اَنْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ وَمِنَ الْهَدْمِ وَمِنَ التَّرَدِّىْ وَ مِنَ الْغَرَقِ وَ الْحَرَقِ وَ اَنْ يَّتَخَبَّطَنِىَ الشَّيْطَانُ عِنْدَ الْمَوْتِ وَ مِنْ اَنْ اَمُوْتَ فِىْ سَبِيْلِكَ مُدْبِرًا وَّ اَنْ اَمُوْتَ لَدِيْغاً۔

८०. अस्अलुक गिनाय व ग़िना मौलाय अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिन सूइल उमुरि व फितनतिस्स दरी व अऊज़ु बि इज़्ज़तिक ला इलाह इल्ला अन्त अन तुज़िल्लनी व मिन जुहदिल बलाइ व दरकिश्शक़ाइ व सूइल क़ज़ाई व शमाततिल आदा इ व मिन शर्रि मा अमिलतु व मिन शर्री मा लम आमल व मिन शर्री मा अलिमतु व मिन शर्री मा लम आलम व मिन ज़वालि नेअमतिक व तहव्वुलि आफियतिक व फुजाअति निक़मतिक व जमीअी सख़तिक व मिन शर्री समअी व मिन शर्री बसरी व

मिन शर्री लिसानी व मिन शर्री क़ल्बी व मिन शर्री मनिय्यी व मिनल फाक़ति व मिन अज अज़लिम अव उज़लम व मिनल हदमि व मिनत्तरद्दी व मिनल ग़रक़ि वल हरक़ि व अंय्यतख़ब्बतनियश्शैतानु इन्दल मौति व मिन अन अमूत फी सबीलिक मुदबिरंव्व अन अमूत लदीग़ा।

मांगता हूँ मैं तुझ से अपनी सैर चश्मी और अपने मुतअल्लिक़ीन की सैर चश्मी या अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ बुरी उम्र से और दिल के फितना से और पनाह मांगता हूँ मैं बवसीला तेरी इज़्ज़त के नहीं है कोई माबूद सिवाये तेरे उस से कि गुमराह करे तू मुझे और बला की मुशक़्क़त से और बद बख़्ती के पालने से और बुरी तक़दीर से और दुश्मनों के ताना से और उस काम की बुराई से जो मैंने किया और उस काम की बुराई से जो मैंने नहीं किया और उस चीज़ की बुराई से जो मुझे मालूम है और उस चीज़ की बुराई से जो मुझे मालूम नहीं और तेरी नेमत के जाते रहने से और तेरे अमन के पलट जाने से और तेरे अज़ाब के नागहाँ आ जाने से और तेरे तमाम गुस्सों से और अपनी शुनवाई की बुराई से और अपनी बीनाई की बुराई से और अपनी ज़बान की बुराई से और

अपने दिल की बुराई से और अपनी मनी की बुराई से और फाक़ा से और उस से कि मैं जुल्म करूँ या मुझ पर ज़ुल्म किया जाये और किसी चीज़ के मेरे ऊपर गिर जाने से और किसी चीज़ पर से गिर पड़ने से और डूब जाने से और जल जाने से और उस से कि गड़बड़ में डाल दे मुझे शैतान मौत के वक़्त और उस से कि मरूँ मैं जिहाद से भाग कर और उस से कि मरूँ मैं ज़हरीले जानवर के काटने से।
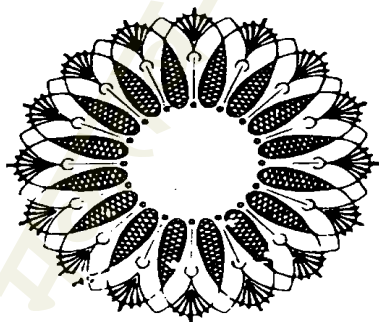
اَلْمَنْزِلُ الثَّالِثُ يَوْمَ الْاِثْنَيْنِ

अल मंज़िलुस्सालिस यवमल इस्नैन

तीसरी मंज़िल बरोज़ दो शंबा (पीर)

٨١. اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ صَبُوْرًا وَّ اجْعَلْنِىْ شَكُوْرًا وَّ اجْعَلْنِىْ فِىْ عَيْنِىْ صَغِيْرًا وَّفِىْ اَعْيُنِ النَّاسِ كَبِيْرًا

८१.अल्लाहुम्मजअलनी सबूरंव्वजअलनी शकूरंव्वज अलनी फी अैनी सग़ीरंव्व फी आयुनिन्नासि कबीरा।

या अल्लाह कर दे मुझे बड़ा सब्र करने वाला और कर दे मुझे बड़ा शुक्र करने वाला और कर दे मुझे मेरी नज़र में छोटा और लोगों की नज़र में बड़ा।

٨٢. اَللّٰهُمَّ ضَعْ فِىْ اَرْضِنَا بَرَكَتَهَا وَزِيْنَتَهَا وَ سَكَنَهَا وَ لَا تَحْرِمْنِىْ بَرَكَةَ مَآ اَعْطَيْتَنِىْ وَلَا تَفْتِنِّىْ فِيْمَآ اَحْرَمْتَنِىْ.

८२. अल्लाहुम्म ज़अ फी अर्ज़िना बरकतहा व ज़ीनतहा व सकनहा व ला तहरिमनी बरकत मा आतैतनी वला तफतिन्नी फमा अहरमतनी।

या अल्लाह कर दे हमारी ज़मीन में बरकत और शादाबी और अमन और न महरूम रख मुझे उस

चीज़ की बरकत से जो तू मुझे दे और न फितना में डाल मुझे उस चीज़ के बारे में जो तू मुझे न दे।

۸۳. اَللّٰهُمَّ اَحْسَنْتَ خَلْقِیْ فَاَحْسِنْ خُلُقِیْ.

८३. अल्लाहुम्म अहसनत ख़ल्क़ी फअहसिन खुलुक़ी।

या अल्लाह अच्छी सूरत बनाई है तूने मेरी पस अच्छी कर दे सीरत मेरी।

۸۴. وَاَذْهِبْ غَيْظَ قَلْبِیْ وَاَجِرْنِیْ مِنْ مُّضِلَّاتِ الْفِتَنِ مَا اَحْیَیْتَنَا.

८४. व अज़हब ग़ैज़ क़ल्बी व अजिरनी मिम मुज़िल्लातिल फितनि मा अहयैतना।

और दूर कर दे मेरे दिल का गुस्सा और बचाये रख मुझे गुमराह करने वाले फितनों से जब तक तू हमें ज़िंदा रखे।

۸۵. اَللّٰهُمَّ لَقِّنِّیْ حُجَّةَ الْاِیْمَانِ عِنْدَ الْمَمَاتِ.

८५. अल्लाहुम्म लक़्क़िनी हुज्जतल ईमानि इन्दल ममाति।

या अल्लाह सिखा देना मुझे हुज्जत ईमान की मौत के वक़्त।

۸۶. رَبِّ اَسْأَلُكَ خَيْرَ مَا فِیْ هٰذَا الْيَوْمِ وَخَيْرَ

مَـــا بَعْدَهٗ ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْأَلُکَ خَيْرَ هٰذَا الْيَوْمِ وَ
فَتْحَهٗ وَنَصْرَهٗ وَنُوْرَهٗ وَبَرَكَتَهٗ وَ هُدَاهُ.

८६. रब्बि अस्अलुक ख़ैर मा फी हाज़ल यौमि व ख़ैर मा बादहू, अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैर हाज़ल यौमि व फतहहू व नस्रहू व नूरहू व बरकतहू व हुदाहू।

ऐ रब मेरे! मैं मांगता हूँ तुझ से उस चीज़ की भलाई जो उस दिन में हो और उस चीज़ की भलाई जो उसके बाद हो, या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से भलाई उस दिन की और फतह उसकी और ज़फर उसकी और नूर उसका और बरकत उसकी और हिदायत उसकी।

٨٧. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْٓ اَسْأَلُکَ الْعَفْوَ وَالْعَافِيَةَ فِیْ دِيْنِیْ
وَ دُنْيَایَ وَ اَهْلِیْ وَ مَالِیْ اَللّٰهُمَّ اسْتُرْ عَوْرَتِیْ
وَاٰمِنْ رَوْعَتِیْ اَللّٰهُمَّ احْفَظْنِیْ مِنْ بَيْنِ يَدَیَّ وَ مِنْ
خَلْفِیْ وَ عَنْ يَّمِيْنِیْ وَ عَنْ شِمَالِیْ وَمِنْ فَوْقِیْ
وَ اَعُوْذُ بِعَظَمَتِکَ اَنْ اُغْتَالَ مِنْ تَحْتِیْ.

८७.अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल अफव वल आफियत फी दीनी व दुनियाय व अहली व माली अल्लाहुम्मस तुर अवरती व आमिन रवअती

अल्लाहुम्महफज़नी मिम बैनी यदय्य व मिन ख़ल्फी व अय्ंयमीनी व अम शिमाली व मिन फौक़ी व अऊज़ु बि अज़मतिक अन उग़ताल मिन तहती।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से माफी और अमन अपने दीन में और अपनी दुनिया में और अपने अहल व माल में या अल्लाह ढाँक दे अैब मेरा और मबदल बअमन कर दे मेरे ख़ौफ को, या अल्लाह हिफाज़त कर मेरी मेरे आगे से और मेरे पीछे से और मेरे दाहिने से और बायें से और मेरे ऊपर से और पनाह चाहता हूँ मैं बवसीला तेरी अज़मत के उस से कि नागहाँ पकड़ लिया जाऊँ अपने नीचे से।

٨٨. يَـــــاحَــيُّ يَا قَيُّوْمُ بِرَحْمَتِكَ اَسْتَغِيْثُ اَصْلِحْ لِـيْ شَـاْنِـيْ كُلَّهُ وَ لَا تَكِلْنِيْٓ اِلٰى نَفْسِيْ طَرْفَةَ عَيْنٍ.

८८. या हय्यु य क़य्युमु बिरहमतिक असतग़ीसु असलिह ली शानी कुल्लहू व ला तकिलनी इला नफ्सी तर्फत अैनिन।

ऐ हय्यु! ऐ कय्युम! तेरी रहमत की तरफ फरियाद लाता हूँ मैं दुरुस्त कर दे मेरे तमाम अहवाल को और न सौंप मुझे मेरे नफ्स की तरफ एक लम्हा भर।

٨٩. اَسْأَلُکَ بِنُوْرِ وَجْهِکَ الَّذِیْٓ اَشْرَقَتْ لَهُ السَّمٰوَاتُ وَالْاَرْضُ وَ بِکُلِّ حَقٍّ هُوَ لَکَ وَبِحَقِّ السَّائِلِیْنَ عَلَیْکَ اَنْ تُقِیْلَنِیْ وَ اَنْ تُجِیْرَنِیْ مِنَ النَّارِ بِقُدْرَتِکَ.

८९. अस्अलुक बिनूरि वजहिकल लज़ी अशरक़त लहुस समावातु वल अर्जु व बिकुल्ली हक़्क़िन हुव लक व बिहक़्क़िस साइलीन अलैक अन तुक़ीलनी व अन तुजीरनी मिनन्नारि बिकुदरतिक।

मांगता हूँ तुझ से बहक़ तेरे उस नूर ज़ात के कि रोशन हैं उस से आसमान और ज़मीन और सदक़ा उस हक़ के जो तेरा है और बज़रिया उस हक़ के जो मांगने वालों का तुझ पर है यह कि तू दर गुज़र करे मुझ से और यह कि पनाह दे तू मुझे दोज़ख़ से अपनी कुदरत से।

٩٠. اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ اَوَّلَ هٰذَا النَّهَارِ صَلَاحًا وَّ اَوْسَطَهٗ فَلَاحًا وَّ اٰخِرَهٗ نَجَاحًا اَسْأَلُکَ خَیْرَ الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ یَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِیْنَ.

९०. अल्लाहुम्मजअल अव्वल हाज़न्नहारि सलाहंव्व अवसतहू फलाहंव्व आख़िरहू नजाहन अस्अलुक ख़ैरद्दुनिया वल आख़िरति या

अरहमर्राहिमीन।

या अल्लाह कर दे इस दिन के अव्वल हिस्सा को बेहतरी और इसके औसत हिस्सा को फलाह और इसके आख़िर हिस्सा को कामियाबी, मैं मांगता हूँ तुझ से भलाई दुनिया व आख़िरत की ऐ सब से बड़े मेहरबान।

۹۱. اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَاخْسَأْ شَیْطَانِیْ وَ فُکَّ رِھَانِیْ وَ ثَقِّلْ مِیْزَانِیْ وَاجْعَلْنِیْ فِیْ النَّدِیِّ الْاَعْلٰی.

९१. अल्लाहुम्मग्फिरली ज़ंबी वख़्स शैतानी व फुक्क रिहानी व सक़्क़िल मीज़ानी वजअलनी फिन्नदिइल आला।

या अल्लाह बख़्श दे मेरे गुनाह और दूर कर दे मेरे शैतान को और खोल दे बंद मेरे और भारी कर मेरा पल्ला और कर दे मुझे तब्क़ये आला में।

۹۲. اَللّٰھُمَّ قِنِیْ عَذَابَکَ یَوْمَ تَبْعَثُ عِبَادَکَ

९२. अल्लाहुम्म क़िनी अज़ाबक यवम तबअसु इबादक।

या अल्लाह बचाना अपने अज़ाब से जिस दिन तू अपने बंदों को उठाये।

۹۳. اَللّٰھُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَآ اَظَلَّتْ وَ

رَبَّ الْاَرْضِيْنَ وَمَآ اَقَلَّتْ وَرَبَّ الشَّيَاطِيْنِ وَمَآ اَضَلَّتْ كُنْ لِّيْ جَارًا مِّنْ شَرِّ خَلْقِكَ اَجْمَعِيْنَ اَنْ يَّفْرُطَ عَلَىَّ اَحَدٌ مِّنْهُمْ اَوْ اَنْ يَّطْغٰى عَزَّ جَارُكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ.

९३. अल्लाहुम्म रब्बस्समावातिस सब्अी वमा अज़ल्लत व रब्बल अर्ज़ीन वमा अक़ल्लत व रब्बश्शयातीनी वमा अज़ल्लत कुल्ली जारम्मिन शर्री ख़ल्क़िक अजमअीन अंय्यफरुत अलय्य अहदुम्मिनहुम अव अंय्यतगा अज़्ज़ा जारुक व तबारकस्मुक।

या अल्लाह परवरदिगार सातों आसमानों के और उस चीज़ के जिस पर उनका साया है और परवरदिगार ज़मीनों के और उस चीज़ के जिस को ज़मीन उठाये हुये है और परवरदिगार शैतानों के और उस चीज़ के जिस को उन्होंने गुमराह किया, रहना मेरा निगहबान अपनी तमाम मख़्लूक़ की बुराई से इस से कि ज़ुल्म करे कोई उन में से मुझ पर या कि तअद्दी करे महफ़ूज़ है तेरा पनाह दिया हुआ और बा बरकत है नाम तेरा।

٩٤. لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ لَا شَرِيْكَ لَكَ سُبْحَانَكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْتَغْفِرُكَ لِذَنْبِيْ وَاَسْأَلُكَ رَحْمَتَكَ.

९४. ला इलाह इल्ला अन्त ला शरीक लक सुबहानक अल्लाहुम्म इन्नी अस्तग़्फिरुक लिज़ंबी व अस्अलुक रहमतक।

नहीं है कोई माबूद सिवाये तेरे नहीं है कोई शरीक तेरा, पाक है तू या अल्लाह मैं माफी चाहता हूँ तुझ से अपने गुनाहों की और मांगता हूँ तुझ से रहमत तेरी।

۹۵.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ ذَنْبِىْ وَوَسِّعْ لِىْ فِىْ دَارِىْ وَبَارِكْ لِىْ فِىْ رِزْقِىْ.

९५. अल्लाहुम्मग़्फिली ज़ंबी व वस्सिअली फी दारी व बारिक ली फी रिज़्क़ी।

या अल्लाह बख़्श दे मेरा गुनाह और वुसअत दे मुझे मेरे घर में और बरकत दे मुझे मेरे रिज़्क़ में।

۹٦.اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ.

९६. अल्लाहुम्मजअलनी मिनत्तव्वाबीन वजअलनी मिनल मुततह्हिरीन।

या अल्लाह बख़्श दे मुझे और हिदायत कर मुझे और रिज़्क़ दे मुझे और अमन दे मुझे।

۹٧.اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ وَاهْدِنِىْ وَارْزُقْنِىْ وَعَافِنِىْ.

९७. अल्लाहुम्मग़िफरली वहदीनी वरज़ुक़्नी व आफिनी।

या अल्लाह बख़्श दे मुझे और हिदायत कर मुझे और रिज़्क़ दे मुझे और अमन दे मुझे।

٩٨. اِهْدِنِیْ لِمَا اخْتُلِفَ فِیْهِ مِنَ الْحَقِّ بِاِذْنِکَ.

९८. इहदीनी लिमाख़्तुलिफ फीहि मिनल हक़्क़ि बिइज़्निक।

राहे सवाब दिखा दे मुझे अपने हुक्म से जिस चीज़ के हक़ होने में इख़्तिलाफ हो।

**٩٩. اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِیْ قَلْبِیْ نُوْرًا وَّ فِیْ بَصَرِیْ
نُوْرًا وَّ فِیْ سَمْعِیْ نُوْرًا وَّ عَنْ یَّمِیْنِیْ نُوْرًا وَّ
عَنْ شِمَالِیْ نُوْرًا وَّ خَلْفِیْ نُوْرًا وَّمِنْ اَمَامِیْ نُوْرًا
وَّاجْعَلْ لِّیْ نُوْرًا وَّفِیْ عَصَبِیْ نُوْرًاوَّفِیْ لَحْمِیْ
نُوْرًا وَّفِیْ دَمِیْ نُوْرًا وَّفِیْ شَعْرِیْ نُوْرًا وَّفِیْ بَشَرِیْ
نُوْرًا وَّفِیْ لِسَانِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِیْ نَفْسِیْ
نُوْرًا وَّاَعْظِمْ لِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْنِیْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ مِنْ
فَوْقِیْ نُوْرًا وَّ مِنْ تَحْتِیْ نُوْرًا اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِیْ نُوْرًا.**

९९. अल्लाहुम्मजअल फी क़ल्बी नूरंव्व फी बसरी नूरंव्व फी समअी नूरंव्व अंय्यमीनी नूरंव्व अन शिमाली नूरंव्व ख़ल्फी नूरंव्व मिन अमामी

नूरंव्वजअल्ली नूरंव्व वफी असबी नूरंव्व फी लहमी नूरंव्वफी दमी नूरंव्वफी शअरी नूरंव्वफी बशरी नूरंव्वफी लिसानी नूरंव्वजअल फी नफ्सी नूरंव्व आज़िम ली नूरंव्वजअलनी नूरंव्वजअल मिन फौक़ी नूरंव्वमिन तहती नूरन अल्लाहुम्म आतिनी नूरा।

या अल्लाह कर दे मेरे दिल में नूर और मेरी बीनाई मैं नूर और मेरी शुनवाई में नूर और मेरी दाहिनी तरफ नूर और मेरी बाईं तरफ नूर और मेरे पीछे नूर और मेरे सामने नूर और कर दे मेरे लिए एक ख़ास नूर और मेरे पुट्ठो में नूर और मेरे गोश्त में नूर और मेरे ख़ून में नूर और मेरे बालों में नूर और मेरे पोस्त में नूर और मेरी ज़बान में नूर और कर दे मेरी जान में नूर और दे मुझे नूर अज़ीम और कर दे मुझे सरापा नूर और कर दे मेरे ऊपर नूर और मेरे नीचे नूर या अल्लाह दे मुझे नूर।

١٠٠. اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لَنَآ اَبْوَابَ رَحْمَتِكَ وَسَهِّلْ لَنَآ اَبْوَابَ رِزْقِكَ.

१००. अल्लाहुम्मफ्तह लना अबवाब रहमतिक व सह्हिल लना अबवाब रिज़्क़िक।

या अल्लाह खोल दे हमारे लिए दरवाज़े अपनी रहमत के और सहल कर दे हम पर तरीक़े अपने

रिज़्क के।

١٠١. اَللّٰهُمَّ اعْصِمْنِىْ مِنَ الشَّيْطَانِ .

१०१. अल्लाहुम्मअसिम्नी मिनश्शैतान।

या अल्लाह महफूज़ रख मुझे शैतान से।

١٠٢. اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ مِنْ فَضْلِكَ.

१०२. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन फज़्लिक।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से तेरा फज़्ल।

١٠٣. اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ خَطَايَاىَ وَ ذُنُوْبِىْ كُلَّهَا اَللّٰهُمَّ انْعَشْنِىْ وَ اَحْيِنِىْ وَارْزُقْنِىْ وَاهْدِنِىْ لِصَالِحِ الْاَعْمَالِ وَالْاَخْلَاقِ اِنَّهٗ لَا يَهْدِىْ لِصَالِحِهَا وَلَا يَصْرِفُ سَيِّئَهَا اِلَّا اَنْتَ .

१०३. अल्लाहुम्मग़्फिरली ख़तायाय व ज़ुनूबी कुल्लहा अल्लाहुम्मन अशनी व अहनी वरज़ुक़नी वहदिनी लिसालिहिल आमालि वल अख़्लाक़ि इन्नहू ला यहदी लिसालिहिहा वला यसरिफु सय्यिअहा इल्ला अन्त।

या अल्लाह बख़्श दे मेरी कुल ख़तायें और कुसूर या अल्लाह रिफअत दे मुझे और ज़िंदा रख मुझे और रिज़्क दे मुझे और हिदायत कर मुझ को अच्छे आमाल और अख़्लाक़ की क्योंकि नहीं हिदायत

करता है। उम्दा आमाल व अख़्लाक़ की और नहीं दूर करता है बुरे आमाल और अख़्लाक़ को सिवाये तेरे।

١٠٤. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ رِزْقًا طَيِّبًا وَّعِلْمًا نَافِعًا وَّعَمَلًا مُّتَقَبَّلًا .

१०४. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक रिज़्क़न तय्यिबंव्व इल्मन नाफ़िअंव्व अमलम मुतक़ब्बला।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से रिज़्क़ पाकीज़ग और इल्म कार आमद और अमल मक़बूल।

١٠٥. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ عَبْدُکَ وَابْنُ عَبْدِکَ وَابْنُ اَمَتِکَ نَاصِيَتِیْ بِيَدِکَ مَاضٍ فِیَّ حُکْمُکَ عَدْلٌ فِیَّ قَضَآءُکَ اَسْأَلُکَ بِکُلِّ اسْمٍ هُوَ لَکَ سَمَّيْتَ بِهٖ نَفْسَکَ اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِیْ کِتَابِکَ اَوْ عَلَّمْتَهٗ اَحَدًا مِنْ خَلْقِکَ اَوِ اسْتَأْثَرْتَ بِهٖ فِیْ عِلْمِ الْغَيْبِ عِنْدَکَ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ رَبِيْعَ قَلْبِیْ وَنُوْرَ بَصَرِیْ وَجَلَآءَ حُزْنِیْ وَذَهَابَ هَمِّیْ.

१०५. अल्लाहुम्म इन्नी अब्दुक वब्नु अब्दिक वब्नु अमतिक नासियती बियदिक माज़िन फिय्य

हुक्मुक अदलुन फिय्य क़ज़ाउक अस्अलुक बिकुल्लिस्मिन हुव लक सम्मैत बिही नफ्सक अव अंज़लतहू फी किताबिक और अल्लम्तहू अहदन मिन ख़ल्क़िक अविस्तासरत बिही फी इल्मिल ग़ैबी इन्दक अन तजअलल कुरआनल अज़ीम रबीअ क़लबी व नूर बसरी व जलाअ हुज़नी व ज़हाब हम्मी।

या अल्लाह मैं गुलाम हूँ तेरा और बेटा हूँ तेरे गुलाम का और बेटा हूँ तेरी लौंडी का हमा तन क़ब्ज़ा में हूँ तेरे नाफिज़ है मेरे बारे में हुक्म तेरा अैन अदल है मेरे बारे में फैसला तेरा मांगता हूँ मैं तुझ से बहक़ हर नाम के जो तेरा है कि जिस के साथ तूने अपनी ज़ात को मौसूम किया है या उसको अपनी किताब में उतारा है। या वह अपनी मख़्लूक़ में से किसी को सिखाया है या अपने इल्मे ग़ैब ही में उसको रहने दिया है यह कि कर दे कुरआन अज़ीम को बहार मेरे दिल की और नूर मेरी आँख का और कुशाइश मेरे ग़म की और दफीआ मेरी फिक्र का।

١٠٦– اَللّٰهُمَّ اِلٰهَ جِبْرَئِيْلَ وَ مِيْكَائِيْلَ
وَاِسْرَافِيْلَ وَ اِلٰهَ اِبْرَاهِيْمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ
وَ اِسْحٰقَ عَافِنِىْ وَلَا تُسَلِّطَنَّ اَحَدًا مِّنْ

خَلْقِكَ عَلَيَّ بِشَيْءٍ لَّا طَاقَةَ لِي بِهٖ.

१०६. अल्लाहुम्म इलाह जिबरील व मीकाईल व इस्राफील व इलाह इबराहीम व इसमाईल व इसहाक़ आफिनी वला तुसल्लितन्न अहदम मिन ख़ल्क़िक अलय्या बिशैइललाताक़त ली बिही।

ऐ अल्लाह माबूद जिबरईल अलैहिस्सलाम के और मीकाईल अलैहिस्सलाम के और इसराफील अलैहिस्सलाम के और माबूद इबराहीम अलैहिस्सलाम के और इसहाक़ अलैहिस्सलाम के आफियत दे मुझे और न मुसल्लत करना किसी को अपनी मख़्लूक़ में से मुझ पर ऐसी चीज़ के साथ जिस की बरदाश्त मुझ में न हो।

١٠٧. اَللّٰهُمَّ اكْفِنِيْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِيْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ.

१०७. अल्लाहुम्मकफिनी बिहलालिक अन हरामिक व अग़निनी बिफज़लिक अम्मन सिवाक।

या अल्लाह किफायत कर मेरी अपना हलाल रिज़्क़ दे कर हराम रोज़ी से और बे परवा कर दे मुझे बदौलत अपने फज़ल के अपने मासिवा से।

١٠٨. اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ تَسْمَعُ كَلَامِيْ وَ تَرٰى مَكَانِيْ وَ تَعْلَمُ سِرِّيْ وَعَلَانِيَتِيْ لَا يَخْفٰى

عَلَيْکَ شَیْءٌ مِّنْ اَمْرِیْ وَ اَنَـا الْبَـائِسُ الْفَقِيْرُ
الْـمُسْتَغِيْثُ الْمُسْتَجِيْرُ الْوَجِلُ الْمُشْفِقُ
الْـمُقِرُّ الْـمُعْتَرِفُ بِذَنْبِیْ اَسْأَلُکَ مَسْأَلَةَ
الْمِسْکِيْنِ وَاَبْتَهِلُ اِلَيْکَ ابْتِهَالَ الْمُذْنِبِ
الـذَّلِيْلِ وَاَدْعُوْکَ دُعَاءَ الْخَائِفِ الضَّرِيْرِ وَ
دُعَـاءَ مَنْ خَضَعَتْ لَکَ رَقَبَتُهٗ وَفَاضَتْ
لَکَ عَبْرَتُهٗ وَذَلَّ لَکَ جِسْمُهٗ وَرَغِمَ
لَکَ اَنْفُهٗ، اَللّٰهُمَّ لَا تَجْعَلْنِیْ بِدُعَآئِکَ
شَقِيًّا وَّ کُنْ بِیْ رَؤُوْفًا رَّحِيْمًا يَّا خَيْرَ
الْمَسْئُوْلِيْنَ وَ يَا خَيْرَ الْمُعْطِيْنَ اَللّٰهُمَّ
اِلَيْکَ اَشْکُوْ ضُعْفَ قُوَّتِیْ وَقِلَّةَ حِيْلَتِیْ
وَهَوَانِیْ عَلَی النَّاسِ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ
اِلٰی مَنْ تَکِلُنِیْ اِلٰی عَدُوٍّ يَتَجَهَّمُنِیْ اَمْ
اِلٰی قَرِيْبٍ مَّلَّکْتَهٗ اَمْرِیْ اِنْ لَّمْ تَکُنْ
سَاخِطًا عَلَیَّ فَلَا اُبَالِیْ غَيْرَ اَنَّ عَافِيَتَکَ
اَوْسَعُ لِیْ

१०८. अल्लाहुम्म इन्नक तस्मउ कलामी व तरा

मकानी व तअलमु सिर्री व अलानिय्यती ला यख़्फ़ा अलैक शैउम्मिन अम्री व अनल बाइसुल फ़क़ीरुल मुस्तग़ीसुल मुस्तजीरुल वजिलुल मुशफिकुल मुक़िर्रुल मुअतरिफु बिज़ंबी अस्अलुक मस्अलतल मिसकीनि व अबतहिलु इलैकब्तिहालल मुज़ानिबिज़ ज़लीलि व अदऊक दुआअल ख़ाइफिज़्ज़रीरि व दुआअ मन ख़ज़अत लक रक़बतुहू व फाज़त लक अब्रतुहू व ज़ल्ला लक जिस्मुहू व रग़िम लक अन्फुहू, अल्लाहुम्म ला तजअलनी बिदुआइक शक़िय्यंव्व कुन बि रऊफर्रहीम या ख़ैरल मस्ऊलीन व या ख़ैरल मुतीन अल्लाहुम्म इलैक अशकू ज़ोअफ कुव्वती व क़िल्लत हिलती व हवानी अलन्नासि या अरहमर्राहिमीन इला मन तकिलुनी इल अदुव्व व यतजह्हमुनी अम इला क़रीबिम मल्लकत्तहू अम्री इल्लम तकुन साख़ितन अलय्या फला उबाली ग़ैर अन्न आफियतक अवसउ ली।

या अल्लाह तू सुनता है मेरी बात को और देखता हे मेरी जगह को और जानता है मेरे पूशीदा और ज़ाहिर को छुपी नहीं रह सकती है तुझ से मेरी कोई बात और मैं हूँ मुसीबत ज़दा मुहताज फरयादी पनाह जो तरसाँ हरासाँ इक़रार करनेवाला मानने वाला अपने गुनाह का सवाल करता हूँ तुझ

से सवाल बेकस का और गिड़गिड़ाता हूँ तेरे सामने गुनाहगार ज़लील का सा और तलब करता हूँ तुझ से तलब करना ख़ौफ ज़दा आफत रसीदा का सा और तलब करना उस शख़्स का सा कि झुकी हुई हो तेरे सामने गर्दन उसकी और बह रहे हों आँसू उस के और फरोतनी किये हुये हो वह तेरे सामने और रगड़ता हो तेरे सामने अपनी नाक या अल्लाह न कर मुझ को तुझ से दुआ मांगने में नाकाम और हो जा मुझ पर बहुत मेहरबान ऐ उन सब से बेहतर जिन से मांगा जाये और ऐ सब देने वालों से बेहतर या अल्लाह तुझी से शिकायत करता हूँ अपने ज़ईफुल क़वा होने की और अपनी कम सामानी की और लोगों की नज़रों में कम वक़अती की ऐ अरहमर्राहीमीन किस के सुपुर्द करता है तू मुझे आया किसी दुश्मन के कि तुर्शरूई के साथ मेरा सामना करे या किसी अज़ीज़ के कि क़ब्ज़े में दे दे तो उसके मेरे सब काम अगर तू गुस्सा न हो मुझ पर तो मुझ को उसकी कुछ परवा तो नहीं मगर फिर भी तेरे अमन में मुझ को ज़्यादा गुंजाइश है।

١٠٩. اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْأَلُكَ قُلُوْبًا اَوَّاهَةً مُّخْبِتَةً مُّنِيْبَةً فِيْ سَبِيْلِكَ.

१०९. अल्लाहुम्मा इन्ना नस्अलुक कुलूबन

अव्वाहतम मुख़्बिततम मुनीबतन फी सबीलिक।

या अल्लाह! हम मांगते हैं तुझ से ऐसे दिल जो मुतअस्सिर हों और आजिज़ी करनेवाले हों और रुजू करने वाले हों तेरी राह में।

١١٠. اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسۡأَلُکَ اِیۡمَانًا یُّبَاشِرُ قَلۡبِیۡ وَیَقِیۡنًا صَادِقًا حَتّٰی اَعۡلَمَ اَنَّهٗ لَا یُصِیۡبُنِیۡ اِلَّا مَا کَتَبۡتَ لِیۡ وَرِضًی مِّنَ الۡمَعِیۡشَةِ بِمَا قَسَمۡتَ لِیۡ.

११०. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ईमानंय्युबाशिरू क़ल्बी व यक़ीनन सादिक़न हत्ता आलम अन्नहू ला युसीबुनी इल्ला मा कतब ली वरिज़म मिनल मओशति बिमा क़सम्त ली।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से ईमान कि पेवस्त हो जो मेरे दिल में और यक़ीन सच्चा यहाँ तक कि जान लूँ कि नहीं पहुंच सकता है मुझ को मगर जो कि तू लिख चुका है मेरे लिए और रज़ा उस चीज़ के साथ कि मक़सूम में लिखी तूने मेरे मआश में से।

١١١. اَللّٰهُمَّ لَکَ الۡحَمۡدُ کَالَّذِیۡ تَقُوۡلُ وَخَیۡرًا مِّمَّا نَقُوۡلُ.

اَللّٰھُمَّ اِنِّی اَعُوْذُ بِکَ مِنْ مُّنْکَرَاتِ الْاَخْلَاقِ وَالْاَعْمَالِ وَالْاَھْوَآءِ وَالْاَدْوَاءِ نَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ مَااسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِیُّکَ مُحَمَّدٌ ﷺ وَمِنْ جَارِ السَّوْءِ فِیْ دَارِ الْمُقَامَةِ فَاِنَّ جَارَالْبَادِیَةِ یَتَحَوَّلُ وَ غَلَبَةِ الْعَدُوِّ وَشَمَاتَةِ الْاَعْدَآءِ وَمِنَ الْجُوْعِ فَاِنَّهٗ بِئْسَ الضَّجِیْعُ وَمِنَ الْخِیَانَةِ فَبِئْسَتِ الْبِطَانَةُ وَاَنْ نَّرْجِعَ عَلٰی اَعْقَابِنَا اَوْ نُفْتَنَ عَنْ دِیْنِنَا وَ مِنَ الْفِتَنِ مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَمِنْ یَّوْمِ السُّوْءِ وَ مِنْ لَّیْلَةِ السُّوْءِ وَ مِنْ سَاعَةِ السُّوْءِ وَ مِنْ صَاحِبِ السُّوْءِ.

१११. अल्लाहुम्म लकल हम्दु कल्लज़ी तक़ूलु व ख़ैरम्मा नक़ूल। अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिम मुन्करातिल अख़्लाक़ि वल आमालि वल अहवाइ वल अदवाइ नऊज़ुबिक मिन शर्रि मस्तआज़ मिन्हु नबिय्युक मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व मिन जारिस्सूइ फी दारिल मुक़ामति फइन्न जारल बादियति यतहव्वलु व ग़लबतिल अदुव्वि व शमाततिल आदाइ व मिनल जुई फइन्नहू बिसज़्ज़जीउ व मिनल ख़ियानति फबिसतिल बितानतु व अन्नरजिअ अल

आक़ाबिना औ नुफ्तन अन दीनिना व मिनल फितनि मा ज़हर मिन्हा वमा बतन व मिंय्युमिस्सूइ व मिल्लैलतिस्सूइ व मिन साअतिस्सूइ व मिन साहिबिस्सूई।

या अल्लाह! तेरे वास्ते तारीफ है जैसी कि फरमाता है तू और बढ़ कर उस से कि कहते हैं हम। या अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ ना पसंदीदा अख़्लाक़ और आमाल और नफ्सियानी ख़्वाहिशों और बीमारियों से और पनाह चाहते हैं हम तेरी उन बुरी चीज़ों से जिन से पनाह मांगी है तेरे नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने और बुरे पड़ोस से क़याम की जगह में क्योंकि सफर का साथी तो चल ही देता है और दुश्मन के ग़लबा और मुख़ालिफीन के ताना से और भूक से कि वह बुरा हम ख़्वाब है और ख़्यानत से कि वह बुरा हमराज़ है और उस से कि पिछले पैरों लौटें हम या अपने दीन से अलग हो कर फितना में पड़ें और तमाम फितनों से जो ज़ाहिरी हैं उन में से और जो बातिनी हैं और बुरे दिन से और बुरी रात से और बुरी घड़ी से और बुरे साथी से।

اَلْمَنْزِلُ الرَّابِعُ يَوْمَ الثُّلَاثَآءِ

अल मंज़िलुर्राबेअ यवमस्सुलासाइ

चौथी मंज़िल बरोज़ सह शंबा (मंगल)

۱۱۲-اَللّٰهُمَّ لَكَ صَلَاتِىْ وَ نُسُكِىْ وَ مَحْيَاىَ وَ مَمَاتِىْ وَ اِلَيْكَ مَاٰبِىْ وَ لَكَ رَبِّ تُرَاثِىْ.

११२. अल्लाहुम्म लक सलाती व नुसुकी व महयाय म ममती व इलैक मआबी व लक रब्बि तुरासी।

या अल्लाह तेरे ही लिए है मेरी नमाज़ और मेरी इबादत और मेरा जीना और मरना और तेरी ही तरफ है मेरा रूजू और तेरा ही है जो कुछ मैं छोड़ूंगा।

۱۱۳-اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَا تَجِىْءُ بِهِ الرِّيَاحُ.

११३. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन ख़ैरि मा तजीउ बिहिर्रियाह।

या अल्लाह मांगता हूँ तुझ से भलाई उन चीज़ों की जिन को हवायें लाती हैं।

۱۱۴-اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ اُعَظِّمُ شُكْرَكَ وَ اُكْثِرُ

ذِكْــرَكَ وَاَتَّبِعُ نَصِيْحَتَكَ وَ اَحْفَظُ وَ صِيَّتَكَ اَللّٰهُمَّ اِنَّ قُلُوْبَــنَا وَ نَوَاصِيَنَاوَ جَوَا رِحَنَا بِيَدِكَ لَمْ تُمَلِّكْنَا مِـنْــهَــا شَـيْــئًا فَاِذَا فَعَلْتَ ذٰلِكَ بِنَا فَكُنْ اَنْتَ وَلِــيَّــنَــا وَاهْــدِنَــا اِلٰــى سَــوَاءِ السَّبِيْلِ.

११४. अल्लाहुम्मज्अलनी उअज़िज़मु शुक्रक व उकसिरू ज़िक्रक वअत्तबिउ नसीहतक व अहफ़ज़ु व सिय्यतक अल्लाहुम्म इन्न कुलूबना व नवासियना व जवारिहना बियदिक लम तुमल्लिकना मिन्हा शैअन फइज़ा फअलत ज़ालिक बिना फकुन अन्त वलिय्यना वहदिना इला सवाइस्सबील।

या अल्लाह कर दे मुझे कि बड़ा शुक्र करूँ तेरा और ज़्यादा ज़िक्र करूं तेरा और मानूँ तेरी नसीहत को और याद रखूँ तेरी वसीयत को या अल्लाह हमारे दिल और सरतापा हम और आज़ा हमारे तेरे क़ब्ज़े में हैं नहीं इख़्तियार कामिल दिया है तूने हमें उन में से किसी चीज़ पर जब तूने हमारे साथ यह मामला किया तो रहना तू ही मददगार हमारा और दिखा, हमें सीधा रास्ता।

١١٥- اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّكَ اَحَبَّ الْاَشْيَاءِ اِلَىَّ وَاجْعَلْ خَشْيَتَكَ اَخْوَفَ الْاَشْيَاءِ عِنْدِىْ

وَاقْطَعْ عَنِّیْ حَاجَاتِ الدُّنْیَا بِالشَّوْقِ اِلٰی لِقَآئِکَ وَ اِذَآ اَقْرَرْتَ اَعْیُنَ اَهْلِ الدُّنْیَا مِنْ دُنْیَاهُمْ فَاَقْرِرْ عَیْنِیْ مِنْ عِبَادَتِکَ .

११५. अल्लाहुम्मजअल हुब्बक अहब्बल अशयाइ इलय्य वजअल ख़श्यतक अख़्वफल अशयाइ इन्दी वक़्तअ अन्नी हाजातिद्दुनिया बिश्शौक़ि इल लिक़ाइक व इज़ा अक़ररत आयुन अहलिद्दुनिया मिन दुनिया हुम फअक़रिर ऐनी मिन इबादतिक।

या अल्लाह कर दे अपनी मुहब्बत को मरगूब तर तमाम चीज़ों से मुझे और कर दे अपने डर को ख़ौफनाक ज़्यादा तमाम चीज़ों से मेरे नज़दीक और क़ता कर दे मुझ से हाजतें दुनिया की शौक़ दे कर अपनी मुलाक़ात का और जबकि ठंडी कर दी हैं तूने अहले दुनिया की आँखें उनकी दुनिया से तो ठंडी कर दे मेरी अपनी इबादत से।

١١٦۔ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الصِّحَّةَ وَالْعِفَّةَ وَالْاَمَانَةَ وَ حُسْنَ الْخُلُقِ وَ الرِّضٰی بِالْقَدْرِ.

११६. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकस सिह्हत वल इफ्फत वल अमानत व हुस्नल ख़ुलुकि वर्रिज़ा बिल क़द्र।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से तंदरुस्ती और पारसाई और अमानत और हुस्ने ख़ुल्क़ और रज़ा मुक़द्दर पर।

۱۱۷- اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ شُكْرًا وَّلَكَ الْمَنُّ فَضْلًا اَللّٰهُمَّ اِنِّى اَسْأَلُكَ التَّوْفِيْقَ لِمَحَابِّكَ مِنَ الْاَعْمَالِ وَصِدْقَ التَّوَكُّلِ عَلَيْكَ وَ حُسْنَ الظَّنِّ بِكَ.

११७. अल्लाहुम्म लकल हम्दु शुकरंव्वलकल मन्नु फज़लन अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकत तौफीक़ लिमहाब्बिक मिनल आमालि व सिदक़त तवक्कुलि अलैक व हुस्नज़्ज़न्नि बिक।

या अल्लाह तेरे ही लिए हम्द है शुक्र के साथ और तेरे ही लिए ऐहसान है फज़ल के साथ, या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से तौफीक़ तेरे पसंदीदा आमाल की और सच्चे तवक्कुल की तुझ पर और नेक गुमान की तेरे साथ।

۱۱۸- اَللّٰهُمَّ افْتَحْ مَسَامِعَ قَلْبِىْ لِذِكْرِكَ وَارْزُقْنِىْ طَاعَتَكَ وَ طَاعَةَ رَسُوْلِكَ وَ عَمَلًا بِكِتَابِكَ.

११८. अल्लाहुम्मफतह मसामिअ क़ल्बी लिज़िक्रिक वर्ज़ुक़नी तअतक व ताअत रसूलिक व अमलन बिकिताबिक।

या अल्लाह खोल दे मेरे दिल के कान अपने ज़िक्र के लिए और नसीब कर मुझे फरमांबरदारी अपनी और अपने रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की और अमल अपनी किताब पर।

١١٩-اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ اَخْشَاکَ کَاَنِّیْ اَرٰکَ اَبَدًا حَتّٰی اَلْقَاکَ وَاَسْعِدْنِیْ بِتَقْوَاکَ وَ لَا تُشْقِنِیْ بِمَعْصِیَتِکَ.

११९. अल्लाहुम्मजअल्नी अख़्शाक कअन्नी अराक अबदन हत्ता अलक़ाक व अस्इदनी बितक़वाक व ला तुशक़िनी बिमअसियतिक।

या अल्लाह कर दे मुझे कि डरा करूँ तुझ से गोया कि मैं तुझे देखता हूँ हर वक़्त यहाँ तक कि आमलों में तुझ से और सईद कर दे तू मुझे अपने तक़वा से और न शक़ी कर अपनी ना फरमानी से।

١٢٠-اَللّٰهُمَّ الْطُفْ بِیْ فِیْ تَیْسِیْرِ کُلِّ عَسِیْرٍ فَاِنَّ تَیْسِیْرَ کُلِّ عَسِیْرٍ عَلَیْکَ یَسِیْرٌ وَّاَسْأَلُکَ

اَلْيُسْرَ وَالْــمُعَــافَــاةَ فِى الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ اَللّٰهُمَّ اعْــفُ عَــنِّىْ فَــاِنَّكَ عَــفُــوٌّ كَرِيْمٌ.

१२०. अल्लाहुम्मलतुफ बी फी तैसीरि कुल्लि असीरिन फइन्न तैसीर कुल्लि असीरिन अलैक यसीरुंव्व अस्अलुकल युस्र व्ल मुआफात फिद्दुनिया वल आख़िरति अल्लाहुम्मअफु अन्नी फइन्नक अफुव्वुन करीम।

या अल्लाह ऐहसान कर मेरे साथ सहल कर देने में हर दुशवार के क्योंकि सहल कर देना हर दुशवार का तुझ पर आसान है और माँगता हूँ मैं तुझ से सहूलत और माफी और आख़िरत में या अल्लाह दर गुज़र कर मुझ से क्योंकि तू अफु व करीम है।

۱۲۱–اَللّٰــــهُــــمَّ طَــهِّــرْ قَــلْبِىْ مِنَ النِّفَاقِ وَعَمَلِىْ مِــــنَ الــرِّيَــاءِ وَلِــسَــانِىْ مِنَ الْكِذْبِ وَ عَيْنِىْ مِــــنَ الْــــخِــيَــانَــةِ فَاِنَّكَ تَعْلَمُ خَائِنَةَ الْاَعْيُنِ وَ مَا تُخْفِىْ الصُّدُوْرُ.

१२१. अल्लाहुम्म तह्हिर क़ल्बी मिनन्निफाक़ि व अमली मिनर्रियाइ व लिसानी मिनल किज़्बि व अैनी मिनल ख़ियानति फइन्नक तअलमु ख़ाइनतल अयुनि

वमा तुख़्फ़ीस्सुदूर।

या अल्लाह पाक कर दे मेरे दिल को निफाक़ से और मेरे अमल को रिया से और मेरी ज़बान को झूठ से और मेरी आँख को ख्यानत से क्योंकि तू जानता है आँखों की चोरी और जो कुछ दिल छुपाते हैं।

١٢٢—اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنِىْ عَيْنَيْنِ هَطَّالَتَيْنِ تَسْقِيَانِ الْقَلْبَ بِذُرُوْفِ الدَّمْعِ مِنْ خَشْيَتِكَ قَبْلَ اَنْ تَكُوْنَ الدُّمُوْعُ دَمًا وَّالْاَضْرَاسُ جَمْرًا.

१२२. अल्लाहुम्मर ज़ुक़नी अैनैनि हत्तालतैनि तस्क़ियानिल क़ल्ब बिज़ुरूफ़िद्दमई मिन ख़श्यतिक क़ब्ल अन तकूनद्दुमूउ दमंव्वल अज़रासु जमरन।

या अल्लाह नसीब कर मुझे आँखें बरसने वाली कि सैराब करें दिल को बहते हुये आँसूवों से तेरे ख़ौफ से क़ब्ल उस वक़्त कि हो जायें आँसू ख़ून और ढाड़ें अंगारे।

١٢٣—اَللّٰهُمَّ عَافِنِىْ فِىْ قُدْرَتِكَ وَ اَدْخِلْنِىْ فِىْ رَحْمَتِكَ وَاقْضِ اَجَلِىْ فِىْ طَاعَتِكَ وَاخْتِمْ لِىْ بِخَيْرِ عَمَلِىْ وَاجْعَلْ ثَوَابَهُ الْجَنَّةَ.

१२३. अल्लाहुम्म आफिनी फी कुदरतिक व

अदख़िलनी फी रहमतिक वक़्ज़ि अजली फी ताअतिक वख़्तिमली बिख़ैरि अमली वजअल सवाबहुल जन्नत।

या अल्लाह अमन दे अपनी कुदरत में मुझे और दाख़िल कर ले अपनी रहमत में मुझे और गुज़ार दे अपनी ताअत में उम्र मेरी और ख़ात्मा कर मेरा मेरे सब से अच्छे अमल पर और कर दे सवाब उस का जन्नत।

١٢٤- اَللّٰهُمَّ فَارِجَ الْهَمِّ كَاشِفَ الْغَمِّ مُجِيْبَ دَعْوَةِ الْمُضْطَرِّيْنَ رَحْمٰنَ الدُّنْيَا وَ رَحِيْمَهَا اَنْتَ تَرْحَمُنِىْ فَارْحَمْنِىْ بِرَحْمَةٍ تُغْنِيْنِىْ بِهَا عَنْ رَّحْمَةِ مَنْ سِوَاكَ.

१२४. अल्लाहुम्म फारिजल हम्मि काशिफल ग़म्मि मुजीब दअवतिल मुज़्तर्रीन रहमानद्दुनिया व रहीमहा अन्त तरहमुनी फरहमनी बिरहमतिन तुग़नीनी बिहा अर्रहमति मन सिवाक।

ऐ अल्लाह दूर करने वाले फिक्र के ज़ायल करने वाले ग़म के क़बूल करने वाले बेक़रारों की दुआ के रहमान दुनिया के और रहीम उसके तू ही रहम करेगा मुझ पर तू कर दे मेरे ऊपर ऐसी रहमत कि बेपरवा कर दे तू मुझे उसकी वजह से औरों की रहमत से।

١٢٥–اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ مِنْ فُجَاءَةِ الْخَيْرِ وَ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ فُجَاءَةِ الشَّرِّ.

१२५. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन फुजा अतिल ख़ैरी व अऊज़ुबिक मिन फुजाअतिश्शर्रि।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से ग़ैर मुतरक़्क़ब भलाई और पनाह चाहता हूँ मैं तेरी नागहानी बुराई से।

١٢٦–اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ وَ اِلَيْكَ يَعُوْدُ السَّلَامُ أَسْأَلُكَ يَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ اَنْ تَسْتَجِيْبَ لَنَا دَعْوَتَنَا وَاَنْ تُعْطِيَنَا رَغْبَتَنَا وَ اَنْ تُغْنِيَنَا عَمَّنْ اَغْنَيْتَهٗ عَنَّا مِنْ خَلْقِكَ.

१२६. अल्लाहुम्म अन्तस्सलामु व मिन्कस्सलामु व इलैक यऊदुस्सलामु अस्अलुक या ज़ल जलालि वल इक्रामी अन तस्तजीब लना दअवतना व अन तुअतियना रग़्बतना व अन तुग़नियना अम्मन अग़नैतहू अन्ना मिन ख़ल्क़िक।

या अल्लाह तेरा ही नाम सलाम है और तुझी से इब्तिदा है सलामती की और तेरी ही तरफ लौटती है सलामती मैं मांगता हूँ तुझ से ऐ जलाल व

इकराम वाले यह कि क़बूल कर हमारे हक़ में हमारी दुआ और यह कि दे हमें हमारी ख़्वाहिश और यह कि बेपरवा कर दे हमें उन से जिनको हम से बेपरवा किया है तूने अपनी मख़्लूक़ में से।

١٢٧- اَللّٰهُمَّ خِرْلِيْ وَاخْتَرْلِيْ.

१२७. अल्लाहुम्म ख़िरली वख़्तरली।

या अल्लाह छाँट ले मेरे वास्ते और पसंद कर ले मेरे लिए।

١٢٨- اَللّٰهُمَّ اَرْضِنِيْ بِقَضَائِكَ وَبَارِكْ لِيْ فِيْ مَاقُدِّرَلِيْ حَتّٰى لَآ اُحِبَّ تَعْجِيْلَ مَآ اَخَّرْتَ وَلَا تَاْخِيْرَ مَا عَجَّلْتَ.

१२८. अल्लाहुम्म अरज़िनी बिक़ज़ाइक व बारिक ली फी माकुद्दिर ली हत्ता ला उहिब्ब तअजील मा अख़्ख़रत वला ताख़िर मा अज्जल्त।

या अल्लाह राज़ी रख मुझे अपने हुक्म पर और बरकत दे मुझे मेरे लिए उस चीज़ में कि मुक़द्दर की गई मेरे लिए ताकि न चाहूँ मैं जल्द मिलना उस चीज़ का कि देर कर रखी है तूने और न देर में आना उस चीज़ का कि जल्द लिखी तूने।

١٢٩- اَللّٰهُمَّ لَا عَيْشَ اِلَّا عَيْشُ الْاٰخِرَةِ.

१२९. अल्लाहुम्म ला अैश इल्ला अैशुल आख़िरति
या अल्लाह नही है अैश मगर अैशे आख़िरत का।

۱۳۰-اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِیْ مِسْكِيْنًا وَّ اَمِتْنِیْ مِسْكِيْنًا وَّ احْشُرْنِیْ فِیْ زُمْرَةِ الْمَسَاكِيْنِ.

१३०. अल्लाहुम्म अहयिनी मिस्कीनंव्व अमितनी मिसकीनंव्वहशुरनी फी जुमरतिल मसाकीन।

या अल्लाह ज़िंदा रख ख़ाकसार और मारना मुझे ख़ाकसार और उठाना मुझे ख़ाकसारों के गिरोह में।

۱۳۱-اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ الَّذِيْنَ اِذَا اَحْسَنُوْا اِسْتَبْشَرُوْا وَاِذَآ اَسَآءُوْا اِسْتَغْفَرُوْا.

१३१. अल्लाहुम्मज अलनी मिनल्लज़ीन इज़ा अहसनू इसतबशरू व इज़ा असाऊ इस्तग्फरू।

या अल्लाह कर दे मुझे उन लोगों में से कि जब नेक काम करें तो खुश हों और जब बुरा काम करें तो मग़्फिरत चाहें।

۱۳۲-اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْاَلُكَ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِكَ تَهْدِیْ بِهَا قَلْبِیْ وَتَجْمَعُ بِهَا اَمْرِیْ وَتَلُمُّ بِهَا شَعْثِیْ وَتُصْلِحُ بِهَا دِيْنِیْ وَتَقْضِیْ بِهَا دَيْنِیْ وَتَحْفَظُ بِهَا غَآئِبِیْ وَتَرْفَعُ

بِهَا شَاهِدِیْ وَتُبَيِّضُ بِهَا وَجْهِیْ وَتُزَكِّیْ بِهَا عَمَلِیْ وَتُلْهِمُنِیْ بِهَا رَشَدِیْ وَتَرُدُّ بِهَا الْفِتِیْ وَتَعْصِمُنِیْ بِهَا مِنْ كُلِّ سُوْءٍ.

१३२. अल्लाहुम्म इन्नी अस्‌अलुक रहमतम मिन इन्दिक तहदी बिहा क़ल्बी व तजमउ बिहा अमरी व तलुम्म बिहा शअसी व तुस्लिहु बिहा दीनी व तक़्ज़ी बिहा दैनी व़ तहफ़्ज़ु बिहा ग़ाइबी व तरफउ बिहा शाहिदी व तुबय्यिज़ु बिहा वजही व तुज़क्कि बिहा अमली व तुलहिमुनी बिहा रशदी व तरुद्दू बिहा उलफती व तअसिमुनी बिहा मि कुल्लि सूई।

या अल्लाह मैं माँगता हूँ तुझ से ख़ास रहमत तेरी कि जिस से हिदायत कर दे तू मेरे दिल को और जमअियत दे उस से मेरे कामों को और तर्बियत कर दे उस से मेरी अबतरी को और दुरुस्त कर दे उस से मेरे दीन को अदा कर दे उस से मेरे क़र्ज़ को और हिफाज़त रखे बज़रिया उसके मेरी ग़ायब चीज़ों की और कुव्वत दे उस से मेरी हाज़िर चीज़ों को और नूरानी कर दे उस से चेहरा मेरा और पाकीज़ा कर दे उस से अमल मेरा और दिल में डाल दे मेरे उस से हिदायत मेरी और

लौटा दे उस से मेरी उलफ़त और बचाये रखे मुझे उसके ज़रिये हर बुराई से।

١٣٣–اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِىْ اِيْمَانًا لَّا يَرْتَدُّ وَيَقِيْنًا لَّيْسَ بَعْدَهٗ كُفْرٌ وَّ رَحْمَةً اَنَالُ بِهَا شَرَفَ كَرَامَتِكَ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ.

१३३. अल्लाहुम्म आतिनी ईमानल्ला यरतद्दु व यक़ीनल्लैस बादहू कुफरुंव्व रहमतन अनालु बिहा शरफ करामतिक फिद्दुनिया वल आख़िरति।

या अल्लाह दे मुझे ऐसा ईमान कि फिर न फिरे और ऐसा यक़ीन कि उसके बाद कुफ़्र न हो और ऐसी रहमत कि पा लूं मैं बज़रिया उसके शर्फ तेरे यहाँ की इज़्ज़त का दुनिया और आख़िरत में।

١٣٤–اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ الْفَوْزَ فِى الْقَضَاءِ وَ نُزُلَ الشُّهَدَآءِ وَعَيْشَ السُّعَدَاءِ وَ مُرَافَقَةَ الْاَنْبِيَاءِ وَالنَّصْرَ عَلَى الْاَعْدَاءِ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَاءِ.

१३४. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल फ़वज़ फ़िल क़ज़ाइ व नुज़ुलश्शुहदाइ व अैशस्सुअदाइ व मुराफ़क़तल अंबियाइ वन्नस्र अलल आदाइ इन्नक समीउ दुआ।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से कामियाबी क़िसमत में और मेहमानी शोहदा की और ऐश नेक बख़्तों का सा और साथ अंबिया अलैहुमस्सलाम का और फतह दुश्मनों पर क्योंकि तू सुनने वाला है दुआ का।

۱۳۵–اَللّٰھُمَّ مَا قَصُرَ عَنْهُ رَأْیِیْ وَ ضَعُفَ عَنْهُ عَمَلِیْ وَ لَمْ تَبْلُغْهُ مُنْیَتِیْ وَ مَسْأَلَتِیْ مِنْ خَیْرٍ وَّ عَدْتَّهٗ اَحَدًا مِّنْ خَلْقِکَ اَوْ خَیْرٍ اَنْتَ مُعْطِیْهِ اَحَدًا مِّنْ عِبَادِکَ فَاِنِّیْ اَرْغَبُ اِلَیْکَ فِیْهِ وَ اَسْأَلُکَ بِرَحْمَتِکَ رَبَّ الْعٰلَمِیْنَ.

१३५. अल्लाहुम्म मा क़सुर अन्हु रायी व ज़अुफ अन्हु अमली व लम तबलुग़हु मुन्यती व मस्अलती मिन ख़ैरिंव्व अत्तहू अहदम्मा मिन ख़ल्क़िक अव ख़ैरिन अंत मुअतिही अहदम मिन इबादिक फइन्नी अरग़बु इलैक फीही व अस्अलुक बिरहमतिक रब्बल आलमीन।

या अल्लाह जो भलाई की क़ासिर रह गई हो उससे राये मेरी और कम रह गया हो उस से अमल मेरा और न पहुंची हो उस तक आरज़ू मेरी और सवाल मेरा कि किया हो तूने वादा उस भलाई

का किसी से अपनी मख़्लूक़ में से या हो ऐसी कोई भलाई कि तू उस को देने वाला हो किसी को अपने बंदों में से तो मैं ख़्वाहिश करता हूँ तुझ से उसकी और मांगता हूँ तुझ से तेरी रहमत की वजह से ऐ रबुल आलमीन।

١٣٦-اَللّٰهُمَّ اِنِّىٓ اُنْزِلُ بِكَ حَاجَتِىْ وَ اِنْ قَصُرَ رَأْيِىْ وَ ضَعُفَ عَمَلِىْ اِفْتَقَرْتُ اِلٰى رَحْمَتِكَ فَأَسْأَلُكَ يَا قَاضِىَ الْاُمُوْرِ وَ يَا شَافِىَ الصُّدُوْرِ كَمَا تُجِيْرُ بَيْنَ الْبُحُوْرِ اَنْ تُجِيْرَنِىْ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ وَ مِنْ دَعْوَةِ الثُّبُوْرِ وَ مِنْ فِتْنَةِ الْقُبُوْرِ.

१३६. अल्लाहुम्म इन्नी उनज़िलु बिक हाजती व इन क़सुर राई व ज़अुफ अमली इफतक़रतु इला रहमतिक फअस्अलुक या क़ाज़ियल उमूरी व या शाफियस्सुदूरि कम तुजीरु बैनल बुहूरी अन तुजीरनी मिन अज़ाबिस्सअीरी व मिन दअवतिस्सुबूरी व मिन फित्नतिल कुबूर।

या अल्लाह मैं तेरे हवाले करता हूँ अपनी ख़्वाहिश अगर कोताह है समझ मेरी और ज़ईफ है अमल मेरा मुहताज हूँ मैं तेरी रहमत का बस

मांगता हूँ तुझ से ऐ पूरा करने वाले कामों के और शिफा देने वाले दिलों के जिस तरह फासला कर रखा है तूने दरयाओं में कि फासला पर रखे तू मुझे दोज़ख़ के अज़ाब से और वावेला करने से और क़ब्रों के फ़ितने से।

١٣٧- اَللّٰهُمَّ ذَا الْحَبْلِ الشَّدِيْدِ وَ الْأَمْرِ الرَّشِيْدِ أَسْأَلُكَ الْأَمْنَ يَوْمَ الْوَعِيْدِ وَالْجَنَّةَ يَوْمَ الْخُلُوْدِ مَعَ الْمُقَرَّبِيْنَ الشُّهُوْدِ الرُّكَّعِ السُّجُوْدِ الْمُوْفِيْنَ بِالْعُهُوْدِ إِنَّكَ رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ وَّ إِنَّكَ تَفْعَلُ مَا تُرِيْدُ.

१३७. अल्लाहुम्म ज़ल हबलिश्शदीदी वल अमर्रिशीदी अस्अलुकल अमन यवमल वअीदी वल जन्नत यवमल खुलूदी मअल मुक़र्रबीनश्शुहूदिर्रुक्क अीस्सुजूदिल मुफीन बिल उहूदि इन्नक रहीमुंव्व दूदुंव्व इन्नक तफ़अलु मा तुरीद।

ऐ अल्लाह मज़बूत डोर वाले और दुरुस्त हुक्म वाले मांगता हूँ मैं तुझ से अमन यवमे वअीद में और जन्नत यवमुल ख़ुलूद में उन लोगों के साथ जो मुक़र्रब हैं हाज़िर बाश रूकूअ और सजदा में रहने वाले अपने इक़रारों को पूरा करने वाले

क्योंकि तू मेहरबान शफक़त वाला है और तू कर सकता है जो कुछ चाहे।

١٣٨- اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا هَادِيْنَ مُهْتَدِيْنَ غَيْرَ ضَآلِّيْنَ وَلَا مُضِلِّيْنَ سِلْمًا لِاَوْلِيَآئِكَ وَ حَرْبًا لِّاَعْدَائِكَ نُحِبُّ بِحُبِّكَ مَنْ اَحَبَّكَ وَنُعَادِىْ بِعَدَاوَتِكَ مَنْ خَالَفَكَ مِنْ خَلْقِكَ.

१३८. अल्लाहुम्मजअलना हादीन मुहतदीन ग़ैर ज़ाल्लीन वला मुज़िल्लीन सिलमन लिऔलियाइक व हरबल्लिआदाइक नुहिब्बु बिहुब्बिक मन अहब्बक व नुआदी बिअदावतिक मन ख़ालफक मिन ख़ल्क़िक।

या अल्लाह कर दे हमें राह नुमा राहबीं न बे राह और भटकाने वाले दोस्त तेरे दोस्तों के और दुश्मन तेरे दुश्मनों के दोस्त रखें तेरी मुहब्बत की वजह से तेरी मख़्लूक़ में से उसको जो तुझ से मुहब्बत रखे और दुश्मन समझें तेरी दुश्मनी की वजह से तेरी मख़्लूक़ में से उसे जो तुझ से मुख़ालिफत करे।

١٣٩- اَللّٰهُمَّ هٰذَا الدُّعَاءُ وَعَلَيْكَ الْإِجَابَةُ وَهٰذَا الْجَهْدُ وَعَلَيْكَ التُّكْلَانُ اَللّٰهُمَّ لَا تَكِلْنِىْ اِلٰى نَفْسِىْ طَرْفَةَ

غَيْنٍ وَّ لَا تَنْزِعْ مِنِّيْ صَالِحَ مَا اَعْطَيْتَنِيْ.

१३९. अल्लाहुम्म हाज़द्दुआउ व अलैकल इजाबतु व हाज़ल जहदु व अलैकत्तुक्लानु अल्लाहुम्म ला तकिलनी इला नफ्सी तरफत ऐनिंव्वला तनज़िअ मिन्नी सालिह मा आतैतनी।

या अल्लाह यह दुआ है और तेरे ज़िम्मे क़बूल करना है और यह मेरी कोशिश है और तेरे ऊपर भरोसा है या अल्लाह न हवाले कर मुझे मेरे नफ्स के एक पलक भर और न छीन मुझ से वह अच्छी चीज़ जो दी है तूने मुझे।

١٤٠- اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ لَسْتَ بِاِلٰهٍ اسْتَحْدَثْنَاهُ وَلَا بِرَبٍّ يَّبِيْدُ ذِكْرُهُ ابْتَدَعْنَاهُ وَلَا عَلَيْكَ شُرَكَاءُ يَقْضُوْنَ مَعَكَ وَلَا كَانَ لَنَا قَبْلَكَ مِنْ اِلٰهٍ نَلْجَأُ اِلَيْهِ وَنَذَرُكَ وَلَا اَعَانَكَ عَلٰى خَلْقِنَا اَحَدٌ فَنُشْرِكَهُ فِيْكَ تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ فَنَسْأَلُكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اغْفِرْلِيْ.

१४०.अल्लाहुम्म इन्नक लस्त बिइलाहिनिस तहदस्नाहु वला बिरब्बिंय्यबीदु ज़िक्रुहुब तदानाहू वला अलैक शुरकाउ यक़ज़ून मअक वला कान लना क़ब्लक मिन इलाहिन नलजउ इलैहि व नज़रुक

वला अआनक अला ख़ल्क़िना अहदुन फनुशरिकहू फीक तबारकत व तआलैत फनसअलुक ला इलाह इल्ला अन्तग़्फिरली।

या अल्लाह तू ऐसा ख़ुदा नहीं कि हम ने उसको गढ़ लिया हो और न ऐसा परवरदिगार कि ना पायदार हो ज़िक्र उसका और हम ने उसे इख़्तिरा कर लिया हो और न तेरे लिए और साथी हैं कि तेरे हुक्म में शरीक हो और न पहले तुझ से हमारा कोई खुदा था जिस के पास हम पनाह पकड़ते हों और तुझ को छोड़ देते हों और न मदद की है तेरी हमारी पैदा करने में किसी ने कि हम उसको तेरे साथ शरीक समझें बा बरकत है तू और बरतर है पस माँगते हैं तुझ से नही है कोई माबूद सिवा तेरे बख़्श दे मुझे।

١٤١. اَللّٰهُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَ نَفْسِىْ وَ اَنْتَ تَوَفّٰهَا لَكَ مَمَاتُهَا وَ مَحْيَاهَا اِنْ اَحْيَيْتَهَا فَا حْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ عِبَادَكَ الصَّالِحِيْنَ وَاِنْ اَمَتَّهَا فَاغْفِرْ لَهَا وَارْحَمْهَا.

१४१. अल्लाहुम्म अन्त ख़लक़्त नफ्सी व अन्त तवफ्फाह लक ममातुहा व महयाहा इन अहयैतहा फहफज़हा बिमा तह्फज़ु बिही इबादकस्सालिहीन व इन अमत्तहा फग़्फिर लहा वरहमहा।

या अल्लाह तूने ही पैदा किया है मेरी जान को और तूही मौत देगा उसे तेरे ही लिए है मरना उसका और जीना उसका अगर ज़िंदा रखे तू तो हिफाज़त कर उसकी ऐसी हिफाज़त से कि तू अपने नेक बंदों की उससे हिफाज़त करता है। और अगर मौत दे तो उसे बख़्श देन उसे और रहम करना उस पर।

١٤٢- اَللّٰهُمَّ اَغْنِنِىْ بِالْعِلْمِ وَزَيِّنِّىْ بِالْحِلْمِ وَاَكْرِمْنِىْ بِالتَّقْوٰى وَجَمِّلْنِىْ بِالْعَافِيَةِ.

१४२. अल्लाहुम्मा अग़्निनी बिल इल्मी व ज़य्यिन्नी बिल हिल्मी व अकरिम्नी बित्तक़्वा व जम्मिलनी बिल आफियती।

या अल्लाह मदद कर मेरी इल्म से और आरास्ता कर मुझे वक़ार से और बुज़ुर्गी दे मुझे परहेज़गारी से और जमाल दे मुझे अमन से।

١٤٣- اَللّٰهُمَّ لَايُدْرِكْنِىْ زَمَانٌ وَّلَا يُدْرِكُوْا زَمَانًا لَّا يُتَّبَعُ فِيْهِ الْعَلِيْمُ وَلَا يُسْتَحْيٰى فِيْهِ مِنَ الْحَلِيْمِ قُلُوْبُهُمْ قُلُوْبُ الْاَعَاجِمِ وَاَلْسِنَتُهُمْ اَلْسِنَةُ الْعَرَبِ.

१४३. अल्लाहुम्म ला युदरिकनी ज़मानुंव्व ला युदरिकू ज़मानल ला युत्तबउ फीहिलल अलीमु वला

युस्तहया फ़ीही मिनल हलीमी क़ुलूबुहुम क़ुलूबुल अअजिमी व अल सिनतुहुम अल सिनतुल अरब।

या अल्लाह न पाये मुझे वह ज़माना और न पायें यह लोग उस ज़माना को कि न इत्तिबा की जाये उस में आलिम की और न लिहाज़ किया जाये उस में बा वक़ार से दिल उनके दिल अजमीयों के से और ज़बानें उनकी ज़बानें अरब की सी।

١٤٤- اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَتَّخِذُ عِنْدَکَ عَهْدًا لَّنْ
تُخْلِفَنِيْهِ فَاِنَّمَا اَنَا بَشَرٌ فَاَيُّمَا مُؤْمِنٍ اٰذَيْتُهٗ
اَوْشَتَمْتُهٗ اَوْ جَلَدْتُّهٗ اَوْلَعَنْتُهٗ فَاجْعَلْهَالَهٗ
صَلٰوةً وَّزَکٰوةً وَّقُرْبَةً تُقَرِّبُهٗ بِهَآ اِلَيْکَ
اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْبَرَصِ وَمِنَ
الشِّقَاقِ وَالنِّفَاقِ وَسُوْءِ الْاَخْلَاقِ وَمِنْ
شَرِّمَا تَعْلَمُ اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنْ حَالِ اَهْلِ
النَّارِ وَمِنَ النَّارِ وَمَا قَرَّبَ اِلَيْهَامِنْ قَوْلٍ
اَوْعَمَلٍ وَّمِنْ شَرِّمَا اَنْتَ اٰخِذٌ بِنَاصِيَتِهٖ
وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّمَافِىْ هٰذَا الْيَوْمِ وَ
وَشَرِّ مَا بَعْدَهٗ وَمِنْ شَرِّ نَفْسِىْ وَشَرِّ
الشَّيْطَانِ وَشِرْکِهٖ وَاَنْ نَّقْتَرِفَ عَلٰى

اَنْفُسِنَا سُوْءً اَوْ نَجُرَّهُ اِلٰى مُسْلِمٍ اَوْ اَكْتَسِبَ خَطِيْئَةً اَوْ ذَنْبًا لَّا تَغْفِرُهُ وَمِنْ ضِيْقِ الْمَقَامِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ

१४४.अल्लाहुम्म इन्नी अत्तख़िज़ु इन्दक अह-दल्लन तुख़्लिफनीहि फइन्नमा अना बशरु फ अय्यमा मुमिनिन आज़ैतुहू अव शतमतुहू अव जलत्तुहू अव लअनतुहू फजअलहा लहू सलातंव्व ज़कातंव्व कुरबतन तुक़र्रिबुहू बिहा इलैक अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल बरसी व मिनशिशक़ाक़ी वन्निफाक़ी व सूइल अख़्लाक़ी व मिन शर्रि मा तअलमु अऊज़ुबिल्लाहि मिन हाली अहलिन्नारी व मिनन्नारी वमा क़र्रब इलैहा मिन क़ौलिन अव अमलिंव्व मिन शर्रिमा अन्त आख़िजुम बिनासियतिही व अऊज़ुबिक मिन शर्री मा फी हाज़ल यवमी व शर्री मा बादहू व मिन शर्री नफ्सी व शर्रिश्शैतानि व शिरकिही व अन्नक़्तरिफ अला अनफुसिना सूअन अव नजुर्रहू इला मुस्लिमिन अव अक्तसिब ख़तीअतन अव ज़मबल्ला तग़्फिरुहू व मिन ज़िक़िल मक़ामी यवमल क़ियामती।

या अल्लाह मैं लेता हूँ तुझ से एक वादा कि हरगिज़ न ख़िलाफ करना उसके मैं चूँकि बशर हूँ तो जो मुसलमान कि तकलीफ दूँ मैं उसे या बुरा

भला कहूँ मैं उसे या मारूँ पीटूँ उसे या बद दुआ दूँ उसको तो कर देना उसको उसके हक़ में रहमत और पाकी और ज़रिया कुरबत का कि मुकर्रब बनाये तू अपना उसको बवजह उसके या अल्लाह मैं तेरी पनाह पकड़ता हूँ बरस से और ज़िद्दा ज़िद्दी से और निफाक़ से और बुरे अख़्लाक़ से और उस चीज़ की बुराई से जिसे तू जानता है पनाह पकड़ता हूँ मैं अल्लाह की अहले दोज़ख़ के हाल से और दोज़ख़ से और उस चीज़ से जो क़रीब करे उस से क़ौल हो या अमल और उस चीज़ की बुराई से जो तेरे क़ब्ज़े में है और पनाह चाहता हूँ मैं तेरी उस चीज़ की बुराई से जो उस दिन में है और उस चीज़ की बुराई से जो उसके बाद है और अपने नफ्स की बुराई से और शैतान की बुराई से और उसके शिर्क से और उस से कि हासिल करें हम अपनी जान पर किसी बुराई को या उसको किसी मुसलमान की तरफ पहुंचायें या करूँ मैं कोई ऐसी ख़ता या गुनाह जिसे तू न बख़्शे और मुक़ाम की तंगी से क़यामत के दिन।

اَلْمَنْزِلُ الْخَامِسُ يَوْمَ الْاَرْبِعَآءِ

अल मंज़िलुल ख़ामिसु यवमल अरबिआइ

पाँचवीं मंज़िल बरोज़ चहार शंबा (बुध)

۱۴۵- اَللّٰهُمَّ حَصِّنْ فَرْجِىْ وَيَسِّرْلِىْ اَمْرِىْ.

१४५. अल्लाहुम्म हस्सिन फरजी व यस्सिरली अमरी।

या अल्लाह महफूज़ कर दे मेरी शर्मगाह को और आसान कर दे मुझ पर मेरा काम।

۱۴۶- اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ تَمَامَ الْوُضُوْءِ وَتَمَامَ الصَّلٰوةِ وَتَمَامَ رِضْوَانِكَ وَتَمَامَ مَغْفِرَتِكَ.

१४६. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक तमामल वुज़ूइ व तमामस्सलाती व तमाम रिज़वानिक व तमाम मग़्फिरतिक।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से वुज़ू का कमाल और नमाज़ का कमाल और तेरी ख़ुशनुदी का कमाल और तेरी मग़्फिरत का कमाल।

۱۴۷- اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِىْ كِتَابِىْ بِيَمِيْنِىْ.

१४७. अल्लाहुम्म आतिनी किताबी बियमीनी।

या अल्लाह देना मुझे मेरा नामये आमाल दाहिने हाथ में।

۱۴۸- اَللّٰهُمَّ غَشِّنِیْ بِرَحْمَتِکَ وَجَنِّبْنِیْ عَذَابَکَ

१४८. अल्लाहुम्म ग़श्शिनी बिरहमतिक व जन्निबनी अज़ाबक।

या अल्लाह ढाँप ले मुझे अपनी रहमत में और बचाना मुझे अपने अज़ाब से।

۱۴۹- اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْ قَدَمَیَّ یَوْمَ تَزِلُّ فِیْهِ الْاَقْدَامُ

१४९. अल्लाहुम्म सब्बित क़दमय्य यवम तज़िल्लु फीहिल इक़दाम।

या अल्लाह साबित रखना मेरे क़दम जिस दिन कि लग़्ज़िश खायेंगे क़दम।

۱۵۰- اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مُفْلِحِیْنَ.

१५०. अल्लाहुम्मजअलना मुफलिहीन।

या अल्लाह करना हमें निजात पाने वाले।

۱۵۱- اَللّٰهُمَّ افْتَحْ أَقْفَالَ قُلُوْبِنَا بِذِکْرِکَ وَاَتْمِمْ عَلَیْنَا نِعْمَتَکَ وَاَسْبِغْ عَلَیْنَا مِنْ فَضْلِکَ وَاجْعَلْنَا مِنْ عِبَادِکَ الصّٰلِحِیْنَ.

१५१. अल्लाहुम्मफ्तह अक़्फाल क़ुलूबिना बिज़िक्रिक व अतमिम अलैना निअमतक व असबिग़ अलैना मिन फज़्लिकवजअलना मिन इबादिकस्सालीहीन।

या अल्लाह खोल दे कुफ्ल हमारे दिलों के अपने

ज़िक्र से और पूरा कर हम पर अपनी नेमत को और कामिल कर हम पर अपना फ़ज़्ल और कर दे हमें अपने नेक बंदों में से।

١٥٢- اَللّٰهُمَّ اٰتِنِىْ اَفْضَلَ مَاتُؤْتِىْ عِبَادَكَ الصّٰلِحِيْنَ.

१५२. अल्लाहुम्म आतिनी अफ़्ज़ल मातूती इबादकस्सालिहीन।

या अल्लाह दे मुझे जो सब से बढ़ कर चीज़ अपने नेक बंदों को देता हो।

١٥٣- اَللّٰهُمَّ اَحْيِنِىْ مُسْلِمًا وَّاَمِتْنِىْ مُسْلِمًا.

१५३. अल्लाहुम्म अहयीनी मुस्लिमंव्व अमितनी मुस्लिमा।

या अल्लाह ज़िन्दा रख मुझे मुसलमान और मारना मुझे मुसलमान।

١٥٤- اَللّٰهُمَّ عَذِّبِ الْكَفَرَةَ وَاَلْقِ فِىْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ وَخَالِفْ بَيْنَ كَلِمَتِهِمْ وَاَنْزِلْ عَلَيْهِمْ رِجْزَكَ وَعَذَابَكَ اَللّٰهُمَّ عَذِّبِ الْكَفَرَةَ اَهْلَ الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ الَّذِيْنَ يَجْحَدُوْنَ اٰيَاتِكَ وَيُكَذِّبُوْنَ رُسُلَكَ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِكَ وَيَتَعَدَّوْنَ حُدُوْدَكَ وَ

يَدْعُوْنَ مَعَكَ اِلٰهًا اٰخَرَ لَآاِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ تَبَارَكْتَ وَتَعَالَيْتَ عَمَّا يَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ عُلُوًّا كَبِيْرًا.

१५४. अल्लाहुम्म अज़्ज़िबिल कफरत व अल्कि फी कुलूबिहिमिर रुअब व ख़ालिफ बैन कलिमतिहिम व अंज़िल अलैहिम रिजज़क व अज़ाबक अल्लाहुम्म अज़्ज़िबिल कफरत अहलल किताबी वल मुश्रिरीकीनल लज़ीन यजहदून आयातिक व युकज़्ज़िबून रुसुलक व यसुद्दून अन सबीलिक व यतअद्दून हुदूदक व यदऊन मअक इलाहन आख़ार ला इलाह इल्ला अन्त तबारकत व तआलैत अम्मा यक़ूलुज़्ज़ालिमून उलुव्वन कबीरा।

या अल्लाह अज़ाब दे काफिरों को और डाल दे उनके दिलों में रोब और इख़्तिलाफ पैदा कर दे उनकी बात में और उतार उन पर क़हर अपना और अज़ाब्र अपना या अल्लाह दे काफिरों को अहले किताब और मुशरिकीन को जो इनकार करते हैं तेरी आयतों का और झुटलाते हैं तेरे रसूलों को और रोकते हैं तेरी राह से और तजावुज़ करते हैं तेरी हुदूद से और पुकारते हैं तेरे साथ और माबूद को नहीं है कोई माबूद सिवा तेरे बा बरकत है तू और बरतर है उस से कि कहते हैं ज़ालिम बहुत

बड़ा बरतर होना।

١٥٥-اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِیْنَ وَ الْمُسْلِمٰتِ وَاَصْلِحْهُمْ وَاَصْلِحْ ذَاتَ بَیْنِهِمْ وَاَلِّفْ بَیْنَ قُلُوْبِهِمْ وَاجْعَلْ فِیْ قُلُوْبِهِمُ الْاِیْمَانَ وَالْحِكْمَةَ وَثَبِّتْهُمْ عَلٰی مِلَّةِ رَسُوْلِکَ وَاَوْزِعْهُمْ اَنْ یَّشْكُرُوْا نِعْمَتَکَ الَّتِیْ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ وَاَنْ یُّوْفُوْا بِعَهْدِکَ الَّذِیْ عَاهَدْتَّهُمْ عَلَیْهِ وَانْصُرْهُمْ عَلٰی عَدُوِّکَ وَعَدُوِّهِمْ اِلٰهَ الْحَقِّ سُبْحَانَکَ لَآ اِلٰهَ غَیْرُکَ اِغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَاَصْلِحْ لِیْ عَمَلِیْ اِنَّکَ تَغْفِرُ الذُّنُوْبَ لِمَنْ تَشَاءُ وَاَنْتَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ یَاغَفَّارُ اغْفِرْلِیْ یَاتَوَّابُ تُبْ عَلَیَّ یَارَحْمٰنُ ارْحَمْنِیْ یَاعَفُوُّ اعْفُ عَنِّیْ یَا رَؤُوْفُ ارْؤُفْ بِیْ یَارَبِّ اَوْزِعْنِیْ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَکَ الَّتِیْٓ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ وَطَوِّقْنِیْ حُسْنَ عِبَادَتِکَ یَارَبِّ اَسْاَلُکَ مِنَ الْخَیْرِ

كُــلِّـهٖ يَــارَبِّ افْــتَــحْ لِــىْ بِــخَيْرٍ وَّاخْتِمْ لِىْ
بِــــخَــــيْــــرٍ وَّقِــنِــــىْ السَّيِّاٰتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ
يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ؕ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ.

१५५. अल्लाहुम्मग़्फ़िरली व लिल मुमिनीन वल मुमिनाती वल मुस्लिमीन वल मुस्लिमाती व अस्लिहहुम व अस्लिह ज़ात बैनिहिम व अल्लिफ बैन कुलूबिहिम वजअल फी कुलूबिहिमुल ईमान वल हिक्मत व सब्बितहुम अला मिल्लती रसूलिक व अवज़िअहुम अंय्यशकुरू निमतकल लती अनअमत अलैहिम व अंय्यूफू बिअहदिकल लज़ी आअहत्तहुम अलैहि वन सुरहुम अला अदुव्विक व अदुव्विहिम इलाहल हक्कि सुबहानक ला इलाह ग़ैरुक इग़्फिरली ज़ंबी व असलिहली अमली इन्नक तग़्फिरुज़्ज़ुनूब लिमन तशाउ व अन्तल ग़फ़ूरुर रहीमु या ग़फ़्फ़ारुग़ फिरली या तव्वाबु तुब अलय्या या रहमानुर हमनी या अफुव्वुअफ अन्नी या रऊफर रऊफ बी या रब्बि अवज़िअनी अन अशकुर निअमतकल लती अनअमत अलय्य व तव्विक़नी हुस्न इबादतिक या रब्बि अस्अलुक मिनल ख़ैरी कुल्लिही या रब्बिफ्तह ली बिख़ैरिंव्वख़्तुम ली बि ख़ैरिंव्वक़िनीस सय्यिआती व मन तक़िस्सय्यिआती यवमइज़िन फक़द रहिमतहू। व

ज़ालिक हुवल फवज़ुल अज़ीम।

या अल्लाह बख़्श मुझ को और तमाम मोमिनीन और मुमिनात और मुस्लिमीन और मुस्लिमात को और दुरुस्त कर दे उन्हें और सुलह दे उनके आपस में और उलफत दे उनके दिलों में और कर दे उनके दिलों में ईमान और हिक्मत और साबित रख उन्हें अपने रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) के दीन पर और नसीहत कर उन्हें यह कि शुक्र करें तेरी उस नेमत का जो तूने उनको दी है और यह कि पूरा करें तेरा वह अहद जो तूने उन से लिया है और ग़ालिब कर उनको अपने और उनके दुश्मन पर ऐ माबूदे बरहक़ पाक है तू कोई माबूद तेरे सिवा नहीं बख़्श दे मेरे गुनाह और दुरुस्त कर दे मेरे अमल क्योंकि तू बख़्श देता है गुनाह जिस के चाहता है और तू ही ग़फूर रहीम है ऐ ग़फ्फार बख़्श दे मुझे ऐ तव्वाब तौबा क़बूल कर मेरी ऐ रहमान रहम कर मुझ पर ऐ अफुव्व दर गुज़र कर मुझ से ऐ रऊफ मेहरबान हो जा मुझ पर ऐ परवरदिगार नसीब कर मुझे यह कि शुक्र करूँ तेरी नेमत का जो तूने मुझ पर की है और ताक़त दे मुझे अपनी इबादत अच्छी तरह करने की ऐ रब मैं मांगता हूँ तुझ से भलाई सब की सब ऐ रब आग़ाज़

कर मेरा ख़ैर के साथ और ख़ात्मा कर मेरा ख़ैर के साथ और बचा मुझे बुराइयों से और जिस को तू बचाये उस दिन बुराइयों से तो बेशक उस पर तूने रहम किया और यही तो है बड़ी कामियाबी।

١٥٦- اَللّٰهُمَّ لَکَ الْحَمْدُ كُلُّهٗ وَلَکَ الشُّكْرُ كُلُّهٗ وَلَکَ الْمُلْکُ كُلُّهٗ وَلَکَ الْخَلْقُ كُلُّهٗ بِيَدِکَ الْخَيْرُ كُلُّهٗ وَاِلَيْکَ يَرْجِعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ اَسْأَلُکَ الْخَيْرَ كُلَّهٗ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ الشَّرِّ كُلِّهٖ. بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ غَيْرُهٗ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ عَنِّیْ الْهَمَّ وَالْحُزْنَ اللّٰهُمَّ بِحَمْدِکَ انْصَرَفْتُ وَبِذَنْبِیْ اعْتَرَفْتُ.

१५६. अल्लाहुम्म लकल हम्दु कुल्लुहू व लकश शुक्रु कुल्लुहू व लकल मुल्कु कुल्लुहु व लकल ख़ल्कु कुल्लुहू व लकल ख़ल्कु कुल्लुहू बियदिकल ख़ैरु कुल्लुहू व इलैक यरजिअुल अमरु कुल्लुहु असअलुकल ख़ैर कुल्लहू व अअुज़ुबिक मिनश शर्रि कुल्लिही. बिस्मिल्लाहिल लज़ी ला इलाह ग़ैरुहू अल्लाहुम्म अज़हिब अन्निल हम्म वल हुज़ान अल्लाहुम्म बिहमदिकनसरफ्तु व बिज़ंबीअ तरफतु।

या अल्लाह तेरे ही लिए है तारीफ सब की सब

और तेरे ही लिए है शुक्र सब का सब और तेरा ही है मुल्क सब का सब और तेरी ही है मख़्लूक़ सब की सब तेरे ही क़ब्ज़ा में है भलाई सब की सब और तेरी ही तरफ रुज़ू होती हैं कुल बातें मैं मांगता हूँ तुझ से भलाई सब की सब और तेरी पनाह चाहता हूँ तमाम बुराइयों से मैं नाम लेता हूँ उस अल्लाह का जिस के सिवा कोई माबूद नहीं या अल्लाह दूर कर मुझ से फिक्र और ग़म या अल्लाह तेरी ही हम्द के साथ चलता फिरता हूँ मैं और अपने गुनाह का इक़रार करता हूँ मैं।

١٥٧- اَللّٰهُمَّ اِلٰهِىْ وَاِلٰـــهَ اِبْــرَاهِيْمَ وَاِسْـحٰقَ وَيَـــعْـقُـوْبَ وَاِلٰــهَ جِـبْـرَئِـيْلَ وَمِيْكَائِيْلَ وَاِسْـــرَافِـيْـلَ اَسْأَ لُكَ اَنْ تَسْتَجِيْبَ دَعْوَتِىْ فَـــاَنَـــا مُـضْــطَـرٌّ وَّتَعْصِمَنِىْ فِىْ دِيْنِىْ فَاِنِّىْ مُـبْــتَـــلًـى وَّتَنَالَنِىْ بِرَحْمَتِكَ فَاِنِّىْ مُذْنِبٌ وَّ تَـنْـفِـىَ عَـــنِّــىْ الْـفَـقْـرَ فَاِنِّىْ مُتَمَسْكِنٌ.

१५७. अल्लाहुम्म इलाही व इलाह इबराहीम व इसहाक़ व यअकूब व इलाह जिबरील व मीकाईल व इसराफील अस्‌अलुक अन तस्तजीब दअवती फअना मुज़तर्रुंव्व तअसिमनी फी दीनी फइन्नी मुब्‌तलंव्व

तनालनी बिरहमतिक फइन्नी मुज़निबुंव्व तंफिय अन्निल फक्.र फइन्नी मुतमस्किन।

ऐ अल्लाह माबूद मेरे और माबूद इबराहीम अलैहिस्सलाम के और इसहाक़ अलैहिस्सलाम के और याकूब अलैहिस्सलाम के और माबूद जिबरईल अलैहिस्सलाम के और मीकाईल के और इसराफील अलैहिस्सलाम के मैं सवाल करता हूँ तुझ से यह कि क़बूल कर ले मेरी दुआ क्योंकि मैं बेक़रार हूँ और महफ़ूज़ रखे तू मुझे मेरे दीन में क्योंकि मै बला में पड़ा हुआ और शामिल हाल करना मेरे अपनी रहमत क्योंकि मैं गुनहगार हूँ और दूर कर दे मुझ से मुहताजी क्योंकि मैं बे कस हूँ।

١٥٨- اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْأَلُکَ بِحَقِّ السَّآئِلِیْنَ عَلَیْکَ فَاِنَّ لِلسَّائِلِ عَلَیْکَ حَقًّا اَیَّمَا عَبْدٍ اَوْ اَمَةٍ مِّنْ اَهْلِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ تَقَبَّلْتَ دَعْوَتَهُمْ وَاسْتَجَبْتَ دُعَاءَ هُمْ اَنْ تُشْرِکَنَا فِیْ صَالِحِ مَایَدْعُوْنَکَ فِیْهِ وَاَنْ تُشْرِکَهُمْ فِیْ صَالِحِ مَا نَدْعُوْکَ فِیْهِ وَاَنْ تُعَافِیَنَا وَاِیَّاهُمْ وَاَنْ تَقْبَلَ مِنَّا وَمِنْهُمْ وَاَنْ تَجَاوَزَ عَنَّا وَعَنْهُمْ

فَــــاِنَّــــنَــــا اٰمَــنَّــا بِمَا اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ فَــــاكْــتُــبْـنَــا مَــعَ الــشّٰــهِــدِيْــنَ.

१५८. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक बिहक़्क़िस साइलीन अलैक फइन्न लिस्साइली अलैक हक़्क़न अय्यमा अब्दिन अव अमतिम्मिन अहलिल बर्रि वल बहरी तक़ब्बलत दवअतहुम वस्तजबत दुआअहुम अन तुशरिकना फी सालिही मा यदऊनक फीही व अन तुशरिकहुम फी सालिही मा नदऊक फीही व अन तुआफियना व इय्याहुम व अन तक़्बल मिन्ना व मिनहुम व अन तजावज़ अन्ना व अनहुम फइन्नना आमन्ना बिमा अंज़लत वत्तबअनार रसूल फक्तुबना मअश्शाहिदीन।

या अल्लाह मैं माँगता हूँ तुझ से उस हक़ के ज़रिये से जो साइलों को तुझ पर हासिल है क्योंकि साइलों का तुझ पर हक़ है कि जौनसा गुलाम या लौंडी ख़ुशकी या तरी में से कि क़बूल की हो तूने दुआ उनकी और मुसतजाबुद्दावात किया हो उन्हें यह कि शरीक कर दे तू हमें अच्छी दुआओं में जो मांगें वह तुझ से और यह कि शरीक कर दे तू उन को उन अच्छी दआओं में जो मांगें हम तुझ से और आफियत दे तू हमें और उनको और यह कि क़बूल करे तो हम से और उन से और यह कि दर गुज़र

करे हम से और उन से क्योंकि हम ईमान लाये उस पर जो तूने उतारा और पैरवी की हम ने रसूल की पस लिख ले हमें शहादत देने वालों में।

١٥٩- اَللّٰهُمَّ اٰتِ مُحَمَّدَنِ الْوَسِيْلَةَ وَاجْعَلْ فِى الْمُصْطَفَيْنَ مَحَبَّتَهٗ وَفِى الْاَعْلَيْنَ دَرَجَتَهٗ وَفِى الْمُقَرَّبِيْنَ ذِكْرَهٗ.

१५९. अल्लाहुम्म आति मुहम्मदनिल वसीलत वजअल फिल मुस्तफीन महब्बतहू व फिल आलैन दरजतहू व फिल मुक़र्रबीन ज़िक्रहू।

या अल्लाह दे मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुक़ामे वसीला और कर दे बरगुज़ीदा लोगों में मुहब्बत आपकी और आली मर्तबा लोगों में दर्जा आप का और मुक़र्रिबीन में ज़िक्र आप का।

١٦٠- اَللّٰهُمَّ اهْدِنِىْ مِنْ عِنْدِكَ وَاَفِضْ عَلَىَّ مِنْ فَضْلِكَ وَاَسْبِغْ عَلَىَّ مِنْ رَّحْمَتِكَ وَاَنْزِلْ عَلَىَّ مِنْ بَرَكَاتِكَ.

१६०. अल्लाहुम्महदिनी मिन इन्दिक व अफिज़ अलय्य मिन फज़लिक व अस्बिग़ अलय्या मिर्रहमतिक व अन्ज़िल अलय्य मिम बरकातिक।

या अल्लाह दे तू मुझे हिदायत अपने पास से और इफाज़ा कर मुझ पर अपना फज़ल और

कामिल कर मुझ पर अपनी रहमत और उतार मुझ पर अपनी बरकतें।

١٦١- اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَتُبْ عَلَيَّ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ.

१६१. अल्लाहुम्मग्फिरली वरहमनी व तुब अलय्य इन्नक अन्तत्तव्वाबुर्रहीम।

या अल्लाह बख़्श मुझे और रहम कर मुझ पर और तौबा क़बूल कर मेरी क्योंकि तू ही तौबा क़बूल करने वाला रहम करने वाला है।

١٦٢- اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَسْأَلُكَ تَوْفِيْقَ اَهْلِ الْهُدٰى وَاَعْمَالَ اَهْلِ الْيَقِيْنِ وَمُنَاصَحَةَ اَهْلِ التَّوْبَةِ وَعَزْمَ اَهْلِ الصَّبْرِ وَجِدَّ اَهْلِ الْخَشْيَةِ وَطَلَبَ اَهْلِ الرَّغْبَةِ وَ تَعَبُّدَ اَهْلِ الْوَرَعِ وَعِرْفَانَ اَهْلِ الْعِلْمِ حَتّٰى اَلْقَاكَ.

१६२. अल्लाहुम्मा इन्नी अस्अलुक तौफीक़ अहलिल हुदा व आमाल अहलिल यक़ीन व मुनासहत अहलित्तौबती व अज़्म अहलिस्सब्री व जिद्द अहलिल ख़शयती व तलब अहलिर्रग़बती व तअब्बुद अहलिल वराअी व इरफान अहलिल इल्मी हत्ता अलक़ाक।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से तौफीक़ अहले

हिदायत की सी और अमल अहले यक़ीन के सी और इख़्लास अहले तौबा का सा और हिम्मत अहले सब्र की सी और कोशिश अहले ख़ौफ की सी और तलब अहले शौक़ की सी और इबादत अहले तक़वा की सी और मारफत अहले इल्म की सी यहाँ तक कि मिलूँ मैं तुझ से।

۱۶۳- اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ مَخَافَةً تَحْجُزُنِیْ عَنْ مَّعَاصِیْکَ حَتّٰی اَعْمَلَ بِطَاعَتِکَ عَمَلاً اَسْتَحِقُّ بِهٖ رِضَاکَ وَحَتّٰی اُنَاصِحَکَ بِالتَّوْبَةِ خَوْفًا مِّنْکَ وَحَتّٰی اُخْلِصَ لَکَ النَّصِیْحَةَ حَیَاءً مِّنْکَ وَحَتّٰی اَتَوَکَّلَ عَلَیْکَ فِی الْاُمُوْرِ کُلِّهَا وَحُسْنَ ظَنٍّ بِکَ سُبْحَانَ خَالِقِ النُّوْرِ اَللّٰهُمَّ لَاتُهْلِکْنَا فُجَائَةً وَّلَا تَاْخُذْنَا بَغْتَةً وَّلَا تُغْفِلْنَا عَنْ حَقٍّ وَّلَا وَصِیَّةٍ.

१६३. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मख़ाफतन तहजुरुनी अम्मआसीक हत्ता आमल बिताअतिक अमलन अस्तहिक़्क़ु बिही रिज़ाक व हत्ता उनासिहक बित्तवबती ख़वफम मिनक व हत्ता उख़्लिस लकन्नसी हत हयाअम मिन्क व हत्त अतवक्कल अलैक फिल उमूरी कुल्लिहा व हुस्न ज़न्निम बिक सुबहान

ख़ालक़िन्नूरी अल्लाहुम्म ला तुहलिक्ना फुजाअतंव्व ला ताखुज़ना बग़ततंव्व तुग़फिलना अन हक़्क़ंव्व ला वसिय्यत।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से ऐसा ख़ौफ कि रोक दे मुझे तेरी ना फरमानियों से ताकि अमल करूँ मैं तेरी ताअत के ि अमल कि मुस्तहिक़ हो जाओ उन से तेरी खुशनुदी का और ताकि ख़ालिस करूँ तेरे सामने तौबा डर कर तुझ से और ताकि साफ करूँ तेरे सामने खुलूस को शर्मा कर तुझ से और ताकि भरोसा करूँ तुझ पर कुल कामों में और माँगता हूँ नेक गुमान को तेरे साथ पाक है पैदा करने वाला नूर का या अल्लाह मत हलाक करना हम को नागहाँ और न पकड़ना हम को अचानक और न ग़ाफिल करना हमें किसी हक़ से और न किसी वसीयत से।

١٦٤- اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِىْ فِىْ قَبْرِىْ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِىْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَاجْعَلْهُ لِىْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّهُدًى وَّرَحْمَةً اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِىْ مِنْهُ مَا نَسِيْتُ وَعَلِّمْنِىْ مِنْهُ مَاجَهِلْتُ وَارْزُقْنِىْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَاءَ الَّيْلِ وَاٰنَاءَ النَّهَارِ

وَاجْعَلْهُ لِىْ حُجَّةً يَّارَبَّ الْعٰلَمِيْنَ.

१६४. अल्लाहुम्म आनिस वहशती फी क़ब्री अल्लाहुम्मर हमनी बिल कुरआनिल अज़ीमी वज अलहु ली इमामंव्व नूरंव्व हुदंव्व रहमतन अल्लाहुम्म ज़क्किरनी मिन्हु मा नसीतु व अल्लिमनी मिन्हु मा जहिलतु वरजुक़नी तिलावतहू आनाअल्लैली व आनाअन्नहारी वजअलहु ली हुज्जतंय्या रब्बल आलमीन।

या अल्लाह मुबदल बिही उन्स करना मेरी वहशत को मेरी क़ब्र में या अल्लाह रहम कर मुझ पर बतुफैल कुरआने अज़ीम के और कर दे उसे मेरे लिए रहबर और नूर और हिदायत और रहमत या अल्लाह याद करा दे मुझे उस में से जो कुछ मैं भूल गया हूँ और सिखा दे मुझे उस में से जो कुछ मैं न जानता हूँ और नसीब कर मुझ को तिलावत उसकी रात दिन के औक़ात में और करना उसे मेरे लिए हुज्जत ऐ रब्बुल आलमीन।

١٢٥- اَللّٰهُمَّ اَنَا عَبْدُكَ وَابْنُ عَبْدِكَ وَابْنُ اَمَتِكَ نَاصِيَتِىْ بِيَدِكَ اَتَقَلَّبُ فِىْ قَبْضَتِكَ وَ اُصَدِّقُ بِلِقَائِكَ وَاُوْمِنُ بِوَعْدِكَ اَمَرْتَنِىْ فَعَصَيْتُ وَنَهَيْتَنِىْ

فَـــاَتَـــيْـــتُ هٰـــذَا مَـــكَانُ الْعَائِذِبِکَ مِنَ النَّارِ لَآاِلٰهَ اِلَّا اَنْـتَ سُــبْــــحَانَـــکَ ظَلَمْتُ نَفْسِىْ فَـــاغْــفِــرْلِىْ اِنَّـــهٗ لَايَـــغْــفِــرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ.

१६५. अल्लाहुम्म अना अब्दुक वबनु अब्दिक वब्नु अमतिक नासियती बियदिक अतक़ल्लबु फी क़ब्ज़तिक व उसद्दिकु बिलिक़ाइक व उमिनु बिवअदिक अमर्तनी फअसैतु व नहैतनी फअतैतु हाज़ा मकानुल आइज़िबिक मिनन्नारी ला इलाह इल्ला अन्त सुबहानक ज़लम्तु नफ्सी फग़्फिरली इन्नहू ला यग़्फिरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त।

या अल्लाह मैं गुलाम हूँ तेरा और बेटा हूँ तेरे गुलाम का और तेरी लौंडी का हमा तन क़ब्ज़ा में हूँ तेरे चलता फिरता हूँ तेरे क़ब्ज़ा में और ऐतेक़ाद रखता हूँ तेरे मिलने का और यक़ीन रखता हूँ तेरे वादे पर मुझ को तूने हुक्म दिया तो मैंने ना फरमानी की और तूने मना किया तो मैंने उसका इर्तिकाब किया यह जगह है पनाह लेने वाले की बज़रिया तेरे दोज़ख़ से नहीं है कोई माबूद सिवाये तेरे पाक है तू मैंने ज़ुल्म किया अपनी जान पर पस बख़्श दे मुझे क्योंकि नहीं बख़्श सकता है गुनाहों को कोई सिवा तेरे।

١٦٦-اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ وَاِلَيْكَ الْمُشْتَكٰى
وَبِكَ الْمُسْتَغَاثُ وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَ
لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُ بِرِضَاكَ مِنْ سَخَطِكَ
وَبِمُعَافَاتِكَ مِنْ عُقُوْبَتِكَ وَاَعُوْذُبِكَ
مِنْكَ لَآ اُحْصِىْ ثَنَاءً عَلَيْكَ اَنْتَ كَمَا
اَثْنَيْتَ عَلٰى نَفْسِكَ اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَعُوْذُبِكَ
مِنْ اَنْ نَزِلَّ اَوْ نُزِلَّ اَوْ نُضِلَّ اَوْ نَظْلِمَ
اَوْ يُظْلَمَ عَلَيْنَا اَوْ نَجْهَلَ اَوْ يُجْهَلَ
عَلَيْنَا اَوْ اَضِلَّ اَوْ اُضَلَّ اَعُوْذُ بِنُوْرِ
وَجْهِكَ الْكَرِيْمِ الَّذِىْ اَضَاءَ تْ لَهُ السَّمٰوٰتُ
وَاَشْرَقَتْ لَهُ الظُّلُمَاتُ وَصَلُحَ عَلَيْهِ اَمْرُ الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ اَنْ تُحِلَّ عَلَيَّ غَضَبَكَ وَتُنْزِلَ عَلَيَّ
سَخَطَكَ وَلَكَ الْعُتْبٰى حَتّٰى تَرْضٰى وَلَاحَوْلَ
وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِكَ اَللّٰهُمَّ وَاقِيَةً
كَوَاقِيَةِ الْوَلِيْدِ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ
مِنْ شَرِّ الْاَعْمَيَيْنِ السَّيْلِ وَالْبَعِيْرِ الصَّؤُوْلِ.

१६६. अल्लाहुम्म लकल हम्दु व इलैकल मुश्तका व बिकल मुस्तग़ासु व अन्तल मुस्तआनु व ला हौल व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाह।

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबि रिज़ाक मिन सख़तिक व बिमुआफातिक मिन उक़ूबतिक व अऊज़ुबिक मिन्क ला उहसी सनाअन अलैक अन्त कमा अस्नैत अला नफ्सिक अल्लाहुम्म इन्ना नअूज़ुबिक मिन अन्नज़िज़ल अव नुज़िल्ल अव नज़लिम अव युज़ुलम अलैन अव नजहल अव युजहल अलैना अव अज़िल्ल और उज़ल्ल अऊज़ु बिनूरि वजहिकल करीमिल लज़ी अज़ाअत लहुस्समावातु व अशरक़त लहुज़्ज़ुलुमातु व सलुह अलैही अमरुद्दुनया वल आख़िरती अन तुहिल्ल अलय्या ग़ज़बक व तुन्ज़िल अलय्या सख़्तक व लकल उतबा हत्ता तरज़ा वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिक अल्लाहुम्म वाक़ियतन कवाक़ियतिल वलीदी अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिन शर्रिल आमयैनिस सैलि वल बअीरिस सऊल।

या अल्लाह तुझी को सज़ावार है तारीफ और तुझी से लायक़ है शिकायत और तझी से चाहिये फरयाद और तू ही है लायक़े मदद तलब किये जाने के और नहीं है बचना गुनाह से और न कुव्वते इबादत की मगर साथ अल्लाह के।

या अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ तेरी रज़ा के साथ तेरी ना खुशी से और तेरे अफू के साथ तेरी उकूबत से और पनाह चाहता हूँ तेरी तुझ से नहीं कर सकता हूँ मैं तारीफ तेरी तू उसी तारीफ के, लायक़ है कि खुद की है तूने अपनी ज़ात की या अल्लाह हम पनाह चाहते हैं तेरी उस से कि ड़ग जायें या किसी को डगायें या हम किसी को गुमराह करें या हम किसी पर जुल्म करें या हम पर जुल्म किया जाये यह हम जिहालत करें या हम पर जिहालत की जाये या गुमराह हूँ मैं या गुमराह किया जाऊँ, चाहता हूँ मैं पनाह तेरी ज़ाते गिरामी के नूर की जिस से रोशन हैं आसमान और चमक रही हैं उस से जुल्मतें और दुरुस्त हैं उस से काम दुनिया और आख़िरत के उस से कि उतारे तो मुझ पर गुस्सा अपना और नाज़िल करे तू मुझ पर ना खुशी अपनी और तेरा ही हक़ है तुझ को मनाना यहाँ तक कि तू राज़ी हो जाये और नहीं है फिरना गुनाह से और ताक़त इबादत की मगर तेरी मदद से या अल्लाह चाहता हूँ मैं निगहबानी मिस्ल निगहबानी बच्चा के, या अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ तेरी बुराई से दो अंधों यानी सैलाब और हमला आवर ऊँट की।

اَلْمَنْزِلُ السَّادِسُ يَوْمَ الْخَمِيْسِ

अल मंज़िलुस सादिसु यवमल ख़मीस

छट्ठी मंज़िल बरोज़ पंज शंबा (जुमेरात)

۱۶۷ـ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْاَلُكَ بِمُحَمَّدٍ نَبِيِّكَ
وَاِبْرَاهِيْمَ خَلِيْلِكَ وَ مُوْسٰى نَجِيِّكَ
وَعِيْسٰى رُوْحِكَ وَكَلِمَتِكَ وَ بِكَلَامِ مُوْسٰى
وَاِنْجِيْلِ عِيْسٰى وَزَبُوْرِ دَاوٗدَ وَفُرْقَانِ مُحَمَّدٍ
صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ وَبِكُلِّ
وَحْيٍ اَوْحَيْتَهٗ اَوْ قَضَاءٍ قَضَيْتَهٗ اَوْ
سَآئِلٍ اَعْطَيْتَهٗ اَوْ فَقِيْرٍ اَغْنَيْتَهٗ اَوْ غَنِيٍّ
اَفْقَرْتَهٗ اَوْضَالٍّ هَدَيْتَهٗ وَاَسْاَلُكَ
بِاسْمِكَ الَّذِىْ وَضَعْتَهٗ عَلَى الْاَرْضِ
فَاسْتَقَرَّتْ وَعَلَى السَّمٰوٰتِ فَاسْتَقَلَّتْ وَ
عَلَى الْجِبَالِ فَرَسَتْ وَاَسْاَلُكَ بِاسْمِكَ الَّذِىْ
اسْتَقَرَّ بِهٖ عَرْشُكَ وَأَسْاَلُكَ بِاسْمِكَ الطَّاهِرِ
الْمُطَهَّرِ الْمُنَزَّلِ فِىْ كِتَابِكَ مِنْ لَّدُنْكَ وَ
بِاسْمِكَ الَّذِىْ وَضَعْتَهٗ عَلَى النَّهَارِ فَاسْتَنَارَ

وَعَلَى الَّيْلِ فَاظْلَمَ وَبِعَظْمَتِكَ وَكِبْرِيَآئِكَ
وَبِنُوْرِ وَجْهِكَ اَنْ تَرْزُقَنِي الْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ
وَتُخَلِّطَهُ بِلَحْمِيْ وَدَمِيْ وَسَمْعِيْ وَبَصَرِيْ
وَتَسْتَعْمِلَ بِهِ جَسَدِيْ بِحَوْلِكَ وَقُوَّتِكَ
فَاِنَّهُ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِكَ اَللّٰهُمَّ
لَاتُؤْمِنَّا مَكْرَكَ وَلَاتُنْسِنَا ذِكْرَكَ وَلَاتَهْتِكْ
عَنَّا سِتْرَكَ وَلَاتَجْعَلْنَا مِنَ الْغٰفِلِيْنَ.

१६७. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक बिमुहम्मदिन नबिय्यक व इबराहीम ख़लीलिक व मूसा नजिय्यक व ईसा रूहिक व कलिमतिक व बिकलामी मूसा व इंजिली ईसा व ज़बूरी दाऊद व फुरक़नी मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व बिकुल्ली वहइन अव हैतहू अव क़ज़ाइन क़ज़ैतहू अव साइलिन आतैतहू अव फक़ीरिन अग़नैतहू अव ग़निय्यिन अफ्क़रतहू अव ज़ाल्लिन हदैतहू व अस्अलुक बिस्मिकल लज़ी व ज़अतहू अलल अर्ज़ि फस्तक़र्रत व अलस समावाति फस्तक़ल्लत व अलल जिबाली फरस्त व अस्अलुक बिस्मिकल लज़िस्तक़र्र बिही अर्शुक व अस्अलुक बिस्मिकत्ताहिरिल मुतहहरिल मुनज़्ज़ली फी किताबिक मिल्लदुन्क व बिस्मिक अल्लज़ी वज़अतहू अलन्नहारि

फस्तनार व अलल लैली फअज़लम व बिअज़मतिक व किब्रियाइक व बिनूरि वजहिक अन तरज़ुक़नियल कुरआनल अज़ीम व तुख़ल्लितहू बिलहमी व दमी व संमअी व बसरी व तस्तअमिल बिही जसदी बिहौलिक व कुव्वतिक फइन्नहू ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिक अल्लाहुम्म ला तुमिन्ना मक्रक वला तुन्सिना ज़िक्रक वला तहतिक अन्ना सितरक वला तजअलना मिनल ग़ाफिलीन।

या अल्लाह मैं माँगत हूँ तुझ से बतुफैल हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के और हज़रत इबराहीम अलैहिस्सलाम के जो तेरे ख़लील हैं और हज़रत मूसा के जो तेरे कलीम हैं और हज़रत ईसा के जो रूहुल्लाह और कलिमतुल्लाह हैं और बतुफेल कलाम हज़रत मुसा के और इंजील हज़रत ईसा के और ज़ब्बूर हज़रत दाऊद के और कुरआन हष़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के और बतुफेल हर वही के जिस को तूने भेजा हो और हर हुक्म के जिस को तूने जारी किया और बज़रिया हर साइल के जिस को तूने दिया हो और हर गुमराह के जिस को तूने हिदायत की हो और माँगता हूँ मैं तुझ से बतुफेल तेरे उस नाम के जिस को तूने ज़मीन पर रखा तो ठहर गई और

आसमान पर रखा तो थम गये और पहाड़ों पर रखा तो जम गये और सवाल करता हूँ मैं तुझ से बतुफेल उस तेरे नाम के कि ठहरा हुआ है उस से अर्श तेरा और सवाल करता हूँ मैं तुझ से बतुफेल उस तेरे नाम के कि पाक है और सुथरा है जो तेरी किताब में तेरे यहाँ से उतारा गया है और बतुफेल उस तेरे नाम के जिस को तूने दिन पर रखा तो रोशन हो गया और रात पर रखा तो अंधेरी हो गई और बतुफेल तेरी अज़मत के और तेरी बड़ाई के और बतुफेल तेरे नूरे ज़ात के यह कि नसीब करे तू मुझे कुरआन अज़ीम और पेवस्त कर दे तू उसे मेरे गोश्त में और मेरे ख़ून में और मेरी शुनवाई में और मेरी बीनाई में और उस पर आमिल बना दे मेरे जिस्म को अपनी कुदरत और कुव्वत से क्योंकि नहीं है फिरना मासियत से और कुव्वत इबादत की मगर तेरे ज़रिया से या अल्लाह न निडर कर दे हमें अपनी ख़ुफिया तदबीर से और मत भुला हम को अपना ज़िक्र और न परदा दरी कर हमारी और न कर हमें ग़ाफिलों में से।

١٦٨– اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ تَعْجِيْلَ عَافِيَتِكَ وَدَفْعَ بَلَائِكَ وَخُرُوْجًا مِّنَ الدُّنْيَا اِلٰى

رَحْمَتِکَ يَا مَنْ يَّكْفِىْ عَنْ كُلِّ اَحَدٍ وَّلَا يَكْفِىْ مِنْهُ اَحَدٌ يَّا اَحَدَ مَنْ لَّا اَحَدَ لَهٗ يَا سَنَدَ مَنْ لَّا سَنَدَ لَهُ انْقَطَعَ الرَّجَاءُ اِلَّا مِنْکَ نَجِّنِىْ مِمَّا اَنَا فِيْهِ وَاَعِنِّىْ عَلٰى مَا اَنَا عَلَيْهِ مِمَّا نَزَلَ بِىْ بِجَاهِ وَجْهِکَ الْكَرِيْمِ وَبِحَقِّ مُحَمَّدٍ عَلَيْکَ اٰمِيْنَ.

१६८. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक तअजील आफियतिक व दफ़अ बलाइक व खुरूजम मिनद्दुनिया इल रहमतिक या मंय्यकफी अन कुल्लि अहदिंव्वला यकफी मिन्हु अहदुंय्या अहद मल्ला अहद लहू या सनद मल्ला सनद लहुन्क़तअर्रजाउ इल्ला मिन्क नज्जिनी मिम्मा अना फीहि व अअन्नी अला मा अना अलैहि मिम्मा नज़ल बी बिजाहि वजहिकल करीमी व बिहक़्क़ि मुहम्मदिन अलैक आमीन।

या अल्लाह मैं माँगता हूँ तुझ से तेरी आफियते आजला और तेरी बला का दफ़अीया और निकलना दुनिया से तेरी रहमत की तरफ, ऐ वह कि काफी है सब के ऐवज़ और नहीं काफी है उसके ऐवज़ में कोई ऐ कस बे कसों के ऐ सहारे बे सहारों के क़तअ हो गई उम्मीद मगर तुझ से निजात दे मुझे

इस हाल से कि मैं उस में हूँ और मदद कर मेरी बला नाज़िल शुदा पर बसदक़ा अपनी ज़ात पाक और बतुफेले हक़े हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के जो तुझ पर है आमीन।

١٦٩-اَللّٰهُمَّ احْرُسْنِىْ بِعَيْنِكَ الَّتِىْ لَاتَنَامُ وَاكْنُفْنِىْ بِرُكْنِكَ الَّذِىْ لَايُرَامُ وَارْحَمْنِىْ بِقُدْرَتِكَ عَلَىَّ فَلَآ اَهْلِكُ وَاَنْتَ رَجَآئِىْ فَكَمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ اَنْعَمْتَ بِهَا عَلَىَّ قَلَّ لَكَ بِهَا شُكْرِىْ وَكَمْ مِّنْ بَلِيَّةٍ نِ ابْتَلَيْتَنِىْ بِهَا قَلَّ لَكَ بِهَا صَبْرِىْ فَيَا مَنْ قَلَّ عِنْدَ نِعْمَتِهٖ شُكْرِىْ فَلَمْ يَحْرِمْنِىْ وَ يَامَنْ قَلَّ عِنْدَ بَلِيَّتِهٖ صَبْرِىْ فَلَمْ يَخْذُلْنِىْ وَيَا مَنْ رَّآنِىْ عَلَى الْخَطَايَا فَلَمْ يَفْضَحْنِىْ.

१६९. अल्लाहुम्महरुसनी बिऔनिकल लती ला तनामु वक्नुफनी बिरुकनिकल लज़ी ला युरामु वरहम्नी बिकुदरतिक अलय्या फला अहलिक व अन्त रजाई फकम मिन निअमतिन अनअमत बिहा अलय्य क़ल्ल लक बिहा शुक्री व कम मिम बलिय्यतिनिब तलैतनी बिहा क़ल्ल लक बिहा सब्री फयामन क़ल्ल

इन्द निअमतिही शुक्री फ़लम यहरिमनी व या मन क़ल्ल इन्द बलिय्यतिही सब्री फ़लम यख़्ज़ुलनी व या मन रआनी अलल ख़ताया फ़लम यफ़ज़हनी।

या अल्लाह निगहबानी कर मेरी अपनी उस आँख से जो कभी सोती नहीं और आड़ में ले ले मुझे अपनी उस कुव्वत के जिस के पास कोई नहीं फटक सकता और रहम कर मुझ पर बवजह अपनी इस कुदरत के जो तुझ को मुझ पर हासिल है कि फिर मैं हलाक न हूँ और तूही मेरी उम्मीदगाह है बुहेतरी ऐसी नेमतें हैं कि तूने दीं मुझे और कम रहा बमुक़ाबला उनके शुक्र मेरा और बहुत सी ऐसी मुसीबतें हैं कि मुब्तला किया तूने मुझे उन में और कम रहा उन पर सब्र मेरा पस ऐ वह कि कम रहा उसकी नेमत के वक़्त शुक्र मेरा फिर भी महरूम न किया मुझे और ऐ वह कि कम रहा उसकी मुसीबत के वक़्त सब्र मेरा फिर भी साथ न छोड़ा मेरा और ऐ वह कि देखा मुझे गनाहों पर फिर भी फज़ीहत न किया मुझे।

١٧٠- يَاذَا الْمَعْرُوْفِ الَّذِىْ لَا يَنْقَضِىْ اَبَدًا وَّيَا ذَاالنَّعْمَآءِ الَّتِىْ لَاتُحْصٰى اَبَدًا اَسْأَلُكَ اَنْ اَنْ تُصَلِّىَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبِكَ اَدْرَاُ

فِـــــىْ نُـــحُـــوْرِ الْاَعْـــدَآءِ وَالْجَبَـابِرَةِ.

१७०. या ज़ल मअरूफिल लज़ी ला यन्क़ज़ी अबदंव्व या ज़न्नअमाइल लती ला तुहसा अबदन अस्अलुक अन तुसल्लिया अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिंव्व बिक अदरउ फी नुहूरिल आदाइ वल जबाबिरति।

ऐ ऐसे ऐहसान वाले कि कभी ख़त्म न हो और ऐसी नेमतों वाले कि कभी शुमार न हो सकें सवाल करता हूँ तुझ से कि रहमत कामिला नाज़िल करे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और आल पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की और तेरे ही ज़ोर पर भिड़ जाता हूँ दुश्मनों और ज़ोर आवरों के मुक़ाबिले में।

١٧١—اَللّٰهُمَّ اَعِنِّىْ عَلٰى دِيْنِىْ بِالدُّنْيَا وَعَلٰى اٰخِرَتِىْ بِـالتَّقْوٰى وَاحْفَظْنِىْ فِيْمَا غِبْتُ عَنْهُ وَلَاتَكِلْنِىْ اِلٰـى نَـفْسِــىْ فِيْـمَا حَضَرْتُـهٗ يَامَنْ لَّا تَضُرُّهُ الذُّنُوْبُ وَلَاتَنْقُصُـــهُ الْـمَغْفِرَةُ هَبْ لِىْ مَـالَا يَنْقُصُكَ وَاغْفِرْلِىْ مَـالَا يَضُرُّكَ اِنَّكَ اَنْــتَ الْوَهَّـابُ اَسْـأَلُكَ فَرَجًا قَرِيْبًا وَّصَبْرًا جَمِيْلاًوَّ رِزْقًـا وَّاسِعًـا وَّالْعَـافِيَةَ مِنْ جَمِيْعِ الْبَلَاءِ

وَاَسْاَلُکَ تَمَامَ الْعَافِيَةِ وَاَسْاَلُکَ دَوَامَ الْعَافِيَةِ وَاَسْاَلُکَ الشُّكْرَ عَلَى الْعَافِيَةِ وَاَسْاَلُکَ الْغِنٰى عَنِ النَّاسِ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ.

१७१. अल्लाहुम्म अइन्नी अला दीनी बिद्दुनिया व अला आख़िरतनी बित्तक़्वा वहफ़ज़्नी फ़ीमा ग़िबतु अन्हू वला तकिलनी इला नफ़्सी फ़ीमा हज़रतुहू या मल ला तज़ुर्रुहुज़ ज़ुनूबु वला तनक़ुसुहुल मग़्फ़िरतु हब ली माला यन्क़ुसुक वग़्फ़िरली माला यज़ुर्रुक इन्नक अन्तल वह्हाबु अस्अलुक फ़रजन क़रीबंव्व सब्रन जमीलंव्व रिज़्क़ंव्वासिअंव्वल आफ़ियत मिन जमीअिल बलाइ व अस्अलुक तमामल आफ़ियति व अस्अलुक दवामल आफ़ियती व अस्अलुकश शुक्र अलल आफ़ियती व अस्अलुकल ग़िना अनिन्नासी वला हौल व ला क़ुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यील अज़ीम।

या अल्लाह मदद कर मेरी मेरे दीन पर दुनिया के साथ और मेरी आख़िरत पर तक़्वा के साथ और तूही मुहाफ़िज़ रह मेरी उन चीज़ों का जो मेरी आँख से दूर हैं और न हवाले कर मुझे मेरे नफ़्स के उन चीज़ों में जो मेरे पेशे नज़र हों ऐ वह कि

नहीं नुक़सान पहुंचाते उसे गुनाह और नहीं कमी करती उसके यहाँ मग़्फिरत दे मुझे वह चीज़ कि नहीं कमी करती तेरे यहाँ और माफ कर दे मुझे वह चीज़ जो नहीं नुक़सान पहुंचाती तुझे क्योंकि तू ही देने वाला है माँगता हूँ मैं तुझ से कशाइश फौरी और सब्रे जमील और रिज़्क़े वासे और अमन जुमला बलाओं से और माँगता हूँ मैं तुझ से पूरा अमन और मांगता हूँ मैं तुझ से बक़ा अमन की और मांगता हूँ मैं तुझ से शुक्र अमन पर और मांगता हूँ मैं तुझ से सेर चश्मी आदमियों से और नहीं फिरना गुनाहों से और न कुव्वत इबादत की मगर साथ अल्लाह बरतर व बुज़ुर्ग के।

١٧٢–اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ سَرِيْرَتِىْ خَيْرًا مِّنْ عَلَانِيَتِىْ وَاجْعَلْ عَلَانِيَتِىْ صَالِحَةً اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ مِنْ صَالِحِ مَاتُؤْتِى النَّاسَ مِنَ الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ غَيْرَ ضَآلٍّ وَّلَا مُضِلٍّ.

१७२. अल्लाहुम्मजअल सरीरती ख़ैरम मिन अलानियती वजअल अलानियती सालिहतन अल्लाहुम्म अन्नी अस्अलुक मिन सालिही मातुतिन नास मिनल मालि वल अहलि वल वलदि ग़ैर ज़ाल्लिंव्व ला मुज़िल्लि।

१७३. या अल्लाह कर दे मेरे बातिन को बेहतर मेरे ज़ाहिर से और कर मेरे ज़ाहिर को भी अच्छा या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से अच्छी चीज़ जो तू लोगों को दे माल हो या बीबी या औलाद कि न गुमराह हो और न गुमराह करने वाला।

١٧٣-اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنَا مِنْ عِبَادِكَ الْمُنْتَخَبِيْنَ الْغُرِّ الْمُحَجَّلِيْنَ الْوَفْدِ الْمُتَقَبَّلِيْنَ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُكَ نَفْسًا بِكَ مُطْمَئِنَّةً تُؤْمِنُ بِلِقَائِكَ وَتَرْضٰی بِقَضَائِكَ وَتَقْنَعُ بِعَطَائِكَ.

१७३. अल्लाहुम्मजअलना मिन इबादिकल मुन्तख़बीनल गुर्रिल मुहज्जलीनल वफदिल मुतक़ब्बलीन अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक नफ्सम बिक मुतमइन्नतन तुमिनु बिलाक़ाइक व तर्ज़ा बिक़ज़ाइक व तक़नअु बिअताइक।

या अल्लाह कर ले हमें अपने मुन्तख़ब बंदों में से जिन के चेहरे और आज़ा रोशन होंगे जो मक़बूल होंगे या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से ऐसा नफ्स जो तुझ पर इतमिनान रखे जो तेरे मिलने का यक़ीन रखे और तेरे हुक्म पर राज़ी रहे और तेरे अतिया पर क़नाअत रखे।

۱۷۴-اَللّٰهُمَّ لَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا دَائِمًا مَّعَ دَوَامِکَ وَلَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا خَالِدًا مَّعَ خُلُوْدِکَ وَلَکَ الْحَمْدُ حَمْدًا لَّا مُنْتَهٰی لَهٗ دُوْنَ مَشِیَّتِکَ وَلَکَ اَلْحَمْدُ حَمْدًا لَّا یُرِیْدُ قَائِلُهٗ اِلَّا رِضَاکَ وَلَکَ الْحَمْدُ حَمْداً عِنْدَ کُلِّ طَرْفَةِ عَیْنٍ وَّ تَنَفُّسِ کُلِّ نَفَسٍ اَللّٰهُمَّ اَقْبِلْ بِقَلْبِیْ اِلٰی دِیْنِکَ وَ احْفَظْ مِنْ وَّرَائِنَا بِرَحْمَتِکَ اَللّٰهُمَّ ثَبِّتْنِیْ اَنْ اَزِلَّ وَ اهْدِنِیْ اَنْ اَضِلَّ ۔

१७४. अल्लाहुम्म लकल हम्दु हम्दन दाइमम मअ दवामिक व लकल हम्दु हम्दन ख़ालिदनम मअ ख़ुलूदिक वलकल हम्दु हमदल ला मुन्तहा लहू दून मशिय्यतिक व लक अल हम्दु हम्दल ला युरीदु क़ाइलुहू इल्ला रिज़ाक व लकल हम्दु हम्दन इन्द कुल्लि तर्फति ऐनिंव्व तनफ्फुसी कुल्लि नफसिन अल्लाहुम्म अक़बिल बिक़ल्बी इला दीनिक वहफज़ मिंव्वराइना बिरहमतिक अल्लाहुम्म सब्बित्नी अन अज़िल्ल वहदिनी अन अज़िल्ल।

या अल्लाह तेरे ही लिए हम्द है ऐसी हम्द कि हमेश रहे तेरी हमेशगी के साथ और तेरे ही लिए

हम्द है ऐसी हम्द कि मुस्तमर रहे तेरे दवामे बक़ा के साथ और तेरे ही लिए हम्द है ऐसी हम्द कि न क़स्द करता हो करने वाला उसका मगर तेरी ख़ुशनूदी का और तेरे ही लिए हम्द है ऐसी हम्द कसीर हर पलक मारने के वक़्त और हर साँस लेने के वक़्त या अल्लाह मुतवज्जह कर दे मेरे दिल को अपने दीन की तरफ और हिफाज़त रख हमारी इधर उधर से अपनी रहमत के साथ या अल्लाह साबित क़दम रख मुझे कहीं डग न जाऊँ मैं और हिदायत कर मुझे कहीं गुमराह न हो जाऊँ मैं।

۱۷۵- اَللّٰھُمَّ کَمَا حُلْتَ بَیْنِیْ وَ بَیْنَ قَلْبِیْ فَحُلْ بَیْنِیْ وَ بَیْنَ الشَّیْطَانِ وَ عَمَلِہٖ اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنَا مِنْ فَضْلِکَ وَ لَا تَحْرِمْنَا رِزْقَکَ وَ بَارِکْ لَنَا فِیْمَا رَزَقْتَنَا وَ اجْعَلْ غِنَاءَنَا فِیْ اَنْفُسِنَا وَ اجْعَلْ رَغْبَتَنَا فِیْمَا عِنْدَکَ.

१७५. अल्लाहुम्म कमा हुल्त बैनी व बैन क़ल्बी फहुल बैनी व बैनश्शैतानी व अमलिही अल्लाहुम्मर जुक़ना मिन फज़्लिक वला तहरिमना रिज़्क़क व बारिक लना फीमा रज़क़्तना वजअल ग़िनाअना फी अंफुसिना वजअल रग़बतना फीमा इन्दक।

या अल्लाह जिस तरह हायल है तू मुझ में और मेरे दिल में तू हायल रह मुझ में और शैतान और उसके काम में या अल्लाह नसीब कर हमें अपना फ़ज़्ल और न महरूम रख हमें अपने रिज़्क़ से और बरकत दे हमें उस रिज़्क़ में जो तूने हमें दिया और कर ग़िना हमारा हमारे दिलों में और कर दे रग़बत हमारी इस चीज़ में जो तेरे पास है।

١٧٦– اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِمَّنْ تَوَكَّلَ عَلَيْكَ فَكَفَيْتَهٗ وَ اسْتَهْدٰكَ فَهَدَيْتَهٗ وَ اسْتَنْصَرَكَ فَنَصَرْتَهٗ.

१७६. अल्लाहुम्मजअलनी मिम्मन तवक्कल अलैक फकफैतहू वसतहदाक फहदैतहू वस्तन्सरक फनसरतहू।

या अल्लाह कर दे मुझे उन लोगों में से कि उन्होंने तवक्कुल किया तुझ पर पस तू काफी हो गया उन्हें और उन्होंने हिदायत मांगी तुझ से पस तूने हिदायत कर दी उन्हें और उन्होंने मदद चाही तुझ से पस तूने मदद दी उन्हें।

١٧٧– اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ وَسَاوِسَ قَلْبِىْ خَشْيَتَكَ وَ ذِكْرَكَ وَ اجْعَلْ هِمَّتِىْ وَهَوَاىَ فِيْمَا تُحِبُّ وَ تَرْضٰى اَللّٰهُمَّ وَ مَا ابْتَلَيْتَنِىْ بِهٖ مِنْ رَّخَاءٍ

وَّشِدَّةٍ فَمَسِّكْنِیْ بِسُنَّةِ الْحَقِّ وَ شَرِیْعَةِ الْاِسْلَامِ.

१७७. अल्लाहुम्मजअल वसाविस क़ल्बी ख़शयतक व ज़िक्रक वजअल हिम्मती वहवाय फीमा तुहिब्बु व तर्ज़ा अल्लाहुम्म वमब्तलैतनी बिही मिररख़ाइंव्व शिद्दतिन फमस्सिकनी बिसुन्नतिल हक़्क़ि व शरीअतिल इस्लाम।

या अल्लाह कर दे मेरे दिल के ख़्यालात को अपना ख़ौफ और अपनी याद और कर दे हिम्मत और ख़्वाहिश मेरी उस चीज़ में जिसे तू अच्छा समझे और पसंद करे या अल्लाह और जिस बात में तू इम्तेहान करे मेरा ख़्वाह आसानी हो ख़्वाह सख़्ती तो जमाये रख मुझे तरीक़े हक़ और शरीअते इस्लाम पर।

١٧٨- اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ تَمَامَ النِّعْمَةِ فِیْ الْاَشْیَاءِ کُلِّهَا وَالشُّکْرَ لَکَ عَلَیْهَا حَتّٰی تَرْضٰی وَبَعْدَ الرِّضَی الْخِیَرَةَ فِیْ جَمِیْعِ مَا یَکُوْنُ فِیْهِ الْخِیَرَةُ وَلِجَمِیْعِ مَیْسُوْرِ الْاُمُوْرِ کُلِّهَا لَا بِمَعْسُوْرِهَا یَا کَرِیْمُ.

१७८. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक तमामन निअमति फिल अशयाइ कुल्लिहा वश्शुक्र लक

अलैहा हत्ता तर्ज़ा व बादर्रिज़ाल ख़ियरत फी जमीओ मा यकूनु फीहिल ख़ियरतु व लिजमीओ मैसूरिल उमूरि कुल्लिहा ला बिमअसूरिहा या करीम।

या अल्लाह मैं माँगता हूँ तुझ से नेमत का पूरा होना जुमला चीज़ों में और तेरा शुक्र उन पर यहाँ तक कि तू राज़ी हो जाये और बाद राज़ी हो जाने के मेरे लिए इन्तिख़ाब कर तमाम ऐसी चीज़ों में जिन में इन्तिख़ाब होता है और इन्तिख़ाब सब ही अच्छे कामों का न बुरे कामों का ऐ करीम।

١٧٩- اَللّٰهُمَّ فَالِقَ الْاِصْبَاحِ وَجَاعِلَ اللَّيْلِ سَكَنًا وَّ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ حُسْبَانًا قَوِّنِيْ عَلَى الْجِهَادِ فِيْ سَبِيْلِكَ

१७९. अल्लाहुम्म फालिक़ल इस्बाही व जाअिलल लैलि सकनंव्वशशमसि वल क़मरि हुस्बानन क़व्विनी अलल जिहादी फी सबीलिक।

ऐ अल्लाह निकालने वाले सुबह के और बनाने वाले रात के आराम का वक़्त और सूरज और चाँद के मिक़यास का वक़्त कुव्वत दे मुझे अपनी राह में लड़ने की।

١٨٠- اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ فِيْ بَلَآئِكَ وَصَنِيْعِكَ اِلٰى خَلْقِكَ وَلَكَ الْحَمْدُ فِيْ بَلَآئِكَ وَصَنِيْعِكَ

اِلٰی اَھْلِ بُیُوْتِنَا وَلَکَ الْحَمْدُ فِیْ بَلَآئِکَ وَصَنِیْعِکَ اِلٰی اَنْفُسِنَا خَآصَّۃً وَّلَکَ الْحَمْدُ بِمَا ھَدَیْتَنَا وَلَکَ الْحَمْدُ بِمَآ اَکْرَمْتَنَا وَ لَکَ الْحَمْدُ بِمَا سَتَرْتَنَا وَلَکَ الْحَمْدُ بِالْقُرْاٰنِ وَلَکَ الْحَمْدُ بِالْاَھْلِ وَالْمَالِ وَ لَکَ الْحَمْدُ بِالْمُعَافَاۃِ وَلَکَ الْحَمْدُ حَتّٰی تَرْضٰی وَلَکَ الْحَمْدُ اِذَا رَضِیْتَ یَااَھْلَ التَّقْوٰی وَاَھْلَ الْمَغْفِرَۃِ.

१८०. अल्लाहुम्म लकल हम्दु फी बलाइक व सनीअिक इला ख़ल्क़िक वलकल हम्दु फी बलाइक व सनीअिक इला अहलि बुयूतिना वलकल हम्दु फी बलाइक व सनीअिक इला अन्फुसिना ख़ास्सतंव्व लकल हम्दु बिमा अक्रमतना व लकल हम्दु बिमा सतरतना वलकल हम्दु बिल कुरआनि वलकल हम्दु बिल अहलि वल मालि व लकल हम्दु बिल मुआफाति वलकल हम्दु हत्त तर्ज़ा व लकल हम्दु इज़ा रज़ित या अहलत्तक़्वा व अहलल मग़्फिरति।

या अल्लाह तेरे ही लिए हम्द है तेरी बला और तेरे बरताव में अपनी मख़्लूक़ के साथ और तेरे ही लिए हम्द है तेरी बला और तेरे बरताव में हमारे

घर वालों के साथ और तेरे ही लिए हम्द है तेरी बला और तेरे बरताव में ख़ास हमारी जानों के साथ और तेरे ही लिए हम्द है उस पर कि तूने हमें हिदायत की और तेरे ही लिए हम्द है उस पर कि तूने हमें इज़्ज़त दी और तेरे ही लिए हम्द है उस पर कि तूने हमारी परदा पोशी की और तेरे ही लिए हम्द है कुरआन शरीफ पर और तेरे ही लिए हम्द है अहल और माल पर और तेरे ही लिए हम्द है दर गुज़र करने पर और तेरे ही लिए हम्द है यहाँ तक कि राज़ी हो जाये तू और तेरे ही लिए हम्द है जबकि राज़ी हो जाये तू ऐ वह ज़ात जिस से डरना चाहिये और ऐ वह कि लायक़ है गुनाहों के माफ करने के।

١٨١–اَللّٰهُمَّ وَفِّقْنِیْ لِمَا تُحِبُّ وَتَرْضٰی مِنَ الْقَوْلِ وَالْعَمَلِ وَالْفِعْلِ وَالنِّیَّةِ وَالْهَدْیِ اِنَّکَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ. اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ خَلِیْلٍ مَّاکِرٍ عَیْنَاهُ تَرَیَانِیْ وَقَلْبُهٗ یَرْعَانِیْ اِنْ رَاٰی حَسَنَةً دَفَنَهَا وَاِنْ رَاٰی سَیِّئَةً اَذَاعَهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْبُؤْسِ وَالتَّبَاؤُسِ

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ اِبْلِیْسَ وَجُنُوْدِهٖ
اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ فِتْنَةِ النِّسَاءِ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ
اَعُوْذُبِکَ مِنْ اَنْ تَصُدَّعَنِّیْ وَجْهَکَ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ
اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ کُلِّ عَمَلٍ یُّخْزِیْنِیْ
وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ کُلِّ صَاحِبٍ یُّوْذِیْنِیْ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ کُلِّ
اَمَلٍ یُّلْهِیْنِیْ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ کُلِّ فَقْرٍ یُّنْسِیْنِیْ
وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ کُلِّ غِنًی یُّطْغِیْنِیْ اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ
اَعُوْذُبِکَ مِنْ مَّوْتِ الْهَمِّ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ مَّوْتِ الْغَمِّ.

१८१. अल्लाहुम्म वफ्फिक़्नी लिमा तुहिब्बु व तर्ज़ा मिनल क़ौलि वल अमलि वल फिअली वन्नियति वल हदइ इन्नक अल कुल्ली शैइन. क़दीरुन। अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिन ख़लीलिम माकिरिन अैनाहु तरयानी व क़ल्बुहू यरआनी इन रआ असनतन दफनहा व इन रआ सय्यिअतन अज़ाअहा अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल बुसि वत्तबाउसि अल्लाहुम्म इन्नी अऊजुबिक मिन इबलीस व जुनूदिही अल्लाहुम्म इन्नी अऊजुबिक मिन फितनतिन निसाइ अल्लाहुम्म इन्नी अऊजुबिक मिन अन तसुद्द अन्नी वजहक यवमल

क़ियामति अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिन कुल्लि अमलिंय्युख़्ज़ीनी व अऊज़ुबिक मिन कुल्लिसाहिबियं यूंज़ीनी व अऊज़ुबिक मिन कुल्लि अमलिंयुलहीनी व अऊज़ुबिक मिन कुल्लि फक्रिंयुनसीनी व अऊज़ुबिक मिन कुल्लि ग़िनंय्युतग़ीनी अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिम मौतिल हम्मि व अऊज़ुबिक मिम मौतिल ग़म्मि।

या अल्लाह तौफीक़ दे मुझे उस चीज़ की जिसे तू अच्छा समझे और पसंद करे क़ौल हो वह या अमल या फअल या निय्यत या तरीक बेशक तू हर चीज़ पर क़ादिर है। या अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ तेरी मक्कार दोस्त से कि आँखें तो मुझे देखती हों और दिल उसका मुझे चीरे लेता हो अगर देखे भलाई तो दबा दे और अगर देखे बुराई तो फाश करे उसे या अल्लाह में पनाह चाहता हूँ तेरी शिद्दते फक्र और बहुत मुहताजी से या अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ तेरी शैतान से और उस के लश्करों से या अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ तेरी औरातों के फित्ने से या अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ तेरी उस से कि मुंह फेरे तू मुझ से क़यामत के दिन या अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ तेरी उस अमल से कि रुसवा कर दे मुझे और पनाह चाहता हूँ तेरी ऐसी साहब से जो

मुझे ईज़ा पहुंचाये और मैं पनाह चाहता हूँ तेरी हर ऐसे मंसूबा से कि ग़ाफ़िल कर दे मुझे और पनाह चाहता हूँ तेरी हर ऐसे फ़क़्र से कि भूल में डाल दे मुझे और पनाह चाहता हूँ तेरी हर उस मालदारी से कि दिमाग़ चला दे मेरा या अल्लाह में पनाह चाहता हूँ फ़िक्र की मौत से और पनाह चाहता हूँ तेरी ग़म की मौत से।
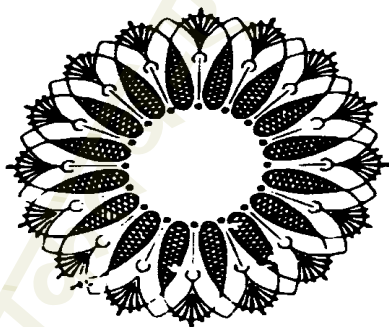
اَلْمَنْزِلُ السَّابِعُ يَوْمَ الْجُمُعَةِ

अल मंज़िलुस्साबिउ यवमल जुमुअती

सातवीं मंज़िल बरोज़ जुमा

١٨٢–يَارَبِّ يَارَبِّ يَارَبِّ اَللّٰهُمَّ يَا كَبِيْرُ يَاسَمِيْعُ يَابَصِيْرُ يَامَنْ لَّا شَرِيْكَ لَهٗ وَلَا وَزِيْرَ لَهٗ وَيَاخَالِقَ الشَّمْسِ وَالْقَمَرِ الْمُنِيْرِ وَ يَاعِصْمَةَ الْبَائِسِ الْخَائِفِ الْمُسْتَجِيْرِ وَيَارَازِقَ الطِّفْلِ الصَّغِيْرِ وَيَاجَابِرَ الْعَظْمِ الْكَسِيْرِ اَدْعُوْكَ دُعَاءَ الْبَائِسِ الْفَقِيْرِ كَدُعَاءِ الْمُضْطَرِّ الضَّرِيْرِ اَسْأَلُكَ بِمَعَاقِدِ الْعِزِّ مِنْ عَرْشِكَ وَبِمَفَاتِيْحِ الرَّحْمَةِ مِنْ كِتَابِكَ وَبِالْاَسْمَاءِ الثَّمَانِيَةِ الْمَكْتُوْبَةِ عَلٰى قَرْنِ الشَّمْسِ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْاٰنَ رَبِيْعَ قَلْبِیْ وَجَلَاءَ حُزْنِیْ.

१८२. या रब्बी या रब्बी या रब्बी अल्लाहुम्म या कबीरु या समीउ या बसीरु या मल्ला शरीक लहू व ला वज़ीर लहू व या ख़ालिक़श्शमसी वल क़मरिल मुनीरी व या इसमतल बाइसिल ख़ाइफ़िल मुस्तजीरी

व या राज़िक़त्तिफलिस्सग़ीरी व या जाबिरल अज़्मिल कसीरी अदऊक दुआअल बाइसिल फक़ीरी कदुआइल मुज़तर्रीज़ ज़रीरी अस्अलुक मिआक़िदील इज़्ज़ी मिन अरशिक व बिमफातीहिर रहमती मिन किताबिक व बिल असमाइस्समानियतिल मकतूबती अला क़रनिश्शमसी अन तजअलल कुरआन रबीअ क़ल्बी व जलाअ हुज़नी।

या रब या रब या रब या अल्लाह ऐ कबीर ऐ समीअ ऐ बसीर ऐ वह कि नहीं है शरीक उसका और न कोई मुशीर उसका और ऐ पैदा करने वाले आफताब और माहताब रोशन के और ऐ पनाह मुसीबत ज़दा तरसाँ पनाह जू के और ऐ रोज़ी पहुंचाने वाले नन्नहे बच्चे के, और ऐ जोड़ने वाले टूटी हड्डी के मैं मांगता हूँ तुझ से मांगना मुसीबत ज़दा मुहताज का सा मिस्ल मांगने बेक़रार आफ्त ज़दा के सवाल करता हूँ तुझ से बवसीलये बंदहाये इज़्ज़त के तेरे अर्श में से और बवसीलये रहमत की कुंजियों के तेरी किताब में से और बवसीला उन आठ नामों के जो लिखे हुये हैं रुख़े आफताब पर यह कि कर दे तू कुरआन शरीफ को बहार मेरे दिल की और कुशायश मेरे ग़म की।

كُلِّ وَحِيْدٍ وَّيَاصَاحِبَ كُلِّ فَرِيْدٍ وَّيَاقَرِيْبًا
غَيْرَ بَعِيْدٍ وَّيَاشَاهِدًا غَيْرَ غَائِبٍ وَّيَا غَالِبًا
غَيْرَ مَغْلُوْبٍ يَّاحَيُّ يَاقَيُّوْمُ يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ
يَا نُوْرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَازَيْنَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ يَا جَبَّارَ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ
يَا عِمَادَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ يَابَدِيْعَ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَاقَيَّامَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ يَاصَرِيْخَ
الْمُسْتَصْرِخِيْنَ وَمُنْتَهَى الْعَائِذِيْنَ
وَالْمُفَرِّجَ عَنِ الْمَكْرُوْبِيْنَ وَالْمُرَوِّحَ عَنِ
الْمَغْمُوْمِيْنَ وَمُجِيْبَ دُعَاءِ الْمُضْطَرِّيْنَ
وَيَا كَاشِفَ الْمَكْرُوْبِ يَا اِلٰهَ الْعَالَمِيْنَ وَ
يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ مَنْزُوْلٌ م بِكَ كُلُّ حَاجَةٍ.

१८३. रब्बना आतिना फिद्दुनिया कज़ा व कज़ा (अपनी हाजत को सोचें) या मूनिस कुल्लि वहीदिंव्व या साहिब कुल्लि फरीदिंव्व या क़रीबन ग़ैर बअीदिंव्व या शाहिदन ग़ैर ग़ाइबिंव्व या ग़ालिबन ग़ैर मग़लूबिंय्या हय्यु या क़य्यूमु या ज़ल जलाली वल

इकरामी या नूरस्समावाती वल अरज़ी व या ज़ैनस्समावाती व लअर्ज़ि या जब्बारस्समावाती वल अर्ज़ि या इमादस्समावाती वल अर्ज़ि या बदीअस समावाती वल अर्ज़ि व या क़य्यामस्समावाती वल अर्ज़ि या ज़ल जलाली वल इकरामी या सरीख़ल मुस्तसरिख़ीन व मुन्तहल आइज़ीन वल मुफ़र्रिज अनिल मकरूबीन वल मुरव्विह अनिल मग़मूमीन व मुजीब दुआइल मुज़तर्रिन व या काशिफल मकरूबी या इलाहल आलमीन व या अरहमर राहिमीन मन्जूलुम बिक कुल्लु हाजतिन।

ऐ रब हमारे दे हमें दुनिया में फलाँ फलाँ चीज़ ऐ ग़मगुसार हर अकेले के और ऐ साथी हर तनहा के और क़रीब जो बईद नहीं और ऐ हाज़िर जो ग़ायब नहीं और ऐ ग़ालिब जो मग़लूब नहीं ऐ हय्यु ऐ क़य्यूम ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त वाले ऐ नूर आसमानों और ज़मीनों के और ज़ीनत आसमानों और ज़मीनों के ऐ इन्तिज़ाम रखने वाले आसमानों और ज़मीनों के ऐ थामने वाले आसमानों और ज़मीनों के ऐ मूजिद आसमानों और ज़मीनों के और ऐ क़ायम रखने वालो आसमानों और ज़मीनों के ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त वाले ऐ दाद रस फरयादियों के और आख़िरी दाड़ पनाह माँगने वालों

के और कुशाइश देने वाले बे चौनियों के और राहत देने वाले ग़मज़दों के और क़बूल करने वाले दुआ बे क़रारों के और ऐ कुशाइश देने वाले साहबे करब के ऐ इलाहल आलमीन और ऐ अरहमर राहिमीन तेरे ही सामने पेश की जाती है हर हाजत।

۱۸۴-اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ خَلَّاقٌ عَظِيْمٌ اِنَّكَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ اِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ اِنَّكَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ الْبَرُّ الْجَوَادُ الْكَرِيْمُ اغْفِرْلِيْ وَارْحَمْنِيْ وَعَافِنِيْ وَ ارْزُقْنِيْ وَ اسْتُرْنِيْ وَ اجْبُرْنِيْ وَارْفَعْنِيْ وَاهْدِنِيْ وَلَا تُضِلَّنِيْ وَاَدْخِلْنِيْ الْجَنَّةَ بِرَحْمَتِكَ يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ اِلَيْكَ رَبِّ فَحَبِّبْنِيْ وَفِيْ نَفْسِيْ لَكَ فَذَلِّلْنِيْ وَفِيْ اَعْيُنِ النَّاسِ فَعَظِّمْنِيْ وَمِنْ سَيِّءِ الْاَخْلَاقِ فَجَنِّبْنِيْ اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ سَأَلْتَنَا مِنْ اَنْفُسِنَا مَالَا نَمْلِكُهٗ اِلَّا بِكَ فَاَعْطِنَا مِنْهَا مَا يُرْضِيْكَ عَنَّا.

१८४. अल्लाहुम्म इन्नक ख़ल्लाकुन अज़ीमुन इन्नक समीउन अलीमुन इन्नक ग़फूरुर रहीमुन

इन्नक रब्बुल अर्शिल अज़ीम। अल्लाहुम्म इन्नकल बर्रुल जवादुल करीमुग़फिर ल वरहमनी व आफिनी वरज़ुक़नी वस्तुरनी वजबुरनी वरफअनी वहदिनी वला तुज़िल्लनी व अदख़िलनील जन्नत बिरहमतिक या अर हमर राहीमीन इलैक रब्बी फहब्बिबनी व फी नफ्सी लक फज़ल्लिलनी व फी आयुनिन्नासी फअइज़्ज़िमनी व मिन सय्यइल अख़्लाक़ी फजन्नबनी अल्लाहुम्म इन्नक सअलतना मिन अनफुसिना माला नमलिकुहू इल्ला बिक फआतिना मिन्हा मा युरज़ीक अन्ना।

या अल्लाह तू ख़ल्लाक़े अज़ीम है तू सुनता जानता है तू ग़फूर रहीम है तू मालिक है अर्शे अज़ीम का या अल्लाह तू मुहसिन है साहबे जूद साहबे करम है बख़्श दे मुझे और रहम कर मुझ पर और अमन दे मुझे और रिज़्क़ दे मुझे और परदा पोशी कर मेरी और जब्र नुक़सान कर मेरा और रिफअत दे मुझे और हिदायत दे मुझे और गुमराह न कर मुझे और दाख़िल कर मुझे जन्नत में अपनी रहमत से ऐ अरहमर राहिमीन ऐ रब अपना बना ले मुझे और मेरे दिल में अपने मुक़ाबला में फरमाँ बरदारी डाल दे और लोगों की नज़रों में अज़मत दे मुझे और बुरे अख़्लाक़ से बचा

दे मुझे या अल्लाह फरमाइश की है तूने हमारी ज़ात से उन आमाल की कि हम उन पर इख़्तियार नहीं रखते बदून तेरी तौफीक़ के तू दे हमें उन में से उस अमल की तौफीक़ जो राज़ी कर दे मुझे हम से।

۱۸۵–اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ اِیْمَانًا دَائِمًا وَّ اَسْأَلُکَ قَلْبًا خَاشِعًا وَّاَسْأَلُکَ یَقِیْنًا صَادِقًا وَّاَسْأَلُکَ دِیْنًا قَیِّمًا وَّاَسْأَلُکَ الْعَافِیَۃَ مِنْ کُلِّ بَلِیَّۃٍ وَّاَسْأَلُکَ دَوَامَ الْعَافِیَۃِ وَاَسْأَلُکَ الشُّکْرَ عَلَی الْعَافِیَۃِ وَاَسْأَلُکَ الْغِنٰی عَنِ النَّاسِ اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْتَغْفِرُکَ لِمَا تُبْتُ اِلَیْکَ مِنْہُ ثُمَّ عُدْتُّ فِیْہِ وَاَسْتَغْفِرُکَ لِمَا اَعْطَیْتُکَ مِنْ نَّفْسِیْ ثُمَّ لَمْ اُوْفِ لَکَ بِہٖ وَاَسْتَغْفِرُکَ لِلنِّعَمِ الَّتِیْ تَقَوَّیْتُ بِھَا عَلٰی مَعْصِیَتِکَ وَ اَسْتَغْفِرُکَ لِکُلِّ خَیْرٍ اَرَدْتُّ بِہٖ وَجْھَکَ فَخَالَطَنِیْ فِیْہِ مَالَیْسَ لَکَ اَللّٰھُمَّ لَاتُخْزِنِیْ فَاِنَّکَ بِیْ عَالِمٌ وَّلَا تُعَذِّبْنِیْ فَاِنَّکَ عَلَیَّ قَادِرٌ

१८५. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ईमानन दाइमंव्व अस्अलुक क़ल्बन ख़ाशिअंव्व अस्अलुक

यक़ीनन सादिक़व्वं अस्अलुक दीनन क़य्यमव्वं अस्अलुकल आफियत मिन कुल्ली बलिय्यतिव्वं अस्अलुक दवामल आफियती व अस्अलुकश शुक्र अलल आफियति व अस्अलुकल ग़िना अनिन्नासी अल्लाहुम्म इन्नी अस्तग़्फिरुक लिमा तुबतु इलैक मिन्हु सुम्म उत्तु फीही व अस्तग़्फिरुक लिमा आतैतुक मिन्नफ्सी सुम्म लम ऊफी लक बिही व अस्तग़्फिरुक लिन्निअमिल्लती तक़व्वैतु बिहा अला मअसीयतिक व अस्तग़्फिरुक लिकुल्लि ख़ैरिन अरत्तु बिही वजहक फख़ालतनी फीही मा लैस लक अल्लाहुम्म ला तुख़्ज़ीनी फइन्नक बी आलिमुव्वं ला तुअज़्ज़िबनी फइन्नक अलय्य क़ादिरुन।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से ईमान हमेशा रहने वाला और मांगता हूँ तुझ से दिल ख़ुशूअ करनेवाला और मांगता हूँ तुझ से यक़ीन सच्चा और मांगता हूँ तुझ से हमेशा रहना अमन हर बला से और मांगता हूँ तुझ से हमेशा रहना अमन का और मांगता हूँ तुझ से शुक्र अमन पर और मांगता हूँ तुझ से बे परवाही लोगों से या अल्लाह मैं माफी चाहता हूँ तुझ से उस गुनाह की जिस से मैंने तौबा की हो और फिर लौट कर उसको किया हो और माफी चाहता हूँ तुझ से उस अहद की जो मैंने तुझ

को अपनी जानिब से दिया हो और फिर उसको वफ़ा न किया हो और माफी चाहता हूँ मैं तुझ से उन नेमतों के बारे में जिन से कुव्वत हासिल की मैंने तेरे गुनाह पर और माफी चाहता हूँ मैं तुझ से हर उस नेकी के बारे में कि करना चाहा मैंने उसको ख़ालिस तेरे लिए फिर मिल गई उस में वह चीज़ जो ख़ासिल तेरे लिए न थी या अल्लाह रुसवा न करना मुझे क्योंकि तू तो मुझ को जानता है और मत अज़ाब करना मुझे क्योंकि तू मुझ पर क़ादिर है।

١٨٦-اَللّٰهُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ كُلَّ مُهِمٍّ مِّنْ حَيْثُ شِئْتَ وَمِنْ اَيْنَ شِئْتَ حَسْبِىَ اللّٰهُ لِدِيْنِىْ حَسْبِىَ اللّٰهُ لِدُنْيَاىَ حَسْبِىَ اللّٰهُ لِمَا اَهَمَّنِىْ حَسْبِىَ اللّٰهُ لِمَنْ بَغٰى عَلَىَّ حَسْبِىَ اللّٰهُ لِمَنْ حَسَدَنِىْ حَسْبِىَ اللّٰهُ لِمَنْ كَادَنِىْ بِسُوْءٍ حَسْبِىَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَوْتِ حَسْبِىَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَسْأَلَةِ فِى الْقَبْرِ حَسْبِىَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمِيْزَانِ حَسْبِىَ اللّٰهُ عِنْدَ الصِّرَاطِ حَسْبِىَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ

تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ.

१८६. अल्लाहुम्म रब्बस समावातिस सबअी व रब्बल अर्शिल अज़ीमी। अल्लाहुम्मकफीनी कुल्ल मुहिम्मिम मिन हैसु शित व मिन ऐन शित हस्बियल्लाहु लिदीनी हस्बियल्लाहु लिदुनियाय हस्बियल्लाहु लिमा अहम्मनी हस्बियल्लाहु लिमन बग़ा अलय्या हस्बियल्लाहु लिमन हसदनी हस्बियल्लाहु लिमन कादनी बिसूइन हस्बियल्लाहु इन्दल मौति हस्बियल्लाहु इन्दल मस्अलती फिल क़ब्री हस्बियल्लाहु इन्दल मीज़ानी हस्बियल्लाहु इन्दस सिराती हस्बियल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव अलैहि तवक्कलतु वहुव रब्बुल अर्शिल अज़ीम।

ऐ परवरदिगार सातों आसमानों के और परवरदिगार अर्शे अज़ीम के या अल्लाह काफी हो जा तू मुझे हर मुहिम में जिस तरह से चाहे तू और जिस जगह से चाहे तो काफी है मुझ को अल्लाह मेरी दुनिया के लिए काफी है मुझ को अल्लाह मेरी कुल फिक्रों के लिए काफी है मुझ को अल्लाह उस शख़्स के लिए जो मुझ पर ज़्यादती करे काफी है मुझ को अल्लाह उस शख़्स के लिए जो मुझ पर हसद करे काफी है मुझ को अल्लाह उस शख़्स के लिए कि फरेब दे मुझे बुराई के साथ काफी है मुझ

को अल्लाह मौत के वक़्त काफी हे मुझ को अल्लाह क़ब्र में सवाल के वक़्त काफी है मुझ को अल्लाह मीज़ान के पास काफी है मुझ को अल्लाह पुल सिरात के पास काफी है मुझ को अल्लाह नहीं है कोई माबूद सिवाये उसके उसी पर भरोसा किया मैंने और वही रब है अर्शे अज़ीम का।

١٨٧-اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ ثَوَابَ الشَّاكِرِيْنَ وَ نُزُلَ الْمُقَرَّبِيْنَ وَ مُرَافَقَةَ النَّبِيِّيْنَ وَيَقِيْنَ الصِّدِّيْقِيْنَ وَذِلَّةَ الْمُتَّقِيْنَ وَ اِخْبَاتَ الْمُوْقِنِيْنَ حَتّٰى تَوَفَّانِىْ عَلٰى ذٰلِكَ يَآ اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

१७७.अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक सवाबश शाकिरीन व नुजुलल मुक़र्रबीन व मुराफक़न्नबीईन व यक़ीनस सिद्दीक़ीन व ज़िल्लतल मुत्तक़ीन व इख़्बतल मुक़िनीन हत्ता तवफ्फानी अला ज़ालिक या अरहमर राहिमीन।

या अल्लाह मैं माँगता हूँ तुझ से सवाब शुक्र करने वालों का सा और मेहमानी मुक़र्रबीन की सी और हमराही अंबिया अलैहिमुस्सलाम की सी और यक़ीन सिद्दीक़ों का सा और तवाज़ो मुत्तक़ीन की सी

और ख़ुशू यक़ीन वालों का सा यहाँ तक कि वफ़ात दे तू मुझे इस हाल पर ऐ अरहमर राहीमीन।

١٨٨-اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ بِنِعْمَتِکَ السَّابِقَةِ عَلَیَّ وَبَلَائِکَ الْحَسَنِ الَّذِیْ ابْتَلَیْتَنِیْ بِهٖ وَفَضْلِکَ الَّذِیْ فَضَّلْتَ عَلَیَّ اَنْ تُدْخِلَنِیَ الْجَنَّةَ بِمَنِّکَ وَفَضْلِکَ وَرَحْمَتِکَ.

१८८. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक बिनिअमतिकस साबिक़ती अलैय्या व बलाइकल हसनिल लज़ीब तलैतनी बिही व फ़ज़लिकल लज़ी फ़ज़्ज़लत अलय्य अन तुदख़िलनियल जन्नत बिमन्निक व फ़ज़लिक व रहमतिक।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से बवजह तेरे साबिक़ इनआम के मुझ पर और बवसीला उस अच्छे इम्तेहान के जिस से इम्तेहान लिया हो तूने मेरा और बवसीला तेरे उस फज़ल के जो तूने फज़ल किया हो मुझ पर कि दाख़िल कर मुझे जन्नत में अपने ऐहसान और फज़ल और रहमत से।

١٨٩-اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ اِیْمَانًا دَائِمًا وَّ هُدًی قَیِّمًا وَّ عِلْمًا نَّافِعًا.

१८९. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ईमानन दाइमव्वं हुदन कैय्यमव्वं इल्मन नाफिअन।

या अल्लाह मैं मांगता हूँ तुझ से ईमान हमेशा रहने वाला और हिदायत मुस्तहकम और इल्मे नाफे।

١٩٠-اَللّٰهُمَّ لَاتَجْعَلْ لِّفَاجِرٍ عِنْدِیْ نِعْمَةً اُكَافِيْهِ بِهَا فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ.

१९०. अल्लाहुम्म ला तजअल लिफाजिरिन इन्दी निमतन उकाफीही बिहा फिद्दुनिया वल आख़िरह।

या अल्लाह न कर किसी बदकार का मुझ पर कोई ऐहसान कि मुकाफात करनी पढ़े मुझ को दुनिया में और आख़िरत में।

١٩١-اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَوَسِّعْ لِیْ خُلُقِیْ وطَيِّبْ لِیْ كَسْبِیْ وَقَنِّعْنِیْ بِمَا رَزَقْتَنِیْ وَلَاتُذْهِبْ طَلَبِیْ اِلٰی شَیْءٍ صَرَفْتَهٗ عَنِّیْ.

१९१. अल्लाहुम्मग़्फिरली ज़ंबी व वस्सिअ ली ख़ुलुक़ी व तय्यिब ली कस्बी व क़न्नीनी बिमा रज़क़्तनी वला तुज़्हिब तलबी इला शैइन सरफ्तहू अन्नी।

या अल्लाह बख़्श दे मेरे गुनाह और वसीअ कर दे मेरा खुल्क़ और हलाल कर दे मेरा कसब और

क़नाअत दे मुझे उस चीज़ पर जो तूने मुझे दी और न ले जा तलब मेरी किसी ऐसी चीज़ की तरफ जिस को तूने मुझ से हटा लिया हो।

١٩٢- اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْتَجِیْرُکَ مِنْ جَمِیْعِ کُلِّ شَیْءٍ خَلَقْتَ وَاَحْتَرِسُ بِکَ مِنْهُنَّ وَاجْعَلْ لِّیْ عِنْدَکَ وَلِیْجَةً وَّاجْعَلْ لِّیْ عِنْدَکَ زُلْفٰی وَحُسْنَ مَاٰبٍ وَّاجْعَلْنِیْ مِمَّنْ یَّخَافُ مَقَامَکَ وَوَعِیْدَکَ وَیَرْجُوْ لِقَاءَکَ وَاجْعَلْنِیْ مِمَّنْ یَّتُوْبُ اِلَیْکَ تَوْبَةً نَّصُوْحًا وَّاَسْاَلُکَ عَمَلًا مُّتَقَبَّلًا وَّعِلْمًا نَّجِیْحًا وَّسَعْیًا مَّشْکُوْرًا وَّتِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ.

१९२. अल्लाहुम्म इन्नी अस्तजीरुक मिन जीमअी कुल्लि शैइन ख़लक़्त व ऐहतरिसु बिक मिन्हुन्न वजअल्ली इन्दक व लिजतंव्वजअल्ली इन्दक ज़ुलफा व हुस्न मआबिंव्वजअलनी मिम्मंय्यख़ाफु मक़ामक व वईदक व यरजू लिक़ाअक वजअलनी मिम्मंय्यतूबु इलैक तौबतन्नसूहंव्व अस्अलुक अमलम मुतक़ब्बलंव्व इल्मन्नजीहंव्व सअयम मशकूरंव्व तिजारतल लन तबूर।

या अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ तमाम उन चीज़ों से जो तूने पैदा कीं और तेरी हिफाज़त में

आता हूँ उन से और कर मेरे लिए अपने यहाँ दख़्ल और कर मेरे लिए अपने यहाँ कुर्ब और रुजूअ नेक और कर मुझे उन लोगों में से जो डरते हैं तेरे सामने खड़े होने से और तेरी वईद से और तमन्न रखते हैं तेरे विसाल की और कर दे मुझे उन लोगों में से जो तौबा करते हैं तेरी तरफ तौबा ख़ालिस और मांगता हूँ मैं तुझ से अमले मक़बूल और इल्म कार आमद और सई मशकूर और तिजारत जिस में घाटा न हो।

١٩٣- اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ فِکَاکَ رَقَبَتِیْ مِنَ النَّارِ
اَللّٰهُمَّ اَعِنِّیْ عَلٰی غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَسَکَرَاتِ الْمَوْتِ

१९३. अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक फिकाक रक़बती मिनन्नारी अल्लाहुम्म अइन्नी अला ग़मरातिल मौती व सकरातिल मौती।

या अल्लह मैं मांगता हूँ तुझ से अपनी जान बख़्शी दोज़ख़ से या अल्लाह मदद कर मेरी मौत की बेहोशियों और मौत की सख़्तियों पर।

١٩٤- اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاَلْحِقْنِیْ بِالرَّفِیْقِ الْاَعْلٰی۔
اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ اَنْ اُشْرِکَ بِکَ

شَيْئًا وَّاَنَا اَعْلَمُ وَاَسْتَغْفِرُكَ لِمَا لَا اَعْلَمُ
بِهٖ وَ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ يَّدْعُوَ عَلَيَّ رَحِمٌ
قَطَعْتُهَا اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ
مَنْ يَّمْشِيْ عَلٰى بَطْنِهٖ وَمِنْ شَرِّ مَنْ
يَّمْشِيْ عَلٰى رِجْلَيْنِ وَمِنْ شَرِّمَنْ يَّمْشِيْ عَلٰى
اَرْبَعٍ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَامْرَاَةٍ تُشَيِّبُنِيْ
قَبْلَ الْمَشِيْبِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ وَّلَدٍيَّكُوْنُ عَلَيَّ وَبَالاً
وَّاَعُوْذُبِكَ مِنْ مَّالٍ يَّكُوْنَ عَلَيَّ عَذَابًا
اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّكِّ فِي الْحَقِّ
بَعْدَالْيَقِيْنِ وَاَعُوْذُبِكَ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ
وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ يَوْمِ الدِّيْنِ اَللّٰهُمَّ اِنِّيْ اَعُوْذُبِكَ
مِنْ مَّوْتِ الْفُجَآءَةِ وَمِنْ لَّدْغِ الْحَيَّةِ وَمِنَ السَّبُعِ
وَمِنَ الْغَرَقِ وَمِنَ الْحَرَقِ وَمِنْ اَنْ اَخِرَّ عَلٰى شَيْءٍ
وَّمِنَ الْقَتْلِ عِنْدَ فِرَارِ الزَّحْفِ.

(ثُمَّ يَقُوْلُ بَعْدَ الْخَتْمِ)

وَتَقَبَّلْ هٰذِهِ الدَّعْوَاتِ فِيْ حَقِّ مولانا مُحَمَّدْ اَشْرَفْ عَلِيْ
وَمولانا وَصِيِّ اللّٰه ومولاناعبدُ الْحَلِيْم ومولانامُنِيْر احمد

وَمُحَمَّدْ مُصْطَفٰى وَمُحَمَّدْ عَلِىْ وَجَمِيْعِ الْمؤْمِنِيْنِ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَصَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى سَيِّدِ الْكَائِنَاتِ وَاَكْرَمِ الْمَخْلُوْقَاتِ صَلٰوةً تَسْبِقُ الْغَايَاتِ. بِحَمْدِ اللّٰهِ الَّذِىْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ

१९४. अल्लाहुम्मग़्फिरली वरहमनी व अलहिक़्नी बिर्रफीक़िल आला। अल्लाहुम्म इन्नी आऊज़ुबिक मिन अन उशरिक बिक शैअंव्व अना आलमु व अस्तग्फिरुक लिमा ला आलमु बिही व अऊज़ुबिक अंय्यदउव अलय्य रहिमुन क़तअतुहा अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिन शर्री मंय्यमशी अला बतनिही व मिन शर्री मंय्यमशी अला रिजलैनी व मिन शर्रि मंय्यमशी अला अरबअीन अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनमरअतिन तुशय्यिबुनी क़ब्लल मशीबि व अऊज़ुबिक मिंव्वलदिंय्यकूनु अलय्य व बालंव्व अऊज़ुबिक मिम मालिंय्यकून अलय्य अज़ाबन अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनश्शक्की फल हक्क़ि बअदल यक़ीनी व अऊज़ुबिक मिनश्शैतानिर रजीम व अऊज़ुबिक मिन शर्री यौमिद्दीनी अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिम मौतिल फुजाअति व मिल लुदग़िल हय्यती व मिनस्सबुअी व मिनल ग़रक़ी व मिनल हरक़ी व मिन अन अख़िर्र अला शैइंव्व मिनल

क़त्ली इन्द फिरारिज़्ज़हफी।(सुम्म यकूल बअदल ख़त्मी)

व तक़ब्बल हाज़िहिद्दअवाती फी हक़्क़ी मौलाना मुहम्मद अशरफ अली व मौलाना वसीयुल्लाह व मौलाना अब्दुल हलीम व मौलाना मुनीर अहमद व मुहम्मद मुस्तफा व मुहम्मद अली व जमीअील मुमिनीन वल मुमिनाती व सल्लल्लाहु तआला अला सय्यदिल कायनाती व अक्रमिल मख़्लूक़ाती सलातन लसबिक़ुल ग़ायाती। बिहम्दिल्लाहिल लज़ी बिनेअमतिही ततिम्मुस्सालिहातु।

या अल्लाह बख़्श दे मुझे और रहम कर मुझ पर और शामिल कर मुझे अला रफीक़ों में। या अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ तेरी उस से कि तेरे साथ कुछ भी शिर्क करूँ और उसको मैं जानता हूँ और माफी चाहता हूँ तुझ से उसकी कि मैं न जानता हूँ और पनाह चाहता हूँ तेरी कि बद दुआ दे मुझे कोई रिश्तेदार जिस से मैंने क़तअे रहम किया हो या अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ तेरी उस हैवान की बुराई से कि पेट के बल चलता है और उस हैवान की बुराई से कि दो पैरों से चलता है और उस हैवान की बुराई से कि चार पैरों से चलता है या अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ तेरी ऐसी औरत से कि मुझे बूढ़ा कर दे बुढ़ापे से पहले और पनाह चाहता

हूँ तेरी ऐसी औलाद से कि हो मुझ पर वबाल और पनाह चाहता हूँ तेरी ऐसे माल से कि हो मुझ पर अज़ाब या अल्लह मैं पनाह चाहता हूँ तेरी शक लाने से हक़ बात में बाद यक़ीन के और पनाह चाहता हूँ तेरी शैतान मरदूद से और पनाह चाहता हूँ तेरी सख़्ती रोज़े जज़ा से या अल्लाह मैं पनाह चाहता हूँ तेरी नागहानी मौत से और साँप के काटने से और दरिन्दों से और डूबने से और जल जाने से और उस से कि गिर पड़ूँ किसी चीज़ पर और मारे जाने से लश्कर के भागने के वक़्त।

फिर मंज़िल ख़त्म के बाद कहे।

और क़बूल कर उन दुआओं को हज़रत मुहम्मद अशरफ अली और मौलाना वसीयुल्लाह व मौलाना अब्दुल हलीम व मौलाना मुनीर अहमद और हकीम मुहम्मद मुस्तफा और मुहम्मद अली (साहब साओी) और तमाम मोमिनीन और मोमिनात के हक़ में और रहमत कामिला नाज़िल फरमा दें अल्लाह तआला सरवरे कायनात (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) और बेहतरीन मख़्लूक़ात पर ऐसी रहमत की गुज़र जाये इन्तिहाओं से।

शुक्र है अल्लाह का जिस के इनआम से अच्छी चीज़ें कमाल को पहुंचती हैं।

सहर व आसेब और दूसरे ख़तरात से हिफाज़तके लिए कुरआन पाक की आयात की मंज़िल

मुवल्लिफ़: हज़रत मौलाना तलहा साहब दामत बरकातहुम

मुरत्तिब: हजरत मौलाना सूफी मुहम्मद इक़बाल साहब मुहाजिर मदनी रह०

मंज़िल पढ़ने का तरीक़ा

रोज़ाना सुबह व शाम या सोने से क़ब्ल एक मर्तबा हलकी आवाज़ से पढ़ लिया करें, अगर हिफ्ज़ मकान या दूकान के लिए पढ़ें तो मकान या दूकान ही में उस का विर्द किया जाये एक सूरत यह भी है कि पानी के घड़े में पढ़ने के बाद दम कर दिया जाये और उसका पानी दूकान या मकान में छिड़क दिया जाये। आसेब व जिन की शिकायत हो तो पढ़ कर दम करने का मामूल बना लिया जाये बेह्तर है कि दोनों वक़्त करना कम अज़ कम एक वक़्त ज़रूर पढ़ लिया जाये। अगर चालिस दिन मुकम्मल दम किया जाये और दम कर्दा पानी पिलाया जाये तो इंशा अल्लाह आसेब व सहर व करतब वग़ैरह का असर ज़ायल हो जायेगा। चोर, डाकू और ज़ालिमों

के ज़ुल्म और दरिन्दों से हिफ़ाज़त मत्लूब हो तो उसी जगह में उसका विर्द किया जाये हर क़िस्म की बला व मुसीबत के दिफ़ा और उस से हिफ़ाज़त के लिए विर्द का मामूल बना लिया जाये। उसे ख़ुद भी पढ़ें और बच्चों और औरतों को भी उसके पढ़ने की ताकीद करें इंशा अल्लाह हर क़िस्म की बलाओं और परेशानियों से हिफ़ाज़त रहेगी और ख़ुदा की ग़ैबी मदद व नुसरत हासिल होगी इंशा अल्लाह। हज़रत तलहा सहब इब्ने हज़रत मौलाना ज़करिया साहब कांधवी मंज़िल के बारे में लिखते हैं कि हमारे ख़ानदान के अकाबिर अमलियात और अदओया में इस मंज़िल का बहुत ऐहतिमाम फरमाया करते थे और बच्चों को बचपन ही में उस मंज़िल को ऐहतिमाम से याद कराने का मामूल था।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۝ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ۝ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ۝ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۵ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ۝

(अल हम्दु लिल्लाह: हदीस पाक में हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि सूरये फातेहा में हर बीमारी से शिफा है(दार्मी, बेहक़ी) उसको पढ़ कर बीमारों पर दम करने की हदीस में तरग़ीब है।)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۝ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛۚ فِيْهِ ۛۚ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝ اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۙ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝ وَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝

(हदीस पाक में है हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हू ने फरमाया कि सूरये बक़रा की दस आयतें ऐसी हैं कि अगर कोई शख़्स उनको रात में पढ़ ले तो उस रात को जिन, शैतान घर में दाख़िल न होगा और उसको और उसके अहल व अयाल को उस रात में कोई आफत, बीमारी, रंज व ग़म, वग़रह नाख़ुशगवार चीज़ पेश न आयेगी और अगर यह आयतें किसी मजनून पर

पढ़ी जायें तो उसको इफाक़ा हो जायेगा वह दस आयतें यह हैं चार आयतें शुरू सूरये बक़रा की फिर तीन आयतें दरमियानी यानी आयतल कुर्सी और उसके बाद की दो आयतें फिर आख़िर सूरये बक़रा की आयतें (मआरिफुल कुरआन)

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَیُّ الْقَیُّوْمُ ۚ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ؕ مَنْ ذَا الَّذِیْ یَشْفَعُ عِنْدَهٗۤ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ یَعْلَمُ مَا بَیْنَ اَیْدِیْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا یُحِیْطُوْنَ بِشَیْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖۤ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ كُرْسِیُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ وَلَا یَـُٔوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۝ لَاۤ اِكْرَاهَ فِی الدِّیْنِ ۙ قَدْ تَّبَیَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَیِّ ۚ فَمَنْ یَّكْفُرْ بِالطَّاغُوْتِ وَیُؤْمِنْ بِاللّٰهِ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰی ۗ لَا انْفِصَامَ لَهَا ؕ وَاللّٰهُ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۝ اَللّٰهُ وَلِیُّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا یُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَی النُّوْرِ ؕ۬ وَالَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اَوْلِیٰٓـُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ یُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَی الظُّلُمٰتِ ؕ اُولٰٓىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِیْهَا خٰلِدُوْنَ ۝

(आमनर्रसूल : हदीस पाक में इर्शाद है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह तआला ने सूरये बक़रा को उन दो

आयतों पर ख़त्म फरमाया है जो मुझे उस ख़ज़ानये ख़ास से अता फरमाई हें जो अर्श के नीचे है इस लिए तुम ख़ास तौर पर उन आयतों को सीखो और अपनी औरतों और बच्चों को सिखाओं। (मुस्तदरक हाकिम, बेहक़ी)

لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اَوْ تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ۗ فَيَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝ اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۗ كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ ۣ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْ رُّسُلِهٖ ۣ وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ۖ غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ۗ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ۗ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا ۥ وَاغْفِرْ لَنَا ۥ وَارْحَمْنَا ۥ اَنْتَ مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝

⑥ شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ وَ الْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝

(हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि अल्लाहु अन्हू की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख़्स हर फर्ज़ नमाज़ के बाद सूरये फातेहा आयतल कुर्सी और आयते शहिदल्लाह और कुल अल्लाहुम्म मालिकुल मुल्क से बिग़ैरिल हिसाब तक पढ़ा करे तो अल्लाह तआला उसके सब गुनाह माफ फरमायेगा और जन्नत में जगह देंगे और उसकी सत्तर हाजतें पूरी फरमायेंगे जिन में से कम से कम हाजत उसकी मग़्फिरत है।

(रूहुल मआनी)

⑦ قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ ۫ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ؕ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ؕ اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ ۫ وَتُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَىِّ ۫ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝

⑧ اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِى الَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْاَمْرُ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ○ اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ○ وَلَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ○

(कुरआान पाक की यह तीनों आयात (इन्न रब्बुकुमुल्लाह तक) दफ़अे मज़रत के लिए मुजर्रब व मशहूर हैं।

⑨ قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ اَيًّا مَّا تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى وَلَا تَجْهَرْ بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ○ وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ○

(हज़रत अबू मूसा अशअरी रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह ने इर्शाद फरमाया जो शख़्स सुबह होते और शाम होते यह आयतें 'कुल अदउल्लाह आख़िर सूरत तक पढ़ लो उसका दिल मुर्दा न होगा उस दिन और उस रात में। (दिलमी)

۝ أَفَحَسِبْتُمْ أَنَّمَا خَلَقْنَاكُمْ عَبَثًا وَأَنَّكُمْ إِلَيْنَا لَا تُرْجَعُونَ ○
فَتَعَالَى اللَّهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۖ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۚ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيمِ ○
وَمَنْ يَدْعُ مَعَ اللَّهِ إِلَٰهًا آخَرَ لَا بُرْهَانَ لَهُ بِهِ فَإِنَّمَا حِسَابُهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۚ
إِنَّهُ لَا يُفْلِحُ الْكَافِرُونَ ○ وَقُلْ رَبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَأَنْتَ خَيْرُ الرَّاحِمِينَ ۝

(हज़रत मुहम्मद बिन इबराहीम तैमी अपने वालिद से रिवायत करते हैं कि हम को रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक सरमाया भेजा जाते वक़्त यह वसीयत फरमाई कि हम सुबह और शाम होते ही यह आयतें पढ़ लिया करें 'अ फहसिबतुम अन्नमा ख़लकनाकुम मुकम्मल' तो हम पढ़ते रहे हमें माले ग़नीमत भी मिला और हमारी जानें भी महफूज़ रहीं। (इब्ने सिन्नी)

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

وَالصَّافَّاتِ صَفًّا ۝ فَالزَّاجِرَاتِ زَجْرًا ۝ فَالتَّالِيَاتِ ذِكْرًا ۝ إِنَّ إِلَٰهَكُمْ
لَوَاحِدٌ ۝ رَبُّ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ الْمَشَارِقِ ۝
إِنَّا زَيَّنَّا السَّمَاءَ الدُّنْيَا بِزِينَةٍ الْكَوَاكِبِ ۝ وَحِفْظًا مِنْ كُلِّ
شَيْطَانٍ مَارِدٍ ۝ لَا يَسَّمَّعُونَ إِلَى الْمَلَإِ الْأَعْلَىٰ وَيُقْذَفُونَ مِنْ كُلِّ
جَانِبٍ ۝ دُحُورًا ۖ وَلَهُمْ عَذَابٌ وَاصِبٌ ۝ إِلَّا مَنْ خَطِفَ
الْخَطْفَةَ فَأَتْبَعَهُ شِهَابٌ ثَاقِبٌ ○ فَاسْتَفْتِهِمْ أَهُمْ أَشَدُّ خَلْقًا أَمْ مَنْ
خَلَقْنَا ۚ إِنَّا خَلَقْنَاهُمْ مِنْ طِينٍ لَازِبٍ ○

﴿١٢﴾ يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ فَانْفُذُوْا ؕ لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا
تُكَذِّبٰنِ ۝ يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ ۙ وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۚ
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً
كَالدِّهَانِ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْئَلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖۤ اِنْسٌ
وَّلَا جَآنٌّ ۚ فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝ ﴿١٣﴾ لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ
عَلٰى جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ
نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝ هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝ هُوَ
اللّٰهُ الَّذِیْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ
الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝
هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ؕ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا
فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۚ

हज़रत मुअक़्क़ल बिन यसार रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत हे कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो सुबह के वक़्त तीन मर्तबा 'अऊज़ु बिल्लाहिस समीअिल अलीमी मिनश शैतानिर रजीम' और उसके बाद सूरये हश्र की आख़िरी तीन

आयतें 'हुवल्लाहुल लज़ी' से आख़िर तक पढ़ ले तो अल्लाह तआला सत्तर हज़ार फरिश्ते मुक़र्रर फरमा देते हैं जो शाम तक उसके लिए रहमत की दुआ करते रहते हैं और अगर उस दिन में वह मर गया तो उसे शहादत की मौत हासिल होगी और जिस ने शाम को यही कलिमात पढ़ लिये तो उसको भी यही दर्ज़ा हासिल होगा। (तफ्सीरे मज़हरी बहवाला तिर्मिज़ी मिश्कात स.१८८)

قُلْ أُوحِيَ إِلَيَّ أَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ فَقَالُوا إِنَّا سَمِعْنَا قُرْآنًا
عَجَبًا ۝ يَهْدِي إِلَى الرُّشْدِ فَآمَنَّا بِهِ وَلَن نُّشْرِكَ بِرَبِّنَا أَحَدًا ۝
وَأَنَّهُ تَعَالَىٰ جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً وَلَا وَلَدًا ۝ وَأَنَّهُ كَانَ يَقُولُ
سَفِيهُنَا عَلَى اللَّهِ شَطَطًا ۝

कुल ऊहिया कुरआन पाक की यह आयात दफ्अे मज़र्रात के लिए बहुत मुजर्रब और मशहूर हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۝ لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝ وَلَا أَنتُمْ
عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝ وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَّا عَبَدتُّمْ ۝ وَلَا أَنتُمْ
عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝ لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۝

एक रिवायत में सूरये काफिरून को चौथाई

कुरआन के बराबर फरमाया (तिर्मिज़ी) और एक रिवायत में सूरये इख़्लास को कुरआन को बराबर फरमाया।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۚ﴿۱﴾ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۚ﴿۲﴾ لَمۡ يَلِدۡ ۙ وَلَمۡ يُوۡلَدۡ ۙ﴿۳﴾ وَلَمۡ يَكُنۡ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ﴿۴﴾

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ الۡفَلَقِ ۙ﴿۱﴾ مِنۡ شَرِّ مَا خَلَقَ ۙ﴿۲﴾ وَمِنۡ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۙ﴿۳﴾ وَمِنۡ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِى الۡعُقَدِ ۙ﴿۴﴾ وَمِنۡ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ﴿۵﴾

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

قُلۡ اَعُوۡذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۙ﴿۱﴾ مَلِكِ النَّاسِ ۙ﴿۲﴾ اِلٰهِ النَّاسِ ۙ﴿۳﴾ مِنۡ شَرِّ الۡوَسۡوَاسِ ۙ الۡخَنَّاسِ ۙ﴿۴﴾ الَّذِىۡ يُوَسۡوِسُ فِىۡ صُدُوۡرِ النَّاسِ ۙ﴿۵﴾ مِنَ الۡجِنَّةِ وَالنَّاسِ ﴿۶﴾

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

चहल दुरूद शरीफ

١ . سَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ اصْطَفٰى (سورہ نمل)

१. सलामुन अला इबादतिहिल लज़ीनस्तफा (सूरये नमल)

٢ . سَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ (سورة الصٰفٰت)

२. सलामुन अलल मुरसलीन। (सूरतुस्साफ्फात)

(١) اَللّٰهُمَّ (١) صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ . (طبرانی)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिंव अनज़िलहुल मक़अदल मुक़र्रब इन्दक।

१.इर्शाद फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो इस दुरूद शरीफ को पढ़े मेरी शिफाअत उस पर वाजिब और ज़रूरी है (तिबरानी)

(٢)اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ الْقَآئِمَةِ وَ الصَّلٰوةِ النَّافِعَةِ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّارْضَ عَنِّىْ رِضًا لَّا تَسْخَطُ بَعْدَهٗ اَبَدًا (مسند احمد)

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहिद्दवअतिल क़ायमति वस्सलातिन्नाफ़िअती सल्लि अला मुहम्मदिंव्वरज़ अन्नी रिज़न ला तस्ख़तु बअदहू अबदा।

(۳) اَللّٰهُمَّ (١) صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ وَصَلِّ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ. (ابن حبان)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन अब्दिक व रसूलिक व सल्लि अलल मुमिनीन वल मुमिनाती वल मुस्लिमीन वल मुस्लिमाती।

१. रिवायत किया अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु ने इर्शाद फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जिस शख़्स के पास ख़ैरात करने को माल न हो वह अपनी दुआ में यह दुरूद शरीफ पढ़े तो उस के लिए बाइसे तज़किया होगी।(इब्ने हब्बान)

(۴) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّارْحَمْ مُحَمَّدًا وَّاٰلَ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ وَبَارَكْتَ

وَرَحِمْتَ عَلٰٓی اِبْرَاهِیْمَ وَعَلٰٓی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ

اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ (بیهقی)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिंव बारिक अला मुहम्मदिन व अला आलि मुहम्मदिंव बारिक अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिंवरहम मुहम्मदंव आल मुहम्मदिन कमा सल्लैत व बारकत व रहिमत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(٥) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍوَّ عَلٰٓی مُحَمَّدٍ کَمَا

صَلَّیْتَ عَلٰٓی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ،

اَللّٰهُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا

بَارَکْتَ عَلٰٓی اٰلِ اِبْرَاهِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ.

(بخاری شریف)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(٦) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍوَّ عَلٰٓی مُحَمَّدٍ کَمَا

صَلَّيْتَ عَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ وَّبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى آلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. (مسلم شريف)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीदुंव बारिक अला मुहम्मदिंव व अला आलि मुहम्मदिंव कमा बारकत अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(٧) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰى آلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. (ابن ماجه شريف)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(٨) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍوَّ عَلٰىٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰىٓ اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰىٓ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰىٓ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ (١) اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. (نسائی شریف)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद। व बारिक अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(٩) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍوَّ عَلٰىٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰىٓ اِبْرَاهِيْمَ وَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰىٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰىٓ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. (ابوداؤد)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इबराहीम व बारिक अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(١٠) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ.

(ابوداؤدشریف)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीदुन अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(١١) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ فِى الْعَالَمِيْنَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. (مسلم شریف)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इबराहीम व बारिक

अला मुहम्मदिव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला इबराहीम फिल आलमीन इन्नक हमीदुम मजीद।

(۱۲) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍوَّ اَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ اَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. (بخاری ۹۴۱،مسلم،ابوداؤد شریف)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिव्व अज़्वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही कमा सल्लैत अला आलि इबराहीम व बारिक अला मुहम्मदिव्व अज़्वाज़िही व ज़ुर्रियतीही कमा बारकत अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(۱۳) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍوَّ اَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اَزْوَاجِهٖ وَذُرِّيَّتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. (مسلم شریف)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलि अज़वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही कमा सल्लैत अला आलि इबराहीम व बारिक अला मुहम्मदिंव अला अज़वाजिही व ज़ुर्रिय्यतिही कमा बारकत अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(۱۴) اَللّٰهُمَّ (۱)صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ وَ اَزْوَاجِهٖ اُمَّهَاتِ الْمُؤْمِنِيْنَ وَذُرِّيَّتِهٖ وَاَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰۤی اِبْرَاهِيْمَ اِنَّکَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. (ابوداؤد شريف)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिनिन्नबीइ व अज़वाजिही उम्महातिल मुमिनीन व ज़ुर्रिय्यतिही व अहलि बैतिही कमा सल्लैत अला इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि इर्शाद फरमाया जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जिस शख़्स को यह बात पसंद हो कि हमारे घराने वालों पर दुरूद शरीफ पढ़ते वक़्त सवाब का पूरा पैमाना ले तो यह दुरूद शरीफ पढ़े।

(अबू दाऊद १४१)

(١٥) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَتَرَحَّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا تَرَحَّمْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْم وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ. (طبری)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम व बारिक अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिंव कमा बारकत अला इबराहीम व तरह्हम अला मुहम्मादिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा तरह्हमत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम।

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि इर्शाद फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो शख़्स यह दुरूद शरीफ पढ़े क़यामत के दिन मैं उस के लिए गवाही दूँगा और शिफाअत करूंगा। (अस्सअया)

(١٦) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ

كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰىٓ اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰىٓ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ
اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌاَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ
عَلٰىٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰىٓ اِبْرَاهِيْمَ
وَعَلٰىٓ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ
تَرَحَّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰىٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا
تَرَحَّمْتَ عَلٰىٓ اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰىٓ اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ سَلِّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰىٓ اٰلِ
مُحَمَّدٍ كَمَا سَلَّمْتَ عَلٰىٓ اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰىٓ اٰلِ
اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ. (سعايه ۲۴۳، شرح الشفاء)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिंव कमा बारकत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्म तरह्हम अला मुहम्मादिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा तरह्हमत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक

हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्म तहन्नन अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा तहन्ननत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्म सल्लिम अला मुहम्मदिंव्व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(١٧) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍوَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ وَّبَارِكْ وَسَلِّمْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍوَّارْحَمْ مُحَمَّدًا وَّاٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ وَ بَارَكْتَ وَتَرَحَّمْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ فِى الْعَالَمِيْنَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ (سعايه حاكم ٢٦٩)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन व बारिक व सल्लिम अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिंव्वरहम मुहम्मदिन कमा सल्लैत व बारकत व तरह्हमत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(١٨) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍوَّ عَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَ عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ

اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ اَللّٰھُمَّ بَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰیٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰیٓ اِبْرَاھِیْمَ وَعَلٰیٓ اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ (صحاح ستہ)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इबराहीम व अला आली इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिंव कमा बारकत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(١٩) اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ کَمَا صَلَّیْتَ عَلٰیٓ اٰلِ اِبْرَاھِیْمَ وَبَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰیٓ اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰیٓ اِبْرَاھِیْمَ (حصن حصین)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन अब्दिक व रसूलिक कमा सल्लैत अला इबराहीम व बारिक अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(۲۰) اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدِ نِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ عَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ کَمَاصَلَّیْتَ عَلٰٓی اِبْرَاھِیْمَ ،وَبَارِکْ عَلٰی مُحَمَّدِ نِ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰٓی اِبْرَاھِیْمَ اِنَّکَ حَمِیْدٌ مَّجِیْدٌ (نسائی شریف)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिनिन्नबीइल उम्मीयी व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इबराहीम व बारिक अला मुहम्मदिनिन्नबीईल उम्मीयी कमा बारकत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद।

(۲۱) اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ عَبْدِکَ وَرَسُوْلِکَ النَّبِیِّ الْاُمِّیِّ عَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ اَللّٰھُمَّ صَلِّ عَلٰی مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓی اٰلِ مُحَمَّدٍ صَلٰوۃً تَکُوْنُ لَکَ رِضًی وَّلَہٗ جَزَآءً وَّلِحَقِّہٖ اَدَآءً وَّاَعْطِہِ الْوَسِیْلَۃَ وَالْفَضِیْلَۃَ وَالْمَقَامَ الْمَحْمُوْدَ الَّذِیْ وَعَدْتَّہٗ وَاجْزِہٖ عَنَّا مَاھُوَ اَھْلُہٗ، وَاجْزِہٖ اَفْضَلَ مَا جَازَیْتَ نَبِیًّا عَنْ قَوْمِہٖ وَرَسُوْلاً عَنْ اُمَّتِہٖ وَصَلِّ عَلٰی جَمِیْعِ اِخْوَانِہٖ

مِنَ النَّبِيِّيْنَ وَالصَّالِحِيْنَ يَآاَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ.

(القول البديع)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन अब्दिक व रसूलिकन्नबीइल उम्मीयी व अला आलि मुहम्मदिन अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिवं अला आलि मुहम्मदिन सलातन तकूनु लक रिज़्वं लहू जज़ाअंव्व लिहक़्क़िही अदाअंव्व आतिहील वसीलत वल फज़ीलत वल मक़ामल महमूदलल्लज़ी वअत्तहू वजज़िही अन्ना मा हुव अहलुहू वजज़िही अफज़ल मा जाज़ैत नबिय्यन अन कैमिही व रसूलन अन उम्मतिही व सल्लि अला जमीअी इख़्वानिही मिनन्नबिय्यीन वस्सालिहीन या अरहमर राहीमीन।

१. इब्ने अबी आसिम रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि इर्शाद फरमाया जनाब रसूलुल्लाह सल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जो कोई सात जुमे तक हर जुमा को सात बार इस दुरूद शरीफ को पढ़े वाजिब हो उस के लिए शिफाअत मेरी। (बुख़ारी शरीफ, अल क़ौलुल बदीअ)

(٢٢) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَاصَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ وَبَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ

اَلْاُمِّيِّ وَعَلٰى اٰلِ مُحَمَّدٍ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ (بیهقی، مسند احمد، مستدرک حاکم)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिनिन्नबीइल उम्मीयी व अला आलि मुहम्मदिन कमा सल्लैत अला इबराहीम व बारिक अला मुहम्मदिनिन्नबीईल उम्मीयी व अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद ।

(۲۳) اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا صَلَّيْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلَيْنَا مَعَهُمْ، اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اَهْلِ بَيْتِهٖ كَمَا بَارَكْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ اِنَّكَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ اَللّٰهُمَّ بَارِكْ عَلَيْنَا مَعَهُمْ، صَلَوَاتُ اللّٰهِ وَصَلَوَاتُ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ. (دارقطنی)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव्व अला अहलि

बैतिही कमा सल्लैत अला इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्म सल्लि अलैना मअहुम, अल्लाहुम्म बारिक अला मुहम्मदिंव अला अहलि बैतिही कमा बारकत अला इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद। अल्लाहुम्म बारिक अलैना मअहुम, सलवातुल्लाहि व सलावातुल मुमिनीन अला मुहम्मदिनिन्नबीइल उम्मीयी।

(۲۴) اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ صَلَوَاتِکَ وَرَحْمَتَکَ
وَبَرَکَاتِکَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ مُحَمَّدٍ
کَمَا جَعَلْتَهَا عَلٰٓى اٰلِ اِبْرَاهِيْمَ اِنَّکَ حَمِيْدٌ
مَّجِيْدٌ. وَبَارِکْ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّعَلٰٓى اٰلِ
مُحَمَّدٍ کَمَا بَارَکْتَ عَلٰٓى اِبْرَاهِيْمَ وَعَلٰٓى اٰلِ
اِبْرَاهِيْمَ اِنَّکَ حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ (مسند احمد)

अल्लाहुम्मजअल सलवातिक व रहमतिक व बरकातिक अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा जअलतहा अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम मजीद। व बारिक अला मुहम्मदिंव अला आलि मुहम्मदिन कमा बारकत अला इबराहीम व अला आलि इबराहीम इन्नक हमीदुम

मजीद।

(٢٥)وَصَلَّ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ (نسائی)

व सल्लल्लाहु अलन्नबीइल उम्मी।

صِيغُ السَّلَامَ

सीगुल इस्लाम

(٢٦)اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ، اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (نسائی ،بخاری شریف)

अत्ताहियातु लिल्लाही वस्सलवातु वत्ताय्यबातु, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालीहीन, अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहू।

(٢٧)اَلتَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوَاتُ لِلّٰهِ،

اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ اَيُّهَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ، اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (مسلم نسائی)

अत्तहियातुत तय्यिबातुस्सलवातु लिल्लाही, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सा लीहीन, अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहू।

(۲۸) اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوَاتُ لِلّٰهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ اَيُّهَا النَّبِیُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ، اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْکَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (نسائی)

अत्तहियातुत तय्यिबातुस्सलवातु लिल्लाही, अस्सलामु

अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सा लीहीन, अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहू।

(٢٩) اَلتَّحِيَّاتُ الْمُبَارَكٰتُ الصَّلَوَاتُ الطَّيِّبَاتُ لِلّٰهِ سَلَامٌ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، سَلَامٌ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ، اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (نسائی)

अत्तहियातुल मुबारकातुस सलवातु तय्यिबातु लिल्लाही, सलामुन अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, सलामुन अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालीहीन, अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहू।

(٣٠) بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ، اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ وَالطَّيِّبَاتُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا

وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ، اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَاَشْهَـدُ اَنَّ مُـحَـمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ، اَسْأَلُ اللّٰهَ الْجَنَّةَ وَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ النَّارِ (نسائی)

बिस्मिल्लाही व बिल्लाही, अत्तहियातुत लिल्लाही वस्सलवातु वतय्यिबातु अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालीहीन, अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहू, अस्अलुल्लाहल जन्नत व अऊज़ु बिल्लाही मिनन्नारी।

(٣١) اَلتَّـحِيَّـاتُ لِـلّٰـهِ الـزَّاكِيَاتُ لِلّٰهِ الطَّيِّبَاتُ وَالـصَّـلَـوَاتُ لِـلّٰـهِ ،اَلسَّلَامُ عَلَيْکَ اَيُّهَاالنَّبِیُّ وَرَحْـمَةُ الـلّٰـهِ وَبَـرَكَـاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَـادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ، اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُـهٗ (مؤطا)

अत्तहियातु लिल्लाहीज़ ज़ाकियातु लिल्लाहीत तय्यिबातुस सलवातु लिल्लाहि, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीयु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु

अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सा लीहीन, अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू।

(٣٢)بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ خَيْرِ الْاَسْمَآءِ اَلتَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوَاتُ لِلّٰهِ ، اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَرْسَلَهٗ بِالْحَقِّ بَشِيْراً وَّ نَذِيْراً وَّ اَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا. اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ،اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ وَاهْدِنِيْ .(معجم طبرانی)

बिस्मिल्लाही व बिल्लाही ख़ैरिल असमाइ, अत्तहियातुत तय्यिबातुस्सलवातु लिल्लाही, अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहू, अरसलहु बिल हक़्क़ि बशीरंव्वनज़ीरंव्व अन्नस्साअत आतियतुल लरैब फीहा अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबीय्यु व रहमतुल्लाही व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला

इबादिल्लाहिस सालिहीन, अल्लाहुम्मग्फिरली वहदीनी।

(۳۳)اَلتَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوَاتُ وَالْمُلْكُ لِلّٰهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ اَيُّهَاالنَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ(ابوداؤد)

अत्तहियातुत तय्यिबातुस्सलवातु वल मुल्कु लिल्लाही, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु।

(۳۴)بِسْمِ اللّٰهِ، اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ وَالصَّلَوَاتُ لِلّٰهِ الزَّاكِيَاتُ لِلّٰهِ اَلسَّلاَمُ عَلَيْكَ اَيُّهَاالنَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلاَمُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ،شَهِدْتُّ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ شَهِدْتُّ اَنَّ مُحَمَّداً رَّسُوْلُ اللّٰه(مؤطا)

बिस्मिल्लाही, अत्तहियातु लिल्लाहस्सलवातु, लिल्लाहिज़्ज़ाकियातु लिल्लाही, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालीहीन, शहित्तु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु शहित्तु अन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह।

(٣٥)اَلتَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ وَالصَّلَوَاتُ الزَّاكِيَاتُ لِلّٰهِ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ (مؤطا)

अत्तहियातुत तय्यिबातुस्सलवातुज़ ज़ाकियातु लिल्लाही, अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहु व अन्न मुहम्मदन अब्दुहु, व रसूलुहू, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सा लीहीन।

(٣٦)اَلتَّحِيَّاتُ الطَّيِّبَاتُ الصَّلَوَاتُ الزَّاكِيَاتُ لِلّٰهِ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُ اللّٰهِ وَرَسُوْلُهٗ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا

وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ (مؤطا)

अत्तहियातुत तय्यिबातुस्सलवातुज़ ज़ाकियातु लिल्लाही, अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुल्लाही व रसूलुहु, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सा लीहीन।

(٣٧) اَلتَّحِيَّاتُ الصَّلَوَاتُ لِلّٰهُ اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ (طحاوی)

अत्तहियातुस सलवातु लिल्लाही, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सा लीहीन।

(٣٨) اَلتَّحِيَّاتُ لِلّٰهِ الصَّلَوَاتُ الطَّيِّبَاتُ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِيُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ (ابوداؤد)

अत्तहियातु लिल्लाहिस्सलवातुत तय्यिबातु अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि

अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सा लीहीन, अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहु व रसूलुहु।

(٣٩)اَلتَّحِيَّاتُ الْمُبَارَكَاتُ الصَّلَوَاتُ الطَّيِّبَاتُ لِلّٰهِ، اَلسَّلَامُ عَلَيْكَ اَيُّهَا النَّبِىُّ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ، اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ اَشْهَدُ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً وَّرَسُوْلُ اللّٰهِ (مؤطا)

अत्तहियातुल मुबारकातुस सलवातुत तय्यिबातु लिल्लाही, अस्सलामु अलैक अय्युहन्नबिय्यु व रहमतुल्लाहि व बरकातुहु, अस्सलामु अलैना व अला इबादिल्लाहिस्सालीहीन,अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदर रसूलुल्लाह।

(٤٠)بِسْمِ اللّٰهِ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰهِ.

(المستدرک للحاکم)

बिस्मिल्लाही वस्सलामु अला रसुलिल्लाही।

ज़िंदगी सुन्नत के मुताबिक़ गुज़ारें
और अल्लाह पाक के महबूब बन जायें

प्यारे नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की प्यारी सुन्नतें

नक़्शे क़दम नबी के हैं जन्नत के रास्ते
अल्लाह से मिलाते हैं सुन्नत के रास्ते

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सुन्नत की बरकत

हदीस में है कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया :

مَنْ حَفِظَ سُنَّتِىْ أَكْرَمَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى بِأَرْبَعِ خِصَالٍ: اَلْمَحَبَّةُ فِىْ قُلُوْبِ الْبَرَرَةِ وَالْهَيْبَةُ فِىْ قُلُوْبِ الْفَجَرَةِ وَالسَّعَةُ فِىْ الرِّزْقِ وَالثِّقَةُ فِىْ الدِّيْنِ.

तर्जमा: जिस शख़्स ने मेरी सुन्नत की हिफाज़त की (दिल व जान से उसको मज़बूत पकड़ा और उस पर अमल किया) तो अल्लाह तआला चार बातों से उसका इकराम करेगा।

१. नेक लोगों के दिलों में उसकी मुहब्बत पैदा करेगा।

२. फाजिर और बदकार लोगों के दिलों में हैबत डाल देगा।

३. रिज़्क़ में वुसअत और बरकत अता करेगा।

४. दीन में पुख़्तगी नसीब फरमायेगा।

(शरह शरअतुल इस्लाम : स.८, सय्यद अली ज़ादा)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सोने की सुन्नतें

१. नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से इन तमाम चीज़ों पर इस्तराहत फरमाना साबित है:

(१) बोरिया (२) चटाई (३) कपड़े का फ़र्श (४) ज़मीन (५) तख़्त (६) चारपाई (७) चमड़ा और खाल। (ज़ादुल मआद)।

२. बा वुज़ु सोना सुन्नत है। (तिर्मिज़ी जिल्द २, स. १७७)

हदीस पाक में आया है, जो शख़्स बा वुज़ू सोया और उसी रात में इन्तिक़ाल हो गया, उसे शहादत का मर्तबा मिलेगा। (क़सरुल आमाल)

३. जब बिस्तर पर आये तो उसे अपने कपड़े के गोशे से तीन बार झाड़े। (मुस्लिम जिल्द २ स.३४९, बुख़ारी स. ९३५)

४. सोने से पहले दूसरे कपड़े तबदील करना सुन्नत है। (ज़ादुल मआद)

५. सोने से पहले बिस्मिल्लाह कहते हुये दर्ज ज़ेल उमूर अंजाम दे।

१. दरवाज़ा बंद करे।

२. चराग़ बुझा दे।

३. मशकीज़ा का मुंह बाँधे

४. बर्तन ढाँक दे।

और अगर उस वक़्त ढँकने के लिए कुछ न मिले तो बर्तन के मुंह पर चौड़ाई में एक लकड़ी ही रख दे। (सहाहे सित्ता, अल अदबुल मुफर्रद ३५७)

६. ईशा की नमाज़ के बाद क़िस्सा कहानियों की ममानिअत है। नमाज़ पढ़ कर सो रहना चाहिए, अल बत्ता वअज़ व नसीहत के लिए या रोज़ी मआश के लिए जागने की इजाज़त है। (मुसनद अहमद जिल्द १ स.३५)

७. सोते वक़्त हर आँख में तीन तीन सलाई सुरमा लगाना औरत और मर्द दोनों के लिए मसनून है। (शमाइले तिर्मिज़ी, जमउल वसाइल)

८. जब सोने का इरादा हो तो कुरआन शरीफ की आयात और सूरतें पढ़ो मस्लन 'अल हम्दु' शरीफ आयतल कुर्सी, सूरये मुल्क 'तबारकल्लज़ी' और 'अलिफ लाम मीम सजदा' और दुरूद शरीफ अगर ज़्यादा न पढ़ सको तो दो एक सूरतें ज़रूर पढ़ लो कि यह दुनिया व आख़िरत की भलाई और नेक बख़्ती की बुनियाद है।

तीनों कुल सूरये इख़्लास, सूरये फलक़, सूरये नास एक एक बार पढ़ कर हाथ में दम करे और पूरे बदन पर फेरे ले, तीन बार ऐसा करे। (बुख़ारी स.९३५, अबू दाऊद ६८९, तिर्मिज़ी ३४२)

सोने से पहले एक मुख़्तसर मामूल

हज़रत आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मामूल था कि हर रात आराम फरमाने के लिए अपने बिस्तर पर तशरीफ लाते तो अपने दोनों हथेलियों को मिला लेते (जिस तरह दुआ के वक़्त दोनों हथेलियों को मिलाते हैं) फिर कुल हुवल्लाहु अहद, कुल अऊज़ु बिरब्बिल फलक़ और कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास पढ़ कर हथेलियों पर फूंकते और जहाँ तक हो सकता अपने जिस्मे मुबारक पर अपने दोनों हाथ फेरते सर मुबारक और चेहरये मुबारक और जसदे अतहर के सामने के हिस्से से शुरू फरमाते उसके बाद बाक़ी जिस्म पर जहाँ तक आप के हाथ जा सकते वहाँ तक हाथ फेरते यह आप तीन दफा करते। (सहीह बुख़ारी ९३५, तिर्मिज़ी जि.२ स. १७७)

९. सोने से पहले तस्बीह फातमी का ऐहतिमाम करे यानी: सुबहानल्लाह ३३ बार, अल हम्दु लिल्लाही ३३ बार और अल्लाहु अक्बर ३४ बार पढ़े।(बुख़ारी जि.२ स.९३५)

१०. सोते वक़्त दाहिने करवट पर क़िब्ला रू सोना मसनून है। मुंह के बल सोना इस तरह कि सीना ज़मीन की तरफ और पीठ आसमान की

तरफ हो मना है क्योंकि इस तरह शैतान सोता है।
(बुख़ारी)

सोने की मसनून दुआयें

११. बिस्तर पर लेट कर यह दुआ पढ़े:

بِاسمِکَ رَبِّیْ وَضَعتُ جَنبِیْ، وَبِکَ أَرْفَعُه، إِنْ أَمْسَکْتَ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لَهَا، وَإِنْ أَرْسَلْتَهَافَاحْفَظْهَا بِمَا تَحْفَظُ بِهٖ عِبَادَکَ الصَّالِحِیْنَ۔ (بخاری ص ۹۳۵)

बिस्मिक रब्बी वज़अतु जंबी, व बिक अरफउहू इन अम्सक्त नफ्सी फग़्फिर लहा, व इन अरसलतहा फहफज़हा बिमा तहफज़ु बिही इबादकस्सा लिहीन। (बुख़ारी स. ९३५)

तर्जुमा: तेरे नाम से ऐ मेरे रब मैंने अपने पहलू को रखा और तेरे ही नाम से उठाउंगा। अगर आप मेरी रूह को रोक लें तो उसकी मग़्फिरत फरमायें और अगर उसे छोड़ दें तो उसकी हिफाज़त फरमायें जिस तरह कि आप अपने नेक बंदों की हिफाज़त फ़रमाते हैं।

१२. फिर यह दुआ पढे:

اَللّٰھُمَّ اِسْمِکَ اَمُوْتُ وَاحْیٰ۔

(بخاری ص ۹۳۴،مسلم ج ۲ ص ۳۴۸)

अल्लाहुम्म इस्मिक अमूतु वहया। (बुख़ारी स.

९३४, मुस्लिम जि.२ स. ३४८)

१३. हज़रत बर्रा बिन आज़िब रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मुझ से रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब तुम बिस्तर पर आओ तो वुज़ू करो, दायें करवट लेटो, और यह दुआ पढ़ो:

اَللّٰھُمَّ اَسْلَمْتُ نَفْسِیْ اِلَیْکَ وَوَجَّھْتُ وَجْھِیْ اِلَیْکَ وَفَوَّضْتُ اَمْرِیْ اِلَیْکَ وَاَلْجَأْتُ ظَھْرِیْ اِلَیْکَ رَھْبَۃً وَرَغْبَۃً اِلَیْکَ لَامَلْجَأَ وَلَامَنْجٰی مِنْکَ اِلَّا اِلَیْکَ آمَنْتُ بِکِتَابِکَ الَّذِیْ اَنْزَلْتَ وَبِنَبِیِّکَ الَّذِیْ اَرْسَلْتَ.

(بخاری، ج۲، ص۹۳۴)

अल्लाहुम्म अस्लमतु नफसी इलैक ववज्जहतु वजहि इलैक व फव्वज़तु अम्री इलैक व अलजतु ज़हरी इलैक रहबतंव्व रग़बतन इलैक ला मलजाअ वला मनजा मिनका इल्ला इलैक आमनतु बिकिताबिकल लज़ी अंज़लत व बिनबिय्यिकल लज़ी अरसलत। (बुख़ुरी जि. २ स. ९३४)

तर्जमा: ऐ ख़ुदा मैंने अपने आप को आप के हवाले किया मैंने अपना रुख़ आप की तरफ किया और अपना काम आप के सुपुर्द किया। अपनी पीठ तेरी तरफ की। तेरी रग़बत और तेरे ख़ौफ से। तेरे सिवा न कोई ठिकाना है, न कोई जाये पनाह,

आप की नाज़िल करदा किताब पर ईमान लाया और उस नबी पर जिसे तूने भेजा।

(उसके बाद) अगर तुम्हारा इंतिक़ाल हो गया तो फित्तरते इस्लाम पर होगा।

१४. सोने से पहले तीन बार यह इस्तिग़्फार पढ़:

اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِیْ لَآاِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَيُّوْمُ

وَاَتُوْبُ اِلَيْهِ۔(ترمذی ج۲رص۱۷۷)

अस्तग़्फिरुल्लाहल लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल ह्य्युल क़य्यूमु व अतूबु इलैही। (तिर्मिज़ी जि.२ स.१७७)

पूरी रात इबादत करने का सवाब

हज़रत उसमान बिन अफ्फान रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है उन्होंने फरमाया: जो शख़्स किसी रात को आले इमरान की आख़िरी आयात पढ़ेगा उस के लिए पूरी रात की नमाज़ का सवाब लिखा जायेगा। (मुसनद दार्मी)

सूरये आले इमरान की आख़िरी आयात से मुराद :

اِنَّ فِیْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

'इन्न फी ख़ल्क़िस समावाति वल अर्ज़ि' से ख़त्म सूरत तक की आयात हैं।

सही रिवायत में वारिद है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रात को तहज्जुद के लिए उठते तो सब से पहले (वुज़ू करने से पहले) यही आयत पढ़ते थे। (मआरिफुल हदीस ११०)

१५. अगर ख़्वाब में कोई डराउनी बात या ना पसंदीदा चीज़ देखे और आँख खुल जाये तो

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ

'अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम' तीन बार पढ़ कर बायें तरफ तीन बार धुतकार दो और करवट बदल कर सो जाओ और उसका तज़किरा किसी से न करो। (बुख़ारी, मुस्लिम जि. स. २४१)

१६. क़ैलूला करना यानी अगर किसी को फुरसत मयस्सर हो तो इत्तिबाये सुन्नत में दोपहर को कुछ देर लेट जाना सुन्नत है। नींद आये या न आये।(ज़ादुल मआद, उम्दतुल क़ारी जि.४ स.२२)

सो कर उठने की सुन्नतें

१. नींद से उठते ही दोनों हाथों से चेहरा और आँखों को मलना ताकि नींद का खुमार दूर हो जाये। (शमाइले तिर्मिज़ी)

२. सुबह जब आँख खुले तो तीन बार

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ

'अल हम्दु लिल्लाह' कहे और कलिमये तय्यबा

لَآاِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ

'ला इलाह इल्लल्लाहु मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह' पढ़ कर यह दुआ पढ़ें:

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ اَحْیَانَا بَعْدَ مَا اَمَاتَنَا وَاِلَیْهِ النُّشُوْرُ.

'अल हम्दु लिल्लाहिल लज़ी अहयाना बाद मा अमातना व इलैहिन्नुशूर। (बुख़ारी स.९३४, मुस्लिम जि.२ स.३४८, अबू दाऊद स.६८८)

तर्जमा: सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हमें मारने के बाद ज़िंदा किया और उसी की तरफ उठ कर जाना है।

३. जब सो कर उठें तो मिसवाक कर लें। (मुसनदे अहमद, अबू दाऊद)

नोट: वुज़ू में दोबारा मिसवाक की जायेगी, सो कर उठते ही मिसवाक कर लेना अलाहिदा सुन्नत है।

४. पाजामा या शलवार पहनें तो पहले दाहिनें पावँ में फिर बायें पावँ में, कुर्ता या क़मीस पहनें तो पहले दायें आस्तीन में हाथ डालें फिर बायें आस्तीन में। इसी तरह सदरी, ऐसे ही जूता पहले दायें पावँ में पहनें और जब उतारें तो पहले बायें तरफ का उतारें। फिर दायें तरफ का उतारें और बदन की पहनी हुई हर चीज़ के उतारने का यही तरीक़ा

मसनून है। (बुख़ारी)

५. बर्तन में हाथ डालने से पहले तीन मर्तबा हाथों को अच्छी तरह धो लें।(तिर्मिज़ी जि.१ स.१३)

इस्तिनजा और बैतुल ख़ला से मुतअल्लिक़ सुन्नतें

१. इस्तिनजे के लिए पानी और ढेले दोनों ले कर जायें, तीन ढेले या पत्थर हों तो मुस्तहब है, अगर पहले से बैतुल ख़ला में इंतिज़ाम किया हो तो काफी है, फलश पाख़ानों में ढेलों की वजह से दिक़्क़त हो रही है, लिहाज़ा मुफ्ती रशीद अहमद साहब ने टोयलेट पेपर (Toilet Paper) इस्तेमाल करने का मशवरा दिया है ताकि फर्श ख़राब न हो। (नीज़ पानी की निकासी का मसअला भी पेश आ जाता है)

२. हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सर ढाँक कर और जूता पहन कर बैतुल ख़ला में तशरीफ ले जाते थे। (ज़ादुल मआद, तबक़ाते इब्ने सअद)

३. बैतुल ख़ला में दाख़िल होने से पहले यह दुआ पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ، اَللّٰهُمَّ إِنِّیْ أَعُوْذُبِکَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ.

(بخاری ج۱ص۲۵، مسلم ج۱/۱۶۳)

बिस्मिल्लाही, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक

मिनल ख़ुबुसी वल ख़बाइस।(बुख़ारी जि. १ स. ४५, मुस्लिम जि.१ स.२८३)

तर्जमा: अल्लाह पाक का नाम ले कर जाता हूँ, ऐ अल्लाह! मैं तेरी पनाह चाहता हूँ ख़बीस जिन्नों से मर्द हों या औरत।

४. बैतुल ख़ला में दाख़िल होते वक़्त पहले बायाँ क़दम रखे और क़दमचे पर सीधा पैर रखे और उतरने में बायाँ पैर क़दमचे से नीचे रखे। (ज़ादुल मआद)

४. क़ज़ाये हाजत के लिए जब कपड़ा खोलें तो आसानी के साथ जितना नीचा हो कर खोल सकें उतना ही बेहतर है। (तिर्मिज़ी जि.१ स.१०)

५. बैतुल ख़ला से निकलते वक़्त दाहिना पैर निकालें और यह दुआ पढ़ें:

غُفْرَانَكَ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ أَذْهَبَ عَنِّىْ الْأَذٰى وَعَافَانِىْ. (الدعاء ص ٣٧٢، ابن سنی ٢٢)

गुफरानक अल हम्दु लिल्लाहील लज़ी अज़हब अन्निल अज़ा व आफानी। (अद्दुआ स. ३७२, इब्ने सिनी स. २२)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से मग़्फिरत का सवाल करता हूँ, सब तारीफें अल्लाह ही के लिए हैं जिस ने मुझ से ईज़ा देने वाली चीज़ दूर की और

मुझे आफियत अता फरमाई।

६. बैतुल ख़ला जाने से पहले अंगूठी या किसी चीज़ पर कुरआन शरीफ की आयत या हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का मुबारक नाम लिखा हो और वह दिखाई देता हो तो उसको उतार कर बाहर ही छोड़ दें फराग़त के बाद बाहर आ कर फिर पहन लें, तावीज़ को मोम जमा कर लिया गया हो या कपड़े में सी लिया गया हो तो उसको पहन कर जाना जायज़ है। (निसई)

७. रफअे हाजत करते वक़्त क़िब्ला की जानिब न चेहरा करें और न उस की तरफ पीठ करें। (तिर्मिज़ी जि.१ स.२)

८. रफअे हाजत करते वक़्त बिला ज़रूरत शदीदह कलाम न करें, इसी तरह अल्लाह का ज़िक्र भी न करें। (मिश्कात)

९. पेशाब, पाख़ाना की छींटों से बहुत बचें क्योंकि अक्सर अज़ाबे क़ब्र पेशाब की छींटों से न बचने से होता है। (तिर्मिज़ी)

१०. पेशाब करते वक़्त या इस्तिनजा करते वक़्त अज़ूये ख़ास को दायाँ हाथ न लगायें बल्कि बायाँ हाथ लगायें। (बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी जि.१ स. १०)

११. बाज जगह बैतुल ख़ला नहीं होता है उस

वक़्त ऐसी आड़ की जगह में रफ़ए हाजत करना चाहिए जहाँ किसी दूसरे आदमी की निगाह न पड़े। (सुनने अबू दाऊद)

१२. पेशाब करने के लिए नरम जगह तलाश करें ताकि छींटें न उड़ें और ज़मीन जज़्ब करती जाये। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

१३. बैठ कर पेशाब करें, खड़े हो कर पेशाब न करें। (तिर्मिज़ी जि. १ स. ९)

१४. पेशाब करने के बाद इस्तिनजा सुखाना हो तो दीवार वग़ैरह की आड़ में सुखाना चाहिए। (बहिश्ती गौहर)

१५. इस्तिनजा के बाद मिट्टी या साबुन वग़ैरह से अच्छी तरह हाथ धो लेना चाहिये। (दुर्रे मुख़्तार, अबू दाऊद)

लिबास की सुन्नतें

१. हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सफेद रंग का कपड़ा पसंद था। (तिर्मिज़ी)

२. क़मीस, कुर्ता या सदरी वग़ैरह पहनें तो पहले दायाँ हाथ आस्तीन में डालें फिर बायाँ हाथ इसी तरह पाजामा और शलवार के लिए पहले दाहिना पावँ फिर बायाँ पावँ। (तिर्मिज़ी)

३. पाजामा, शलवार या लुंगी टख़्ना से ऊपर रखें, टख़्ना से नीचे लटकाने से अल्लाह तआला

नाराज़ होता है, नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया तहबंद टख़्ना से नीचे लटकाने वाले पर अल्लाह तआला नज़रे रहमत नहीं फरमायेगा। (मुस्लिम)

४. कपड़ा पहन कर यह दुआ पढ़ें:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ كَسَانِىْ هٰذَا وَرَزَقَنِيْهِ مِنْ غَيْرِ حَوْلٍ مِّنِّىْ وَلَاقُوَّةٍ. (ابوداؤد ص ۵۵۸، ترغیب ص ۹۳)

अल हम्दु लिल्लाहिल लज़ी कसानी हाज़ा वरज़क़नीही मिन ग़ैरी हौलिम मिन्नी व ला कुव्वह।

(अबू दाऊद स.५५८, तर्ग़ीब स. ९३)

तर्जमा: सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने यह कपड़ा मुझे पहनाया और नसीब किया उसे मुझे बला मेरी कुव्वत और ताक़त के।

५. नया कपड़ा पहन कर यह दुआ पढ़ें:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ كَسَانِىْ مَا اُوَارِىْ بِهٖ عَوْرَتِىْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِىْ حَيَاتِىْ.

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी मा उवारी बिही औरती व अतजम्मलु बिही फी हयाती।

तर्जमा: तमाम तारीफ अल्लाह के लिए है जिस ने हमें कपड़ा पहनाया जिस से मैं अपने सतर को छिपाता हूँ और अपनी ज़िंदगी की ज़ीनत उस से हासिल करता हूँ। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा स. २५४)

६. कपड़ा उतारने की दुआ:

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَااِلٰهَ اِلَّا هُوَ. (ابن سنی ص ۲۴۰، مجمع الزوائد)

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुव।

(इब्ने सेनी स २४० मजमउज़ ज़वाइद)

तर्जमा: उस अल्लाह के नाम से जिस के सिवा कोई माबूद नहीं।

७. अमामा के नीचे टोपी रखना सुन्नत है बग़ैर टोपी के अमामा बाँधना ख़िलाफे सुन्नत है।

(मिरक़ात)

८. सियाह साफा बांधना मसनून है, शिमला छोड़ना भी मसनून है, शिमला की मिक़दार एक हाथ या उस से ज़्यादा साबित है। (निसई)

९. कपड़े उतारते वक़्त बिस्मिल्लाह कहें और इब्तिदा बायें जानिब से करें, क़मीस या कुर्ता वग़ैरह उतारना हो तो पहले बायाँ हाथ आस्तीन से निकालें फिर दाहिना हाथ, इसी तरह शलवार और पाजामा उतारते वक़्त पहले बायाँ पैर बाहर निकालें फिर दाहिना। (मुस्लिम अबू दाऊद)

१०. टोपी पहनना सुन्नत है। (मिरक़ात जि.८ स. २४६)

११. हज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को कुर्ता बहुत पसंद था। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

१२. पायजामा पहनना मुस्तहब है। अल्लामा

अैनी रहमतुल्लाह अलैह ने उसे मुस्तहब क़रार दिया है। (उमदतुल क़ारी जि. २१ स. ३०६)

१३. और हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरफूअन रिवायत है आप ने फरमाया पयजामा पहनो। यह तुम्हारे लिए सतर के लायक़ है और औरतों को भी पहनाओ जब वह बाहर निकलें। (कंज़ुल उम्माल जि. १९ स. २१७)

जूता चप्पल से मुतअल्लिक़ सुन्नतें

१. अव्वलन दायें पैर में पहनना।

२. चमड़े का चप्पल मसनून है।

३. एक जूता या चप्पल पहनकर न चलना।

४. कभी कभी नंगे पैर चल लेना।

५. जूता या चप्पल बायें हाथ से उठाना।

६. चप्पल या जूता पहने हुये बैठना या खाना ममनूअ है।

७. कभी खुद से गाँढ लेना सुन्नत है।

८. मस्जिद में क़िब्ला की जानिब न रखना।

९. मस्जिद में रखने से पहले गंदगी का झाड़ लेना।

१०. ऐसे तौर पर रखना कि मिट्टी वग़ैरह झड़े मकरूह है।

११. उतारते वक़्त पहले बायें पावँ से उतारें फिर दायें पावँ से। (माख़ूज़ अज़ शमाइले कुबरा स. २५)

नोटः ख़्याल रहे कि मस्जिद में अव्वल दायाँ पैर रखना सुन्नत है। इधर जूते से पैर अव्वलन बायाँ निकालना सुन्नत है। चुनान्चे एक सुन्नत पर अमल करने से दूसरी छूट जाती है। उमूमन ऐसा ही होता है। दोनों सुन्नतों पर अमल का तरीक़ा यह है अव्वलन जूते चप्पल बायें पैर से निकाल कर अपने चप्पल या जूते पर रखे फिर दाया पैर जूते से निकाल कर सीधे मस्जिद में रखे। इसी तरह उसका अक्स मस्जिद से निकलते वक़्त करे इस तरह दोनों सुन्नतें पर अमल हो जायेगा।

१२. जूता या चप्पल उठाने का मसनून तरीक़ा यह है कि नबी पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपने जूते को बायें हाथ की अंगुश्त सबाबा (और अंगूठे) से उठाते। (तिबरानी, शमाइले कुबरा स. ३२६)

१३. नया जूता पहन कर यह दुआ पढ़ें:

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ مِنْ خَیْرِہٖ وخَیْرِ ماھُوَ لَہٗ

وَأَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّہٖ وَشَرِّ ماھُوَ لَہٗ.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन ख़ैरिही व ख़ैरी मा हुव लहू व अऊज़ुबिक मिन शर्रिही व शिर्री मा हुव लहू।

तर्जमाः ऐ अल्लाह! मैं आप से उसकी भलाई का और यह जिस मक़सद के लिए है उसकी भलाई

का सवाल करता हूँ और उसकी बुराई से और यह जिस मक़सद के लिए है उसकी बुराई से तेरी पनाह चाहता हूँ।

घर से निकलने के मसनून आमाल

१. घर वालों को सलाम कर के निकलना। (बेहक़ी)

२. पहले बायाँ पावँ घर से बाहर रखना। (बेहक़ी)

३. घर से मस्जिद या कहीं भी बाहर जाने के लिए यह दुआ पढ़ना:

بِسْمِ اللّٰہِ تَوَکَّلْتُ عَلَی اللّٰہِ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّۃَ اِلَّا بِاللّٰہِ.

(ابوداؤد ص ۶۹۵ / ترمذی ص ۱۸۱)

बिस्मिल्लाही तवक्कलतु अलल्लाही ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह। (अबू दाऊद स. ६९५, तिर्मिज़ी स. १८१)

तर्जमा: मैं अल्लाह के नाम के साथ निकला, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया, गुनाहों से बचने की ताक़त और नेकियाँ करने की कुव्वत अल्लाह ही की तरफ से है।

४. वुज़ू सुन्नत के मुवाफिक़ घर पर करना चाहिये।

५. सुन्नतें घर पर पढ़ कर जाना, मौक़ा न हो

तो मस्जिद में पढ़ना।

६. इतमिनान से जाना दौड़ कर न जाना। (यह सिर्फ मस्जिद के लिए है) (इब्ने माजा)

घर में दाख़िल होने की सुन्नतें

१. अल्लाह का ज़िक्र करते हुये दाख़िल होना। (मुस्लिम)

२. घर में दाख़िल होने की यह दुआ पढ़ना:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ خَیْرَ الْمَوْلَجِ وَخَیْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا. (ابوداؤد ص ۶۹۵/اذکار ص ۱۹)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैरल मौलजि व ख़ैरल मख़्रजि बिस्मिल्लाही व लजना व बिस्मिल्लाही ख़रजना व अलल्लाही रब्बिना तवक्कलना। (अबू दाऊद स. ६९५, अज़कार स. १९)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! मैं आप से अच्छा दाख़िल होना और अच्छा निकलना मांगता हूँ, अल्लाह के नाम के साथ हम दाख़िल हुये और अल्लाह के नाम से हम निकले और हम ने अपने रब अल्लाह पर भरोसा किया।

३. घर में दाख़िल होते वक़्त सलाम करना चाहे कोई हो या न हो। (अबू दाऊद)

४. पहले दायाँ पावँ घर में दाख़िल

करना। (निसई)

५. खिखार कर या दरवाज़ा खटखटा कर इस तरह दाख़िल होना कि घर वालों को मालूम हो जाये। (बेहक़ी)

मआशी सुहूलत के लिए एक अमल

हज़रत सुहेल बिन सअद रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि एक शख़्स आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में आया, फ़क्र व फाक़ा और तंगी माश की शिकायत की। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उस से फरमाया जब तुम अपने घर में दाख़िल हो तो सलाम करो ख़्वाह कोई हो या न हो, फिर मुझ पर सलाम भेजो।

اَلصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰہِ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَسَلَّمَ.

अस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।

फिर एक बार सूरये इख़्लास पढ़ो, चुनान्चे उस ने ऐसा ही किया अल्लाह पाक ने उस पर रिज़्क़ की बारिश फरमा दी, यहाँ तक कि वह अक़रबा और पड़ोसियों पर भी बहाने लगा। (अल क़ौलुल बदीअ, स. १२४)

रोज़ी में बरकत के लिए सूरये फातेहा और इख़्लास का अमल

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से मन्कूल है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो अपने घर में दाख़िल होते वक़्त सूरये फातेहा और सूरये इख़्लास पढ़ेगा उस से तंगदस्ती दूर हो जायेगी और फरावानी ख़ुशहाली आ जायेगी यहाँ तक कि अपने पड़ोसियों पर भी बहायेगा। (अद्दुर्रुल मनसूर, जि.६ स.६७७)

मिसवाक की सुन्नतें

१. मिसवाक एक बालिश्त से ज़्यादा लम्बी न हो और उंगली से ज़्यादा मोटी न हो। (बहरुर्राइक़)

२. कम अज़ कम तीन मर्तबा मिसवाक करनी चाहिये और हर मर्तबा पानी में भिगोनी चाहिये।

(उसवये रसूले अकरम)

३. अगर उंगली से मिसवाक करना हो तो उसका तरीक़ा यह है कि मुंह की दायें जानिब ऊपर नीचे अंगूठे से साफ करे और उसी तरह बायें जानिब शहादत की उंगली से। (उसवये रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

४. मिसवाक पकड़ने का तरीक़ा: छंगुली मिसवाक के निचे की तरफ और अंगूठा मिसवाक के

सिरे के निचे और बाक़ी अंगूलियाँ मिसवाक के ऊपर होना चाहियें। (शामी)

५. मिसवाक दाँतों में अरज़न और ज़बान पर तूलन करनी चाहिये, दाँतों के ज़ाहिर व बातिन और अतराफ को भी मिसवाक से साफ किया जाये और इसी तरह मुंह के ऊपर और नीचे के हिस्से और जबड़े वग़ैरह पर भी मिसवाक करनी चाहिये।

(तहतावी)

हस्बे ज़ेल मवाक़े पर मिसवाक करना सुन्नत है

१. सोने के बाद उठने पर।

२. वुज़ू करते वक़्त ।

३. कुरआन मजीद की तिलावत के लिए।

४. हदीस शरीफ पढ़ने पढ़ाने के लिए।

५. मुंह में बदबू हो जाने के वक़्त और दाँतों के रंग में तगय्युर पैदा होने पर।

६. नमाज़ में खड़े होने के वक़्त अगर वुज़ू और नमाज़ में ज़्यादा फस्ल हो गया हो।

७. ज़िक्रे इलाही करने से पहले।

८. ख़ानये काबा में हतीम में दाख़िल होने के वक़्त।

९. अपने घर में दाख़िल होने के बाद।

१०. बीवी के साथ मुक़ारिबत से पहले।

११. किसी भी मजलिसे ख़ैर में जाने से पहले।

१२. भूक प्यास लगने के वक़्त।

१३. मौत के आसार पैदा होने से पहले।

१४. सेहरी के वक़्त।

१५. खाना खाने से क़ब्ल।

१६. सफर में जाने से क़ब्ल।

(तरग़ीब व तरहीब उसवये हज़रत रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

गुस्ल करने का तरीक़ा

पहले दोनों हाथ पहुंचों तक तीन मर्तबा धोयें फिर बदन पर किसी जगह मनी या और कोई नापाकी लगी हुई हो तो उसको तीन मर्तबा पाक कीजिये फिर छोटा और बड़ा दोनों इस्तिनजा कीजिये। (ख़्वाह ज़रूरत न हो) उसके बाद मसनून तरीक़े पर वुज़ू कीजिये, अगर नहाने का पानी क़दमों में जमा हो रहा हो तो पैरों को न धोइये, वहाँ से अलाहिदा होने के बाद धोइये।

वैसे उसी वक़्त भी धो डालना जायज़ है। अब पानी अव्वल सर पर डालिये फिर दायें कंधे पर फिर बायें कंधे पर (इतना पानी डालिये कि सर से पावँ ताक पहुंच जाये) बदन को हाथों से मलिये, यह एक दफा हुआ, फिर दोबारा इसी तरह पानी

डालिये, पहले सर पर फिर दायें कंधे पर फिर बायें कंधे पर (और जहाँ बदन सूखा रहने का अंदेशा हो वहाँ हाथ से मल कर पानी बहाने की कोशिश कीजिये।) फिर इसी तरह तीसरी बार भी पानी सर से पैर तक बहाइये। (तिर्मिज़ी)

फायदा: गुस्ल के बाद बदन को कपड़े से पोछना भी साबित है और न पोछना भी, लिहाज़ा दोनों में से जो भी सूरत आप इख़्तियार करें सुन्नत होने की निय्यत कर लिया कीजिये। (मिश्कात)

जिन मवाक़े पर गुस्ल करना सुन्नत है

१. जुमा के दिन फज्र के बाद से जुमा तक उन लोगों के लिए गुस्ल करना सुन्नत है जिन पर नमाज़े जुमा वाजिब है।

२. ईदैन के दिन बाद फज्र उन लोगों के लिए गुस्ल करना सुन्नत है जिन पर ईदैन की नमाज़ वाजिब है।

३. हज या उमरा के ऐहराम के लिए गुस्ल करना सुन्नत है।

४. हज करने वाले को अरफा के दिन बाद ज़वाले आफताब गुस्ल करना सुन्नत है। (बहिश्ती गौहर, माख़ूज़ अज़ उसवये रसूले अकर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

वुज़ू की सुन्नतें

वुज़ू में तेरह सुन्नतें हैं उन को अदा करने से कामिल तरीक़े से वुज़ू हो जायेगा।

१. वूज़ू की निय्यत करना। मस्लन यह कि मैं नमाज़ के मुबाह हाने के लिए वुज़ू करता हूँ । (बुख़ारी)

२. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

बिस्मिल्लाहिर्रमानिर्रहीम पढ़ कर वुज़ू करना। (तिर्मिज़ी जि.१ स.१३)

बाज़ रिवायात में वुज़ू की 'बिस्मिल्लाह' इस तरह है :

بِسْمِ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ عَلٰى دِيْنِ الْإِسْلَامِ (امانی الاحبار شرح معانی الآ ثار ج ۱/ص ۱۱۹)

बिस्मिल्लाहिल अज़ीमी वल हम्दु लिल्लाहि अल दीनिल इस्लाम। (अमानिल अहबार शरह मआनिल आसार जि.१ स. ११९)

इस दुआ के अलावा वुज़ू से पहले 'बिस्मिल्लाही वल हम्दु लिल्लाह' पढ़ना भी साबित है। (मुजमे तबरानी, मआरिफुल हदीस)

फायदा: वुज़ू से पहले 'बिस्मिल्लाह वल हम्दु लिल्लाह' पढ़ने पर यह फज़ीलत आई है कि जब तक यह वुज़ू बाक़ी रहेगा फरिश्ता उस बंदे के लिए

नेकियाँ लिखता रहेगा। (मुजमम तबरानी, मआरिफुल हदीस)

३. दोनों हाथों को पहुंचों तक धोना। (बुख़ारी)

४. मिसवाक करना, अगर मिसवाक न हो तो अंगुली से दाँतों को मलना। (बुख़ारी)

५. तीन बार कुल्ली करना।

६. तीन बार नाक में पानी डालना। (बुख़ारी)

७. हर उज़व को तीन बार धोना।(इब्ने माजा)

८. चेहरा धोते वक़्त दाढ़ी का ख़िलाल करना। (अबू दाऊद)

९. हाथों और पैरों को धोते वक़्त अंगुलियों का ख़िलाल करना। (तिर्मिज़ी)

१०. एक बार तमाम सर का मसह करना यानी भीगा हुआ हाथ फेरना। (बुख़ारी)

११. सर के मसह के साथ दोनों कानों का मसह करना। (इब्ने माजा)

१२. पै दर पै वुज़ू करना। (मुवत्ता मालिक)

१३. तर्तीबवार वुज़ू करना। (मुस्लिम)

वुज़ू के मुस्तहब्बात

☆ वुज़ू में पाँच मुस्तहब हैं:

१. दायें तरफ से शुरू करना, बाज़ उलमा ने उसे सुन्नतों में शुमार किया है और यही क़वी है। (बुख़ारी)

२. गर्दन का मसह करना। (मुराक़ी)

३. वुज़ू के काम को ख़ुद करना दूसरे से मदद न लेना।

४. क़िब्ला की तरफ मुंह कर के वुज़ू करना।

५. पाक और ऊँची जगह पर बैठ कर वुज़ू करना। (माख़ूज़ अज़ तालीमुल इस्लाम)

वुज़ू की दुआ

१. वुज़ू के दरमियान यह दुआ पढ़ना:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَوَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَبَارِکْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ۔ (عمل الیوم للنسائی ص ۸۰ بسند صحیح)

अल्लाहुम्मग़्फिरली ज़म्बी व वस्सिली फी दारी व बारिक ली फी रिज़्क़ी। (अमलुल यवम लिन्निसई स. ८० बसनद सहीह)

तर्जमा: ऐ अल्लाह हमारे गुनाहों की मग़्फिरत फरमा, हमारे घर में वुसअत फरमा, हमारे रिज़्क़ में बरकत अता फरमा।

२. वुज़ू के बाद कलिमये शहादत:

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ۔ (ترمذی ج۱ص۱۸/ابوداؤد ج۱ص۲۳)

अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू। (तिर्मिज़ी, जि.१ स. १८, अबू दाऊद जि. १ स.२३)

३. कलिमये शहादत के बाद यह दुआ पढ़ना:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْنِىْ مِنَ التَّوَّابِيْنَ وَاجْعَلْنِىْ مِنَ الْمُتَطَهِّرِيْنَ.

(ترمذی ج ۱ ص ۱۸، ابوداؤد ج ۱ ص ۲۳)

अल्लाहुम्मज अलनी मिनत्तव्वाबीन वजअलनी मिनल मुततहृहिरीन। (तिर्मिज़ी, जि.१ स. १८, अबू दाऊद जि. १ स.२३)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! तू मुझे बहुत तौबा करने वालों में और ख़ूब पाकी हासिल करने वालों में शामिल फरमा।

फायदा: इस दुआ के मुतअल्लिक़ हज़रत मुल्ला अली क़ारी ने फरमाया है कि वुज़ू में ज़ाहिरी तहारत है, इस दुआ से बातिनी तहारत की दरख़्वास्त पेश की गई है अव्वल इख़्तियारी थी वह हम कर चुके हैं अब आप अपनी रहमत से हमारे बातिन को भी पाक फरमा दीजिये।

वुज़ू के बाद सूरये इख़्लास पढ़ने का इनआम

वुज़ू करने के बाद जो शख़्स सूरये इख़्लास पढ़ ले तो ख़ुशख़बरी सुनाने वाला फरिश्ता जन्नत की बशारत देता है। कहता है कि ऐ रहमान की मदह करने वाले! उठ और जन्नत में दाख़िल हो जा। (नुज़हतुल मजालिस, जि.१ स.२१३)

राब्ता और ज़ाब्ता का बड़ा फ़र्क़

मस्जिद में अज़ान से पहले आना राब्ता है और अज़ान के बाद आना ज़ब्ता है। बंदा जब राब्ता बताता है तो अल्लाह पाक की तरफ से राब्ता का मामला होता है। इमाम नववी रहमतुल्लाह की 'अरबअीन' की शरह में लिखा है कि अज़ान से पहले मस्जिद में आने वाला 'मिनहुम साबिकुन बिल ख़ैरात' में और अज़ान के बाद आने वाला 'व मिनहुम मुक़तसिद' में और जमात खड़ी होने के बाद आने वाला 'व मिनहुम ज़ालिमुल लिनफ्सिही' में दाख़िल है। (शरहुअल अरबअीन: स. २०६)

मस्जिद से मुतअल्लिक़ अहकाम

पाँचों नमाज़ों के लिए मस्जिद जाते वक़्त मुनदर्जा ज़ेल सुन्नतों का ख़्याल रखे:

१. हर नमाज़ के लिए बा वुज़ू घर से चलना।

२. घर से चलते वक़्त नमाज़ पढ़ने की निय्यत से चलना यानी अस्ल और मुक़द्दम निय्यत नमाज़ पढ़ने ही की करनी चाहिये।

३. अज़ान सुन कर नमाज़ के लिए इस तरह दुनियवी मशाग़िल को तर्क कर देना गोया उन कामों से कोई सरोकार ही नहीं है।

४. घर से बाहर आ कर यह दुआ पढ़ते हुये

चले:

بِسمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ لَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.

(ترمذی ۱۸۱/ابوداؤد ص ۶۹۵)

बिस्मिल्लाही तवक्कलतु अलल्लाही व ला हौला व ला कुव्वत इल्ला बिल्लाही। (तिर्मिज़ी १८१, अबू दाऊद स. ६९५)

तर्जमा: मैं अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, मैंने अल्लाह पर भरोसा किया, नहीं है कोई ताक़त व कुव्वत सिवाये अल्लाह के।

मस्जिद में दाख़िल होने की सुन्नतें

१. दहिना पैर मस्जिद में दाख़िल करना। (बुख़ारी)

२. बिस्मिल्लाह पढ़ना। (इब्ने माजा)

३. दुरूद शरीफ पढ़ना मस्लन:

بِسمِ اللّٰهِ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى رَسُوْلِ اللّٰه ﷺ

(ترمذی ج ۱ ص ۷۱/نزل الابرار ص ۷۲)

बिस्मिल्लाही वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। (तिर्मिज़ी जि.१र स. ७१, नज़लल अबरार स. ७२)

४. दुआ पढ़ना:

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ لِیْ أَبْوَابَ رَحْمَتِکَ

अल्लाहुम्मफतहली अबवाब रहमतिक।

तर्जमा: ऐ अल्लाह! मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे। (मुस्लिम जि. १ स. ६४८, अबू दाऊद स ६७) या

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ رَحْمَتِکَ۔

अल्लाहुम्मग़्फिरली ज़ुनूबी वफतहली अबवाब रहमतिक।

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मेरे गुनाहों की मग़्फिरत फरमा और मेरे लिए अपनी रहमत के दरवाज़े खोल दे। (तिर्मिज़ जि.१ स. ७१)

५. ऐतिकाफ की निय्यत करना।

मस्जिद से बाहर आने की सुन्नतें

१. पहले बायाँ पैर मस्जिद से निकालना।

(बुख़ारी)

२. बिस्मिल्लाह पढ़ना। (इब्ने माजा)

३. दुरूद शरीफ पढ़ना मस्लन:

بِسْمِ اللّٰهِ والصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰی رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ.

(ترمذی ج ۱ ص ۷۱ نزل الابرار ص ۷۲)

बिस्मिल्लाही वस्सलातु वस्सलामु अला रसूलिल्लाही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम। (तिर्मिज़ी जि. १. स. ७१, नज़लल अबरार स. ७२)

४. दुआ पढ़ना:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ۔ (مسلم ج ۱ ص ۲۴۸، ابوداؤد ۶۷)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन फज़्लिक।

(मुस्लिम जि. १ स. १४८, अबूदाऊद स.६६

तर्जमा: ऐ अल्लाह! मैं आप से आपके फज़्ल का सवाल करता हूँ।

या

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ وَافْتَحْ لِیْ اَبْوَابَ فَضْلِکَ۔

अल्लाहुम्मग़्फिरली ज़ुनूबी वफ्तहली अबवाब फज़्लिक।

तर्जमा: ऐ अल्लाह! मेरे गुनहों की मग़्फिरत फरमा और मेरे लिए अपने फज़्ल के दरवाज़े खोल दे। (तिर्मिज़ी जि. १ स.७१)

५. जब मस्जिद के दरवाजे पर आये तो यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ اِبْلِیْسَ وَجُنُوْدِہٖ۔ (ابن سنی)

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिन इबलीस व जुनूदिही। (इब्ने सेनी)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! मैं आप की पनाह चाहता हूँ इबलीस और उसके लश्करों से।

पूरे दिन शैतान के शर से हिफाज़त का नुस्ख़ा

६. मस्जिद में दाख़िल होने के बाद यह दुआ पढ़े: (तो पूरे दिन शैतान के शर से महफूज़

रहेगा।

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِیْمِ وَبِوَجْهِهِ الْكَرِیْمِ وَسُلْطَانِهِ الْقَدِیْمِ

مِنَ الشَّیْطَانِ الرَّجِیْمِ. (ماخوذ از اسوۂ رسول اکرم ﷺ، ابوداود)

अऊज़ुबिल्लाहिल अज़ीमी व बिवजहिहील करीमी व सुलतानिहील क़दीमी मिनश्शैतानिर्रजीमी।

(माख़ूज़ अज़ उसवये रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम, अबू दाऊद)

तीन बड़े इनाम

फज्र की दो रकअतें घर पर पढ़ के मस्जिद आये तो अज़ रूये हदीस शरीफ इनाम मिलेंगे।

१. घर के झगड़े ख़त्म होंगे।

२. रिज़्क़ में कुशादगी।

३. और ईमान पर ख़ात्मा नसीब होगा।

(फतावा तातार ख़ानिया, जि. १ मसाइलु ततुअ)

सत्तर हज़ार फरिश्तों की दुआ

५. रास्ता चलते हुये यह दुआ पढ़ना भी अहादीस से साबित है सत्तर हज़ार फरिश्ते उसके पढ़ने वाले के लिए दुआ करते हैं:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ بِحَقِّ السَّائِلِیْنَ عَلَیْکَ

وَبِحَقِّ مَمْشَایَ هٰذَا اِلَیْکَ فَاِنِّیْ لَمْ اَخْرُجْ اَشَرًا وَّلَا

بـطَـراً وَلاَ رِيـاَءً وَلاَ سُمْعَةً، وَخَرَجْتُ اِتِّقَاءَ سَخَطِكَ وَابْتِغَاءَ مَرْضَاتِكَ وَاَسْأَلُكَ اَنْ تُعِيْذَنِيْ مِنَ النَّارِوَاَنْ تَغْفِرَلِيْ ذُنُوْبِيْ فَاِنَّهٗ لاَيَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ.

(رواه احمد فی مسنده)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक बिहक़्क़िस्साइलीन अलैक व बिहक़्क़ी ममशाय हाज़ा इलैक फइन्नी लम अख़्रुज अशरन वला बतरन वला रियाअन वला सुमअतन, व ख़रजतु इत्तिक़ाअ सख़्तिक वब्तिग़ाअ मरज़ातिक व अस्अलुक अन तुईज़नी मिनन्नारी व अन तग़्फिरली ज़ुनूबी फइन्नहू ला यग़्फिरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त। (रवाहु अहमद फी मसनदहु)

तर्जमा: ऐ अल्लाह इस हक़ से जो सवाल करने वालों को तेरी जनाब में हासिल है और उस हक़ से जो कि तेरी इबादत करने वालों को तेरी जनाब से है, अर्ज़ करता हूँ कि मैंने किसी तकब्बुर या तमकुनत के जज़्बा या दिखावे की ग़र्ज़ से क़दम बाहर नहीं निकाला बल्कि तेरी नाराज़गी के ख़ौफ से और तेरी रज़ा की जुस्तजू में चला हूँ और तुझ ही से इल्तिजा करता हूँ कि मुझे आग के अज़ाब से पनाह दे दे और मेरे गुनाह माफ कर दे, तेरे सिवा अब कोई नहीं जो गुनाह माफ कर सके।

अज़ान से मुतअल्लिक़ आदाब

अगर कोई शख़्स अज़ान का जवाब देना भूल जाये या क़सदन जवाब न दे और बाद ख़त्मे अज़ान के ख़्याल आवे या जवाब देने का इरादा करे तो ऐसी सूरत में अगर ज़्यादा वक़्त न गुज़रा हो तो जवाब दे दे वरना नहीं।(उसये रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम स. ३७५)

जो शख़्स अज़ान दे इक़ामत भी उसी का हक़ है। (तिर्मिज़ी जि. १ स. ५०)

हज़रत सअद इब्ने अबी वक़्क़ास रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जो शख़्स मुअज़्ज़िन की अज़ान सुनने के वक़्त यह कहे:

اَشْهَدُ اَنْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ، وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّداً عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ ـ رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ رَسُوْلًا ـ

अशहदु अल्ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू, व अशहदु अन्न मुहम्मदन अब्दुहू व रसूलुहू, रज़ैतु बिल्लाही रब्बव्ं बिल इस्लामी दीनव्ं बिमुहम्मदिन रसूलन।

तो उसके गुनाह बख़्श दिये जायेंगे।

(तिर्मिज़ी जि.१स.५१, मुस्लिम जि.१ स. १६७)

अज़ान व इक़ामत की सुन्नतें

१. अज़ान व इक़ामत क़िब्ला रू कहना सुन्नत है। (तिर्मिज़ी)

२. अज़ान के अलफाज़ ठहर ठहर के अदा करना और इक़ामत के अलफाज़ जल्द जल्द अदा करना सुन्नत है। (तिर्मिज़ी जि. १ स. ४८)

३. अज़ान व इक़ामत मैं 'हय्य अलस्सलाह', 'हय्य अलल फलाह' कहते वक़्त दायें और बायें जानिब मुंह फेरना सुन्नत है लेकिन सीना और क़दम क़िब्ला रुख़ ही रहें। (बुख़ारी)

४. जब अज़ान सुनो तो तिलावत, ज़िक्र व तस्बीह बंद कर दो और अज़ान का जवाब दो यानी अज़ान के कलिमात दोहराओ, जब मुअज़्ज़िन 'हय्य अलस्सलात' और 'हय्य अलल फलाह' कहे तो जवाब में'ला हौला वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह'कहो।

(तहावी जि.१ स. ८६, अबू दाऊद स. ७८)

और 'हय्य अलल फलाह' के जवाब में 'अल्लाहुम्मज अलना मुफलिहीन' कहना भी रिवायत में आता है। (शरहे बुख़ारी इब्ने बत्ताल, इब्ने सेनी स. ८३, अज़कार स. ३२)

५. फज्र की अज़ान में 'अस्सलातु ख़ैरुम मिनन

नौम' के जवाब में 'सदक़्त व बररत' कहा जायेगा। (बुख़ारी व मुस्लिम)

६. इक़ामत का जवाब भी अज़ान की तरह दिया जायेगा लेकिन 'क़द क़ामतिस्सलात' के जवाब में 'अक़ामल्लाहु व अदामहा' कहा जायेगा।

(अबू दाऊद स. ७८)

७. अज़ान ख़त्म होने के बाद दुरूद शरीफ पढ़ना सुन्नत है। (मुस्लिम जि. १ स. १६६)

८. दुरूद शरीफ पढ़ कर यह दुआ पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ رَبَّ هٰذِهِ الدَّعْوَةِ التَّامَّةِ وَالصَّلٰوةِ الْقَائِمَةِ آتِ مُحَمَّدَ نِالْوَسِيْلَةَ وَالْفَضِيْلَةَ وَابْعَثْهُ مَقَاماً مَحْمُوْدَنِالَّذِىْ وَعَدْتَّهُ إِنَّكَ لاَتُخْلِفُ الْمِيْعَادَ۔(بخاری، ج ا ص۸٦، ترمذی ج ا ص ۵۱،ابوداؤد ص۷۸)

अल्लाहुम्म रब्ब हाज़िहीद्दअवतित्ताम्मति वस्सलातिल क़ाइमति आति मुहम्मदनिल वसीलत वल फज़ीलत वबअसहू मक़ामम महमूदनिल लज़ी व अत्तहू इन्नक ला तुख़्लिफुल मीआद। (बुख़ारी जि. १ स ८६ तिर्मिज़ी १. स. ७८)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! इस पूरी पुकार के रब और क़ायम होने वाली नमाज़ के रब! मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के वसीला अता फरमा और उन को फज़ीलत अता फरमा और उनको

मुक़ामे महमूद पर पहुंचा जिसका तूने वादा फरमाया है बेशक तू वादा ख़िलाफ नहीं है।

फायदा: इस दुआ पर हुज़ूर अकर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिफाअत और हुस्ने ख़ात्मा का इनाम है। (मिरक़ात) (अल्लाह पाक हम सब को हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की शिफाअत और हुस्ने ख़ात्मा का इनाम अपने करम से अता फरमाये। आमीन!

नमाज़ की ५१ सुन्नतें

☆ क़याम की ग्यारह सुन्नतें।

☆ क़िरात के सात सुन्नतें।

☆ रुकूअ की आठ सुन्नतें।

☆ सजदा की बारह सुन्नतें।

☆ क़अदा की तेरह सुन्नतें।(रवाहुल बहक़ी)

क़याम की ग्यारह सुन्नतें

१. तकबीरे तहरीमा के वक़्त सीधा ख़ड़ा होना यानी सर को पस्त न करना। (तहतावी स. ३४१)

२. दोनों पैरों के दरमियान चार अंगुल का फास्ला। (तहतावी स. ३४१)

३. और पैरों की उंगलियाँ क़िब्ला की तरफ करना। (तहतावी स. १४)

४. तकबीरे तहरीमा के वक़्त दोनों हाथ का

कानों तक उठाना। (अबू दाऊद जि. १ स. १०५)

५. हथेलियों को क़िब्ला की तरफ रखना। (तहतावी स. १५२, शामी जि.१ स. ३५६)

६. उंगलियों को अपनी हालत पर रखना यानी न ज़्यादा खुली हों और न ज़्यादा बंद। (तहतावी स. ३५६)

७. दाहिने हाथ की हथेली बायें हाथ की हथेली की पुश्त पर रखना। (तहतावी स. १४०)

८. छंगुली और अंगूठे से हलक़ा बना कर गट्टे को पकड़ना। (तहतावी स. १४१)

९. दरमियानी तीन उंगलियों को कलाई पर रखना। (तहतावी स. १४१)

१०. नाफ क़े नीचे हाथ बाँधना। (शामी जि.१ स. ३५९ तहतावी स. १४०)

११. सना पढ़ना। (अलाउस्सुन्न। जि. २ स. १७४ ता १७७)

क़िरात की सात सुन्नतें

१. तऊज़ यानी अऊज़ु बिल्लाह पढ़ना।
(तहतावी स. १४१)

२. तस्मीया यानी बिस्मिल्लाह पढ़ना।
(तहतावी स. १४१)

३. चुपके से आमीन कहना।
(तहतावी स. १४१)

४. फज्र और ज़ोहर में तिवाले मुफस्सल यानी

सूरये हजरात से सूरये बुरूज तक, अस्र और ईशा में औसाते मुफस्सल यानी सूरये तारिक़ से सूरये लम यकुन तक और मग़्रिब में क़िसारे मुफस्सल यानी सूरये इज़ा ज़ुलज़िलत से सूरये नास तक की सूरतें पढ़ना। (तहतावी स. १४३ ता १४४)

५.फज्र की पहली रकअत को तवील करना। (तहतावी स. १४४)

६. न ज़्यादा जल्दी पढ़ना और न ज़्यादा ठहर कर बल्कि दरमियानी रफ्तार से पढ़ना। (तहतावी)

७. फर्ज़ की तीसरी और चौथी रकअत में सिर्फ सूरये फातेहा पढ़ना। (तहतावी स. ७४१)

रुकूअ की आठ सुन्नतें

१. रुकूअ की तकबीर कहना।(तहतावी स. १४४)

२. रुकूअ में दोनों हाथों से घुटनों को पकड़ने में उंगलियों को कुशादा रखना। (तहतावी स. १४५)

३. घुटनों को पकड़ने में उंगलियों को कुशादा रखना। (तहतावी स. १४५)

४. पीठ को बिछा देना। (शामी जि.१ स.३६५)

५. पिंडलियों को सीधा रखना। (शामी जि.१ स.३६५)

६. सर और सुरीन को बराबर रखना। (शामी जि.१ स.३६५)

७. रूकूअ में कम अज़ कम तीन बार :

سُبحَانَ رَبِّیَ العَظِیم

सुबहान रब्बियल अज़ीम पढ़ना।(तहतावी स.१४४)

८. रुकूअ से उठने में इमाम को

سَمِعَ اللّٰهُ لِمَنْ حَمِدَهٗ

'समीअल्लाहु लिमन हमिदह' और मुक़तदी को

رَبَّنَا لَکَ الْحَمْدُ

'रब्बना लकल हम्द' और मुनफरिद को दोनों कहना। (शामी जि.१ स.३२७)

सजदे की बारह सुन्नतें

१. सजदे की तकबीर कहना। (शामी जि.१०)

२. सजदे में पहले दोनों घुटनों को रखना। (शामी जि.१ स. ५४१)

३. फिर दोनों हाथों को रखना। (शामी जि.१ स. ५४१)

४. फिर नाक रखना।(शामी जि.१ स. ५४१)

५. फिर पेशानी रखना।(शामी जि.१ स. ५४१)

६. दोनों हाथों के दरमियान सजदा करना। (शामी जि.१ स. ५४१)

७. सजदे में पेट को रानों से अलग रखना। (तहतावी १४६)

८. पहलूओं को बाज़ूओं से अलग रखना। (तहतावी १४६)

९. कुहनियों को ज़मीन से अलग रखना।
(तहतावी १४६)

१०. सजदे में कम अज़ कम तीन बार

سُبْحَانَ رَبِّيَ الْأَعْلٰى

सुबहान रब्बियल आला

सजदे से उठने में पहले पेशानी फिर नाक फिर हाथों को फिर घुटना और दोनों सजदों के दरमियान इतमिनान से बैठना। (तहतावी १४६)

क़अदा की तेरह सुन्नतें

१. दायें पैर को खड़ा रखना और बायें पैर को बिछा कर उस पर बैठना और पैर की उंगलियों को क़िब्ला की तरफ रखना। (तहतावी १४६)

२. दोनों हाथों को रानों पर रखना।
(तहतावी १४६)

३. तशहहुद में 'अशहदु अल्ला इलाह' पर शहादत की उंगली को उठाना और 'इल्लल्लाह' पर झुका देना। (तहतावी १४६ ता १४७)

४. क़अदये अख़ीरह में दुरूद शरीफ का पढ़ना। (तहतावी १४७)

५. दुरूद शरीफ के बाद दुआये मासूरह इन अलफाज़ में जो कुरआन व हदीस के मुशाबेह हों पढ़ना। (तहतावी १४८)

६. दोनों तरफ सलाम फेरना।(तहतावी १४९)

७. सलाम की इब्तिदा दाहिने तरफ से करना। (तहतावी १४९)

८. इमाम को मुक़तदियों, फरिश्तों और सालेह जिन्नात की निय्यत करना। (तहतावी १४९)

९. मुक़तदी को इमाम, फरिश्तों और सालेह जिन्नात और दायें बायें मुक़तदियों की निय्यत करना। (तहतावी १५०)

१०. मुनफरिद को सिर्फ फरिश्तों की निय्यत करना। (तहतावी १५०)

११. मुक़तदी को इमाम के साथ सलाम फेरना। (तहतावी १५०)

१२. दूसरे सलाम की आवाज़ को पहले सलाम की आवाज़ से पस्त करना। (तहतावी)

१३. मसबूक़ को इमाम के फारिग़ होने का इंतेज़ार करना। (तहतावी)

फर्ज़ नमाज़ के बाद की मसनून दुआयें

१. सलाम फेर कर एक बार अल्लाहु अक्बर कहे फिर तीन मर्तबा 'अस्तग़्फिरुल्लाह' कहे आख़िरी बार ज़रा खींच कर पढ़े। (अबू दाऊद ११२)

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ السَّلَامُ وَمِنْكَ السَّلَامُ تَبَارَكْتَ

يَاذَاالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ۔ (ترمذی ج۱ص۶۶، ابوداؤد ص۲۱۲)

अल्लाहुम्म अन्तस्सलाम व मिन्कस्सलामु तबारक्त या ज़ल जलालि वल इकराम।

(तिर्मिज़ी १ स. २१८, अबू दाऊद स.२१२)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! तू सलामती वाला है और तुझ ही से सलामती मिल सकती है तू बा बरकत है ऐ बुज़ुर्गी और इज़्ज़त वाले!

اَللّٰهُمَّ أَعِنَّا عَلٰى ذِكْرِكَ وَشُكْرِكَ وَحُسْنِ عِبَادَتِكَ۔ (ابوداؤد ص ۲۱۳)

अल्लाहुम्म अइन्ना अला ज़िक्रिक व शुक्रिक व हुस्नी इबादतिक। (अबू दाऊद स.२१३)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! आप हमारी मदद फरमाइये अपने ज़िक्र पर और अपने शुक्र पर और अपनी अच्छी इबादत पर।

لَآاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ، وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْئٍ قَدِيْرٌ۔

(ترمذی ج۱،ص ۶۶ بخاری ص ۱۱۷)

ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु, व हुव अल कुल्लि शैइन क़दीर। (तिर्मिज़ी जि. १ स. ६६, बुख़ारी)

तर्जमा: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह तनहा है उसका कोई शरीक नहीं उसी के लिए मुल्क है और उसके लिए सब तारीफें हैं उसी के

हाथ में ख़ैर है और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

اَللّٰهُمَّ لَامَانِعَ لِمَا اَعْطَيْتَ وَلَا مُعْطِىَ لِمَا مَنَعْتَ

وَلَا يَنْفَعُ ذَاالْجَدِّ مِنْكَ الْجَدُّ۔(ترمذی ج ۱ ص ۶۶، بخاری ۱۱۷)

अल्लाहुम्म ला मानिअ लिमा आतैत वला मुअतिया लिमा मनअत वला यनफ़अु ज़ल जद्दि मिन्कल जद्दु।(तिर्मिज़ी जि. १ स. ६६, बुख़ारी स.११७)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! जो कुछ आप दें उसका कोई मना करने वाला नहीं और जो कुछ आप रोकें उसका कोई देने वाला नहीं और किसी माल वाले को उसका माल आप की गिरिफ्त से नहीं बचा सकता।

६. हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि अल्लाहु अन्हु की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख़्स हर फर्ज़ नमाज़ के बाद आयतल कुर्सी और आयत शहिदल्लाह और कुल लिल्लाहुम्म:

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ ط لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ○ اور یہ آیۃ

قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِى الْمُلْكَ مَنْ تَشَاءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَاءُ وَتُذِلُّ مَنْ

تَشَاءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ o تُوْلِجُ الَّيْلَ فِىْ النَّهَارِ وتُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَاءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ o

पढ़ा करे तो अल्लाह तआला उसके गुनाह माफ फरमायेगा और जन्नत में जगह देगा और उसकी सत्तर हाजतें पूरी फरमायेगा जिन में से कम अज़ कम हाजत उसकी मग़्फिरत है। (रूहुल मआनी बहवाला देलमी मआरिफुल कुरआन)

७. हदीस पाक में है जो शख़्स फर्ज़ नमाज़ के बाद 'आयतल कुर्सी' पढ़ने का ऐहतिमाम करे वह शख़्स अज्र व सवाब के ऐतिबार से उस शख़्स की तरह होगा जिस ने अल्लाह के नबियों की मओत में मिल कर जिहाद किया और शहीद हो गया।

(अमलुल यवम वल लैल स.९३)

हज़रत अबू अमामा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लाल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख़्स फर्ज़ नमाज़ के बाद "आयतल कुर्सी" पढ़ेगा उसको जन्नत में जाने से सिवाये मौत के कोई चीज़ नहीं रोक सकती। (अमलुल यवम लिन्निसाई स. १८२ अद्दुआ ११०४)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन हसन रज़ि अल्लाहु

अन्हु से रिवायत है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स फर्ज़ नमाज़ के बाद आयतल कुर्सी पढ़ेगा वह दूसरी नमाज़ के आने तक ख़ुदा की हिफाज़त में रहेगा। (मजमउज़्ज़वाइद जि. २ स.१५१)

नमाज़ के वह आदाब जो सब के लिए यक्साँ हैं

क़याम में सजदे की जगह पर, रुकूअ में पावँ पर, सजदे की हालत में नाक पर और सलाम फेरते वक़्त कंधों पर नज़र रहे और जमाई आये तो ख़ूब ताक़त से रोके और अगर न रुके तो दाहिने हाथ की हथेली की पुश्त से रोके और जब खाँसी का असर मालूम हो तो भी रोकने की कोशिश करे और ज़ब्त करे। सिर्री नमाज़ में इतनी आवाज़ से पढ़े कि ख़ुद सुन सके।

औरतों की नमाज़ में ख़ास फर्क़

१. तकबीरे तहरीमा के वक़्त अपने दोनों हाथों को कंधों तक उठाये लेकिन हाथों को दूपट्टे से बाहर न निकाले। (तहतावी)

२. सीने पर हाथ बांधे और सिर्फ दाहिने हाथ की हथेली को बायें हाथ की पुश्त पर रख दे और रुकूअ में दोनों हाथों की उंगलियाँ मिला कर घुटनों पर रख दे और दोनों बाज़ुओं को पहलुओं से ख़ूब

मिलाये रहे और दोनों पैरों के टख़्नों को बिल्कुल मिला दे। (तहतावी १४१)

३. सजदे में औरतें पावँ न खड़ा करें बल्कि दाहिनी तरफ को निकाल दें और ख़ूब सिमट कर और दब कर सजदे करें कि पेट दोनों रानों से और बाहें दोनों पहलुओं से मिला दें और दोनों बाहें ज़मीन पर रख दें। क़अदा में जब बैठें तो दोनों पावँ दाहिनी तरफ निकाल दें और दोनों हाथों को रान पर रख दें और उंगलियाँ ख़ूब मिला कर रखें।

(तहतावी १४६, बहिश्ती ज़ेवर जि.२ स. १७)

नापाकी के ज़माने का मुस्तहब अमल

नपाकी के ज़माने में औरत के लिए मुस्तहब है कि हर नमाज़ के वक़्त वुज़ू कर के मुसल्ले पर बैठ कर नमाज़ पढ़ने की मिक़दार :

سُبْحَانَكَ اَسْتَغْفِرُ اللّٰهَ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَیُّ الْقَیُّوْمُ.

सुबहानक अस्तग़िफरुल्लह अल्लाज़ी ला इलाह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूम।

पढ़ ले तो नामये आमाल में हज़ार रकआत लिखी जाती हैं और सत्तर हज़ार गुनाह माफ होते हैं और दर्जात बढ़ जाते हैं और इस्तिग़फार के हर लफ्ज़ पर एक नूर मिलता है और जिस्म के हर रग के ऐवज़ हज व उमरा लिखे जाते हैं।

जुमा की सुन्नतें

१. गुस्ल करना। (बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

२. अच्छे और साफ कपड़े पहनना।
(अबू दाऊद)

३. मस्जिद में जल्द जाने की फ़िक्र करना।
(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

४. मस्जिद पैदल जाना। (बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

५. मस्जिद में बा तहारत जाना।

६. इमाम के क़रीब बैठने की कोशिश करना।
(तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

७. अगर सफें पुर हैं तो सफों को फाँद कर आगे न बढ़ना। (अबू दाऊद)

८. अपने कपड़ों से या बदन से न खेलना।
(इब्ने माजा)

९. खुतबा को ग़ौर से सुनना। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

१०. अलावा अज़ीं जुमा के दिन जो सुरये कहफ पढ़ेगा उसके लिए उसके क़दम से ले कर आसमान के बलंदी तक एक नूर ज़ाहिर होगा जो क़यामत के अंधेरे में उसके काम आयेगा और उस जुमा से पहले जुमा तक की तमाम सग़ीरह ख़तायें माफ हो जायेंगी। (इब्ने कसीर, मआरिफुल कुरआन जि. ५ स. ५३४)

और जो उसकी दस आख़िरी आयतें पढ़ेगा वह दज्जाल के फित्ना से मफहूज़ रहेगा।(तर्ग़ीब जि.१ स. ५१३)

११. नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जुमा के दिन मुझ पर कसरत से दुरूद भेजा करो उस रोज़ दुरूद में फरिश्ते हाज़िर होते हैं और दुरूद मेरे हुज़ूर पेश किया जाता है।

(इब्ने माजा)

फायदा हजरत अकदस गंगोही ने फरमाया कि कसरत की कम से कम मिक्दार तीन सौ है।

१२. जुमा के दिन इत्र लगाना भी मसनून है।

(बुख़ारी, तिर्मिज़ी)

ईदैन की सुन्नतें

ईदैन की सुन्नतें यह हैं:

१. शरअ के मवाफिक् अपने आप को सजाना संवारना। (मदारिजुन्नबूवह)

२. गुस्ल करना। (मुस्लिम)

३. मिसवाक करना। (मुस्लिम)

४.उम्दा उम्दा कपड़े पहनना।(मदारिजुन्नबूवह)

५. खुशबू लगाना।

६. सुबह सवेरे उठना।

७. ईदगाह सवेरे जाना।

८. ईदुल अज़हा की नमाज़ से पहले कुछ न खाना और नमाज़ के बाद अपनी कुरबानी के गोश्त में से खाना। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

१०. ईद की नमाज़ ईद गाह में पढ़ना।

११. एक रास्ते से जाना और दूसरे रास्ते से आना।

१२. ईदुल अज़हा में तकबीराते तशरीक़ को बलंद आवाज़ से पढ़ना और ईदुल फित्र में आहिस्ता पढ़ना। (सुनने इब्ने माजा)

१३. पयादा पा चलना। (उसवये रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

१४. ईदुल अज़हा की नमाज़ जल्दी पढ़ना और ईदुल फित्र की नमाज़ थोड़ी ताख़ीर से पढ़ना। (मदारिजुन्नबूवह)

१५. ईदुल अज़हा की रात में तलबे सवाब के लिए बेदार रहना और इबादत में मशगूल रहना सुन्नत है।

१६. जिस का कुरबानी का इरादा हो उसको बक़र ईद का चाँद देखने के बाद जब तक कुरबानी न करे उस वक़्त तक ख़त न बनवाना और नाख़ुन न कतरवाना। (माख़ूज़ अज़ उसवये रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम)

खाने की सुन्नतें

१. दस्तरख़्वान बिछाना।०

२. दोनों हाथों को गट्टों तक धोना। (तिर्मिज़ी)

३. बिस्मिल्लाह बलंद आवाज़ से पढ़ना। (शामी जि. ५)

४. दाहिने हाथ से खाना। (बुख़ारी जि.१ स. ८१०)

५. खाने की मजलिस में जो शख़्स सब से ज़्यादा बुज़ुर्ग और बड़ा हो उस से खाना शुरू कराना। (मुस्लिम अन हुज़ैफा जि. २ स. १७१)

६. (खाना एक क़िस्म का हो तो) अपने सामने से खाना। (बुख़ारी जि.१ स.८१०)

७. अगर कोई लुक़्मा गिर जाये तो उठा कर साफ कर के खा लेना। (मुस्लिम)

८. टेक लगा कर न खाना। (बुख़ारी जि.१ स. ८१३)

९. खाने में कोई अैब न निकालना।
(बुख़ारी जि. १ स. ८१४)

१०. जूता उतार कर खाना। (मजमउज़्ज़वाइद मिश्कात जि. ५ स. २७)

खाने के लिए बैठने का मसनून तरीक़ा

११. एक घुटना खड़ा हो और दूसरे घुटने को बिछा कर उस पर बैठे या दोनों घुटने ज़मीन पर बिछा कर क़अदा की तरह बैठे और आगे की तरफ ज़रा छुक कर बैठे। (मिरक़ात, शरहे मिश्कात)

या दायें पैर को उठाले और बायें पैर को बिछा ले। इब्ने क़य्यम ने ज़ादुल मआद में लिखा है कि आप सुरीन के बल बैठते और बायें पैर के तलवे को दायें पैर के ऊपर रखते। यह तरीक़ा आप अदबन और तवाज़ुअन इख़्तियार करते यह हैयत खाने के

तरीक़ों में से सब से अफज़ल और अनफअ है। (शरह मनावी स. १९१ शमाइले कुबरा जि.१ स. ५०)

या उकड़ू बैठना कि दोनों घुटने खड़े हों और सुरीन ज़मीन पर हो यह ख़जूर खाने का मसनून तरीक़ा है। (मुस्लिम, रियाज़ुस्सालिहीन स. २४७)

१२. खाने के बर्तन, पयाला व प्लेट को साफ कर लेना, बर्तन उसके लिए दुआये मग़्फिरत करता है। (तिर्मिज़ी, जि. २ स. २, इब्ने माजा, मिश्कात ३६६)

बर्तन की दुआ:

عَنْ نُبَيْشَةَ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ مَنْ اَكَلَ فِيْ قَصْعَةٍ ثُمَّ لَحِسَهَا تَقُوْلُ لَهُ الْقَصْعَةُ اَعْتَقَكَ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ كَمَا اَعْتَقْتَنِيْ مِنَ الشَّيْطَانِ (رواہ رزین، مشکوٰۃ ۳۶۸)

अन नुबैशत क़ाल क़ाल रसूलुल्लाही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मन अकल फी क़सअतिन सुम्म लहिसहा तक़ूलु लहुल क़सअतु अतक़कल्लाहु मिनन्नारी कमा आतक़नी मिनश्शैतान।

(रवाहु रज़ीन, मिश्कात ३६८)

तर्जमा: हज़रत नुबैशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबिये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो किसी बर्तन में खाये फिर उसे ख़ूब साफ करे तो बर्तन उसे दुआ देता है कि जिस तरह उस ने मुझे शैतान से आज़ाद किया आप

उसे जहन्नम से आज़ाद कर दीजिये।(मिश्कात ३६८)

और शमाइले कुबरा में है कि बर्तन की दुआ क़बूल होती है क्योंकि वह मासूम है।

१३. खाने के बाद फौरन पानी न पीना सुन्नत है खाने के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पानी नोश नहीं फरमाते थे।(मदारिज स.१७)

नोट: इस लिए खाने के बाद फौरन पानी पीना मअदा और हाज़्मा के लिए मुज़िर है।

१४. पहले दस्तरख़्वान उठवाना फिर ख़ुद उठना। (इब्ने माजा)

१५. खाने के बाद दोनों हाथ धोना। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

१६. कुल्ली करना। (बुख़ारी)

१७. सिरका इस्तेमाल करना सुन्नत है जिस घर में सिरका मौजूद है वह घर सालन से ख़ाली नहीं समझा जा सकता। (तिर्मिज़ी जि.२ स.५)

१८. ख़ालिस गंदुम अगर कोई इस्तेमाल करता है तो उसे चाहिये कि उस में कुछ जौव भी मिला ले। चाहे थोड़ी ही मिक़्दार में होता कि सुन्नत पर अमल का सवाब हासिल हो जाये। (शमाइल)

१९. गोश्त खाना सुन्नत है। रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का फरमान है कि दुनिया व आख़िरत में खानों का सरदार गोश्त है।

खाते वक़्त बिल्कुल ख़ामूश रहना मकरूह है। (शामी मजमउज़्ज़वाइद जि. ५ स. ३८)

दावत का खाना

(अपने मुसलमान भाई की) दावत क़बूल करना सुन्नत है। अलबत्ता अगर (ग़ालिब आमदनी) सूद या रिश्वत की हो या वह बदकारी में मुबतला हो तो उसकी दावत क़बूल नहीं करना चाहिये।

अपने अज़ीज़ों, दोस्तों, रिश्तेदारों और मसाकीन को वलीमा का खाना खिलाना सुन्नत है।

मय्यत के रिश्तेदारों को खाना देना मसनून है। (मदारिजुन्नबूवह, ज़ादुल मआद)

खाने से मुतअल्लिक़ दुआयें

१. खाने के बाद की दुआ पढ़ना:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِیْنَ۔

(ترمذی ج۲ ص ۱۸۴ ، ابوداؤد ص ۵۳۹)

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अतअमना व सक़ाना व जअलना मुस्लिमीन। (तिर्मिज़ी जि. २ स. १८४ अबू दाऊद स. ५३९)

तर्जमा: सब तारीफें अल्लाह के लिए हैं जिस ने हम को खिलाया और पिलाया और मुसलमान बनाया।

२. दस्तरख़्वान उठाने की दुआ पढ़ना:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْداً كَثِيْراً طَيِّبًا مُبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَلَا مُوَدَّعٍ وَلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا۔

(صحیح بخاری ج۱ص۸۲۰، سنن ابی داود: ص/۵۳۸)

तर्जमा: अल हम्दु लिल्लाही हम्दन कसीरन तय्यबम मुबारकन फीही ग़ैर मुक्फिय्यिन वला मुवद्दईन वला मुस्तग्नन अन्हु रब्बना। (बुख़ारी जि. १ स. ८२०, सुनने अबी दाऊद स. ८३८)

तर्जमा: हर तारीफ अल्लाह के लिए हे ऐसी तारीफ जो बहुत पाकीज़ा और बा बरकत हो। ऐ हमारे रब! हम उस ख़ाने को काफी समझ कर या बिल्कुल रुख़्सत कर के या उस से ग़ैर मुहताज हो कर नहीं उठा रहे हैं।

३. अगर शुरू में 'बिस्मिल्लाह' पढ़ना भूल जाये तो यूँ पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَآخِرَهٗ. (ترمذی ج۲ص۱۷، شرح مسلم ج۲ص۲۷۱)

बिस्मिल्लाही अव्वलहु व आख़िरहु

(तिर्मिज़ी जि.२ स. १७ शरहे मुस्लिम जि. २ स. २७१)

४. जब किसी की दावत खाये तो यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ۔ (مسلم ج۲ص۱۸۴)

अल्लाहुम्म अतइम मन अतअमनी वस्क़ि मन सक़ानी। (मुस्लिम जि. २ स. १८४)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! जिस ने खिलाया मुझ को उसको खिला और जिस ने पिलाया मुझ को उसको पिला।

५. खाने के बाद यह दुआ पढ़े तो हदीसे पाक में मग़फ़िरत का वादा है।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنِیْ هٰذَا الطَّعَامَ وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّنِّیْ وَلَا قُوَّةٍ.(ترمذی ج۲ص۱۸۴،ابوداود ص۵۵۸)

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अतअमनी हाज़त तआम व रज़क़नीही मिन ग़ैरी हौलिम मिन्नी वला कुव्वतिन (तिर्मिज़ी जि.२ स. १८४, अबू दाऊद स. ५५८)

तर्जमा: सब तारीफें अल्लाह के लिए जिस ने मुझे यह खाना खिलाया और बिला कुव्वत व ताक़त के मुझे बख़्शा।

६. और यह दुआ भी पढ़े:

اَللّٰهُمَّ بَارِکْ لَنَا فِیْهِ وَأَطْعِمْنَا خَیْرًا مِّنْهُ۔

(سنن ترمذی ج۲ص۱۸۳/ابوداود ص۵۲۴)

अल्लाहुम्म बारिक लना फीही व अतइमना ख़ैरम मिनहु। (सुनने तिर्मिज़ी जि. २ स. १८३, अबू दाऊद स. ५२४)

तर्जमा: ऐ अल्लाह तू हमें इस में बरकत इनायत फरमा और हम को उस से बेहतर खिला।

७. खाने पीने के ज़रर से महफूज़ रहने की

दुआ: हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने फरमाया जब तुम खाना खाओ या पानी पीओ तो यह दुआ पढ़ लो तो तुम को कोई ज़रर और नुक़सान न होगा अगरचे उस में कोई ज़हर ही क्यों न हो।

بِسْمِ اللّٰهِ وبِاللّٰهِ الَّذِىْ لَا يَضُرُّهٗ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاءِ يَا حَىُّ يَا قَيُّوْمُ . (کنز العمال ج۱۹ص۱۸۱)

बिस्मिल्लाहि व बिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रुहु मअस्मिही शैउन फिल अर्ज़ि वला फिस्समाइ या हय्यु या क़य्यूम।

तर्जमा: अल्लाह के नाम से उस अल्लाह के नाम से जिस के नाम की बरकत से ज़मीन व आसमान की कोई शैय ज़रर नहीं पहुंचा सकती ऐ ज़िन्दा और क़ायम रहने वाले। (कंज़ुल अम्माल जि. १९ स. १८१)

पानी पीने की सुन्नतें

१. दायें हाथ से पीना क्योंकि बायें हाथ से शैतान पीता है। (मुस्लिम)

२. पानी पीने से पहले अगर खड़े हों तो बैठ जाना खड़े हो कर पीना मना है। (तिर्मिज़ी जि. २ स. १०, मुस्लिम)

३. बिस्मिल्लाह कह कर पीना और पी कर

अल हम्दु लिल्लाह कहना। (बुख़ारी)

४. तीन साँस में पीना और साँस लेते वक़्त बर्तन को मुंह से अलग करना। (तिर्मिज़ी जि.२ स. १०, मुस्लिम)

५. बर्तन के टूटे हुये किनारे की तरफ से न पीना। (अबू दाऊद)

६. मशक से मुंह लगा कर न पीना या कोई ऐसा बर्तन हो जिस से दफअतन पानी ज़्यादा आ जाने का ऐहतिमाल हो या यह अंदेशा हो कि मैं उस में कोई साँप या बिछू दाख़िल हो जाये। (तिर्मिज़ी जि. २ स. ११)

७. सिर्फ पानी पीने के बाद यह दुआ पढ़ना मसनून है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ سَقَانَا عَذْبًا فُرَاتًا بِرَحْمَتِهٖ وَلَمْ يَجْعَلْهُ مِلْحًا اُجَاجًا بِذُنُوْبِنَا. (روح المعانی/الدعاء ج۲/ص۸۹۹)

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी सक़ाना अज़्बन फुरातन बिरहमतिही व लम यजअलहु मिलहन उजाजन बिज़ुनूबिना।(रूहुल मआनी, अद्दुआ जि.२ स. ८९९)

तर्जमा : सब तारीफें अल्लाह पाक के लिए हैं जिस ने अपनी रहमत से हमें मीठा खुशगवार पानी पिलाया और हमारे गुनहों के सबब उसको खारा कड़वा नहीं बनाया।

८. पानी पी कर अगर दूसरों को देना है तो पहले दाहिने वाले को दें और फिर उसी तरतीब से दौर ख़त्म हो। इसी तरह चाये या शरबत भी पेश करें। (बुख़ारी, मुस्लिम)

९. दूध पीने के बाद यह दुआ पढ़ें :

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ. (ترمذی ج۲ ص۱۸۳، ابن ماجہ ص۳۳۸)

अल्लाहुम्म बारिक लना फीही व ज़िदना मिन्हु। (तिर्मिज़ी जि. २ स. १८३, इब्ने माजा स. ३३८)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! उस में तू हमें बरकत दे और यह हम को और ज़्यादा नसीब फरमा।

१०. पिलाने वाले को आख़िर में पीना। (तिर्मिज़ी जि. २ स. ११)

११. हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सर्द और शीरीं पानी ज़्यादा महबूब था। (ज़ादुल मआद)

१२. हुज़ूरे अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम वरज़िश के बाद तकान होने पर और खाना या फल खाने पर और जिमा या गुस्ल के बाद पानी पीने को अच्छा नहीं समझते थे। (ज़ादुल मआद)

ज़मज़म और वुज़ू का पानी

१३. आबे ज़मज़ब खड़े हो कर पीना।

(मुस्लिम जि. २ स. १७४२)

१४. आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने

इर्शाद फरमाया: ज़मज़म जिस मक़सद के लिए पिया जाये वह पूरा होता है।(इब्ने माजा, अद्दुउल मसनून)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु जब ज़मज़म पीते तो यह दुआ फरमाते:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ عِلْماً نَافِعاً وَرِزْقاً وَاسِعاً

وَشِفَاءً مِنْ كُلِّ دَاءٍ (مستدرک حاکم جلد۱ ص۴۷۳ الدعاء المسنون ص۳۸۸)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक इल्मन नाफिअन व रिज़्क़ंव्वासिअंव्व शिफाअम मिन कुल्लि दाइन।

तर्जमा: ऐ अल्लाह पाक मैं तुझ से नफा बख़्श इल्म का, कुशादा रिज़्क़ का और हर बीमारी से शिफा का सवाल करता हूँ। (मुसतदरक हाकिम जि. १. स. ४७३, अद्दुआउल मसनून स. ३८८)

१५. वुज़ू का बचा हुआ पानी खड़े हो कर पीना। (शमाइले तिर्मिज़ी)

बालों की सुन्नतें

१. नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सर मुबारक के बालों की लम्बाई कानों के दरमियान तक और दूसरी रिवायत के मुताबिक़ कानों तक और एक रिवायत के मुताबिक़ कानों की लौ तक थी। उनके क़रीब तक होने की भी रिवायत हैं।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

२. या तो सारे सर के बाल रखे या सारा सर

मुंडवाये। एक हिस्सा के बाल रखना और एक हिस्सा के मुन्डवाना या तरशवाना जायज़ नहीं। अल्लाह पाक हर मुसलमान को इस से बचाये। इसी तरह आगे की तरफ बड़े रखना और गर्दन की तरफ छोटे रखना जिस को अंग्रेज़ी बाल कहते हैं जायज़ नहीं। (ज़ादुल मआद, बहिश्ती ज़ेवर हिस्सा ११ स. ११५)

३. दाढी को बढ़ाने और मूंछों को कम करने के मुतअल्लिक़ हदीस में हुक्म वारिद है। दाढ़ी एक मुश्त से कम कतरवाने और मुंडाने को हराम फरमाया गया है। अल्लाह तआला हर मुसलमान को इस से महफूज़ रखे। (ज़ादुल मआद)

एक मुश्त दाढ़ी रखना वाजिब है और एक मुश्त की मिक़दार सुन्नत से साबित है। (बुख़ारी जि.२ स. ८७५)

नीज़ दाढ़ी की ग़ैर मामूली दराज़ी भी ख़िलाफे सुन्नत है।(अल इख़्तियार शरहुल मुख़्तार जि. ४ स १६७)

४. मूंछों को कतरने में मुबालग़ा करना सुन्नत है। (ख़साइले नबवी, तिर्मिज़ी)

५. ज़ेरे नाफ, बग़ल और नाक के बाल लेना। (बुख़ारी व मुस्लिम)

नोट : चालिस रोज़ गुज़र जायें और सफाई न करे तो गुनहगार होगा। और ऐसे शख़्स की नमाज़ मकरूह होगी। (बेहिश्ती ज़ेवर हिस्सा ११ स. १६,

दाढ़ी और अंबिया की सुन्नतें)

६. बालों को धोना, तेल लगाना और कंघा करना मसनून है लेकिन एक आध दिन बीच में छोड़ देना चाहिये। (शामाइले तिर्मिज़ी, तशरुत्तिब, मिश्कात)

सर में तेल लगाने का मसनून तरीक़ा

१. जब तेल डालने का इरादा हो तो बायें हाथ की हथेली पर तेल ले कर पहले अबरुओं पर फिर आँखों पर और फिर सर में तेल डालें।

२. सर में तेल डालने की इब्तिदा पेशानी की जानिब से करें। इसी तरह जब दाढ़ी में तेल लगायें तो पहले आँखों पर फिर दाढ़ी में लगायें। (ज़ादुल मआद)

३. तेल डालने से पहले बिस्मिल्लाह पढ़ना न भूलें वरना उस में शैतान का दख़्ल होता है। नाफे क़ुरैशी कहते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो तेल लगाये बिस्मिल्लाह न पढ़े तो ७० शैयातीन उस के साथ शरीक हो जाते हैं। (जामे सग़ीर स. १५० इब्ने सिनी स. १७४, शमाइले कुबरा जि. २ स. १७१)

कंघा करने की सुन्नत

४. कंघा करें तो पहले दायें जानिब से शुरू करें। (निसई जि. २ स. २९२)

५. कंघा करते हुये या हस्बे ज़रूरत जब भी आइना देखें तो यह दुआ पढ़ें:

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِیْ فَحَسِّنْ خُلُقِیْ۔

(شمائل ترمذی)

अल्लाहुम्म अन्त हस्सन्त ख़ल्क़ी फहस्सिन खुलुक़ी। (शमाइले तिर्मिज़ी)

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! जैसे आप ने मेरी सूरत अच्छी बनाई मेरे अख़्लाक़ भी अच्छे कर दीजिये।

नाखुन काटने से मुतअल्लिक़ चंद आदाब

१. जुमा के दिन जुमा की नमाज़ से पहले लब तराशना और नाखुन काटना सुन्नत है। (तिबरानी, मजमउज़्ज़वाइद जि. २ स. १७३)

२. नाख़ुन काटने के बाद उसे दफन कर देना मुस्तहब है। (फत्हुल बारी जि. १० स. ३४६)

३. गुस्ल ख़ाना और नापाक जगहों पर डालना मकरूह है।(मिरक़ात जि. ४ स. ४५६)

४. ना पाक जगहों में डालने से बीमारी का ख़तरा रहता है। (शामी जि. ६ स. ४०५)

५. नाखुन के तराशे को इधर उधर न डाले ताकि उस से कोई जादू न कर सके। (फत्हुल बारी जि. १० स. ३४६)

६. दाँत से नाखुन काटना मकरूह है। तंगीये रिज़्क़ और गुरबत का बाइस है। (इत्हाफ स. ४१२ जि.२)

७. दाँत से नाखुन न काटे कि उस से बरस की बीमारी पैदा होती है। (शामी जि.५ स. २८७)

८. रात में नाखुन काटने में कोई क़बाहत नहीं है। (शरहे अहया जि. २ स. ४१२)

९. नाखुन खुद भी काट सकता है और दूसरे से भी कटवा सकता है।(शरहे अहया जि. २ स. ४१२)

१०. मुजाहिदीन को दारुल हरब में नाख़ुन बढ़ाने की इजाज़त है। (शामी जि. ५ स. २८७, शमाइले कुबरा जि. २ स. २३१)

नाख़ुन काटने का मुस्तहब तरीक़ा

अल्लामा नववी रहमतुल्लाह अलैह ने शरहे मुस्लिम मे, अल्लामा ऐनी ने उम्दा में और हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैह ने फतहुल बारी में लिखा है कि नाखुन काटने की यह तरतीब मुस्तहब है। अव्वलन दायें हाथ की अंगुश्ते शहादत, उसके बाद बीच वाली, उसके बाद उसके बाद वाली फिर सब से छोटी उंगली फिर आख़िर में अंगूठा। इसी तरह बायें हाथ के नाखुन काटे।

इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह अलैहि ने अहया में लिखा है कि दायें हाथ के अंगूठे को बाक़ी रखे, बायें अंगूठे के बाद दायें अंगूठे का नाखुन काटे (गोया यह एक दूसरा तरीक़ा हुआ) लेकिन हाफिज़ इब्ने हजर रहमतुल्लाह अलैह ने लिखा है कि दायें को बायें से

क़ब्ल ही काट ले (जैसा कि ऊपर के तरीक़ा में मज़कूर है) हाफिज़ ने नाख़ुन काटने का एक और तरीक़ा लिखा है कि दायें हाथ की छोटी उंगली से शुरू करे और बायें हाथ की छोटी उंगली पर ख़त्म करे और पैर के नाख़ुन काटने की तरतीब हाफिज़ ने यह लिखी है कि दायें पैर की छोटी उंगली से शुरू करे और अंगूठे पर ख़त्म करे फिर बायें पैर के अंगूठे से शुरू कर के छोटी उंगली पर ख़त्म करे।

(शमाइले कुबरा जि. २ स. २२९)

ख़ुलासा यह है कि हाथ की उंगलियाँ मुक़द्दम होंगी पैर की उंगलियों पर और हर एक का दायाँ रुख़ पहले होगा बायें पर और शरह अहया में है कि किसी भी तरह नाख़ुन काटेगा तो नाख़ुन काटने की सुन्नत आदा हो जायेगी। (जि.२ स. ४१२) अलबत्ता मुस्तहब तरीक़ा से काटना बेहतर हैं। (बहवाला शमाइले कुबरा जि. २ स. २२९)

सुरमा लगाने के तीन मसनून तरीक़े

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुरमा लगाने के मुतअल्लिक़ तीन तरीक़े साबित हैं:

१. दोनों आँखों में तीन, तीन सलाई लगाये

(शमाइले तिर्मिज़ी)

२. बायें में दो सलाई।(मजमउज़्ज़वाइद जि.५ स.९९)

३. दोनों आँखों में दो दो लगाये फिर एक

दोनों आँखों में मुशतरक। इसी तरह इसका भी इख़्तियार है कि पहले एक आँख में मिक़दार मसनून लगाये फिर दूसरी आँख में लगाये।

या एक मर्तबा दायें में लगाये फिर बायें में लगाये फिर दायें में फिर बायें में।

अल्लामा मनावी रहमतुल्लाह अलैह ने ज़िक्र किया है कि बेहतर तीसरा तरीक़ा है कि उस में दायें से इब्तिदा व इन्तेहा है। (जमउल वसाइल स. १०३, १०४, शमाइले कुबरा जि. २ स. १४१)

सफर की सुन्नतें

१. सफर शुरू करने से पहले घर में दो या चार रकअतें पढ़ लेना मसनून है। हदीस पाक में उस की ताकीद है। हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु नबीये पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नक़ल फरमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "जब तुम घर आओ तो दो रकअत नमाज़ पढ़ो, आमद के तमाम ना पसंदीदा उमूर से महफूज़ रहोगे और घर से निकलो तो दो रकअत नमाज़ पढ़ो सफर की तमाम ना पसंदीदा बातों से महफूज़ रहोगे। (मजमउज़्ज़वाइद जि.२ स. २८७)

हज़रत मोअती बिन मिक़दाम कहते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "आदमी अपने घर वालों में सफर के इरादे के वक़्त

जो दो रकअत नमाज़ पढ़ता है उस से बेहतर कोई नायब नहीं छोड़ जाता। (इब्ने अबी शीबा जि. २ स. ८७, अज़कारे नववी स. २५०)

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि नबीये पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "कि सफर करने वाला अपने अहल व अयाल में अपना जानशीन और कार परदाज़ जो खुदाये तआला को महबूब है उन चार रकअत से बढ़ कर नहीं छोड़ जाता जिसे वह अपने घर में पढ़े। (इतहाफ जि. ६ स. ४०२)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु जब सफर के इरादे से घर से निकलते तो मस्जिद में जा कर दो रकअत नमाज़ पढ़ते।(इब्ने अबी शीबा जि. २ स. ८१)

फायदा : जब सफर का इरादा करे और घर से निकलने लगे तो दो या चार रकअत नमाज़ पढ़ लेना मसनून है। उसके बड़े फवाइद व बरकात हैं।

अफसोस कि आज यह मसनून तरीक़ा उम्मत से जाता रहा कहीं सफर में जाना हुआ सामान उठाया अहल व अयाल से गुफ्तगू की और चल दिये अवाम तो अवाम अहले इल्म व फज़ल भी उस में मुतसाहिल हैं। अल्लाह पाक इस सुन्नत को मुआशरे में ज़िन्दा करने की तौफीक़ अता फरमाये।

इमाम नववी रहमतुल्लाह अलैह ने लिखा है

कि सफर की दो रकअत नमाज़ में अव्वल में सूरहये काफिरून और दोम में 'कुल हुवल्लाहु अहद' पूरा पढ़े और बाज़ों ने कहा अव्वल में सूरये फलक़ पूरा और दूसरी में सूरहये नास पूरा पढ़े। जब सलाम से फ़ारिग़ जो जाये तो आयतल कुर्सी पढ़े। रिवायत में आया है कि जो शख़्स अपने घर से निकलने से पहले आयतल कुर्सी पढ़ लेगा वापसी तक तमाम मकारा और ना पसंदीदा बातों से महफ़ूज़ रहेगा।

(अज़कारे नववी स. १८७)

उसके बाद सफर की दुआयें पढ़े जो दुआओं के ज़ेल में हैं और जो बड़ी बरकात और दीनी व दुनियवी फवाइद की हामिल हैं। (शमाइले कुबरा जि. २ स. २२८)

२. जहाँ तक हो सके सफर में कम अज़ कम दो आदमी जायें तनहा आदमी सफर न करे अलबत्ता ज़रूरत और मजबूरी में कोई हर्ज नहीं कि तनहा आदमी सफर करे। (ज़ादुल मआद)

सफर में कोई जाये तो उसको दुआ दे

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक शख़्स आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया और कहा कि मैं सफर का इरादा रखता हूँ मुझे कुछ नसीहत फरमा दीजिये। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसका हाथ पकड़ा और फरमाया।

فِیْ حِفْظِ اللّٰہِ وَفِیْ کَنَفِہٖ زَوَّدَکَ اللّٰہُ التَّقْوٰی وَغَفَرَ ذَنْبَکَ وَوَجَّھَکَ فِی الْخَیْرِ حَیْثُ مَا کُنْتَ وَاَیْنَ مَا کُنْتَ۔ (ترمذی صفحہ ۳۴۴ بسند حسن لغیرہ/الدعاالمسنون ۳۴۱)

फी हिफ्ज़िल्लाही व फी कनफिही ज़व्वदकल्लाहुत्तक़वा व ग़फर ज़ंबक व वज्जहक फिल ख़ैर हैसु मा कुन्त व अैन मा कुन्त। (मिर्मिज़ी स. ३४४ बसनदिन हीसन बिग़ैरिही, अद्दुआउल मसनून स. ३४१)

तर्जमा : खुदा की हिफाज़त और उसकी पनाह में। अल्लाह पाक तुझे तक्वा का तोशा दे तेरे गुनाह माफ फरमाये। जहाँ भी हो तुझे ख़ैर के रास्ते पर गामज़न रखे।

३. सुन्नत : जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को रुख़्सत फरमाते तो यह दुआ देते:

اَسْتَوْدِعُ اللّٰہَ دِیْنَکُمْ وَاَمَانَتَکُمْ وَخَوَاتِیْمَ اَعْمَالِکُمْ۔

अस्तौदिउल्लाह दीनकुम व अमानतकुम व ख़वातिम आमालिकुम।

तर्जमा : मैं तुम्हारा दीन, तुम्हारी अमानत, अहल व अयाल और कामों का अंजाम खुदा के सुपुर्द करता हूँ। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

सवारी और सफर की दुआयें

४. सवारी के लिए रिकाब में पावँ रखें तो बिस्मिल्लाह कहें। (तिर्मिज़ी)

५. सवारी पर अच्छी तरह बैठ जायें तो तीन मर्तबा 'अल्लाहु अक्बर कहें फिर यह दुआ पढ़ें:

سُبْحَانَ الَّذِیْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا کُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ۔ (ابوداؤد)

सुबहानल्लज़ी सख़्ख़रलना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक्रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुनक़लिबून। (अबू दाऊद)

तर्जमा : पाक है वह ज़ात जिस ने हमारे ताबे बनाई यह सवारी और नहीं थे हम उसको क़ाबू करने वाले और बेशक हम अपने रब की तरफ लौटने वाले हैं।

६. फिर यह दुआ पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْأَلُکَ فِیْ سَفَرِنَا هٰذَا الْبِرَّ وَالتَّقْوٰی وَمِنَ الْعَمَلِ مَاتَرْضٰی اَللّٰهُمَّ هَوِّنْ عَلَیْنَا سَفَرَنَا هٰذَا وَاطْوِعَنَّا بُعْدَهٗ، اَللّٰهُمَّ اَنْتَ الصَّاحِبُ فِی السَّفَرِ وَالْخَلِیْفَةُ فِی الْاَهْلِ، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ وَّعْثَاءِ السَّفَرِ وَکَآبَةِ الْمَنْظَرِ وَسُوْءِ الْمُنْقَلَبِ فِی الْمَالِ وَالْاَهْلِ وَالْوَلَدِ وَالْحَوْرِ بَعْدَ الْکَوْرِ وَدَعْوَةِ الْمَظْلُوْمِ۔ (مسلم/زادالمعاد/اذکار نووی ج۱ص۴۳۴)

अल्लाहुम्म इन्ना नस्अलुक फी सफरिना हाज़ल बिर्र वत्तक़्वा व मिनल अमलि मा तरज़ा अल्लाहुम्म

हव्विन अलैना सफरना हाज़ा वतविअन्ना बुदह, अल्लाहुम्म अन्तस्साहिबु फिस्सफरी वल ख़लीफतु फिल अहली, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिंव्वअसा इस्सफरी व कआबतिल मंज़री व सूइल मुन्क़लबी फिल माली वल अहली वल वलदी वल हौरी बादल कौरी व दअवतिल मज़लूमी। (मुस्लिम, ज़ादुल मआद, अज़कारे नववी जि. १ स. ४३४)

तर्जमा : ऐ अल्लाह! हम तुझ से अपने उस सफर में नेकी और तक़्वा का और ऐसे अमल का जिसे तू पसंद करता है सवाल करते हैं। ऐ अल्लाह ! आसान कर दीजिये हम पर इस सफर को और तैय कर दीजिये हम पर दराज़ी उसकी। ऐ अल्लाह! आप ही रफीक़े सफर हैं और ख़बर गीराँ और नायब हैं घर बार में। या अल्लाह! मैं पनाह चाहता हूँ आप की सफर की मशक़्क़त से और बुरी हालत देखने से और वापस आ कर बुरी हालत पाने से माल में और घर में बच्चों में और कमाल के बाद तनज़्ज़ुल से और मज़लूम की बद दुआ से।

७. हस्बे ज़ेल चंद ख़ास दुआयें पढ़ें:

सवारी पर बैठ जाने के बाद बिस्मिल्लाह पढ़े (फिर मज़्कूरा बाला दुआयें पढ़ने के बाद) तीन मर्तबा अल्लाहु अक्बर कहे, तीन बार अल हम्दु लिल्लाह पढ़े फिर यह दुआ पढ़ कर मुसकुराये।

لَااِلٰــــهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَکَ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ
فَاغْفِرْلِیْ ذُنُوْبِیْ اِنَّهٗ لَایَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ.

ला इलाह इल्ला अन्त सुबहानक इन्नी ज़लमतु नफ्सी फग़्फिरली ज़ुनूबी इन्नहू ला यग्फ़िरु ज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त।

तर्जमा: नहीं है कोई माबूद सिवाये आप के। पाक हैं आप, मैं ने ज़ुल्म किया अपनी जान पर (गुनाह किया) पस हमें माफ फरमा दीजिये कोई गुनाह माफ नहीं कर सकता सिवाये आप के। (अबू दाऊद स. ३५० बहवाला अद्दुआउल मसनून स. ३४५)

जब सफर का इरादा करे तो अपने घर के दरवाज़े के दोनों बाज़ू पकड़ कर ११ बार 'कुल हुवल्लाहु अहद' पढ़े तो इंशा अल्लाह सफर से वापसी तक अल्लाह पाक उसका निगहबान रहेगा। (अद्दररुल मंसूर जि. ६ स. ६७५)

सफर के दौरान पाँच सूरतें:

"قُلْ یٰاَیُّهَا الْکَافِرُوْنَ". اِذَا جَآءَ نَصْرُ اللّٰهِ، قُلْ هُوَ
اللّٰهُ، قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ، قُلْ اَعُوْذُبِرَبِّ النَّاسِ"

'कुल या अय्युहल काफिरून' इज़ा जाअ नसरुल्लाही, कुल हुवल्लाहु, कुल अऊज़ु बिरब्बिल फलक़, कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास' इस तरह पढ़े कि हर सूरत को 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' से शुरू

किया करे और बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' पर ख़त्म किया करे यानी आख़िर में सूरये नास के बाद बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम पढ़े। (अबू यअली, अद्दुआउल मसनून स. ३४५)

८. मुसाफिरत में ठहरने की ज़रूरत पेश आये तो सुन्नत यह है कि रास्ता से हट कर क़याम करें रास्ता में पड़ाव न डालें ताकि आने जाने वालों का रास्ता न रुके और न उकनो तकलीफ हो। (मुस्लिम जि. २ स. ४४१)

९. सफर के दौरान जब सवारी बलंदी पर चढ़े तो तीन मर्तबा 'अल्लाहु अकूर' कहें। (ज़ादुल मआद, अबू दाऊद स. ३५० अज़कार स. १८९)

१०. जब सवारी नशेब और पस्ती में उतरने लगे तो तीन मर्तबा 'सुबहानल्लाह' कहें। (ज़ादुल मआद, अबू दाऊद स. ३५०, अज़कार स. १८९)

जब किसी बस्ती या आबादी में दाख़िल हो तो क्या पढ़े

११. हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी बस्ती में दाख़िल होते तो यह दुआ पढ़ते:

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْئَلُكَ مِنْ خَيْرِ هٰذِهٖ وَخَيْرَ مَا جُمِعَتْ فِيْهَا وَاَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّمَا جُمِعَتْ فِيْهَا اَللّٰهُمَّ

ارْزُقْنَا جَنَاهَا وَاَعِذْنَامِنْ وَبَاهَا وَحَبِّبْنَا اِلٰى اَهْلِهَا وَحَبِّبْ صَالِحِىْ اَهْلِهَا اِلَيْنَا. (اذکار، صفحہ۱۹۲، نزل الابرار، صفحہ۳۳۶، ابن سنی ،صفحہ ۵۲۷ الدعاء المسنون ص ۳۵۳)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक मिन ख़ैरि हाज़िही व ख़ैर मा जुमित फीहाव अऊज़ुबिक मिन शर्रिहा व शर्रि मा जुमित फीहा अल्लाहुम्मरज़ुक़ना जनाहा व अइज़्ना मिन वबाहा व हब्बिबना इला अहलिहा व हब्बिब सालिही अहलिहा इलैना। (अज़ाकर स. १९२, नज़लल अबरार, स. ३३६, इब्ने सिनी स. ५२७, अद्दुआउल मसनून स. ३५३)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! मैं उसकी भलाई और जो भलाई आप ने उस में जमा किया है, मैं उस का सवाल करता हूँ, और उसकी बुराई से जो आप ने उस में जमा किया है उसकी बुराई से पनाह मांगता हूँ, ऐ अल्लाह पाक इस बस्ती के फवाइद से हमें नवाज़ और उसकी बुराई से हमारी हिफाज़त फरमा, और हमें बस्ती वालों का महबूब बना, और उसके नेक लोगों को हमारा महबूब बना।

हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी बस्ती में दाख़िल होते तो तीन मर्तबा यह पढ़ते:

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهَا.

अल्लाहुम्म बारिक लना फीहा।

तर्जमा: ऐ अल्लाह हमें इस बस्सती में बरकत अता फरमा।

फिर यह फरमाते:

اَللّٰھُمَّ ارْزُقْنَا جَنَاھَا وَجَنِّبْنَاوَبَاھَا وحَبِّبْنَا اِلٰی اَھْلِھَاوَحَبِّبْ صَالِحِیْ اَھْلِھَا اِلَیْنَا.

(طبرانی، نزل الابرار صفحہ ۲۳۶، مجمع الزوائد، جلد ۱۰، صفحہ ۱۳۴، الدعاء المسنون)

अल्लाहुम्मरज़ुक़ना जनाहा व जन्निबना वबाहा व हब्बिना इला अहलिहा व हब्बि सालिही अहलिहा इलैना। (तिबरानी, नज़लल अबरार स. २२६, मजमउज़्ज़वाइद जि. १० स. १३४, अद्दुआउल मसनून)

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! हमें उस बस्ती के मुनाफे अता फरमा, और उसकी वबा से हमारी हिफाज़त फरमा, और हमें बस्ती वालों के नज़दीक महबूब बना और बस्ती के नेकों को हमारा महबूब बना।

१२. रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जब सफर की ज़रूरत पूरी हो जाये तो अपने घर लौट आये सफर में बिला ज़रूरत ठहरना अच्छा नहीं। (ज़ादुल मआद)

१३. दूर दराज़ के सफर से बहुत दिनों बाद लौटे तो सुन्नत यह है कि अचानक घर में दाख़िल न हो बल्कि अपने आने की ख़बर करे और कुछ

देर बाद घर में दाख़िल हो, ऐसे ही रात गये देर से घर आये तो उसी वक़्त घर में न जाये बल्कि बेहतर है सुबह मकान में जाये, अलबत्ता अहले ख़ाना तुम्हारे देर से आने से आगाह हों और उनको तुम्हारा इंतेज़ार भी हो तो उसी वक़्त घर में दाख़िल होने में कोई हर्ज नहीं इन मसनून तरीक़ों पर अमल करने से दीन व दुनिया की भलाई हासिल होगी। (ज़ादुल मआद)

१४. सफर में कुत्ता और घुंघरू साथ रखने की ममानिअत भी आई है क्योंकि उनकी वजह से शैतान पीछे लग जाता है और सफर की बरकत जाती रहती है। (मुस्लिम जि. १ स. २०२)

१५. सफर से लौट कर आने वाले के लिए यह मसनून है कि घर में दाख़िल होने से पहले मस्जिद में जा कर दो रकअत नमाज़ पढ़े। (ज़ादुल मआद)

१६. जब सफर से वापस आये तो यह दुआ पढ़े:

آئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ۔ (مسلم ج۱ص۴۳۵)

आइबून ताइबून आबिदून लिरब्बिना हामिदून।

(मुस्लिम जि.१ स. ४३५)

तर्जमा : हम लौटने वाले हैं, तौबा करने वाले हैं, अल्लाह की बंदगी करने वाले हैं, अपने रब की हम्द करने वाले हैं।

१७. जुमेरात के दिन सफर में जाना मसनून

है शंबा (सनीचर) के दिन भी मुस्तहब है।

निकाह की सुन्नतें

१. मसनून निकाह वह है जो सादा हो जिस में हंगामा या ज़्यादा तकल्लुफात और जहेज़ वग़ैरह के सामान का झगड़ा न हो। (मिश्कात)

२. निकाह के लिए नेक और सालेह फर्द को तलाश करना और मंगनी या पैग़ाम भेजना मसनून है। (मिश्कात स. २६७)

३. जुमा के दिन मस्जिद में और शव्वाल के महीने में निकाह करना पसंदीदा और मसनून है। (मिरक़ात जि. ६ स. ६१०)

४. निकाह को मशहूर करना और निकाह के बाद छोहारे या खजूर लुटाना या तक़्सीम करना सुन्नत है। (मिश्कात)

५. हस्बे इस्तेताअत महर मुक़र्रर करना सुन्नत है। (मिश्कात)

६. शादी की पहली रात जब बीवी से तनहाई हो तो बीवी की पेशानी के ऊपर के बाल पकड़ कर यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ إِنِّىْ أَسْأَلُكَ خَيْرَهَا وَخَيْرَمَا فِيْهَا وَأَعُوْذُ

بِكَ مِنْ شَرِّهَا وَشَرِّمَا فِيْهَا. (ابوداؤد ص ۲۹۳/ابن سنی ۵۵۳)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैरहा व ख़ैर मा

फ़ीहा व अऊज़ुबिक मिन शर्रिहा व शर्रि मा फ़ीहा।
(अबू दाऊद स. २९३ इब्ने सिनी ५५३)

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं तुझ से उसकी भलाई और उसकी आदात व अख़्लाक़ की भलाई का सवाल करता हूँ और उसकी बुराई और उसकी आदात व अख़्लाक़ की बुराई से तेरी पनाह मांगता हूँ।

७. जब बीवी से सोहबत का इरादा करे तो यह दुआ पढ़ ले वरना शैतान का नुतफा भी मर्द के नुतफा के साथ अंदर चला जाता है और औलाद शैतान की ख़सलतों में मुबतला होगी। दुआ यह है:

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ جَنِّبْنَا الشَّيْطَانَ وَجَنِّبِ الشَّيْطَانَ

مَارَزَقْتَنَا. (بخاری ج۲/۹۴۵/ابن ابی شیبہ ۳۹۴)

बिस्मिल्लाही अल्लाहुम्म जन्निबनश्शैतान व जन्निबिश्शैतान मा रज़क़तना। (बुख़ारी जि. २ स. ९४५, इब्ने अबी शीबा स. ३९४)

तर्जमा : मैं अल्लाह पाक का नाम ले कर यह काम करता हूँ और ऐ अल्लाह ! हम को शैतान से बचा और जो औलाद तू हम को दे उसको भी शैतान से दूर रख।

नोट : इस दुआ को पढ़ लेने के बाद जो औलाद होगी उसको शैतान कभी ज़रर न पहुंचा सकेगा।

८. इंजाल के वक़्त यह दुआ दिल में पढ़े:

اَللّٰهُمَّ لَاتَجْعَلْ لِلشَّيْطَانِ فِيْمَا رَزَقْتَنَا نَصِيْبًا

(ابن ابی شیبہ ۱۰/ص ۳۹۵)

अल्लाहुम्म ला तजअल लिश्शैतानि फीमा रज़क्तना नसीबा।

तर्जमा: ऐ अल्लाह! जो आप ने हमें नवाज़ा है उस में शैतान का हिस्सा न बना। (इब्ने अबी शीबा जि. १० स. ३९५)

वलीमा का खाना

९. शबे उरूसी गुज़ारने के बाद अपने अज़ीज़ों, दोस्तों, रिश्तेदारों और मिसकीनों को वलीमा का खाना खिलाना सुन्नत है। वलीमा के लिए ज़रूरी नहीं है कि बड़े पैमाने पर खाना तैयार कर के खिलाये, थोड़ा खाना हस्बे इसतिताअत तैयार कर के दोस्तों, अज़ीज़ों वग़ैरह को थोड़ा थोड़ा खिलाना भी अदायेगिये सुन्नत के लिए काफी है। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, बहिश्ती ज़ेवर)

बहुत बुरा वलीमा

बहुत ही बुरा वलीमा वह है कि मालदार व दुनियादार लोगों को तो बुलाया जाये मगर ग़रीब, मिसकीन, मुहताज और दीनदार लोगों को धुतकार दिया जाये। ऐसे बुरे वलीमा से बचना चाहिये।

वलीमा में अदायगिये सुन्नत की निय्यत रखो। दीनदार, ग़रीब और मुहताज लोगों को बुलाओ, अमीरों में से भी जिसको दिल चाहे बुलाओ, मगर ग़रीबों को धक्के न दो जो वलीमा नामवरी और दिखावे के लिए या लोगों की तारीफ के लिए किया जाये उसका कोई सवाब नही बल्कि अल्लाह पाक की नाराज़गी और गुस्सा का अंदेशा है और उम्मुल मुमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़ि अल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि मेरे रुख़्सती के मौक़े पर वलीमा में न कोई ऊँट ज़िबह किया गया और न कोई बकरी, पस जो रोज़ाना हज़रत सअद बिन उबादा रज़ि अल्लाहु अन्हु के यहाँ से एक प्लेट खाना आता था वही सब ने मिल कर खा लिया बस वलीमा हो गया।
(शमाइले कुबरा जि. ११ स. २०५, सुबलुल हुदा जि. ११ स. १६७)

१०. मर्दों के लिए साढ़े चार माशा वज़न से कम की चाँदी की अंगूठी पहनने की इजाज़त है और सोने की अंगूठी मर्दों के लिए बुल्किुल हराम है।

(मिश्कात स. ३७८)

११. अंगूठी दायें हाथ की सब से छोटी यानी ख़िनसिर में पहनना सुन्नत है। उसी को इमाम बुख़ारी रहमतुल्लाह ने असह माफिल बाब यानी बाब में सब से ज़्यादा सही और राजेह क़रार दिया है।

(उम्दतुल क़ारी जि. २२ स. ३७, जमा स. १५०)

नोट : उम्दतुल क़ारी में है कि ख़िनसिर के अलावा में पहेनना मकरूह है। (उम्दतुल क़ारी जि. २२ स. ३७)

१२. औरतों का मेंहदी इस्तेमाल करना सुन्नत है। (शमाइले कुबरा)

१३. वलीमा की दावत में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने औरतों को नहीं बुलाया था।

१४. जिस दावत में मर्दों और औरतों का इख़्तिलात हो बक़ौल हज़रत मौलाना मुहम्मद तक़ी उसमानी रह० उस में शरीक होना मना है।

राज़दारी की सुन्नतें

१. बीवी के साथ खेल मज़ाक करना। (तिर्मिज़ी)

२. बीवी के साथ मुजामिअत करना।(मुस्लिम, इब्ने माजा)

३. अगर एक बार मुजामिअत के बाद दोबरा मुंजामिअत की ज़रूरत हो तो बेहतर है कि पहले गुस्ल कर ले वरना वुज़ू भी काफी है। और कम अज़ कम इस्तिनजा कर लेना तो बड़ी निफासत की बात है। (जमउल फवाइद)

४. हर मर्तबा गुस्ल कर लेना अफज़ल है और अख़ीर में एक गुस्ल भी ठीक है। (मिश्कात)

५. फराग़त पर गुस्ल करना तो दोनों पर फर्ज़ हो ही जाता है अलबत्ता उस वक़्त गुस्ल कर के

सोना अफज़ल है। (बहिश्ती ज़ेवर)

६. अगर गुस्ल करने को जी न चाहे तो वुज़ू कर के सोना चाहिये।

७. यह भी न हो सके तो इस्तिनजा कर के सोना चाहिये। (बहिश्ती ज़ेवर)

८. अगर यह भी न हो सके तो तयम्मुम कर के भी सोना हदीस में आया है और अगर ऐसे ही सो जायें तो ऐसा भी साबित है। (बहिश्ती ज़ेवर)

नोट : शरीअत में तंगी नहीं है, मुनदर्जा बाला हदीस से मालूम होता है कि अल्लाह पाक ने अहकाम में बहुत आसानी पैदा की है।

तंबीह : जो तरतीब बयान की गई है वह सुबहे सादिक़ होने से पहले है। सुबहे सादिक़ हो जाने के बाद गुस्ल करने में देर नहीं लगानी चाहिये।

९. ऐसी हालत में जबकि गुस्ल फर्ज़ हो गया हो खाना पीना (जैसे रमज़ानुल मुबारक में सेहरी के वक़्त) दुरुस्त है। हाथ धो कर कुल्ली कर के खाना पीना चाहिये।

१०. जब बीवी को माहवारी का ख़ून आ रहा हो तो उस से सोहबत करना हराम है। पास बैठना, इकट्ठा सोना वग़ैरह जायज़ है, नाफ से घुटनों तक बदन के अंदर हाथ न डालना चाहिये। अगर नाफ

से घुटनों तक कपड़ा बंधवा दिया जाये तो कपड़े के ऊपर से बाक़ी तमाम बदन से नफा उठाना जायज़ है, ख़्वाह बाक़ी बदन नंगा ही हो।

११. मुजामिअत करते वक़्त या गुस्ल फ़र्ज़ हो जाने के बाद गुस्ल करने से पहले मर्द और औरत को ख़ूब पसीना आता है वह पाक है वह पसीना कपड़ों के लगने से नापाक नहीं होते उन कपड़ों से नमाज़ पढ़ना जायज़ है अलबत्ता मनी नापाक है उसको धोना चाहिये। (मुअत्ता)

१२. जिन कपड़ों में मुजामिअत की है वह कपड़े पाक ही रहते हैं सिर्फ इतनी जगह नापाक होती है जितनी जगह मनी लगी है। इतनी जगह को पाक कर के उन कपड़ों में नमाज़ पढ़ना दुरुस्त है अगरचे वह कपड़े धोने के बाद गीले ही हों। (अबू दाऊद)

पैदाइश के वक़्त की सुन्नतें

१. जब बच्चा पैदा हो तो उसके दायें कान में अज़ान और बायें में तक्बीर कहना।(ज़ादुल मआद, तबरानी)

२. जब बच्चा सात रोज़ का हो जाये तो उसका अच्छा नाम रखना। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह पाक के नज़दीक पसंदीदा नाम अब्दुल्लाह और अब्दुर्रहमान है या अंबियाए किराम अलैहिमुस्सलाम के नामों में से हो।

(अबू दाऊद स. ६७६ शमाइले कुबरा स. ३७४)

३. सातवें रोज़ अक़ीक़ा करना। (अबू दाऊद, शमाइले कुबरा)

अक़ीक़ा की दुआ और उसकी सुन्नतें

अक़ीक़ा करना सुन्नत है कि लड़का हो तो दो बकरा या दो बकरी और लड़की हो तो एक बकरा या एक बकरी ज़िबह करे। अगर दो न हो सके तो एक भी काफी है। (तिर्मिज़ी, मुसनदे अहमद)

अक़ीक़ा के जानवर को ज़िबह करते वक़्त यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ هٰذِهٖ عَقِيْقَةُ اِبْنِىْ..........دَمُهَا بِدَمِهٖ وَلَحْمُهَا بِلَحْمِهٖ وَعَظْمُهَا بِعَظْمِهٖ وَجِلْدُهَا بِجِلْدِهٖ وَشَعْرُهَا بِشَعْرِهٖ اَللّٰهُمَّ جْعَلْهَا فِدَاءً لِاِبْنِىْ مِنَ النَّارِ.

اِنِّىْ وَجَّهْتُ وَجْهِىَ لِلَّذِىْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّ مَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ اِنَّ صَلَاتِىْ وَنُسُكِىْ وَمَحْيَاىَ وَمَمَاتِىْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ. لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ. اَللّٰهُمَّ مِنْكَ وَلَكَ.

अल्लाहुम्म अक़ीक़तु इब्नी......दमुहा बिदमिही व लहमुहा बिलहमिही व अज़्मुहा व अज़्मिही व जिल्दुहा बिजिल्दिही व शअरुहा बिशअरिही अल्लाहुम्मजअलहा फिदाअन लिइब्नी मिनन्नार।

इन्नी वज्जहतु वजहिया लिल्लज़ी फतरस्स-मावाती वल अर्ज़ि हनीफंव्वमा अना मिनल मुश्रिकीन इन्न सलाती व नुसुकी व महयाय व ममाती लिल्लाही रब्बिल आलमीन। ला शरीक लहू व बिज़ालिक उमिरतु व अना मिनल मुस्लिमीन। अल्लाहुम्मा मिन्क व लक।

फिर बिस्मिल्लाह अल्लाहु अक्बर कह कर ज़िबह करे। (माला बुद्दा मिन्हु स. १७४)

अगर सातवें रोज़ अक़ीक़ा न कर सके तो चौदहवें रोज़ वरना इकीसवें रोज़ कर दे उसके बाद अक़ीक़ा करने में वह फज़ीलत हासिल नहीं होती अलबत्ता उस वक़्त लोगों को खाना खिलाने का सवाब तो मिल जायेगा। (शमाइले कुबरा)

४. बच्चे का सर मूंढ कर बालों के वज़न के बराबर चाँदी ख़ैरात करना। (तिर्मिज़ी)

५. सर मूंढने के बाद बच्चे के सर में ज़ाफरान लगा देना। (अबू दाऊद)

६. अक़ीक़ा का गोश्त कच्चा या पका कर तक़सीम किया जा सकता है। (रद्दुल मुख़्तार)

७. अक़ीक़ा का गोश्त अमीर ग़रीब सब ही खा सकते हैं।

८. जब बच्चा बोलने लगे तो कलिमा सिखाये।

९. 'तहनीक' करना यानी किसी बुज़ुर्ग से

छूहारा चबवा कर बच्चे के मुंह में डालना या चटाना और दुआ कराना। (बुख़ारी व मुस्लिम)

१०. जब बच्चा सात साल का हो जाये तो उसे नमाज़ व दीगर दीन की बातें सिखाना।(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

११. जब बच्चा दस साल का हो जाये तो सख़्ती के साथ डाँट कर नमाज़ पढ़वाना और ज़रूरत पेश आये तो सज़ा देना।(अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

तंबीह : आज कल लाड प्यार में बच्चों को बिगाड़ा जा रहा है और यूँ कह कर अपने आप को तसल्ली दे लेते हैं कि बड़ी हो कर बच्चा सही जो जायेगा। याद रखना चाहिये कि अगर बुनियाद टेढ़ी हो जाये तो उस पर तामीर होने वाली इमारत टेढ़ी ही होगी। इस लिए इब्तिदा से ही अख़्लाक़े हसना से औलाद को मुज़य्यन करना चाहिये वरना बाद में पछतावा होगा।

बीमारी, इलाज और इबादत की सुन्नतें

१. बीमारी में इलाज कराना मसनून है। इलाज कराता रहे मगर बीमारी से शिफा में नज़र अल्लाह ही पर रखे। (ज़ादुल मआद)

२. कलौंजी और शहद के साथ इलाज करना सुन्नत है। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि अल्लाह पाक ने उन दोनों चीज़ों में शिफा रखी है। उन दोनों की तारीफ में बहुत सी

हदीसें आई हैं। (बुख़ारी, मुस्लिम, मिश्कात, इब्ने माजा, बेहक़ी)

३. इलाज के दौरान नुक़सान पहुंचाने वाली चीज़ों से परहेज़ करना। (ज़ादुल मआद)

हालते मर्ज़ की दुआ

जो शख़्स हालते मर्ज़ में चालिस मर्तबा यह दुआ पढ़े अगर मरा तो शहीद के बराबर सवाब मिलेगा और अगर अच्छा हो गया तो तमाम गुनाह बख़्शे जायेंगे। वह दुआ यह है:

لَااِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَکَ اِنِّی کُنْتُ مِنَ الظّٰالِمِیْنَ.

ला इलाह इल्ला अन्त सुबहानक इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन।

और अगर मर्ज़ में यह दुआ पढ़े और मर जाये तो उसको दोज़ख़ की आग न लगेगी। वह दुआ यह है:

لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ اَللّٰهُ اَکْبَرُ، لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰـهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِیْکَ لَـهٗ، لَا اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَلَا حَوْلَ وَلَا قُوَّةَ.

(ترمذی، نسائی، ابن ماجہ کذا فی احکام المیت للشیخ عبدالحی نوراللہ مرقدہٗ ص ۱۸)

ला इलाह इल्लल्लाहु अल्लाहु अक्बर, ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहु ला शरीक लहू, ला इलाह

इल्लल्लाहु लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु ला इलाह इल्लल्लाहु व ला हौला व ला कुव्वत। (तिर्मिज़ी, निसई, इब्ने माजा कज़ा फी अहकामिल मैय्यत स. १८)

४. अपने बीमार भाई की इयादत के लिए जाना सुन्नत है। (ज़ादुल मआद)

इयादत की फज़ीलत

हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इर्शाद फरमाते हुये सुना कि जो मुसलमान किसी मुसलमान की सुबह को इयादत करता है तो शाम तक सत्तर हज़ार फरिश्ते उसके लिए दुआ करते रहते हैं। जो शाम को इयादत करता है तो सुबह तक सत्तर हज़ार फरिश्ते उसके लिए दुआ करते रहते हैं और उसे जन्नत में एक बाग़ मिल जाता है। (तिर्मिज़ी)

हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि नबीये पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से इर्शाद फरमाया जब तुम बीमार के पास जाओ तो उस से कहो कि वह तुम्हारे लिए दुआ करे क्योंकि उसकी दुआ फरिश्तों की दुआ की तरह (क़बूल होती) है।

५. बीमार पुरसी कर के चल्द लौट आना सुन्नत है। कहीं तुम्हारे ज़्यादा देर तक बैठने से

बीमार मलूल और रंजीदा न हो जाये या घर वालों के काम में ख़लल न पड़े। (मिश्कात)

६. बीमार को हर तरह तसल्ली देना मसनून है मसलन उस से कहे कि इंशा अल्लाह तुम जल्द अच्छे हो जाओगे ख़ुदा तआला बड़ी कुदरत वाला है कोई डर या ख़ौफ पैदा करने वाली बात बीमार से न कहे। (ज़ादुल मआद)

७. बीमार पुरसी रात में भी जायज़ है उसको जो लोग मनहूस कहते हैं वह ग़लती पर हैं इसी तरह बीमारी की ख़बर मिले तो जब दिल चाहे इयादत कर आये यह जो ख़्याल है कि तीन दिन बीमारी के गुज़र जायें तो इयादत को जायें बे अस्ल बात है।(ज़ादुल मआद)

८. जब किसी मरीज़ की इयादत करे तो उस से यूँ कहे :

لَا بَأْسَ طَهُوْرٌ اِنْ شَاءَ اللّٰهُ۔(بخاری ج۲ص۸۴۵)

ला बास तहूरुन इंशाअल्लाह।(बुख़ारी जि. २ स. ८४५)

तर्जमा : कोई हर्ज नहीं इंशा अल्लाह यह बीमारी गुनाहों से पाक करने वाली है।

मरीज़ की सेहत के लिए क्या दुआ करे

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो आदमी किसी मरीज़ की इयादत करे

और उसके पास सात मर्तबा यह दुआ पढ़े तो अगर मौत मुक़द्दर न होगी तो उस मर्ज़ से आफियत होगी।

أَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ
اَنْ يَشْفِيَكَ۔

अस्अलुल्लाहुल अज़ीम रब्बल अर्शिल अज़ीमी अंय्यशफियक।

तर्जमा : अर्शे अज़ीम के बलंद व बाला ख़ुदा मैं तुझ से इसकी सेहत का सवाल करता हूँ। (अबू दाऊद स. ४४२, अज़कारे नववी स. ११४ बिसनदिन हसनिन, तिर्मिज़ी)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा की एक रिवायत में है कि मरीज़ के पास जाये तो उसके सिरहाने बैठ कर यह दुआ पढ़े अगर मौत मुक़द्दर नहीं तो सेहत होगी। (अल फुतूहात जि. ४ स. ६२)

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजहहुल करीम से मरवी है कि किसी बीमार पर सूरये इनआम पढ़ी जाये तो वह शिफा और सेहतयाब होता है। (बेहक़ी, इतक़ान स. २१०)

फायदा : उसके सिरहाने बैठ कर पढ़ने से सेहत और मर्ज़ में तख़्फीफ होने लगती है।

इस लिए मरीज़ की शिफायाबी के लिए सात बार यह दुआ पढ़े:

اَسْأَلُ اللّٰهَ الْعَظِيْمَ رَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَنْ يَّشْفِيَكَ۔

अस्अलुल्लाहुल अज़ीम रब्बल अर्शिल अज़ीमी अंय्यशफियक।

तर्जमा : मैं अल्लाह पाक से सवाला करता हूँ जो अज़ीम है और अर्शे अज़ीम का रब है कि तुझे शिफा अता फरमाये। हुज़ूर अक्दस सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमा है कि सात मर्तबा उसके पढ़ने से मरीज़ को शिफा होगी। हाँ अगर उसकी मौत ही आ गई हो तो दूसरी बात है। (अबू दाऊद स. ४४२, मिश्कात स. १३५)

९. इयादत के वक्त की दुआ : हज़रत अबू सईद खुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम एक दफा बीमार हुये तो जिबरईल अमीन आये और कहा ऐ मुहम्मद तुम को तकलीफ हो गई है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया हाँ! तो जिबरईल अमीन ने यह दुआ पढ़ कर झाड़ा:

بِسْمِ اللّٰہِ اَرْقِیْکَ مِنْ کُلِّ شَیْءٍ یُؤْذِیْکَ مِنْ شَرِّ کُلِّ نَفْسٍ اَوْ عَیْنِ حَاسِدٍ، اَللّٰہُ یَشْفِیْکَ بِسْمِ اللّٰہِ اَرْقِیْکَ۔

बिस्मिल्लाही अरक़ीक मिन कुल्लि शैइन यूज़ीक मिन शर्री कुल्लि नफ्सिन अव औनि हासिदिन, अल्लाहु यशफीक बिस्मिल्लाही अरक़ीक।

तर्जुमा: मैं अल्लाह के नाम से तुम्हें छाड़ता हूँ

और दम करता हूँ, हर उस चीज़ से जो तुम्हें ईज़ा पहुंचाये। और हर नफ्स और हासिद के शर से अल्लाह पाक तुम को शिफा दे, मैं अल्लाह के नाम से तुम्हें छाड़ता फूंकता हूँ (सही मुस्लिम बहवाला मआरिफुल हदीस जि. ५ स. २३८, इब्ने माजा २५१, तिर्मिज़ी स. १९१)

मौत और उसके बाद की सुन्नतें

१. जब यह मालूम होने लगे कि मौत का वक़्त क़रीब है तो उस वक़्त जो लोग वहाँ मौजूद हों उसका मुंह क़िब्ला की तरफ फेर दें।(मुस्तदरक, हाकिम)

२. और मैय्यत के पास ज़ोर ज़ोर से कलिमा पढ़ें और मुस्तहब है कि उस के पास सूरह यासीन पढ़ें। (तिर्मिज़ी)

३. जब मौत क़रीब मालूम हो तो यह दुआ पढ़ें:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِىْ وَارْحَمْنِىْ وَاَلْحِقْنِىْ بِالرَّفِيْقِ الْاَعْلٰى۔

अल्लाहुम्मग़िफरली वरहमनी व अलहिक़नी बिर्रफीक़िल आला।

तर्जमा : ऐ अल्लाह! मुझ को बख़्श दे और मुझ पर रहम फरमा और मुझे अपने पास बुला ले।

(बुख़ारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी)

४. जब रूह निकलने के आसार मालूम हों तो यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَعِنِّىْ عَلٰى غَمَرَاتِ الْمَوْتِ وَسَكَرَاتِ

الْمَوْتِ۔ (ترمذی)

अल्लाहुम्म अइन्नी अला ग़मरातिल मौति व सकरातिल मौत। (तिर्मिज़ी)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! मौत की सख़्तियों के मौक़े पर मेरी मदद फरमा।

५. जब मौत वाक़े हो जाये तो अहले तअल्लुक़ यह दुआ पढ़ें:

إِنَّا لِلّٰهِ وَإِنَّا إِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ، اَللّٰهُمَّ أْجِرْنِيْ فِيْ مُصِيْبَتِيْ وَاخْلُفْ لِيْ خَيْرًا مِّنْهَا۔ (مسلم)

इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैही राजिऊन, अल्लाहुम्म अजिरनी फी मुसीबती वख़्लुफ ली ख़ैरम मिनहा। (मुस्लिम)

तर्जमा : बेशक हम अल्लाह ही के लिए हैं और हम अल्लाह ही तरफ पलटने वाले हैं। ऐ अल्लाह! मेरी मुसीबत में अज्र दे और उसके ऐवज़ मुझे उस से अच्छा बदल इनायत फरमा।

६. रूह निकल जाने के बाद मैय्यत की आँखें बंद करे। और ढोड़ी के नीचे से ले कर सर पर कपड़ा बांध दे और दोनों पैर के अंगूठे मिला कर बांध दे। (उसवये रसूले अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

७. जो शख़्स मय्यत को तख़्त पर रखने के लिए उठाये या जनाज़ा उठाये तो 'बिस्मिल्लाह' कहे।

(इब्ने अबी शैबा)

८. मैय्यत को दफन करने में जल्दी करना सुन्नत है। (अबू दाऊद)

९. जब मैय्यत को क़ब्र में रखे तो यह दुआ पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ وَعَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ ﷺ۔

बिस्मिल्लाही व अला मिल्लती रसूलिल्लाही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम।(तिर्मिज़ी स. २०२, इब्ने माजा स. १११)

१०. मैय्यत को क़ब्र में दाहिनी करवट पर इस तरह लेटाना चाहिये कि पूरा सीना करबा की तरफ हो और पुश्त को क़ब्र की दीवार से लगा कर कफन की गिरहें खोल दें। (बहिश्ती ज़ेवर)

नोट : आज कल लोग सिर्फ मुंह काबा की तरफ कर देते हैं और चित लेटा देते हैं कि सीना आसमान की तरफ होता है यह बिल्कुल ख़िलाफे सुन्नत है।

११. मैय्यत के रिश्तेदारों को खाना खिलाना मसनून है। तमाम बिरादरी या रिश्तेदारों के लिए उसका खाना जायज़ नहीं। मैय्यत के घर वालों के लिए यह खाना जायज़ है। नीज़ नामवरी और दिखलावे के लिए ऐसा करना जायज़ नहीं। और जो मौजूद हो खिला देवे उस में तकल्लुफ न करे। (जमे तिर्मिज़ी, इब्ने माजा)

१३. क़ब्र को न बहुत ऊँची करें न पुख़्ता बनायें। (मदारिजुन्नबुवत)

१४. क़ब्र का एक बालिश्त से बहुत ज़्यादा बलंद करना मकरूहे तहरीमी है। (दुर्रे मुख़्तार, शामी)

१५. क़ब्र पर पानी छिड़कना सुन्नत है। (दुर्रे मुख़्तार, शामी)

१६. जब मैय्यत के दफ़न से हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फ़ारिग़ होते तो ख़ुद भी और दूसरों को भी फरमाते कि अपने भाई के लिए इस्तिग़फ़र करो और साबित क़दम रहने की दुआ करो कि अल्लाह पाक उसे मुनकर नकीर के जवाब में साबित क़दम रखे। (अबू दाऊद, हाकिम, बेहक़ी)

१७. मर जाने के बाद जब तक गुस्ल न दे दिया जाये उसके पास कुरआन मजीद पढ़ना दुरुस्त नहीं। (अल बहरुर्राइक़)

मशवरा : बेहतर है कि चादर पर चने रख कर औरतें दुरूद शरीफ या कलिमा तैय्यबा पढ़ती रहें।

जनाज़े में क्या दुआ पढ़े

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जनाज़ा पर यह दुआ पढ़ते:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِحَيِّنَا وَمَيِّتِنَا وَشَاهِدِنَا وَغَائِبِنَا وَ صَغِيْرِنَا وَ كَبِيْرِنَا وَذَكَرِنَا وَاُنْثَانَا اَللّٰهُمَّ مَنْ اَحْيَيْتَهُ مِنَّا فَاَحْيِهٖ عَلَى الْاِسْلَامِ وَمَنْ تَوَفَّيْتَهُ مِنَّا فَتَوَفَّهُ عَلَى الْاِيْمَانِ. (الدعا، جلد٣، صفحہ١٣٥٢، ترمذی صفحہ١٨٩،)

अल्लाहुम्मग़्फिर लिहैय्यिना व मैय्यितिना व शाहिदना व ग़ाइबिना व सग़ीरिना व कबीरिना व ज़करिना व उन्साना अल्लाहुम्म मन अहयैतहू मिन्ना फअहइही अलल इस्लामी व मन तवफ्फैतहू मिन्ना फतवफ्फहू अलल ईमान।

तर्जमा : ऐ अल्लाह हमारे ज़िन्दों, मुर्दों ग़ायब हाज़िर बड़े छोटे मर्द औरत की मग़्फिरत फरमा। ऐ अल्लाह पाक हम में से जिसे जिन्दा रख इस्लाम पर रख और मौत दे तो ईमान पर दे।

हज़रत औफ बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक मर्तबा जनाज़ा पर यह दुआ पढ़ी जिसे मैंने याद कर लिया:

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لَهُ وَارْحَمْهُ وَعَافِهِ وَاعْفُ عَنْهُ وَاَكْرِمْ نُزُلَهُ وَوَسِّعْ مَدْخَلَهُ وَاغْسِلْهُ بِالْمَاءِ وَالثَّلْجِ وَالْبَرْدِ نَقِّهِ مِنَ الْخَطَايَا كَمَا نَقَّيْتَ الثَّوْبَ الْاَبْيَضَ مِنَ الدَّنَسِ وَاَبْدِلْهُ

دَاراً خَيْراً مِنْ دَارِهٖ وَاَهْلاً خَيْراً مِنْ اَهْلِهٖ وَزَوْجاً خَيْراً مِنْ زَوْجِهٖ وَاَدْخِلْهُ الْجَنَّةَ وَاَعِذْهُ مِنْ عَذَابِ الْقَبْرِ وَ مِنْ عَذَابِ النَّارِ. (مسلم جلد١ صفحہ٣١١)

अल्लाहुम्मग़्फिरली वरहम्हू व आफिहू वअफु अन्हु व अक्रिम नुज़ुलहू व वस्सअ मदख़ालहू वग़्सिलहू बिल माइ वस्सलजि वल बरदी नक़्क़ही मिनल ख़ताया कमा नक़्क़ैतस्सौबल अबयज़ मिनद्दनसी व अबदिलहू दारन ख़ैरम मिन दारिही व अहलन ख़ैरम मिन अहलिही व ज़ौजन ख़ैरम मिन ज़ौजिही व अदख़िलहुल जन्नत व अइज़्हू मिन अज़ाबिल क़ब्री व मिन अज़ाबिन्नार। (मुस्लिम जि. १ स. ३११)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! उसकी मग्फिरत फरमा उस पर रहम फरमा उसे आफियत इनायत फरमा। उसे माफ फरमा। उसके आने का इकराम फरमा। उसके मुक़ाम को कुशादा फरमा। पानी से बर्फ से ओले से उसके गुनाह को धुल दे उसे गुनाहों से ऐसा साफ फरमा दे जैसा कि सफेद कपड़ा मैल से। उसके घर के बदले बेहतर घर दे, उसके अहल से बेहतर अहल, उसकी बीवी से बेहतर बीवी अता फरमा, उसे जन्नत अता फरमा, उसे जन्नत में दाख़िल फरमा, अज़ाबे क़ब्र और अज़ाबे नार से उसकी हिफाज़त फरमा।

फायदा : जनाज़ा में यह दोनों दुआयें पढ़ ले तो बेहतर है। अल्लामा शामी ने रद्दुल मुख़्तार में उन दोनों दुआओं का पढ़ना ज़िक्र किया है। (मुस्लिम जि. २ स. ३११, अद्दुआउल मसनूनस. ३१९,३१८)

जनाज़ा नाबालिग़ लड़के का हो तो यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ لَنَا فَرَطًاوَّاجْعَلْهُ لَنَا اَجْرًا وَّذُخْرًا، وَاجْعَلْهُ لَنَا شَافِعًاوَّ مُشَفَّعًا. (نورالایضاح)

अल्लाहुम्मजअलहू लना फरअतंव्वजअलहू लना अजरंव्व ज़ुख़्रंव्वजअलहू लना शाफिअंव्व मुशफ्फअन।

(नूरुल इज़ाह)

जनाज़ा नाबालिग़ लड़की का हो तो यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهَا لَنَا فَرَطًاوَّاجْعَلْهَا لَنَا اَجْرًا وَّ ذُخْرًا، وَاجْعَلْهَا لَنَا شَافِعَةً وَّمُشَفَّعَةً. (نورالایضاح)

अल्लाहुम्मजअलहा लना फरतंव्वअलहा लना अजरंव्व ज़ुख़्रंव्वजअलहा लना शाफिअतंव्व मुशफ्फ अतन। (नूरुल इज़ाह)

जनाज़ा गुज़रता देखे तो क्या पढ़े

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो जनाज़ा देखे और यह कहे तो उसके लिए २० नेकियाँ लिखी जाती हैं।

اَللّٰهُ اَكْبَرُ صَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ اَللّٰهُمَّ زِدْنَا اِيْمَاناً وَتَسْلِيْمًا.

अल्लाहु अक्बरु सदक़ल्लाहु व रसूलुहु अल्लाहुम्म ज़िदना ईमानन व तस्लीमा।

तर्जमा: अल्लाह बड़ा है। खुदा उसके रसूल ने सच कहा ऐ अल्लाह ईमान और तस्लीम में हमें ज़्यादती अता फरमा। (अल फुतूहात जि. ४ स. १८५)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा जब जनाज़ा देखते तो यह दुआ पढ़ते:

هٰذَا مَا وَعَدَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ

اَللّٰهُمَّ زِدْنَا اِيْمَاناً وَّ تَسْلِيْماً.

हाज़ा वअदल्लाहु व रसूलुहू व सदक़ल्लाहु व रसूलुहू अल्लाहुम्म ज़िदना ईमानंव्व तस्लीमा।

तर्जमा : यह वह है जिस का खुदा और रसूल ने वादा किया ऐ अल्लाह ईमान व तस्लीम में ज़्यादती फरमा। (अल फुतूहात जि. ४ स. १८५)

अल्लामा नववी रहमतुल्लाह अलैह ने बयान किया है कि जब जनाज़ा गुज़रे तो यह पढ़ना मुस्तहब है:

سُبْحَانَ الْحَيِّ الَّذِىْ لَايَمُوْتُ . (نزل الابرار، صفحہ ۲۸۹، اذکار، صفحہ ۱۶۳)

सुबहानल हय्यिल लज़ी ला यमूत। (नुज़िलल अबरार, स. २८९, अज़कार स. १६३)

जब कब्रस्तान जाये तो क्या पढ़े

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अल्लैहि व सल्लम जब क़ब्रिस्तान तशरीफ ले जाते तो यह दुआ पढ़ते:

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ دَارَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ.

अल्लाहुम अलैकुम दार क़ौमिम मुमिनीन व इन्ना इनशाअल्लाहु बिकुम लाहिकून।

तर्जमा : तुम पर सलामती हो क़ौम मोमिन के घर, मैं भी इंशा अल्लाह तुम्हारे बाद आने वाला हूँ। (अबू दाऊद स. ४६१)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब क़ब्रिस्तान से गुज़रते तो यह दुआ पढ़े :

سَلَامٌ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الدِّيَارِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَالْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ وَالصَّالِحِيْنَ وَالصَّالِحَاتِ وَإِنَّا إِنْ شَاءَ اللّٰهُ بِكُمْ لَاحِقُوْنَ. (ابن سنی صفحہ ۵۴۲)

सलामुन अलैकुम अहलद्दियारी मिनल मुमिनीन वल मुमिनाति वल मुस्लिमीन वल मुस्लिमात वस्सालिहीना वस्सालिहाती व इन्ना इंशाअल्लाहु बिकुम लाहिकून। (इब्ने सिनी स. ५४२)

तर्जमा : सलामती हो तुम पर उस घर के रहने वाले मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों का औरतों का और मुसलमान मर्दों और मुसलमान औरतों का और सालेह मर्दों और सालेह औरतों का। इंशा अल्लाह हम भी तुम्हारे बाद आने वाले हैं।

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा की रिवायत में है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से यह दुआ मनकूल है।

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَا اَهْلَ الْقُبُوْرِ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ
اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ. (مشکوٰۃ صفحہ ۱۵۴)

अस्सलामु अलैकुम या अहलल कुबूरी यग़्फिरुल्लाहु लना व लकुम अन्तुम सलफुना व नहनु बिल असरी। (मिश्कात स. १५४)

तर्जमा : सलामती हो तुम पर ऐ क़ब्र वाले अल्लाह पाक हमारी और तुम्हारी मग़्फिरत फरमाये तुम हम से पहले हो हम तुम्हारे बाद हैं।

मिट्टी डालने की दुआ

अबू अमामा रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उम्मे कुलसूम को क़ब्र में रखा तो फरमाया।

مِنْهَا خَلَقْنَاكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ
تَارَةً اُخْرٰى.

मिन्हा ख़लक्ना कुम व फीहा नुअीदुकुम व मिन्हा नुख़्रिजुकुम तारतन उख़्रा।

फिर फरमाया :

بِسْمِ اللّٰهِ وَفِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ

बिस्मिल्लाही व फी सबीलिल्लाही।

तर्जमा : अल्लामा नववी रहमतुल्लाह अलैहि ने बयान किया कि मिट्टी डालते वक्त पहली मर्तबा 'मिन्हा ख़लक्नाकुम' और दूसरी मर्तबा 'व फीहा नअीदुकुम' और तीसरी मर्तबा 'व मिन्हा नुख़्रिजुकुम तारतन उख़्रा' पढ़े। (अज़्कार स. १३७)

हज़रत इब्ने उमर रज़ि अल्लाहु अन्हुमा जब मिट्टी डालते तो पहली मर्तबा 'बिस्मिल्लाही'और दूसरी मर्तबा 'अल्लाहु अक्बर' तीसरी मर्तबा 'अल हम्दु लिल्लाही रब्बिल आलमीन' पढ़ते।(अल फुतूहात स. १९०)

मुआशरत की चंद सुन्नतें

१. सलाम करना मुसलमानों के लिए बहुत बड़ी सुन्नत है। हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उसकी बहुत ताकीद फरमाई है। हर मुसलमान को सलाम करना चाहिये ख़्वाह उसे पहचानता हो या न पहचानता हो। (क्योंकि सलाम इस्लामी हक़ है किसी के जानने और शनासाई पर मौकूफ नहीं है)। (बुख़ारी, मुस्लिम)

२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु नबीये पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया जिस शख़्स ने एक दिन या एक रात में बीस आदमियों से सलाम कर लिया ख़्वाह जमात को किया हो या फरदन फरदन किया हो और उस दिन उसका इंतेक़ाल हो गया तो उस पर जन्नत लाज़िम है। (जमउल फवाइद)

३. जब घर में दाख़िल हो तो घर वालों को सलाम करे और अगर घर में कोई न भी हो तब भी सलाम कर के दाख़िल हो फरिश्ते उसका जवाब देते हैं और इस तरह सलाम करे।

اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصَّالِحِيْنَ. (شامی ص ۴۱۳)

'अस्सलामु अलैना व अला इबादिस्सालिहीन।

(शामी स. ४१३)

और जब घर से बाहर निकले तब भी सलाम कर के रुख़्सत हासिल करे। जब कोई शख़्स मजलिस में पहुंचे तो सलाम करे और अगर बैठने की ज़रूरत हो तो बैठ जाये और फिर जब चलने लगे तो दोबारा सलाम करे इस लिए कि दोनों सलाम हक़ और मसनून हैं। (तिर्मिज़ी, मिश्कात)

नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है जो शख़्स अपने मुसलमान भाई से मिले तो

उसको सलाम करे और अगर दरख़्त या दीवार या पत्थर बीच में आड़ बन जाये और फिर उसके सामने आये तो उस को फिर सलाम करे। (अबू दाऊद, ज़ादुल मआद)

४. बुख़ारी व मुस्लिम की हदीस में है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुज़र बच्चों पर हुआ तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उन को सलाम किया। इस लिए बच्चों को भी सलाम करना सुन्नत है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

सलाम का मसनून तरीक़ा

५. सलाम करने का सुन्नत तरीक़ा यह है ज़बान से

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَةُ اللّٰهِ وَبَرَكَاتُهٗ

'अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाही व बरकातुहू' कहे। हाथ से या सर से या उंगली के इशारे से सलाम करना या उसका जवाब देना सुन्नत के ख़िलाफ है। अगर दूरी हो तो ज़बान और हाथ दोनों से सलाम करे। (तिर्मिज़ी)

नोट: सिर्फ हाथ से इशारा यानी टाटा ईसाइयों का तरीक़ा है।

सलाम के आदाब

मुसलमान मुसलमान से मिले तो उसको सलाम

करना चाहिये।

चलने वाला बैठे हुये को सलाम करे।

सवार बैठे हुये को सलाम करे।

कम तादाद बड़ी तादाद को सलाम करे।

छोटा बड़े को सलाम करे।

इशारे से सलाम करना जब मुख़ातब दूर हो।

ज़ोर से सलाम करना ताकि मुख़ातब सुन ले।

(अदबुल मुफर्रद)

६. किसी मुसलमान भाई से मुलाक़ात हो तो सलाम के बाद मुसाफ़हा करना मसनून है। औरत औरत से मुसाफ़हा कर सकती है। (माख़ूज़ अज़ उसवये रसूले अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम)

मजलिस के आदाब

१. किसी मजलिस में जाओ तो जहाँ मौक़ा मिले और जगह मिले बैठ जाओ दूसरों को उठा कर खुद बैठ जाना गुनाह की बात और मक्रूह है।

(बुख़ारी)

२. अगर कोई शख़्स मजलिस में आये और जगह न हो तो पहले से बैठने वालों को चाहिये कि ज़रा मिल कर बैठ जायें और आने वाले मोमिन भाई के लिए गुनजाइश निकाल लें। (शमाइले कुबरा)

३. कहीं अगर सिर्फ तीन आदमी हों तो एक को छोड़ कर काना फूसी (सर गोशी) की इजाज़त

नहीं कि ख़्वाह मख़्वाह उसका दिल शुबहात की वजह से रंजीदा होगा और मुसलमान भाई के रंजीदा करना बहुत बड़ा गुनाह है।(मुस्लिम जि. २ स. २११)

जमाई के आदाब

१. जब जमाई आवे तो सुन्नत है कि मुंह बंद कर ले और अगर मुंह कोशिश के बावजूद बंद न रख सके तो बायें हाथ की पुश्त को मुंह पर रख ले और "हा हा" की आवाज़ न निकाले कि यह हदीस में ममनूअ है।(बुखारी जि. २ स. ९१९, मुस्लिम जि.२ स. ४१३)

२. जमाई अल्लाह को ना पसंद है क्योंकि जमाई शैतान की जानिब से है जो इबादत में काहिली व सुस्ती का सबब होता है और शैतान उस से खुश होता है। जिस वक़्त कोई जमाई लेता है यानी मुंह खोलता है तो शैतान उस से हंसता है। (अल अदबुल मुफर्रद, मिश्कात)

छींक से मुतअल्लिक़ आदाब

१. जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को छींक आती तो हाथ या कपड़ा मुंह पर रख लेते और आवाज़ को पस्त फरमाते। (तिर्मिज़ी)

२. अगर कोई हम जलीस जवाब में 'यरहमुकल्लाह' कहता तो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 'यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम' से उसका

जवाब देते। (तिर्मिज़ी)

ग़ैर मज़हब वालों को छींक का जवाब हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम 'यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम' से देते 'यरहमुकल्लाहु' से उसका जवाब देना ना पसंद फरमाते। (ज़ादुल मआद)

छींक आये तो 'अल हम्दु लिल्लाही' कहे उसके सामने वाला जवाब में 'यरहमुकल्लाह' कहे, फिर छींकने वाला 'यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम' कहे 'या यग़्फिरुल्लाह लना व लकुम' कहे। (बेहक़ी जि. ७ स. ३०)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु की हदीस अबू दाऊद वग़ैरह में यह है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब तुम में से कोई छींके तो 'अल हम्दु लिल्लाही अला कुल्लि हालिन' कहे उसका भाई (जो सुने) वह यरहमुकल्लाहु' कहे। फिर वह यहदीकुमुल्लाहु व युस्लिहु बालकुम' कहे।(अज़कार स.२३१,अबू दाऊद)

छींक अल्लाह को पसंद है क्योंकि छींकने से दिमाग़ में ख़िफ्फत और क़वाये इदराकिया में सफाई आ जाती है। जो ताअत में निशात और हुज़ूरे क़ल्ब के बाइस मुईन होती है। (मिश्कात)

नेक फाली की सुन्नत

१. अगर किसी का अच्छा नाम सुनो तो उसे

अपने मक़सद के लिए नेक फाल समझना सुन्नत है और उस से ख़ुश होना भी सुन्नत है। बद फाली लेने को सख़्त मना फरमाया गया है जैसे रास्ता चलते किसी को छींक आ गई तो यह समझना कि काम न होगा या कव्वा बोला या बंदर नज़र आ गया या उल्लू बोला तो उन से आफत आने का गुमान करना सख़्त नादानी और बिल्कुल बेअस्ल और ग़लत है और गुमराही का अक़ीदा है। इसी तरह किसी को मनहूस समझना या किसी दिन को मनहूस समझना बहुत बुरा है। (मिरक़ात जि.९ स.२,३)

बलंदी पर चढ़ने और नीचे उतरने की सुन्नतें

१. जब बलंदी पर चढ़े ख़्वाह एक दो ही सीढ़ी मस्जिद की हो या अपने घर की तो बलंदी की तरफ दाहिना पावँ बढ़ाये और 'अल्लाहु अक्बर' कहे।(बुख़ारी)

२. इसी तरह जब नीचे को उतरे तो बायाँ पावँ आगे बढ़ाये और सुबहानल्लाह कहे ख़्वाह यह नशेब मामूली ही हो तब भी उस सुन्नत का सवाब हासिल करे। (बुख़ारी)

मुतफर्रिक़ सुन्नतें

१. **सुन्नत** : जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चलते थे तो लोगों को आगे से हटाया नहीं

जाता था। (ख़साइले नबवी)

२. **सुन्नत** : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जायज़ काम को मना नहीं फरमाते थे अगर कोई सवाल करता और उसको पूरा करने का इरादा होता तो हाँ कह देते वरना ख़ामोश हो जाते।(ख़साइले नबवी)

३. **सुन्नत** : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अपना चेहरा किसी से न फेरते जब तक वह न फेरता और अगर कोई चुपके से बात कहना चाहता तो आप कान उसकी तरफ कर देते और जब तक वह फारिग़ न होता आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम न हटाते। (ख़साइले नबवी)

४. **सुन्नत:** जब आँ हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हस्बे मंशा कोई बात पेश आती तो फरमाते:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ بِنِعْمَتِهٖ تَتِمُّ الصَّالِحَاتُ۔

'अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी बिनिमतिही ततिम्मुस्सालिहातु' और जब नागवारी की हालत पेश आती तो फरमाते: 'अल हम्दु लिल्लाही अला कुल्लि हालिन'। (इब्ने माजा स. २७८)

५. **सुन्नत:** जब कोई आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से मिलता तो पहले आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सलाम करते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

६. **सुन्नत** : जब आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम किसी चीज़ को करवट की तरफ देखते तो पूरा चेहरा फेर कर देखते मुतकब्बिरों की तरह कनखियों से न देखते। (खसाइले नबवी)

७. **सुन्नत** : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम निगाह नीची रखते थे। ग़ायते हया की वजह से निगाह भर कर न देखते थे। (ख़साइले नबवी)

८. बरताव में सख़्ती न फरमाते, नरमी को पसंद फरमाते। (ख़साइले नबवी)

९. **सुन्नत** : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चलते वक़्त पावँ उठाते तो क़दम कुव्वत से उठता था और आगे की जानिब ज़रा झुक कर चलते थे। तवाज़ु के साथ क़दम बढ़ा कर इस तरह चलते गोया बलंदी से पस्ती में उतर रहे हों। (ख़साइले नबवी, शमाइले स. १२)

१०. **सुन्नत** : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सब में मिले जुले रहते थे। (यानी शान बना कर न रहते थे) बल्कि कभी कभी मज़ाह भी फरमा लेते थे। (बहिश्ती ज़ेवर जि. ८ स. ४)

११. **सुन्नतः** अगर कोई ग़रीब आता या बुढ़िया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से बात करना चाहती तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सड़क के एक किनारे पर सुनने के लिए खड़े हो जाते या बैठ जाते। (बहिश्ती ज़ेवर जि. ८ स. ४)

१२. **सुन्नत** : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम नमाज़ में कुरआन मजीद तिलावत फरमाते तो सीनये मुबारक से हाँडी खोलने की सी आवाज़ आती। ख़ौफे खुदा की वजह से यह हालत होती थी।
(शमाइल स. १८८)

१३. **सुन्नत** : हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम घर वालों का बहुत ख़्याल रखते कि किसी को आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से तकलीफ न पहुंचे, इसी लिए रात को बाहर जाना होता तो आहिस्ता से बाहर चले जाते, इसी तरह घर में तशरीफ लाते तो आहिस्ता आते ताकि सोने वालों को तकलीफ न हो और किसी की नींद ख़राब न हो जाये।(मिश्कात स. २८०,बहिश्ती ज़ेवर जि.८ स. ४)

१४. **सुन्नत** : आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब चलते तो निगाह नीची ज़मीन की तरफ रखते मजमे के साथ चलते तो सब से पीछे होते और कोई सामने से आता तो सब से पहले सलाम आप ही करते। (शमाइले तिर्मिज़ी स.१२)

१५. **सुन्नत** : किसी क़ौम का आबरू दार आदमी हो तो उस के साथ इज़्ज़त से पेश आना। (बहश्ती ज़ेवर)

१६. **सुन्नत** : अपने औक़ात में से कुछ वक़्त अल्लाह की इबादत के लिए, कुछ घर वालों के

हुकूक़ अदा करने के लिए जैसे उन से हंसना, बोलना और एक हिस्से अपने बदन की राहत के लिए निकालना। (शमाइले तिर्मिज़ी स. १९८)

१७. **सुन्नत** : सरवरे दो आलम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद शरीफ पढ़ते रहना, पड़ोसी के साथ ऐहसान करना, बड़ों की इज़्ज़त करना छोटों पर रहम करना। (मिश्कात)

१८. **सुन्नत** : कोई रिश्तेदार बदसुलूकी करे तो उसके साथ अच्छे सुलूक से पेश आना।

(मिश्कात स. ५१९)

१९. **सुन्नत** : पड़ोसी को अपनी ईज़ा से बचाना। उस से अच्छी बात कहना वरना ख़ामूश रहना। (मिश्कात)

२०. **सुन्नत**: सिला रहमी करना। (बुख़ारी)

२१. **सुन्नत** : जो लोग दुनिया के ऐतेबार से कमज़ोर हैं उनका ख़्याल रखना। (ख़साइले नबवी)

२२. **सुन्नत** : बायें जानिब तकिया लगाना।

(शमाइले तिर्मिज़ी)

२३. **सुन्नत** : बीवी का दिल ख़ुश करने के लिए उस से मज़ाह करना और हंसी की बात करना भी सुन्नत है। (ख़साइले नबवी)

२४. **सुन्नत** : बाद नमाज़े फज्र इशराक़ तक आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में चार

ज़ानो (आलती पालती) बैठते थे। नीज़ अपने असहाब में भी आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मुरब्बा बैठते थे अलबत्ता छोटों को बड़ों के सामने दो ज़ानों बठना अक़रब इलत्तवाज़ु लिखा है।(शामी जि. १)

२५.**सुन्नत** : अपने मुसलमान भाई से कुशादा चेहरा से मिलना और उसके बैठाने के लिए अपनी जगह से किसी क़द्र हट जाना अगरचे अपनी जगह ज़रा सा ही हिले यह सुन्नत है।(ख़साइले नबवी, तिर्मिज़ी)

२६. **सुन्नत**: सवारी पर उसके मालिक को आगे बैठने के लिए कहना और बदून उसके सरही इजाज़त आगे न बैठना सुन्नत है।

أَنْتَ أَحَقُّ بِصَدْرِ دَآبَّتِكَ۔(الحدیث)(ابوداود حدیث نمبر۲۵۷۲)

'अन्त अहक़्कु बिसदरि दाब्बतिक। (अल हदीस, अबू दाऊद हदीस नम्बर २५७२)

मोमिन जो फिदा नक़्शे क़दम पाक नबी हो
हो ज़ेरे क़दम आज भी आलम का ख़ज़ीना
गर सुन्नते नबवी की करे पैरवी उम्मत
तूफ़ाँ से निकल जायेगा फिर उसका सफीना

رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا اِنَّکَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ وَتُبْ عَلَيْنَا اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَابُ الرَّحِيْمُ.

रब्बना तक़ब्बल मिन्ना इन्नक अन्तस्समीउल अलीमु व तुब अलैना इन्नक अन्तत्तव्वाबुर्रहीम।

अद्दिआये मासूरा हवालों के साथ

☆ **सोने से पहले की दुआ** : (ख़दीजा रज़ि अल्लाहु अन्हा)

اَللّٰهُمَّ بِاسْمِکَ أَمُوْتُ وَأَحْيٰى. (بخاری ومسلم)

अल्लाहुम्म बिस्मिक अमूतु व अहया। (बुख़ारी व मुस्लिम)

☆ **बुरा ख़्वाब देखे तो यह दुआ पढ़े**: (अबू क़तादा रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ وَشَرِّهٰذِهِ الرُّؤْيَا. (ترمذی)

अऊज़ु बिल्लाहि मिनश्शैतानी व शर्रि हाज़ि-हिर्रुया। (तिर्मिज़ी)

☆ **सो कर उठने की दुआ** :(ख़दीजा रज़ि अल्लाहु अन्हा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ أَحْيَانَا بَعْدَ مَا أَمَاتَنَا وَإِلَيْهِ النُّشُوْرُ. (بخاری)

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अहयाना बअद मा अमातना व इलैहिन्नुशूरु। (बुख़ारी)

☆ **नया कपड़ा पहनने की दुआ** : (अबू अमामा रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ مَا اُوَارِیْ بِهٖ عَوْرَتِیْ وَاَتَجَمَّلُ بِهٖ فِیْ حَيَاتِیْ (ترمذی)

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी कसानी मा उवारी बिही औरती व अतजम्मलु बिही फी हयाती। (तिर्मिज़ी)

☆ **बैतुल ख़ला में दाख़िल होने की दुआ** : (अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ أَعُوْذُبِکَ مِنَ الْخُبُثِ وَالْخَبَائِثِ. (بخاری)

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल ख़ुबुसी वल ख़बाइसी (बुख़ारी)

☆ **बैतुल ख़ला से बाहर निकलने की दुआ** : (आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ اَذْهَبَ عَنِّیْ الاَذٰی وَعَافَانِیْ. (ترمذی)

अल हम्दु लिल्लाहिल लज़ी अज़हब अन्निल अज़ा व आफानी। (तिर्मिज़ी)

☆ **वुज़ू से पहले की दुआ:** (अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ. (ترمذی)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।(तिर्मिज़ी)

☆ **वुज़ू करते वक़्त की दुआ** : हदीस शरीफ में आया है कि जो शख़्स वुज़ू करते वक़्त इस दुआ को पढ़ता है उसके लिए मग़्फिरत का एक पर्चा लिख कर और उस पर मुहर लगा कर रख दिया जाता है। क़यामत के दिन तक उसकी मुहर न तोड़ी जायेगी और वह मग़्फिरत का हुक्म बरक़रार रहेगा।

दुआ यह है:

سُبْحَانَکَ اللّٰھُمَّ وَبِحَمْدِکَ اَسْتَغْفِرُکَ وَ اَتُوْبُ اِلَیْکَ.   (قول متین ص ۲۵، طبرانی اوسط، حصن حصین)

सुबहानक अल्लाहुम्म व बिहम्दिक अस्तग़्फिरुक व अतूबु इलैक। (क़ौले मुतीन स. २५, तिबरानी औसत, हिस्ने हसीन)

☆ **वुज़ू के दरमियान की दुआ :** (अबू अशअरी रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰھُمَّ اغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ وَوَسِّعْ لِیْ فِیْ دَارِیْ وَبَارِکْ لِیْ فِیْ رِزْقِیْ. (حصن حصین/عمل الیوم للنسائی)

अल्लाहुम्मग़्फिरली ज़ंबी व वस्सीअ ली फी दारी व बारिक ली फी रिज़्क़ी। (हिस्न हसीन , अमलुल यवम लिन्निसई)

☆ **वुज़ू के बाद की दुआ:** (उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰھُمَّ اجْعَلْنِیْ مِنَ التَّوَّابِیْنَ وَاجْعَلْنِیْ مِنَ الْمُتَطَھِّرِیْنَ.

(مسلم/ترمذی/ابوداؤد)

अल्लाहुम्मजअलनी मिनत्तव्वाबीन वजअलनी मिनल मुतहह्हिरीन। (मुस्लिम, तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

☆ **घर से निकलने की दुआ:**(अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु)

بِسْمِ اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ. (ابن ماجہ)

बिस्मिल्लाही तवक्कलतु अलल्लाही वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाही। (इब्ने माजा)

☆ **घर में दाख़िल होने की दुआ** : (अबू मालिक अशअरी रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ خَيْرَ الْمَوْلَجِ وَخَيْرَ الْمَخْرَجِ بِسْمِ اللّٰهِ وَلَجْنَا وَبِسْمِ اللّٰهِ خَرَجْنَا وَعَلَى اللّٰهِ رَبِّنَا تَوَكَّلْنَا. (ابوداود)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ख़ैरल मौलजि व ख़ैरल मख़्रजी बिस्मिल्लाही व लजना व बिस्मिल्लाही ख़रजना व अलल्लाही रब्बिना तवक्कलना। (अबू मसऊद)

☆ **सुबह होने की दुआ** : (अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ نَحْيٰى وَبِكَ نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ. (ترمذی ج۲ ص۱۷٦)

अल्लाहुम्म बिक अस्बहना व बिक अमसैना व बिक नहया व बिक नमूतु व इलैकल मसीर। (तिर्मिज़ी जि. २ स. १७६)

☆ **शाम होने की दुआ**: (अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ بِكَ اَمْسَيْنَا وَبِكَ اَصْبَحْنَا وَبِكَ نَحْيٰى وَبِكَ

نَمُوْتُ وَاِلَيْكَ النُّشُوْرُ. (ترمذی ج۲ص۱۷۶)

अल्लाहुम्म बिक अमसैना व बिक अस्बहना व बिक नहया व बिक नमूतु व इलैकन्नुशूर (तिर्मिज़ी जि. २ स. १७६)

☆ **खाना खाने से पहले की दुआ** : (आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा)

بِسْمِ اللّٰهِ (ابن ماجہ۲۳۵) یا بِسْمِ اللّٰهِ وَ بَرَكَةِ اللّٰهِ (مستدرک حاکم)

बिस्मिल्लाही(इब्ने माजा २३५) या बिस्मिल्लाही व बरकतिल्लाही। (मुसतदरक हाकिम)

☆ **शुरू में भूल जाये तो याद आने पर** : (आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा)

بِسْمِ اللّٰهِ اَوَّلَهٗ وَاٰخِرَهٗ. (ترمذی ج۲ص۱۷، شرح مسلم ج۲، ص۲۷۱)

बिस्मिल्लाही अव्वलहु व आख़िरहू।(तिर्मिज़ी, जि. २ स. १४, शरह मुस्लिम जि. २ स. २७१)

☆ **खाना खाने के बाद की दुआ**: (अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ اَطْعَمَنَا وَسَقَانَا وَجَعَلَنَا مُسْلِمِيْنَ.

(ترمذی،ابوداود)

अल हम्दु लिल्लाहील लज़ी अतअमना व सक़ाना व जअलना मुस्लिमीन। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद)

☆ **दावत खाने के बाद की दुआ:**

اَللّٰهُمَّ اَطْعِمْ مَنْ اَطْعَمَنِیْ وَاسْقِ مَنْ سَقَانِیْ.

(مسلم ج۲ ص۱۸۴)

अल्लाहुम्म अतइम मन अतअमनी वस्क़ी मन सक़ानी। (मुस्लिम जि. २ स. १८४)

☆ **दसातरख़्वान उठाने की दुआ:** (अबू अमामा रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ حَمْدًا كَثِيْرًا طَيِّبًا مُّبَارَكًا فِيْهِ غَيْرَ مَكْفِيٍّ وَلَامُوَدَّعٍ وَّلَا مُسْتَغْنًى عَنْهُ رَبَّنَا. (بخاری ج۱ ص۲۸۰، ابوداود ص۵۳۸)

अल हम्दु लिल्लाही हमदन कसीरन तय्यिबम मुबारकन फीही ग़ैर मक्फिय्यन वला मुवद्दइंव्वला मुस्तग़नन अन्हु रब्बना। (बुख़ारी जि. १ स. २८०, अबू दाऊद स. ५३८)

☆ **पानी पीने की दुआ :** (अबू जाफर रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ سَقَانَا عَذْبًا فُرَاتًا بِرَحْمَتِهٖ وَلَمْ يَجْعَلْهُ مِلْحًا اُجَاجًا بِذُنُوْبِنَا. (الدعاالمسنون ص۲۸۰)

अल हम्दु लिल्लाहिल लज़ी सक़ाना अज़्बन फुरातन बिरहमतिही व लम यजअलहु मिल्हन उजाजन बिज़ुनूबिना। (अद्दुआउल मसनून स. २८०)

☆ **दूध पीने की दुआ:** (इब्ने अब्बास रज़ि

अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ بَارِكْ لَنَا فِيْهِ وَزِدْنَا مِنْهُ. (ترمذی ج۲ ص ۱۸۳)

अल्लाहुम्म बारिक लना फीही व ज़िदना मिन्हु। (तिर्मिज़ी जि. २ स. १८३)

☆ **ज़मज़म पीने की दुआ** : (इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَسْأَلُكَ عِلْمًا نَافِعًا وَّرِزْقًا وَّاسِعًا وَّشِفَآءً مِنْ كُلِّ دَآءٍ. (حصن حصین)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक इल्मन नाफिअंव्व रिज़्क़ंव्वासिअंव्व शिफाअम मिन कुल्लि दाइन। (हिस्न हसीन)

☆ **अफतार के वक़्त की दुआ** : मआज़ बिन जुहरा रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ لَكَ صُمْتُ وَعَلٰى رِزْقِكَ اَفْطَرْتُ. (ابوداود)

अल्लाहुम्म लक सुम्तु व अला रिज़्क़िक अफ्तरतु। (अबू दाऊद)

☆ **जब किसी के यहाँ अफतार करे**: (अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَفْطَرَ عِنْدَكُمُ الصَّآئِمُوْنَ وَاَكَلَ طَعَامَكُمُ الْاَبْرَارُ وَصَلَّتْ عَلَيْكُمُ الْمَلٰئِكَةُ (ابوداود)

अफतर इन्दकुमुस्साइमून व अकल तआमकुमुल

अबरारु व सल्लत अलैकुमुल मलाइकतु।(अबू दाऊद)

☆ **सख़्त कड़क के वक़्त की दुआ :** (अबदुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ لَا تَقْتُلْنَا بِغَضَبِكَ وَلَا تُهْلِكْنَا بِعَذَابِكَ وَعَافِنَا قَبْلَ ذٰلِكَ. (ترمذی ج۲ ص۱۸۳)

अल्लाहुम्म ला तक़्तुलना बिग़जबिक वला तुहलिकना बिअज़ाबिक व आफिना क़ब्ल ज़ालिक। (तिर्मिज़ी जि. २ स. १८३)

☆ **बारिश के वक़्त की दुआ:** (आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा)

اَللّٰهُمَّ صَيِّبًا نَّافِعًا. (حصن حصین)

अल्लाहुम्म सय्यिबन्नाफिआ। (हिसने हसीन)

☆ **मुसिलाधार बारिश के वक़्त की दुआ :** अन सईद बिन मुसय्यिब मुर्सिलन :

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْهُ سَيْبَ رَحْمَةٍ وَّلَا تَجْعَلْهُ سَيْبَ عَذَابٍ. (بخاری)

अल्लाहुम्मजअलहु सैब रहमतिंव्व ला तजअलहु सैब अज़ाब। (बुख़ारी)

☆ **किसी को रुख़्सत करने की दुआ:** (अब्दुल्लह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَسْتَوْدِعُ اللّٰهَ دِيْنَكَ وَاَمَانَتَكَ وَخَوَاتِيْمَ

عَمَلِکَ.(ترمذی ج۲/۱۸۲)

अस्तौदिउल्लाह दीनक व अमानतक व ख़वातीम अमलिक। (तिर्मिज़ी जि. २ स. १८२)

☆ **सवारी पर सवार होने की दुआ :** (अब्दुल्लाह इब्ने अमर रज़ि अल्लाहु अन्हु)

سُبْحٰنَ الَّذِیْ سَخَّرَلَنَا هٰذَا وَمَا کُنَّا لَهٗ مُقْرِنِیْنَ وَاِنَّا اِلٰی رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ. (ترمذی ج۲/۱۸۲)

सुबहानल लज़ी सख़्ख़रलना हाज़ा वमा कुन्ना लहू मुक़रिनीन व इन्ना इला रब्बिना लमुनक़लिबून। (तिर्मिज़ी जि. २ स. १८२)

☆ **जब सफर का इरादा करे:** (अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु)

لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِیْکَ لَهٗ، لَهُ الْمُلْکُ وَلَهُ الْحَمْدُ وَهُوَ عَلٰی کُلِّ شَیْئٍ قَدِیْرٌ. (بخاری)

ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू, लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु वहुव अला कुल्लि शैइन क़दीर। (बुख़ारी)

☆ **किसी को मुसीबत और परेशानी में देखने पर :** (उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلَاکَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی کَثِیْرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلًا. (ترمذی ج۲/۱۸۱)

अल हम्दु लिल्लाही आफानी मिम्मब्तलाक बिही व फज़्ज़लनी अला कसीरिम मिम्मन ख़लक़ तफ्ज़ीला (तिर्मिज़ी जि. २ स. १८१)

☆ **सफर से वापसी की दुआ :** (अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اٰئِبُوْنَ تَآئِبُوْنَ عَابِدُوْنَ لِرَبِّنَا حَامِدُوْنَ. (بخاری)

आइबून ताइबून आबिदून लिरब्बिना हामिदून। (बुख़ारी)

☆ **ना मुवाफिक़ हालत पेश आने पर :** (इमाम ग़िज़ाली रहमतुल्लाह अलैह)

عَسٰى رَبُّنَا اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَا اِنَّا اِلٰى رَبِّنَا رَاغِبُوْنَ. (قرآن)

असा रब्बुना अंय्युबदि लना ख़ैरम मिनहा इन्ना इल रब्बिना राग़िबून। (कुरआन)

☆ **नया पकड़ा पहनने की दुआ:**

اَللّٰهُمَّ لَکَ الْحَمْدُ اَنْتَ کَسَوْتَنِيْهِ وَاَسْاَلُکَ خَيْرَهٗ وَخَيْرَ مَاصُنِعَ لَهٗ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّهٖ وَشَرِّمَا صُنِعَ لَهٗ (ترمذی)

अल्लाहुम्म लकल हम्दु अन्त कसवतनीही व अस्अलुक ख़ैरहू व ख़ैर मा सुनिअ लहू व अऊज़ुबिक मिन शर्रिही व शर्रि मा सुनिअ लहू (तिर्मिज़ी)

☆ **आइना में चेहरा देखने की दुआ :**

(अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु) अल्लाहुम्म

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ حَسَّنْتَ خَلْقِيْ فَحَسِّنْ خُلُقِيْ. (ابن حبان)

अल्लाहुम्म अन्त हस्सनात ख़ल्क़ी फहस्सिन ख़ुलुक़ी। (इब्ने हब्बान)

☆ **मरीज़ की इयादत के वक़्त की दुआ:** (आइशा रज़ि अल्लाहु अन्हा)

اَذْهِبِ الْبَأْسَ رَبَّ النَّاسِ، وَاشْفِ اَنْتَ الشَّافِيْ لَاشِفَآءَ اِلَّا شِفَاءُكَ شِفَآءً لَّا يُغَادِرُ سَقَمًا. (مسلم ج۲ ص۲۲۲)

अज़हिबिलबस रब्बन्नासी, वशफी अन्तश्शाफी ला शिफाअ इल्ला शिफाउक शिफाअल्ला युग़ादिरु सक़मा।(मुस्लिम जि. २ स. २२२)

☆ **जब कोई ऐहसान करे:**(उसामा बिन ज़ैद रज़ि अल्लाहु अन्हु)

جَزَاكَ اللّٰهُ خَيْرًا. (ترمذی)

जज़ाकल्लाहु ख़ैरा। (तिर्मिज़ी)

☆ **गुस्सा के वक़्त की दुआ:** (आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِيْ ذَنْبِيْ اَذْهِبْ غَيْظَ قَلْبِيْ وَاَجِرْنِيْ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ (ابن السنی)

अल्लाहुम्मग़्फिरली ज़ंबी अज़हिब ग़ैज़ क़ल्बी व अजिरनी मिनश्शैतानिर्रजीम। (इब्ने सिनी)

☆ **नया चाँद देखने परः** (तलहा बिन उबैद रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ اَهِلَّهُ عَلَيْنَا بِالْيُمْنِ وَالْاِيْمَانِ وَالسَّلَامَةِ وَالْاِسْلَامِ رَبِّیْ وَرَبُّکَ اللّٰهُ هِلَالَ رُشْدٍ وَخَيْرٍ. (ترمذی)

अल्लाहुम्म अहिल्लहू अलैना बिल युमनी वल ईमानी वस्सलामति वल इस्लामी रब्बि व रब्बुकल्लाहु हिलाल रुशदिंव्व ख़ैर। (तिर्मिज़ी)

☆ **मग़्रिब की अज़ान के वक़्त की दुआः** (उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ اِنَّ هٰذَا اِقْبَالُ لَيْلِکَ وَاِدْبَارُنَهَارِکَ وَاَصْوَاتُ دُعَاتِکَ فَاغْفِرْلِیْ. (ابوداود)

अल्लाहुम्म इन्न हाज़ा इक़्बालु लैलक व इदबारुनहारिक़ व अस्वातु दुआतिक फग़्फिरली।(अबू दाऊद)

☆ **दोनों सजदों के दरमियान की दुआः** (इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَارْحَمْنِیْ وَاجْبُرْنِیْ وَاهْدِنِیْ وَارْزُقْنِیْ. (ترمذی ج۱ص۶۳)

अल्लाहुम्मग़्फिरली वरहमनी वजबुरनी वहदिनी वरजुक़्नी। (तिर्मिज़ी जि. १ स. ६३)

☆ **सजदये तिलावत की दुआः** (आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा)

سَجَدَ وَجْهِىْ لِلَّذِىْ خَلَقَهٗ وَصَوَّرَهٗ وَشَقَّ سَمْعَهٗ وَبَصَرَهٗ بِحَوْلِهٖ وَقُوَّتِهٖ تَبَارَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخَالِقِيْنَ. (مسلم ج١ ص٢٦٣)

सजद वजही लिल्लज़ी ख़लक़हू व सव्वरहू व शक़्क़ समअहू व बसरहू बिहौलिही व क़ुव्वतिही तबारकल्लाहु अहसनुल ख़ालिक़ीन।(मुस्लिम जि. १ स. २६२)

☆ **क़ब्रिस्तान में दाख़िल होने की दुआ:** (इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَلسَّلَامُ عَلَيْكُمْ يَااَهْلَ الْقُبُوْرِ، يَغْفِرُ اللّٰهُ لَنَا وَلَكُمْ، اَنْتُمْ سَلَفُنَا وَنَحْنُ بِالْاَثَرِ. (ترمذی)

अस्सलामु अलैकुम या अहलल क़ुबूरी, यग़्फ़िरुल्लाहु लना व लकुम, अन्तुम सलफ़ुना व नहनु बिल असरी।(तिर्मिज़ी)

☆ **क़ब्र में जनाज़ा रखने की दुआ:** (अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु)

بِسْمِ اللّٰهِ وَبِاللّٰهِ عَلٰى مِلَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ وَسُنَّةِ رَسُوْلِ اللّٰهِ. (ترمذی)

बिस्मिल्लाही व बिल्लाही अल मिल्लति रसूलिल्लाही व सुन्नती रसूलिल्लाह। (तिर्मिज़ी)

☆ **क़ब्र में मिट्टी डालने की दुआ:** (अन अबी अमामत रज़ि अल्लाहु अन्हु)

مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا نُخْرِجُكُمْ تَارَةً

اُخْــرٰی. (قرآن کریم)

मिन्हा ख़लक़नाकुम व फ़ीहा नुईदुकुम व मिन्हा नुख़्रिजुकुम तारतन उख़्रा। (कुरआन करीम)

☆ **अदाये क़र्ज़ की दुआ:** (अली रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ. (ترمذی)

अल्लाहुम्मक्फ़िनी बिहलालिक अन हरामिक व अग़िननी बिफज़्लिक अम्मन सिवाक। (तिर्मिज़ी)

☆ **नमाज़े फ़ज्र के लिए मस्जिद जाते वक़्त की दुआ :**

اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ فِىْ قَلْبِىْ نُوْرًا وَّفِىْ لِسَانِىْ نُوْرًا وَّفِىْ بَصَرِىْ نُوْرًا وَّفِىْ سَمْعِىْ نُوْرًا وَّعَنْ يَّمِيْنِىْ نُوْرًا وَّعَنْ شِمَالِىْ نُوْرًا وَّخَلْفِىْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ لِّىْ نُوْرًا وَّ فِىْ عَصَبِىْ نُوْرًا وَّ فِىْ لَحْمِىْ نُوْرًا وَّ فِىْ دَمِىْ نُوْرًا وَّفِىْ شَعْرِىْ نُوْرًا وَّفِىْ بَشَرِىْ نُوْرًا وَّفِىْ لِسَانِىْ نُوْرًا وَّاجْعَلْ فِىْ نَفْسِىْ نُوْرًا وَّ اَعْظِمْ لِىْ نُوْرًا وَّ اجْعَلْنِىْ نُوْرًا وَّ اجْعَلْ مِنْ فَوْقِىْ نُوْرًا وَّ مِنْ تَحْتِىْ نُوْرًا اَللّٰهُمَّ اَعْطِنِىْ نُوْرًاط

अल्लाहुम्मजअल फी क़ल्बी नूरंव्व फी लिसानी

नूरंव्व फी बसरी नूरंव्व फी समअी नूरंव्व अंय्यमीनी नूरंव्व अन शिमाली नूरंव्व ख़ल्फी नूरंव्व जअल्ली नूरंव्व फी असबी नूरंव्व फी लहमी नूरंव्व फी दमी नूरंव्व फी शअरी नूरंव्व फी बशरी नूरंव्व फी लिसानी नूरंव्वजअल फी नफ्सी नूरंव्व आज़िम ली नूरंव्वजअलनी नूरंव्वजअल मिन फौक़ी नूरंव्व मिन तहती नूरन अल्लाहुम्म आतिनी नूरा।

☆ **निकाह पर मुबारकबादी की दुआः** (अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु)

بَارَكَ اللّٰهُ لَكَ وَعَلَيْكَ وَجَمَعَ بَيْنَكُمَا فِيْ خَيْرٍ. (ترمذی)

बारकल्लाहु लक व अलैक व जमअ बैनकुमा फी खैर। (तिर्मिज़ी)

☆ **मजलिस से खड़े होने की दुआ** : (अबी बरज़ह असलमी रज़ि अल्लाहु अन्हु)

سُبْحَانَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ، وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ (الدعا المسنون ص ۴۲۴)

सुबहानक अल्लाहुम्म व बिहमदिक, व अशहदु अल्लाइलाह इल्ला अन्त, अस्तग़्फिरुक व अतूबु इलैक। (अद्दुआउल मसनून स. ४२४)

☆ **अहम काम शुरू करते वक़्त की दुआः** (इमाम ग़ज़ाली रहमतुल्लाह)

رَبَّنَـا اٰتِـنَا مِنْ لَّدُنْکَ رَحْمَةً وَّ هَيِّئْ لَنَا مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا

رَبِّ اشْرَحْ لِیْ صَدْرِیْ وَیَسِّرْلِیْ اَمْرِیْ۔ (قرآن کریم)

रब्बना आतिना मिल्लदुनक रहमतंव्व हय्यिलना मिन अमरिना रशदन रब्बिशरह ली सदरी व यस्सिरली अमरी। (कुरआन करीम)

☆ **क़र्ज़ अदा करते वक़्त** : (अब्दुल्लाह बिन रबीअ रज़ि अल्लाहु अन्हु)

بَارَکَ اللّٰهُ لَکَ فِیْ اَهْلِکَ وَمَالِکَ. (نسائی)

बारकल्लाहु लक फी अहलिक व मालिक। (निसई)

☆ **किसी अज़ीज़ की मौत की ख़बर सुन कर:** (उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा)

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّا اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِیْ فِیْ مُصِيْبَتِیْ وَاخْلُفْ لِیْ خَيْرًا مِّنْهَا۔ (مسلم)

इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैहि राजिऊन अल्लाहुम्म अजिरनी फी मुसीबती वख़्लुफ ली ख़ैरम मिन्हा। (मुस्लिम)

☆ **तबीयत के नामुवाफिक़ हालत पेश आने पर:** (अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰی کُلِّ حَالٍ وَاَعُوْذُبِاللّٰهِ مِنْ حَالِ اَهْلِ النَّارِ. (ترمذی)

अल हम्दु लिल्लाही अला कुल्लि हालिन व अऊज़ु बिल्लाही मिन हालिन अहलिन्नार। (तिर्मिज़ी)

☆ **कश्ती या जहाज़ में सवार होने पर:** (इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु)

بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖهَا وَمُرْسٰهَا اِنَّ رَبِّیْ لَغَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ. (طبرانی)

बिस्मिल्लाही मजरेहा व मुरसाहा इन्न रब्बी लग़फ़ूरुर्रहीम। (तबरानी)

☆ **सअदते दारैन की दुआ:** (इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु)

اَللّٰهُمَّ اَدْخِلْنَا فِی الْمُجَاهِدِیْنَ وَاَحْیِنَا مَعَهُمْ وَاَمِتْنَا مَوْتَ الصَّالِحِیْنَ وَاحْشُرْنَا مَعَهُمْ. (ترمذی)

अल्लाहुम्म अदख़िलना फिल मुजाहिदीन व अहयिना मअहुम व अमितना मौतस्सालिहीन वहशुरना मअहुम। (तिर्मिज़ी)

☆ **आग से आज़ादी:** जो शख़्स सुबह या शाम यह दुआ चार मर्तबा पढ़ेगा अल्लाह पाक उसे आग से आज़ाद कर देगा।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَصْبَحْتُ اُشْهِدُکَ وَاُشْهِدُ حَمَلَةَ عَرْشِکَ وَمَلٰٓئِکَتَکَ وَجَمِیْعَ خَلْقِکَ بِاَنَّکَ اَنْتَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ وَحْدَکَ لَا شَرِیْکَ لَکَ وَاَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُکَ وَرَسُوْلُکَ. (ابوداؤد ۳۱۸/۴، ادب المفرد للبخاری حدیث ۱۲۰۱)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्बहतु उशहिदुक व उशहिदु हमलत अर्शिक व मलाइकतक व जमीउ ख़ल्क़िक बिअन्नक अन्तल्लाहु ला इलाह इल्ला अन्त वहदक ला शरीक लक व अन्न मुहम्मदन अब्दुक व रसूलुक। (अबू दाऊद जि. ४ स.३१८, अदबुल मुफरद लिल बुख़ारी हदीस १२०१)

ग़मों को मुसर्रत से बदलने के लिए:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ عَبْدُکَ وَابْنُ عَبْدِکَ وَابْنُ اَمَتِکَ نَاصِیَتِیْ بِیَدِکَ مَاضٍ فِیَّ حُکْمُکَ عَدْلٌ فِیَّ قَضَائُکَ اَسْئَلُکَ بِکُلِّ اسْمٍ هُوَ لَکَ سَمَّیْتَ بِهٖ نَفْسَکَ اَوْ اَنْزَلْتَهٗ فِیْ کِتَابِکَ اَوْ عَلَّمْتَهٗ اَحَداً مِّنْ خَلْقِکَ اَوِاسْتَاْثَرْتَ بِهٖ فِیْ عِلْمِ الْغَیْبِ عِنْدَکَ اَنْ تَجْعَلَ الْقُرْآنَ الْعَظِیْمَ رَبِیْعَ قَلْبِیْ وَنُوْرَ بَصَرِیْ وَجَلَاءَ حُزْنِیْ وَذَهَابَ هَمِّیْ.

अल्लाहुम्म इन्नी अब्दुक वब्नु अब्दिक वब्नु अमतिक नासियती बियदिक माज़िन फिय्य हुक्मुक अद्लुन फिय्य क़ज़ाउक अस्अलुक बिकुल्लिस्मिन हुव लक सम्मैत बिही नफ्सक अव अंज़लतहू फी किताबिक अव अल्लमतहू अहदम मिन ख़ल्क़िक अविस्तासरत बिही फी इल्मिल ग़ैबी इन्दक अन तजअलल कुरआनल अज़ीम रबीअ क़ल्बी व नूर बसरी व जलाअ हुज़नी व ज़हाब हम्मी।

सय्यदना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमा किसी को कोई ग़म या परेशानी या फिक्र लाहिक़ हो तो यह दुआ पढ़ा करे अल्लाह पाक उसकी बरकत से न सिर्फ उसकी परेशानी, तफर्रुकात दूर फरमा देगा बल्कि उसके हुमूम व गुमूम को मुसर्रत, खुशी व राहत में तबदील फरमा देगा। सहाबये किराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन ने अर्ज़ किया, या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! हम लोग उसे याद न कर लें? सय्यदना रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया, हाँ, तुम भी उसको याद कर लो और तुम्हारे अलावा जो भी उसको सुने उसको भी चाहिये कि उसको याद कर ले। (इब्ने कसीर जि. २ स. २५०, अहमद मुस्तदरक हाकिम जि. १ स. ६९०, हदीस १८७७)

☆ **दुनियावी आज़माइश से ख़ुलासी:** हज़रत बुसर बिन अबी अरतात रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह दुआ मांगते सुना है।

اَللّٰهُمَّ اَحْسِنْ عَاقِبَتَنَا فِى الْاُمُوْرِ كُلِّهَا وَاَجِرْنَا مِنْ خِزْىِ الدُّنْيَا وَعَذَابِ الْاٰخِرَةِ.

अल्लाहुम्म अहसिन आक़िबतना फिल उमूरी कुल्लिहा व अजिरना मिन ख़िज़यिद्दुनिया व अज़ाबिल आख़िरह।

☆ तरवाही की दुआ:

سُبْحَانَ ذِی الْمُلْکِ وَالْمَلَکُوْتِ، سُبْحَانَ ذِی الْعِزَّةِ وَالْعَظَمَةِ وَالْهَیْبَةِ وَالْقُدْرَةِ وَالْکِبْرِیَآءِ وَالْجَبَرُوْتِ، سُبْحَانَ الْمَلِکِ الْحَیِّ الَّذِیْ لَایَنَامُ وَلَایَمُوْتُ، سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّنَا وَرَبُّ الْمَلٰٓئِکَةِ وَالرُّوْحِ، اَللّٰهُمَّ اَجِرْنَامِنَ النَّارِ، یَامُجِیْرُ یَامُجِیْرُ یَامُجِیْرُ. (شامی)

सुबहान ज़िल मुलाकी वल मलकूती, सुबहान ज़िल इज़्ज़ती वल अज़मती वल हैबती वल कुदरती वल किबरियाइ वल जबरूती, सुबहानल मलिकिल हय्यिल्लज़ी ला यनामु व ला यमूतु, सुब्बूहुन कुद्दूसुन रब्बुना व रब्बुल मलाइकती वरूही, अल्लाहुम्म अजिरना मिनन्नारी, या मुजीरु या मुजीरु या मुजीरु। (शामी)

☆ जब कुरबानी का जानवर क़िब्ला रुख़ लिटा दे तो पहले यह दुआ पढ़े:

اِنِّیْ وَجَّهْتُ وَجْهِیَ لِلَّذِیْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ حَنِیْفًا وَّمَا اَنَا مِنَ الْمُشْرِکِیْنَ اِنَّ صَلَاتِیْ وَنُسُکِیْ وَمَحْیَایَ وَمَمَاتِیْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ☆ لَاشَرِیْکَ لَهٗ وَبِذٰلِکَ اُمِرْتُ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِیْنَ ☆ اَللّٰهُمَّ مِنْکَ وَلَکَ.

इन्नी वज्जहतु वजहिय लिल्लज़ी फतरस्समावाती वल अर्ज़ा हनीफंव्व मा अना मिनल मुश्रिकीन इन्न सलाती व नुसुकी व महयाय व ममाती लिल्लाही रब्बिल आलमीन, ला शरीक लहु व बिज़ालिक उमिरतु व अना मिनल मुस्लिमीन। अल्लाहुम्म मिन्क व लक । फिर:

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُ اَكْبَرُ

बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर

फिर बिस्मिल्लाही अल्लाहु अक्बर कह कर ज़िबह करे और ज़िबह करने के बाद यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ تَقَبَّلْهُ مِنِّىْ كَمَا تَقَبَّلْتَ مِنْ حَبِيْبِكَ مُحَمَّدٍ وَّخَلِيْلِكَ اِبْرَاهِيْمَ عَلَيْهِمَا الصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ. (احمد،

ابوداؤد، ابن ماجہ)

अल्लाहुम्म तक़ब्बलहु मिन्नी कमा तक़ब्बलत मिन हबीबिक मुहम्मदिंव्व ख़लीलिक इबराहीम अलैहिमस्सलात वस्सलाम। (अहमद, अबू दाऊद, इब्ने माजा)

नोट: अगर यही दूसरे की तरफ से पढ़ी जाये तो दुआये मज़कूरा में 'मिन्नी' के बजाये 'मिन' कहे और फिर उस का नाम ले।

फराइज़, वाजिबात, सुनन
(माख़ूज़ अज़ तालीमुल इस्लाम)

फराइज़े गुस्ल

गुस्ल में तीन फर्ज़ हैं (१) कुल्ली करना (२) नाक में पानी डालना। (३) तमाम बदन पर पानी बहाना।

गुस्ल की सुन्नतें

गुस्ल में पाँच सुन्नतें हैं (१) दोनों हाथ गट्टों तक धोना (२) इस्तिनजा करना और जिस जगह बदन पर निजासत लगी हो उसे धोना। (३) नापाकी दूर करने की निय्यत करना। (४) पहले वुज़ू कर लेना। (५) तमाम बदन पर तीन बार पानी बहाना।

फराइज़े वुज़ू

फराइज़े वुज़ू चार हैं: (१) पूरा चेहरा धोना। (२) दोनों हाथ कुहनियों समेत धोना। (३) चौथाई सर का मसह करना। (४) दोनों पैर टख़्नों समेत धोना।

नवाकि़ज़े वुज़ू

नवाकि़ज़े वुज़ू आठ हैं: (१) पाख़ाना या पेशाब करना, या उन दोनों रास्तों से किसी चीज़ का

निकलना। (२) रीह यानी हवा का पीछे से निकलना। (३) बदन के किसी हिस्से से ख़ून या पीप का निकल कर बह जाना। (४) मुंह भर कर क़ैय करना। (५) लेट कर या सहारा लगा कर सो जाना। (६) बीमारी या और किसी वजह से बेहोश हो जाना। (७) मजनून यानी दीवाना हो जाना। (८) रुकूअ और सजदे वाली नमाज़ में क़हक़हा मार कर हंसना।

मकरूहाते वुज़ू

वुज़ू में चार चीज़ें मकरूह हैं:

(१) नापाक जगह पर वुज़ू करने में दुनिया की बातें करना। (२) सीधे हाथ से नाक साफ करना। (३) वुज़ू करने में दुनिया की बातें करना। (४) सुन्नत के ख़िलाफ वुज़ू करना।

तयम्मुम के फराइज़

तयम्मुम के फराइज़ तीन हैं:

(१) निय्यत करना। (२) दोनों हथेलियों को ज़मीन पर मार कर पूरे चेहरे पर मलना। (३) दोनों हाथों को ज़मीन पर मार कर कुहनियों समेत मलना।

शराइते नमाज़

शराइते नमाज़ सात हैं:

(१) बदन का पाक होना। (२) कपड़े का पाक होना। (३) जगह का पाक होना। (४) सतर का छुपाना। (५) नमाज़ का वक़्त होना। (६) क़िब्ला की तरफ मुंह करना। (७) निय्यत करना।

नमाज़ के फराइज़

नमाज़ के फराइज़ छः हैं:

(१) तकबीरे तहरीमा यानी अल्लाहु अक्बर कहना। (२) क़याम यानी खड़ा होना। (३) क़िरात यानी कुरआन की तीन छोटी आयात या एक बड़ी आयत का पढ़ना। (४) रूकूअ करना। (५) दो सजदे करना। (६) क़अदये अख़ीरा में तशहहुद की मिक़दार बैठना।

वाजिबाते नमाज़

वाजिबाते नमाज़ चौदह हैं :

(१) फर्ज़ की पहली दो रकअतों को क़िरात के लिए मुक़र्रर करना। (२) फर्ज़ नमाज़ों की तीसरी और चौथी रकअत के अलावा तमाम नमाज़ों की हर रकअत में सूरये फातेहा पढ़ना। (३) फर्ज़ नमाज़ों की पहली दो रकअतों में और वाजिब और सुन्नत और नफ्ल नमाज़ों की तमाम रकअतों में सुरये

फातेहा के बाद कोई सूरह या बड़ी एक आयत या छोटी तीन आयतें पढ़ना। (४) सूरये फातेहा को सूरह से पहले पढ़ना। (५) क़िरात और रूकूअ में और सजदों और रकअतों में तरतीब क़ायम रखना। (६) क़ौमा कारना यानी रुकूअ से उठ कर सीधा खड़ा होना। (७) जलसा यानी दोनों सजदों के दरमियान मैं सीधे बैठ जाना। (८) तअदील अर्कान यानी रुकूअ सजदा वग़ैरह को इतमिनान से अच्छी तरह अदा करना। (९) क़अदा ऊला यानी तीन और चार रकअत वाली नमाज़ में दो रकअतों के बाद तशह्हुद की मिक़दर बैठना। (१०) दोनों क़अदों में तशह्हुद पढ़ना। (११) इमाम को नमाज़े फज्र, मग़िरब, इशा, जुमा ईदैन, तरावीह और रमज़ान शरीफ के वित्रों में आवाज़ से क़िरात करना और ज़ोहर अस्र वग़ैरह नमाज़ों में आहिस्ता पढ़ना। (१२) लफ्ज़े सलाम के साथ नमाज़ से अलाहिदा होना। (१३) नमाज़े वित्र में कुनूत के लिए तकबीर कहना और कुनूत पढ़ना। (१४) दोनों ईदों की नमाज़ में ज़ायद तकबीरें कहना।

मक्रूहाते नमाज़

नमाज़ के अंदर २९ चीज़ें मक्रूह हैं:

(१) सदल यानी कपड़े को लटकाना, मस्लन चादर सर पर डालना उसके दोनों किनारे लटका

देना। या उचकन या चोग़ा बग़ैर उसके कि आस्तीनों में हाथ डाले जायें कंधों पर डाल लेना। (२) कपड़ों को मिट्टी से बचाने के लिए हाथ से रोकना या समेटना। (३) अपने कपड़ों या बदन से खेलना। (४) मामूली कपड़ों में जिन्हें पहन कर मजमा में जाना पसंद नहीं किया जाता नमाज़ पढ़ना। (५) मुंह में रूपया या पैसा या और कोई ऐसी चीज़ रख कर नमाज़ पढ़ना जिस की वजह से क़िरात करने से मजबूर न रहे और अगर क़िरात से मजबूरी हो जाये तो बिल्कुल नमाज़ न होगी। (६) सुस्ती और बेपरवाई की वजह से नंगे सर नमाज़ पढ़ना। (७) पाख़ाना या पेशाब की हाजत होने की हालत में नमाज़ पढ़ना। (८) बालों को सर पर जमा करना चुट्टा बांधना। (९) कंकरियों को हटाना लेकिन अगर सजदा करना मुश्किल हो तो एक मर्तबा हटाने में मुज़ायक़ नहीं। (१०) उंगलियाँ चटखाना या एक हाथ की उंगलियाँ दूसरे हाथ की उंगलियों में डालना। (११) कमर या कोख या कूलहे पर हाथ रखना। (१२) क़िब्ले की तरफ से मुंह फेर कर या सिर्फ निगाह से इधर उधर देखना। (१३) कुत्ते की तरह बैठना यानी रानें खड़ी कर के बैठना और रानों को पेट से और घुटनों को सीने से मिला लेना और हाथों को ज़मीन पर रख लेना। (१४) सजदे में दोनों कलाइयों को ज़मीन पर बिछा लेना मर्द के

लिए मक्रूह है। (१५) किसी ऐसे आदमी की तरफ नमाज़ पढ़ना जो नमाज़ी की तरफ मुंह किये हुये बैठा हो। (१६) हाथ या सर के इशारे से सलाम का जवाब देना। (१७) बिला उज़्र चार ज़ानों (आलती पालती मार कर) बैठना। (१८) क़सदन जमाई लेना या रोक सकने की हालत में न रोकना। (१९) आँखों को बंद करना लेकिन अगर नमाज़ में दिल लगने के लिए बंद करे तो मक्रूह नहीं। (२०) इमाम का मेहराब के अंदर खड़ा होना लेकिन अगर क़दम मेहराब से बाहर हों तो मक्रूह नहीं। (२१) अकेले इमाम का एक हाथ ऊँची जगह पर खड़ा होना और अगर उसके साथ कुछ मुक़तदी भी हों तो मकरूह नहीं। (२२) ऐसी सफ के पीछे अकेले खड़े होना जिस में ख़ाली जगह हो। (२३) किसी जानदार की तस्वीर वाले कपड़े पहन कर नमाज़ पढ़ना। (२४) ऐसी जगह नमाज़ पढ़ना कि नमाज़ी के सर के ऊपर या उसके सामने या दायें बायें तरफ या सजदे की जगह तस्वीर हो। (२५) आयतें या सूरतें या तस्बीहें उंगलियों पर शुमार करना। (२६) चादर या और कोई कपड़ा इस तरह लिपेट कर नमाज़ पढ़ना कि जल्दी से हाथ न निकल सकें। (२७) नमाज़ में अंगड़ाई लेना यानी सुस्ती उतारना। (२८) अमामा के पीच पर सजदा करना। (२९) सुन्नत के ख़िलाफ नमाज़ में कोई काम करना।

मुफसिदाते नमाज़

मुफसिदाते नमाज़ उन चीज़ों को कहते हैं जिन से नमाज़ फासिद हो जाती है यानी टूट जाती है और उसे लौटाना ज़रूरी हो जाता है। और वह १८ हैं:

(१) नमाज़ में कलाम करना क़स्दन हो या भूल कर थोड़ा या बहुत, हर सूरत में नमाज़ टूट जाती है। (२) सलाम करना यानी किसी शख़्स को सलाम करने के क़स्द से सलाम या तस्लीम या अस्सलामु अलैकुम या उसी जैसा कोई लफ्ज़ कह देना। (३) सलाम का जवाब देना या छींकने वाले को 'यरहमुकल्लाह' या नमाज़ से बाहर वाले किसी शख़्स की दुआ पर आमीन कहना। (४) किसी बुरी ख़बर पर

اِنَّا لِلّٰهِ وَاِنَّآ اِلَيْهِ رَاجِعُوْنَ

'इन्ना लिल्लाही व इन्ना इलैही राजिऊन'

पढ़ना या किसी अच्छी ख़बर पर 'अल हम्दु लिल्लाह' कहना या किसी अजीब ख़बर पर सुबहानल्लाह कहना। (५) दर्द या रंज की वजह से "आव" या "उफ" करना। (६) अपने इमाम के सिवा किसी दूसरें को लुक़मा देना यानी क़िरात बताना। (७) कुरआन शरीफ देख कर पढ़ना। (८)

कुरआन मजीद पढ़ने में कोई सख़्त ग़लती करना। (९) अमले कसीर करना यानी कोई ऐसा काम करना जिस से देखने वाले यह समझें कि यह शख़्स नमाज़ नहीं पढ़ रहा है। (१०) खाना पीना क़स्दन हो या भूले से। (११) दो सफों की मिक़दार के बराबर चलना। (१२) क़िब्ले की तरफ से बिला उज़्र सीना फेर लेना। (१३) नापाक जगह पर सजदा करना। (१४) सतर खुल जाने की हालत में एक रुक्न की मिक़दार ठहरना। (१५) दुआ में ऐसी चीज़ मांगना जो आदमियों से मांगी जाती है। मस्लन या अल्लाह मुझे आज सौ रूपये दे दे। (१६) दर्द या मुसीबत की वजह से इस तरह रोना कि आवाज़ में हुरूफ ज़ाहिर हो जायें। (१७) बालिग़ आदमी का नमाज़ में क़हक़हा मार कर या आवाज़ से हंसना। (१८) इमाम से आगे बढ़ जाना वग़ैरह।

नफ़िली नमाज़ों का सवाब

इत्तिबाये सुन्नत से आदमी अल्लाह का महबूब बनता है और नवाफिल से अल्लाह का कुर्ब मिलता है बाज़ नफ़िलों का सवाब बहुत ज़्यादा है इस लिए उसका ऐहतेमाम करना चाहिये मस्लन तहियतुल वुज़ू, तहियतुल मस्जिद, इशराक़, चाश्त अव्वाबीन तहज्जुद और सलातुत्तस्बीह है।

तहियतुल वुज़ू

तहियतुल वुज़ू उसको कहते हैं कि जब कभी वुज़ू करे तो वुज़ू के बाद दो रकअत नफिल पढ़ लिया करे हदीस शरीफ में है कि जो शख़्स कामिल तरीक़े से वुज़ू करने के बाद दो रकअत नफिल नमाज़ इस तरह पढ़े कि ख़ुद से ख़्यालात न लाये तो उसके तमाम गुनाहों की मग़्फिरत हो जाती है। लेकिन औक़ाते मक्रूहा में न पढ़े। (तिर्मिज़ी)

अव्वाबीन

मग़्रिब की फर्ज़ और सुन्नतों के बाद कम से कम छः रकअतें और ज़्यादा से ज़्यादा बीस रकअतें पढ़े उसको अव्वाबीन कहते हैं। उस की हदीस शरीफ में बड़ी फज़ीलत आई है हदीस में है कि जो शख़्स उन नफिलों को इस तरह पढ़े कि उनके दरमियान कोई बुरी बात न करे तो उसको १२ साल की नफिलों को बराबर सवाब मिलेगा। (सुनने अबू दाऊद, मिश्कात, बेहक़ी, अद्दुर्रुल मख़्तार)

इशराक़ की नमाज़

हदीस शरीफ में आता है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जिस शख़्स ने फज्र की नमाज़ जमात के साथ अदा की और फिर सूरज निकलने तक वहीं बैठा रहा

और कुरआन या दुरूद शरीफ या कलिमये तैय्यबा या कोई और वज़ीफा पढ़ता रहा। फिर दो रकअतें इश्राक़ की पढ़ें। (फिर मस्जिद से वापस आया) तो उसको एक मक़्बूल हज और उम्रा का सवाब मिलेगा। (अत्तरग़ीब वत्तरहीब)

जैसे आज ही माँ के पेट से पैदा हुआ

जो शख़्स फज्र की नमाज़ पढ़ कर अपनी जगह बैठा रहे, अल्लाह का ज़िक्र करता रहे और कोई दुनियावी बात न करे फिर इश्राक़ के वक़्त चार रकअत नमाज़ पढ़े तो वह अपने गुनाहों से ऐसा पाक साफ हो जाता है जैसे आज ही माँ के पेट से पैदा हुआ। (कंज़ुल उम्माल जि. २ स.६८, इब्ने सिनी अन आयशा)

चाश्त की नमाज़

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद है कि जो शख़्स अल्लाह के वास्ते (यानी इख़्लास से) बारा रकअत चाश्त की नमाज़ रोज़ाना पढ़ता रहे हक़ तआला शानहू उसके लिए जन्नत में एक महल बनाता है। हदीस शरीफ में वारिद है कि चाश्त की सिर्फ चार रकअत पढ़ने से बदन में तीन सौ साठ जोड हैं उन सब का सदक़ा अदा हो जाता है और तमाम सग़ीरा गुनाहों की माफी हो जाती है।(मुस्लिम)

यह नमाज़ अफलास और गुरबत दूर करने का अजब नुस्ख़ा है उसकी कम से कम दो और ज़्यादा से ज़्यादा १२ रकअतें हैं। उस का वक़्त सूरज में ख़ूब तेज़ी आ जाने के बाद निस्फुन्नहार शुरू होने तक है यानी तक़्रीबन दस बजे से ग्यारह बजे तक।

तहज्जुद की नमाज़

१. हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि हमारा मालिक अल्लाह पाक हर रात को जिस वक़्त आख़िरी तिहाई रात बाक़ी रह जाती है तो आसमाने दुनिया की तरफ नुज़ूल फरमाता है और इर्शाद फरमाता है कौन है जो मुझ से दुआ करे और मैं उसकी दुआ क़बूल करूँ कौन है जो मुझ से मांगे मैं उसको अता करूँ। कौन है जो मुझ से मग़्फिरत और बख़्शिश चाहे मैं उसको बख़्श दूँ। (बुख़ारी जि. १ स. १५३, मुस्लिम)

२. हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से एक तवील हदीस में रिवायत है कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का तहज्जुद बवजह सो रहने या किसी दर्द या मर्ज़ के सबब नाग़ा हो जाता तो आप दिन में बतौर उसकी क़ज़ा के) बारह रकअत पढ़ लेते थे। (शमाइले तिर्मिज़ी)

आधी रात उठ कर नमाज़ पढ़ने का बड़ा ही

सवाब है उसको तहज्जुद कहते हैं यह नमाज़ अल्लाह के नज़दीक बहुत मक़बूल है और सब से ज़्यादा उसका सवाब मिलता है तहज्जुद की नमाज़ कम से कम चार रकअतें और ज़्यादा से ज़्यादा १२ रकअतें हैं न हो तो दो ही रकअतें सही, अगर पिछली रात को हिम्मत न हो तो ईशा के बाद ही पढ़ ले एक सहाबी का अमल था वह इशा के बाद ही पढ़ लेते थे लेकिन इशा के बाद वैसा सवाब न होगा सहर के वक़्त का पढ़ लेना कुछ और ही बात है।

हदीस शरीफ में आया है कि फर्ज़ नमाज़ के बाद सब से अफज़ल नमाज़ आख़िर शब में तहज्जुद की नमाज़ है।

तहज्जुद के वक़्त की दुआ

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ قَيِّمُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ مَلِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَنْ فِيْهِنَّ وَلَكَ الْحَمْدُ اَنْتَ الْحَقُّ وَوَعْدُكَ الْحَقُّ وَلِقَاؤُكَ حَقٌّ وَّقَوْلُكَ حَقٌّ وَّالْجَنَّةُ حَقٌّ وَّالنَّارُ حَقٌّ وَّالنَّبِيُّوْنَ حَقٌّ وَّمُحَمَّدٌ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ حَقٌّ اَللّٰهُمَّ لَكَ اَسْلَمْتُ وَبِكَ اٰمَنْتُ وَعَلَيْكَ تَوَكَّلْتُ

وَاِلَيۡکَ اَنَبۡتُ وَبِکَ خَاصَمۡتُ وَاِلَيۡکَ حَاکَمۡتُ
اَنۡتَ رَبُّنَا وَاِلَيۡکَ الۡمَصِيۡرُ فَاغۡفِرۡلِيۡ مَاقَدَّمۡتُ
وَمَا اَخَّرۡتُ وَمَآ اَسۡرَرۡتُ وَمَآ اَعۡلَنۡتُ وَمَآ اَنۡتَ اَعۡلَمُ بِهٖ
مِنِّيۡ اَنۡتَ الۡمُقَدِّمُ وَاَنۡتَ الۡمُؤَخِّرُ اَنۡتَ اِلٰهِيۡ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ
اَنۡتَ وَلَا حَوۡلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ. (مناجات مقبول)

अल्लाहुम्म लकल हम्दु अन्त क़य्यिमुस्समावाती वल अर्ज़ि व मन फीहिन्न व लकल हम्दु अन्त मलिकुस्समावाति वल अर्ज़ि व मन फीहिन्न वलकल हम्दु अन्त नूरुस्समावाती वल अर्ज़ि व मन फीहिन्न व लकल हम्दु अन्तल हक़्क़ु व वअदुकल हक़्क़ु व लिक़ाउक हक़्क़ुंव्व क़ौलुक हक़्क़ुंव्वल जन्नतु हक़्क़ुंव्वन्नारु हक़्क़ुंव्वन्नाबिय्यून हक़्क़ुंव्व मुहम्मदुन हक़्क़ुंव्वस्साअतु हक़्क़ुन अल्लाहुम्म लक अस्लमतु व बिक आमन्तु व अलैक तवक्कलतु व इलैक अनबतु व बिक ख़ासम्तु व इलैक हाकम्तु अन्त रब्बुना व इलैकल मसीरु फग़्फिरली मा क़द्दमतु वमा अख़्ख़रतु वमा असररतु वमा आलन्तु वमा अन्त आलमु बिही मिन्नी अन्तल मुक़द्दिमु व अन्तल मुअख़्ख़िरु अन्त इलाही ला इलाह इल्ला अन्त वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह। (मुनाजाते मक़बूल)

सलातुल हाजत

हज़रत अब्दुल्लाह बिन अबी औफा रज़ि अल्लाहु अन्हुमा फरमाते है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हमारे पास तशरीफ लाये और इर्शाद फरमाया: जिस को कोई ज़रूरत पेश आये जिस का तअल्लुक़ अल्लाह से हो या मख़्लूक़ में से किसी से हो तो उसको चाहिये कि वह वुज़ू करे फिर दो रकअत नमाज़ पढ़े उसके बाद अल्लाह पाक की कुछ हम्द व सना करे उसके बाद नबीये पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर दुरूद शरीफ भेजे। फिर इस तरह दुआ करे:

لَآ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ، اَسْئَلُكَ مُوْجِبَاتِ رَحْمَتِكَ وَعَزَائِمَ مَغْفِرَتِكَ وَالْغَنِيْمَةَ مِنْ كُلِّ بِرٍّ وَّ السَّلَامَةَ مِنْ كُلِّ اِثْمٍ، لَا تَدَعْ لِيْ ذَنْبًا اِلَّا غَفَرْتَهٗ وَلَا هَمًّا اِلَّا فَرَّجْتَهٗ وَلَا حَاجَةً هِيَ لَكَ رِضًا اِلَّا قَضَيْتَهَا يَا اَرْحَمَ الرَّاحِمِيْنَ. (ترمذی، ابن ماجہ، معارف الحدیث)

ला इलाह इल्लल्लाहुल हलीमुल करीमु सुबहानल्लाही रब्बिल अर्शिल अज़ीमी अल हम्दु लिल्लाही रब्बिल आलमीन, अस्अलुक मू जिबाती

रहमतिक व अज़ाइम मग़्फिरतिक वल ग़नीमत मिन कुल्लिक बिर्रिंव्वस्सलामत मिन कुल्लि इस्मिन, ला तदअ लना ज़म्बन इल्ला ग़फरतहू व ला हम्मन इल्ला फर्रजतहू वला हाजतन हिया लक रिज़न इल्ला क़ज़ैतहा या अरहमर्राहिमीन। (तिर्मिज़ी, इब्ने माजा, मआरिफुल हदीस)

तर्जमा : अल्लाह पाक के सिवा कोई माबूद नहीं वह बड़ा हिल्म वाला और बड़ा करीम है। अल्लाह पाक हर ऐब से पाक हैं अर्शे अज़ीम के मालिक हैं। सब तारीफें अल्लाह पाक के लिए हैं जो तमाम जहानों के रब हैं। या अल्लाह ! मैं आप से उन तमाम चीज़ों का सवाल करता हूँ जो आप की रहमत को लाज़िम करने वाली हैं और जिन से आप का मग़्फिरत फरमाना यक़ीनी हो जाता है मैं आप से हर नेकी में से हिस्सा लेने का और हर गुनाह से महफूज़ रहने का सवाल करता हूँ। मैं आप से इस बात का भी सवाल करता हूँ कि मेरा कोई गुनाह बाक़ी न छोड़िये जिस को आप बख़्श न दें और न कोई फिक्र जिसे आप दूर न फरमा दें और न कोई ज़रूरत बाक़ी छोड़िये जिस में आप की रज़ामंदी हो जिसे आप मेरे लिए पूरा न फरमा दें इस दुआ के बाद अल्लाह पाक से दुनिया और आख़िरत के बारे में जो चाहे मांगे उसे मिलेगा।

हाजत की दुआ

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से मरफूअन यह रिवायत है कि जिसे कोई ज़रूरत पेश आ जाये तो वह किसी मख़्फ़ी मुक़ाम पर जाये जहाँ कोई उसे न देखे, अच्छी तरह वुज़ू करे, चार रकअत नमाज़ इस तरह पढ़े कि पहली रकअत में सूरह फातेहा एक मर्तबा, और कुल हुवल्लाहु अहद दस मर्तबा, दूसरी रकअत में सूरह फातेहा एक मर्तबा कुल हुवल्लाहु अहद २० मर्तबा, तीसरी रकअत में सूरह फातेहा एक मर्तबा कुल हुव्वलाहु अहद ३० मर्तबा, चौथी रकअत में सूरह फातेहा के बाद कुल हुव्वलाहु अहद ४० मर्तबा पढ़े। फिर नमाज़ से फारिग़ हो जाये (सलाम फेरने के बाद) कुल हुव्वलाहु अहद ५० मर्तबा पढ़े और दुरूद शरीफ (कोई सा भी) ७० मर्तबा पढ़े, फिर ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाही पूरा ७० मर्तबा पढ़े। (फिर दुआ मांगे) अगर उस पर क़र्ज़ा होगा तो क़र्ज़ा अदा होगा, वतन से दूर हो वतन पहुंच जायेगा। आसमान भर गुनाह होंगे माफी चाहे माफ हो जायेंगे, अगर औलाद न हो तो औलाद होगी। गर्ज़ उसकी हर दुआ क़बूल होगी। यह तुम अहमक़ों को न बताओ कि वह ना जायज़ उमूर में इआनत चाहें। (अल क़ौलुल बदीअ स. २२६)

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि अच्छी तरह वुज़ू करे फिर दो रकअत नमाज़ पढ़े सलाम के बाद यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اَسْئَلُكَ بِاسْمِكَ اللّٰهِ الَّذِىْ لَااِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَىُّ الْقَيُّوْمُ لَاتَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَانَوْمٌ اَلْعَلِىُّ الْعَظِيْمُ بِاسْمِكَ اللّٰهِ الَّذِىْ لَااِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ، بِاسْمِكَ اللّٰهِ الَّذِىْ لَااِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَلرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ، بِاسْمِكَ اللّٰهِ الَّذِىْ لَااِلٰهَ اِلَّا هُوَ اَلْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى، بِاسْمِكَ اللّٰهِ الَّذِىْ هُوَ نُوْرُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَلْحَىُّ الَّذِىْ لَايَمُوْتُ الْاَحَدُ ذُوالْقَوْلِ لَااِلٰهَ اِلَّاهُوَ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ذُوالْحَوْلِ بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ الْقَدِيْمُ ذُوالْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ بِاسْمِكَ اللّٰهِ الَّذِىْ لَااِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ الْمَلِكُ الْحَقُّ لَااِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْكَرِيْمِ ذُوالْمَعَارِجِ وَالْقَوِىُّ بِعِزِّ اسْمِكَ الَّذِىْ تَنْشُرُبِهٖ الْمَوْتٰى وَتُحْيِىْ بِهٖ وَتَنْبُتُ بِهٖ الشَّجَرُوَتُرْسِلُ بِهِ الْمَطَرُ وَتَقُوْمُ بِهِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ بِعِزِّ اسْمِكَ الَّذِىْ لَااِلٰهَ اِلَّا هُوَالْمَلِكُ

الْقُدُّوْسُ وَلَا يَمُسُّ اِسْمُ اللّٰهِ نَصَبٌ وَلَا لُغُوْبٌ تَعَالٰى اِسْمُ اللّٰهِ وَلِاِقْتِرَابِ عِلْمِهٖ وِلِثَبَاتِ اِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى اَلَّذِىْ هٰذِهِ الْاَسْمَاءُ مِنْهُ وَهُوَ مِنْهَا الَّذِىْ لَا يُدْرَكُ وَلَا يَنَالُ وَلَا يُحْصٰى، اِسْتَجِبْ لِدُعَائِىْ وَقُلْ لَهٗ يَا اللّٰهُ كُنْ فَيَكُوْنَ، اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمُوْلَانَا مُحَمَّدٍ عَبْدِكَ وَرَسُوْلِكَ اَفْضَلَ مَا صَلَّيْتَ عَلٰى اَحَدٍمِّنْ خَلْقِكَ اَجْمَعِيْنَ. (القول البدیع صفحہ ۲۲۵)

अल्लाहुम्म अस्अलुक बिस्मिकल्लाहिल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल हय्युल क़य्यूमु ला तख़ुजुहू सिनतंव्व ला नौमुल अलिय्युल अज़ीमु बिस्मिकल्लाहिल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुव अल मलिकुल कुद्दुसुस्सलामुल मुमिनुल मुहैमिनुल अज़ीज़ुल जब्बारु, बिस्मिकल्लाहिल लज़ी ला इलाह इल्ला हुव आलिमुल ग़ैबि वश्शहा दतिर्रहमानुर्रहीम, बिस्मिकल्लाहिल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल ख़ालिकुल बारियुल मुसव्विरु लहुल अस्माउल हुस्ना, बिस्मिकल्लाहिल्लज़ी हुव नूरुस्समावाती वल आर्ज़ि अल हय्युल लज़ी ला यमूतल अहदु ज़ुल कौलि ला इलाह इल्ला हुव व इलैहिल मसीरु ज़ुल हौली बदिउस्समावाती वल अर्ज़िल क़दीमु ज़ुल जलाली वल इकरामी बिस्मिकल्लाहील लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल अव्वलु वल आख़िरुल मलिकुल

हक्कु ला इलाह इल्ला हुव रब्बुल अर्शिल करीमी ज़ुल मआरिजि वल क़विय्यु बिइज़्ज़िस्मिकल्लज़ी तन्शुरु बिहिल मौता व तुहई बिही व तमबुतु बिहिश्शजरु व तुर्सिलु बिहिल मतरु व तकूमु बिहिस्समावातु वल अर्ज़ु बिइज़्ज़िस्मिकल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल मलिकुल कुद्दूसु वला यमुस्सु इस्मुल्लाही नसबुंव्वला लुगूबुन तआला बिस्मिल्लाही व लिइक़्तरबी इल्मिही व लिसबाती इस्मिल्लाहिल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुव लहूल अस्माउल हुस्ना अल्लाज़ी हाज़िहिल अस्माउ मिन्हू व हुव मिन्हल्लज़ी ला युदरकु वला यनालु वला युहसा, इस्तजिब लिदुआई व कुल लहू या अल्लाहु कुन फयकून, अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदिन अब्दिक व रसूलिक अफज़ल मा सल्लैत अला अहदिम्मिन ख़लक़िक अजमईन। (अल क़ौलुल बदीअ स. २२५)

इस्तिख़ारा की नमाज़

जब कोई काम करने का इरादा करे तो अल्लाह पाक से सलाह ले लेवे। इस सलाह लेने को इस्तिख़ारा कहते हैं। हदीस में इस की बहुत तरग़ीब आई है नबिये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि अल्लाह पाक से सलाह न लेना और इस्तिख़ारा न करना बदबख़्ती और कम नसीबी की बात है। कहीं मंगनी करे या बयाह करे या सफर

करे या और कोई काम करे तो बे इस्तिख़ारा किये न करे तो इंशा अल्लाह तआला कभी अपने किये पर पशेमान न होंगे। इस्तिख़ारा की नमाज़ का तरीक़ा यह है कि पहले दो रकअत नफिल नमाज़ पढ़े उसके बाद ख़ूब दिल लगा के यह दुआ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ اِنِّی اَسْتَخِیْرُکَ بِعِلْمِکَ وَاَسْتَقْدِرُکَ بِقُدْرَتِکَ وَاَسْئَلُکَ مِنْ فَضْلِکَ الْعَظِیْمِ فَاِنَّکَ تَقْدِرُوَلَا اَقْدِرُوَتَعْلَمُ وَلَا اَعْلَمُ وَاَنْتَ عَلَّامُ الْغُیُوْبِ.
اَللّٰهُمَّ اِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ خَیْرٌلِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ فَاقْدِرْهُ وَیَسِّرْهُ لِیْ ثُمَّ بَارِکْ لِیْ فِیْهِ وَاِنْ کُنْتَ تَعْلَمُ اَنَّ هٰذَا الْاَمْرَ شَرٌّلِّیْ فِیْ دِیْنِیْ وَمَعَاشِیْ وَعَاقِبَةِ اَمْرِیْ فَاصْرِفْهُ عَنِّیْ وَاصْرِفْنِیْ عَنْهُ وَاقْدِرْ لِیَ الْخَیْرَ حَیْثُ کَانَ ثُمَّ اَرْضِنِیْ بِهٖ.

(بخاری ص ۹۴۴ مشکوٰۃ ص ۱۱۶/اذکار ۱۰۱)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्तख़ीरुक बिइल्मिक व अस्तक़दिरुक बिक़ुदरतिक व अस्नलुक मिन फ़ज़्लिकल अज़ीमी फइन्नक तक़दिरु वला अक़्दिरु व तअलमु वला आलमु व अन्त अल्लामुल ग़ुयूब। अल्लाहुम्म इन कुन्त तअलमु अन्न हाज़ल अम्र ख़ैरुल्ली फी दीनी व माआशी व आक़िबती अमरी

फक़्दिरहु व यस्सिरहु ली सुम्म बारिक ली फीही व इन कुन्त तअलमु अन्न हाज़ल अम्र शर्रुल्ली फी दीनी व मआशी व आक़िबति अम्री फस्रिफहु अन्नी वस्रिफ्नी अन्हु वक्दिर लियल ख़ैर हैसु कान सुम्म अर्ज़िनी बिही। (बुख़ारी स. ९४४, मिश्कात स.११६ अज़कार १०१)

और जब 'हाज़ल अम्र' पर पहुंचे जिस लफ्ज़ पर लकीर बनी है तो उस के पढ़ते वक़्त उसी काम का ध्यान कर ले जिस के लिए इस्तिख़ारा करना चाहते हैं (या चाहती हैं) उसके बाद पाक साफ बिस्तर पर क़िब्ला की तरफ मुंह कर के बा वुज़ू सो जाये। जब सो कर उठे उस वक़्त दिल में जो बात मज़बूती से आये वही बेहतर है उसी को करना चाहिये।

अगर एक दिन में कुछ मलूम न हो और दिल का ख़लजान और तरद्दुद न जाये तो दूसरे दिन दिन भी ऐसा ही करे। इसी तरह सात दिन तक करे। इंशा अल्लाह तआला ज़रूर उसका की अच्छाई या बुराई मालूम हो जायेगी।

नमाज़ तौबा का बयान

अगर कोई बात ख़िलाफे शरअ हो जावे तो दो रकअत नफ्ल पढ़ कर अल्लाह पाक के सामने ख़ूब गिड़गिड़ा कर उस से तौबा करे और अपने किये पर ख़ूब पछतावे और अल्लाह पाक से माफ करावे और

आइन्दा के लिए पक्का इरादा करे कि अब कभी न करूंगा इस से बफज़ले ख़ुदा वह गुनाह माफ हो जाता है।

सलातुत्तस्बीह का बयान

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहुमा रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु से फरमाया: अब्बास ! मेरे चचा! क्या मैं आप को एक अतिया न करूँ? क्या एक हदिया न करूँ? क्या एक तोहफा पेश न करूँ? क्या मैं आप को ऐसा अमल न बताऊँ जब आप उसको करेंगे तो आप को दस फायदे हासिल होंगे यानी अल्लाह पाक आप के अगले पिछले, पुराने, नये ग़लती से किये हुये, जान बूझ कर किये हुये, छोटे बड़े छुप कर किये खुल्लम खुल्ला किये हुये गुनाह सब ही माफ फरमा देंगे। वह अमल यह है कि आप चार रकअत (सलातुत्तस्बी) पढ़ें और हर रकअत में सूरह फातेहा और दूसरी कोई सूरत पढ़ें। जब आप पहली रकअत में क़िरात से फारिग़ हो जायें तो क़याम ही की हालत में रुकूअ से पहले

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ وَلَآاِلٰهَ اِلَّااللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ.

'सुबहानल्लाही वल हम्दु लिल्लाही वला इलाह इल्लल्लाहू वल्लाहु अक्बर'

पंद्रह मर्तबा कहें। फिर रुकूअ करें और रुकूअ में भी यही कलिमात दस मर्तबा कहें। फिर रुकूअ से उठ कर कौमा में भी यही कलिमात दस मर्तबा कहें। फिर सजदे में चले जायें और उस में भी यह कलिमात दस मर्तबा कहें। फिर सजदे से उठ कर जलसे में यही कलिमात दस मर्तबा कहें। फिर दूसरे सजदे के बाद खड़े होने से पहले बैठे बैठे यही कलिमात दस मर्तबा कहें। चारों रकअत इसी तरह पढ़ें और इस तर्तीब से हर रकअत में यह कलिमात ७५ मर्तबा कहें। (मेरे चचा) अगर आप से हो सके तो रोज़ाना यह नमाज़ पढ़ा करें। अगर रोज़ाना न पढ़ सके तो हर जुमा को एक मर्तबा पढ़ लिया करें। अगर यह भी न कर सकें। तो हर महीने में एक मर्तबा पढ़ लिया करें अगर यह भी न कर सकें तो साल में एक मर्तबा पढ़ लिया करें। अगर यह भी न हो सके तो ज़िन्दगी में एक मर्तबा ही पढ़ लें।

(अबू दाऊद)

बद निहागी से बचने के बहुत कामियाब तरीके

अज़ इफादात मुहियुस्सुन्नह हजरत मौलाना शाह अबरारुल हक़ साहब रह० हर दोई

अल्लाह पाक का इर्शाद है:

قُلْ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ يَغُضُّوْا مِنْ اَبْصَارِهِمْ وَيَحْفَظُوْا فُرُوْجَهُمْ ذٰلِكَ اَزْكٰى لَهُمْ، اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ० وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ اَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوْجَهُنَّ وَلَا يُبْدِيْنَ زِيْنَتَهُنَّ اِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوْبِهِنَّ. (النور، ٣٠-٣١)

(ऐ नबी !) मोमिनीन से कह दीजिये अपनी निगाहें नीची रखें अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें, (क्योंकि) यही उनके लिए पाकीज़ा है। बेशक अल्लाह उनके अफआल से बाख़बर है और मोमिन औरतों से भी कह दीजिये कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफाज़त करें और अपनी ज़ीनत के मुक़ामात को ज़ाहिर न करें, सिवाये ज़ाहिर होने वाले (आज़ा) के और अपने सीनों पर दुपट्टे डाले रखें।

बद निगाही ज़िना के इब्तिदाई असबाब में से है जिसे शरीअत ने कतई हराम क़रार दिया है। चुनान्चे इर्शाद है:

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً وَّسَاءَ سَبِيْلًا۔ (الاسراء، ٣٢)

तर्जमा : और (ऐ मोमिनो!) ज़िना के क़रीब तक मत जाओ, बेशक वह बहुत बुरी चीज़ है बुरे

ठिकाने तक पहुंचाने वाली है।

बद निगाही के नुक़सानात इस क़द्र हैं कि बसा औक़ात उन से दीन और दुनिया दोनों तबाह व बरबाद हो जाते हैं। आज कल इस मर्ज़ में मुब्तिला होने के असबाब बहुत हैं इस लिए मुनासिब मालूम हुआ कि उसके बाज़ नुक़सानात और उस से बचने का इलाज मुख़्तसर तौर पर तहरीर कर दिया जाये ताकि उसके नुक़सानात से हिफाज़त हो सके। चुनान्चे हस्बे ज़ल उमूर का ऐहतिमाम करने से इंशा अल्लाह नज़र की हिफाज़त बसुहूलत हो सकेगी।

१. जिस वक़्त मस्तूरात का गुज़र हो ऐहतिमाम से निगाह नीचे रखें, गो नफ्स का तक़ाज़ा देखने का हो, कि आरिफ बिल्लाह हज़रत ख़्वाजा अजीजुल हसन मजजूब फरमाते हैं:

दीन का देख है ख़तर
उठने न पाये हाँ नज़र
तू अगर कूये बताँ में जाये
तो सर झुकाये जा

२. अगर निगाह उठ जाये और किसी पर पड़ जाये तो फौरन निगाह नीची कर लें ख़्वाह कितनी ही गिरानी हो हत्ताकि दम निकल जाने का अंदेशा हो।

३. यह सोचें कि बद निगाही से हिफाज़त न करने

से दुनिया में ज़िल्लत का अंदेशा है। इबादात का नूर सल्ब हो जाता है, नीज़ आख़िरत की तबाही भी यक़ीनी है।

४. हर बद निगाही पर कम अज़ कम चार रकअत नफ्ल पढ़ने का ऐहतिमाम रखें और कुछ न कुछ हस्बे गुंजाइश सदक़ा और कसरत से इस्तिग़्फार करें।

५. यह सोचें कि बद निगाही से इबादात, ज़िक्र वग़ैरह से रग़बत रफ्ता रफ्ता कम हो जाती है हत्ताकि तर्क की नौबत आ जाती है फिर नफरत पैदा होने लगती है।

हुस्ने ज़ाहिर पे अगर तू आयेगा
आलमे फानी से धोका खायेगा
यह मुनक्क़श साँप डस जायेगा
सोच ले वरना पछतायेगा

बद निगाही से बचने का नक़द इनाम

जो शख़्स ना महरम औरतों से अपनी निगाह बचा ले, रोक ले तो अल्लाह पाक उसको ऐसी इबादत की तौफीक़ अता फरमाता है जिसकी हलावत और मिठास वह अपने दिल में पायेगा महसूस करेगा।

عَنْ اَبِىْ اُمَامَةَ ﷺ قَالَ : قَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ مَنْ

نَظَرَ اِلٰى مَحَاسِنِ امْرَأَةٍ فَغَضَّ طَرْفَهٗ فِىْ اَوَّلِ نَظْرَةٍ رَزَقَهُ اللّٰهُ
تَعَالٰى عِبَادَةً يَجِدُ حَلَاوَتَهَا فِىْ قَلْبِهٖ ۔ (نوادر الاصول:۲/۱۸۴، رواہ احمد)

अन अबी उमामत रज़ि अल्लाहु अन्हु क़ाल: क़ाल रसूलुल्लाही सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मन नज़र इला महासिनिमरअतिन फग़ज़्ज़ तरफहू फी अव्वली नज़रतिन रज़क़हुल्लाहु तआला इबादतन यजिदु हलावतहा फी क़ल्बिही। (नवादिरुल वुसूल जि. २ स. १८४ रवाहु अहम)

तर्जमा : हज़रत अबू उमामा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया जिस शख़्स की किसी औरत के हुस्न व जमाल पर पहली दफा नज़र पढ़े फिर वह निगाह नीची कर ले तो अल्लाह पाक उसको ऐसी इबादत नसीब फरमायेगा जिसकी लज़्ज़त व हलावत वह दिल में महसूस करेगा।

अमल मुख़्तसर नफा ज़्यादा चार करोड़ नेकियाँ

हज़रत तमीम दारी रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हुज़ूर पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स उन चार कलिमात को दस मर्तबा कहे तो उस के लिए चार करोड़ नेकियाँ लिख दी जाती है।

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ اِلٰهًا وَّاحِدًا اَحَدًا صَمَدًا لَّمْ يَتَّخِذْ صَاحِبَةً وَّلَا وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ. (مسند احمد ترمذی، جامع الاحادیث للسیوطی)

अशहदु अल्लाइलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू इलाहंव्वाहिदन अहदन समदल लम यत्तख़िज़ साहिबतंव्वला वलदंव्वलम यकुल लहू कुफुवन अहद।(मुसनदे अहमद तिर्मिज़ी, जामिउल अहादीस लिस्सियूती)

तर्जमा : मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह पाक के अलावा कोई माबूद नहीं है जो यक्ता है, उसका कोई शरीक (साझी) नहीं है जो अकेला माबूद और यक्ता है, बेनियाज़ है जिस ने न तो किसी को बीवी बनाया और न औलाद और उसका कोई हमसर नहीं है।

आग से निजात का परवाना

नमाज़े फज्र और मग़रिब के बाद बात किये बग़ैर यह दुआ पढ़ें:

हज़रत मुस्लिम इब्ने हारिस अत्तैमी रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जब तू सुबह की नमाज़ पढ़ चुके तो बात करने से पहले यह दुआ पढ़ लिया कर (सात बार)

اَللّٰهُمَّ اَجِرْنِىْ مِنَ النَّارِ.

अल्लाहुम्म अजिरनी मिनन्नार।

ऐ अल्लाह आग (जहन्नम) से मुझे पनाह दीजिये। पस अगर तू उस दिन फौत हो गया तो अल्लाह पाक तुझे आग से निजात का परवाना लिख देगा और इसी तरह बाद नमाज़े मग़रिब बात किये बग़ैर यही दुआ सात बार पढ़ लें। तो रात में अगर फौत हुआ तो उसे यही फज़ीलत हासिल होगी।

(अहमद, अबू दाऊद, तिर्मिज़ी)

अधूरे काम की तकमील के लिए

हज़रत अबू दरदा रज़ि अल्लाहु अन्हु से मनकूल है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया जो शख़्स सुबह शाम सात मर्तबा इन आयतों को पढ़ेगा तो ख़ुदावन्दे कुद्दूस उसकी दुनिया व आख़िरत के तमाम कामों को पाये तक्मील तक पहुंचायेगा यानी वह अधूरे न रहेंगे न ख़राब होंगे बल्कि ऐसे असबाब पैदा फरमायेंगे कि वह पूरे हो जायेंगे।

حَسْبِىَ اللّٰهُ لاَ اِلٰـهَ اِلاَّ هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ.

हस्बियल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव अलैहि तवक्कलतु व हुव रब्बुल अर्शिल अज़ीम।

तर्जमा: मुझ को अल्लाह पाक काफी है उसके सिवा कोई माबूद नहीं उसी पर मैंने भरोसा किया और वही बुज़ुर्ग अर्श का रब है। (अबू दाऊद, इब्ने सिनी)

सत्तर क़िस्म की बलाओं से हिफाज़त

जो शख़्स फज्र की नमाज़ के बाद सिर्फ सात मर्तबा यह मुख़्तसर कलिमा पढ़ ले तो अल्लाह पाक ७० क़िस्म की बलायें उस से दूर कर देते हैं। वह मुख़्तसर कलिमा यह है:

لاَحَوْلَ وَلاَ قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ لاَ حِيْلَةَ وَلَا اِحْتِيَالَ وَلَا مَلْجَأَ وَلَا مَنْجَا مِنَ اللّٰهِ اِلَّا اِلَيْهِ.

ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाही ला हीलत वला एहतियाल वला मल्जअ वला मन्जा मिनल्लाही इल्ला इलैही।

चार मुहलिक बीमारियों से हिफाज़त

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने फरमाया कि जब फज्र की नमज़ पढ़ ले तो अपनी दुनिया के लिए तीन बार यह पढ़ लिया कर:

سُبْحَانَ اللهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ وَلاَحَوْلَ وَلاَقُوَّةَ اِلَّا بِاللهِ.

(کتاب الدعا للطبرانی ص ۲۱۲)

सुबहानल्लाहिल अज़ीमी व बिहम्दिही वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह। (किताबुद्दुआ लित्तबरानी स. २१२)

तर्जमा : मैं अल्लाह बुज़ुर्ग व बरतर की पाकी बयान करता हूँ और उसकी तारीफ करता हूँ। गुनाहों से बचाना और नेकियों की ताक़त देना सब अल्लाह ही की तरफ से है।

तो अल्लाह पाक तुझे चार बीमारियों से महफूज़ रखेगा।

(१) पागल पन (२) कोढ़ (३) अंधा होने (४) फालिज से। और अपनी आख़िरत के लिए तीन बार यह दुआ पढ़ लिया कर:

اَللّٰهُمَّ اهْدِنِیْ مِنْ عِنْدِکَ وَاَفِضْ عَلَیَّ مِنْ فَضْلِکَ وَانْشُرْ عَلَیَّ مِنْ رَحْمَتِکَ وَاَنْزِلْ عَلَیَّ مِنْ بَرَکَاتِکَ.

अल्लाहुम्हदीनी मिन इनदिक व अफिज़ अलय्य मिन फज़लिक वन्शुर अलय्य मिन रहमतिक व अंज़िल अलय्य मिन बरकातिक।

तर्जमा: ऐ अल्लाह मुझे हिदायत दे अपने पास

से और मुझ पर बहा अपना फज़ल और मुझ पर फैला दे अपनी रहमत और मुझ पर नाज़िल फरमा अपनी बरकतें।

क़सम है उस ज़ात की जिस के क़ब्ज़े में मेरी जान है जो इस दुआ को क़यामत के रोज़ ले कर आयेगा (यानी जो पाबंदी से पढ़ता रहेगा) तो अल्लाह पाक उसके लिए जन्नत के चार दरवाज़े खोल देंगे जिस में से चाहे दाख़िल हो जाये। (इब्ने सिनी)

रात और दिन का शुक्र अदा करने के लिए

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने ग़नाम रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि जिस ने सुबह सवेरे यह पढ़ लिया:

اَللّٰهُمَّ مَا اَصبَحَ بِیْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِکَ فَمِنْکَ وَحْدَکَ لَاشَرِیْکَ لَکَ فَلَکَ الْحَمْدُ وَلَکَ الشُّکْرُ.

अल्लाहुम्म मा अस्बह बी मिन्निअमतिन अव बिअहदिम मिन ख़ल्क़िक फमिन्क वहदक ला शरीक लक फलकल हम्दु व लकश्शुक्र।

तर्जमा : ऐ अल्लाह पाक सुबह के वक़्त जो कुछ नेमतें मुझ पर या आप की मख़्लूक़ में से किसी

पर हैं वह सिर्फ आप की तरफ से हैं आप अकेले हैं आप का कोई साझी (शरीक) नहीं है आप ही के लिए हम्द है और आप ही के लिए शुक्र है।

तो उसने दिन का शुक्र अदा कर दिया और जिस ने इसी तरह शाम को

اَللّٰهُمَّ مَا اَمْسٰى بِىْ مِنْ نِّعْمَةٍ اَوْ بِاَحَدٍ مِّنْ خَلْقِكَ فَمِنْكَ وَحْدَكَ لَاشَرِيْكَ لَكَ فَلَكَ الْحَمْدُ وَلَكَ الشُّكْرُ.

अल्लाहुम्म मा अम्सा बी मिन्निअमतिन अव बिअहदिम मिन ख़ल्क़िक फमिन्क वहदक ला शरीक लक फलकल हम्दु व लकश्शुक्रु।

तर्जमा: ऐ अल्लाह शाम के वक़्त जो कुछ नेमतें मुझ पर या आप की मख़्लूक़ में से किसी पर हैं वह सिर्फ आप की तरफ से हैं आप अकेले हैं आप का कोई शरीक नहीं है आप ही के लिए हम्द है और आप ही के लिए शुक्र है।

पढ़ लिया तो उस रात का शुक्र अदा कर दिया। (अबू दाऊद, निसई)

परेशानी दूर करने के लिए नबवी नुस्ख़ा

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि एक रोज़ में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के साथ बाहर निकला इस तरह की मेरा

हाथ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के हाथ में था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का गुज़र एक ऐसे शख़्स पर हुआ जो बहुत शिकस्ता हाल और परेशान था। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा कि तुम्हारा यह हाल कैसे हो गया? उस शख़्स ने अर्ज़ किया कि बीमारी और तंग दस्ती ने मेरा यह हाल कर दिया आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं तुम्हें चंद कलिमात बतलाता हूँ वह पढ़ोगे तो तुम्हारी बीमारी व तंगदस्ती जाती रहेगी वह कलिमात यह हैं:

تَوَكَّلْتُ عَلَى الْحَيِّ الَّذِىْ لَايَمُوْتُ. اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِىْ لَمْ يَتَّخِذْ وَلَداً وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِى الْمُلْكِ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِىٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْراً ط

तवक्कलतु अलल हय्यिल लज़ी ला यमूतु अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम यत्तख़िज़ वलदंव्व लम यकुल्लहू शरीकुन फिल मुल्की व लम यकुल्लहू व लिय्युम मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिरहू तक्ीरा।

उसके कुछ अरसा के बाद आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस तरफ तशरीफ ले गये फिर उसको अच्छे हाल में पाया। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने खुशी का इज़हार फरमाया। उस ने अर्ज़ किया कि जब से आप सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम ने मुझे यह कलिमात बतलाये थे मैं पाबंदी से इन कलिमात को पढ़ता हूँ।(मआरिफुल कुरआन जि. ५ स. ५४३, अबू यअला इब्ने सिनी अज़ मज़हरी)

इमाम अहमद रहमुल्लाह अलैह ने मुसनद में नीज़ तबरानी ने उम्दा सनद के साथ हज़रत मआज़ जहनी रज़ि अल्लाहु अन्हु की रिवायत से बयान किया है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम फरमा रहे थे।

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِیْ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّلَمْ یَکُنْ لَّهٗ شَرِیْکٌ فِی الْمُلْکِ وَلَمْ یَکُنْ لَّهٗ وَلِیٌّ مِّنَ الذُّلِّ وَکَبِّرْهُ تَکْبِیْرًا ط

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम यत्तख़िज़ वलदंव्व लम यकुल्लहू शरीकुन फिल मुल्की व लम यकुल्लहू वलिय्युम मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिरहू तक्बीरा।

यह आयत आयते इज़्ज़त है।

(मोजमे तबरानी जि. २० स. १९२, तफ्सीरे मज़हरी जि. ५ स. ५०४, अहमद जि.४ स. ७६, मजमउज़्ज़वाइद जि. १० स. ११७)

कुफ्र या गुनाह के वसाविस के वक़्त यह पढ़ना सुन्नत है

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ اور آمَنْتُ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ.

(مرقات-ج/١،ص/١٣٧)

अऊज़ु बिल्लाही मिनश्शैतानिर्रजीम आमन्तु

बिल्लाही व रुसुलिही। (मिरक़ात जि. १ स. १३७)

दूसरी सुन्नत यह है कि ज़ाते हक़ में ग़ौर न करें।

كما قال تعالى شانه(وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ) (از: مسائل السلوک بیان القرآن)

तफक्कुर का तअल्लुक़ ख़ल्क़ से है न कि खालिक़ से।(अज़: मसाइलुस्सुलूक बयानुल कुरआन)

हर शर और मक्र से हिफाज़त

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि सूरये बक़रा की आख़िरी दो आयतें 'आमनर्रसूल' से ख़त्म सूरह तक जो शख़्स रात को पढ़ लेगा तो यह दोनों आयतें उसके लिए काफी होंगी यानी वह हर शर और मक्र से महफ़ूज़ रहेगा। (बुख़ारी मअल फतह जि.९ य.९४, मुस्लिम जि. १ स. ५५४)

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَا اُنْزِلَ اِلَيْهِ مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ط كُلٌّ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وقف لَانُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍمِّنْ رُّسُلِهٖ وقف وَقَالُوْا سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ الْمَصِيْرُ ۝ لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ط لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَا اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ اَخْطَاْنَا ج رَبَّنَا وَلَاتَحْمِلْ عَلَيْنَآ اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى

الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِنَا ج رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا مَالَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ وَاعْفُ عَنَّا وقف وَاغْفِرْلَنَا وقفه وَ ارْحَمْنَا وقفه اَنْتَ مَوْلَانَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ٥ (بخاری مع الفتح ۹/۹۴۔ مسلم شریف ۱/۵۵۴)

एक हदीस में कि सूरह बक़रा की दो आयतें 'आमनर्रसूल' से आख़िर तक जिस घर में पढ़ी जायें तीन दिन तक शैतान उस के क़रीब नहीं आता। (हिस्ने हसीन स. २९३, तिर्मिज़ी , मुस्तदरक हाकिम)

किसी भी नुक़सान से हिफाज़त

हज़रत उसमान बिन अफ्फान रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो बन्दा हर रोज़ सुबह को और हर रोज़ शाम को यह दुआ पढ़ लिया करे तीन तीन मर्तबा :

بِسْمِ اللّٰهِ الَّذِىْ لَايَضُرُّ مَعَ اسْمِهٖ شَىْءٌ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَاءِ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ.

बिस्मिल्लाहिल्लज़ी ला यज़ुर्रु मअस्मिही शैउन फिल अर्ज़ि वला फी व हुवस्समीउल अलीम।

तर्जमा: अल्लाह के नाम से (हम ने सुबह की या शाम की) जिस के नाम के साथ आसमान और ज़मीन में कोई चीज़ नुक़सान नहीं दे सकती और वह सुनने वाला और जानने वाला है।

तो उसको हरगिज़ कोई चीज़ नुक़सान नहीं पहुंचा सकती। दूसरी हदीस में है कि उस पर अचानक कोई आफत बला और मुसीबत नहीं आती। (तिर्मिज़ी, अबू दाऊद, कंज़ुल उम्माल जि. २ स. ६१)

ज़हरीली चीज़ के डस्ने से हिफाज़त

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो सुबह होते ही तीन मर्तबा और शाम होते ही तीन मर्तबा

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللهِ التَّامَّاتِ مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ.

'अऊज़ू बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मति मिन शर्रि मा ख़लक़'।

तर्जमा: मैं अल्लाह पाक के पूरे कलिमात के वास्ते से मख़्लूक़ के शर से पनाह चाहता हूँ।

पढ़ ले तो किसी ज़हरीली चीज़ के डसने से उस रात उसको कोई नुक़सान नहीं होगा और न ही उस दिन उसको कोई नुक़सान होगा।(इब्ने हब्बान)

हर चीज़ के लिए काफी होंगी

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ख़ुबैब रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है फरमाते हैं कि एक रात जब कि बारिश हो रही थी और सख़्त अंधेरा हुआ, हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को तलाश

करते हुये निकले, पस हम ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को पा लिया, आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया 'कह' मैंने अर्ज़ किया, क्या कहूँ? फरमाया 'कुल हुवल्लाहु अहद','कुल अऊज़ु बिरब्बिल फलक़', कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास' सुबह व शाम तीन तीन मर्तबा पढ़ लिया करो यह तुझ को हर चीज़ के लिए काफी हो जायेगी।(अबू दाऊद जि. ४ स. ५०८, तिर्मिज़ी जि. ३ स. १८२)

हर ज़रर से हिफाज़त

सूरह इख़्लास, सूरह फलक़ और सूरह नास तीन तीन मर्तबा सुबह व शाम पढ़ लिया करें। तो हर ज़रर से हिफाज़त हो जाती है। (तिर्मिज़ी)

नज़रे बद दूर करने का वज़ीफा

हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम ने नज़र बद दूर करने का एक ख़ास वज़ीफा हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को सिखाया और फरमाया हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुम पर पढ़ कर दम किया करो।

इब्ने असाकर में है कि हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास तशरीफ लाये। आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उस वक़्त ग़मज़दा थे। सबब पूछा तो फरमाया हसन व हुसैन को नज़र बद लग गई

है। फरमाया यह सच्चाई के क़ाबिल चीज़ है नज़र वाक़ई लगती है आप ने यह कलिमात पढ़ कर उन्हें पनाह में क्यों न दिया? हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पूछा वह कलिमात क्या हैं? फरमाया यूँ कहो:

اَللّٰهُمَّ ذَا السُّلْطَانِ الْعَظِيْمِ ذَالْمَنِّ الْقَدِيْمِ ذَا الْوَجْهِ الْكَرِيْمِ وَلِيَّ الْكَلِمَاتِ التَّآمَّاتِ وَالدَّعَوَاتِ الْمُسْتَجَابَاتِ عَافِ الْحَسَنَ وَالْحُسَيْنَ مِنْ اَنْفُسِ الْجِنِّ وَاَعْيُنِ الْاِنْسِ.

अल्लाहुम्म ज़स्सुलतानिल अज़ीमी ज़ल मन्निल क़दीमी ज़ल वजहिल करीमी वलिय्यल कलिमा-तित्ताम्माती वद्दअवातिल मुस्तजाबाती आफिल हसन वल हुसैन मिन अन्फुसिल जिन्नी व आयुनिल इन्सी।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ पढ़ी वहीं दोनों बच्चे उठ खड़े हुये और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के सामने खेलने कूदने लगे। हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया लोगो! अपनी जानों को, अपनी बीवियों को और अपनी औलाद को इसी पनाह के साथ पनाह दिया करो। इस जैसी और कोई पनाह की दुआ नहीं।

(तफ्सीर इब्ने कसीर जि. ५ स. ४१६)

नोट : जब यह दुआ पढ़ें तो अल हसन वल हुसैन की जगह अपने बच्चों वग़ैरह के नाम ले कर

दुआ पूरी करें।

नज़रे बद दूर करने के लिए एक और दुआ

इस आयत को सात मर्तबा पढ़ कर दम करें।

بسم الله الرحمن الرحيم

وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَفَقَةٍ اَوْ نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ط وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ. (سورة البقرة پ ۳)

बच्चों के लिए मसनून तअवीज़

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हज़रत हसन और हज़रत हुसैन रज़ि अल्लाहु अन्हुमा के लिए आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इन कलिमात से तअवीज़ फरमाते थे।

اَعُوْذُ بِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّامَّاتِ مِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ وَّهَامَّةٍ وَّمِنْ كُلِّ عَيْنٍ لَامَّةٍ.

अऊज़ु बिकलिमातिल्लाहित्ताम्माती मिन कुल्लि शैतानिंव्व हाम्मतिंव्व मिन कुल्ली अैनिन लाम्मतिन।

तर्जमा: मैं अल्लाह के पूरे कलिमों के वास्ते से पनाह चाहता हूँ हर शैतान और ज़हरीले जानवर से और हर बुरी नज़र लगाने वाली आँख से।

और फरमाते हैं कि हज़रत इबराहीम अलैहिस्स

लाम हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम और हज़रत इसहाक़ अलैहिस्सलाम के लिए उन्हीं कलिमात से तअवीज़ फ़रमाते। (इब्ने माजा स. २५१)

फायदा : इन अदइये मासूरह का तरीक़ये इस्तेमाल यह है कि उन को बवक़्ते ज़रूरत पढ़ा जाये और पढ़ कर खुद अपने ऊपर या दूसरे पर दम कर दिया जाये। अगर न पढ़ सकता हो मसलन छोटा बच्चा हो तो उन कलिमात को लिख कर कले में या बाज़ू में बांध दिया जाये। चुनान्चे अब्दुल्लाह इब्ने उमर बिन आस रज़ि अल्लाहु अन्हु अपने छोटे बच्चे के गले में तअवीज़ लिख कर डाल दिया करते थे। (हिस्ने हसीन स. १५२)

हर क़िस्म के रंज व ग़म से आफियत मिलने का वादा

हदीस पाक में है जो शख़्स सिर्फ यह मुख़्तसर कलिमा पढ़ ले।

لَاإِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ قَبْلَ كُلِّ شَيْءٍ

لَاإِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ بَعْدَ كُلِّ شَيْءٍ

لَاإِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ يَبْقٰى ، وَيَفْنٰى كُلُّ شَيْءٍ

ला इलाह इल्लल्लाहु क़ब्ल कुल्लि शैइन।

ला इलाह इल्लल्लाहु बाद कुल्लि शैइन।

ला इलाह इल्लल्लाहु यब्क़ा, व यफ़्ना कुल्लु शैइन।

पढ़ ले तो अल्लाह पाक उसे हर क़िस्म के रंज व ग़म से आफियत नसीब फरमायेंगे। (कंज़ुल उम्माल जि. २ स. ५५)

हर क़िस्म के रंज, ग़म, घुटन, उलझन और क़र्ज से निजात

हदीस पाक में है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया: मेरे भाई हज़रत यूनुस अलैहिस्सलाम की दुआ बड़ी अजीब व ग़रीब है उसकी इब्तिदा 'ला इलाह इल्लल्लाह' है और उसका दरमियानी जुमला अल्लाह की तस्बीह का जुमला है और उसके आख़िर में अपने गुनाह का ऐतेराफ है। वह दुआ यह है:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ سُبْحَانَكَ اِنِّی كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ.

ला इलाह इल्ला अन्त सुबहानक इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन।

तर्जमा : आप के सिवा कोई माबूद नहीं। आप की ज़ात पाक है, हम गुनहगारों में हैं।

हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया : जो भी परेशान हाल, रंजीदा और मुसीबत ज़दा या मक़रूज़ शख़्स दिन में सिर्फ तीन मर्तबा

(सच्चे दिल से दुआ की क़बूलियत की उम्मीद लगा कर) उसको पढ़ेगा तो अल्लाह पाक उसकी दुआ ज़रूरत क़बूल फरमायेगा।(कंज़ुल उम्माल जि. २ स. ४५)

रंज, ग़म और बीमारी से निजात

जिस शख़्स को कोई रंज, ग़म या कोई बीमारी या कोई परेशानी पेश आये और वह (सच्चे दिल से) सिर्फ यह मुख़्तसर कलिमा कह ले

اَللّٰهُ اَللّٰهُ رَبِّی لَا اُشْرِکُ بِهٖ شَيْئًا

'अल्लाहु अल्लाहु रब्बि ला उश्रिकु बिही शैअन'। तो हदीस पाक में वादा किया गया है कि अल्लाह पाक उसकी परेशानी, उसका रंज ग़म और उसकी बीमारी दूर फरमायेगा।(कंज़ुल अम्माल जि. २ स. ५३)

रंज व ग़म के वक़्त

हज़रत अनस बिन मालिम रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि आँ हज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रंज व ग़म के मौक़े पर यह दुआ पढ़ते थे।

اَللّٰهُمَّ لَا سَهْلَ اِلَّا مَا جَعَلْتَهٗ سَهْلًا وَّاَنْتَ تَجْعَلُ الْحَزَنَ سَهْلًا اِذَا شِئْتَ . (ابن السنی-۳۵۱)

अल्लाहुम्म ला सहल इल्ला मा जअलतहू सहलंव्व अन्त तजअलुल हज़न सहलन इज़ा शित।

(इब्ने सिनी स. ३५१)

चार कलिमे जो वज़न में बहुत भारी

हज़रत जुवैरिया उम्मुल मुमिनीन रज़ि अल्लाहु अन्हा से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम उनके घर से फज्र की नमाज़ के लिए निकले तो वह ख़ुद अपने घर की मस्जिद में बैठी थीं फिर जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम चाश्त के लिए घर लौटे तो फरमाया ऐ जुवैरिया ! आज तू इसी हालत (घर की मस्जिद) में बैठी है जिस हाल में मैं घर से निकलते वक़्त देख कर गया था? अर्ज़ किया जी हाँ! तो फरमाया नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि मैं ने यहाँ से जाने के बाद ऐसे चार कलिमात पढ़ लिये है कि अगर उन का मवाज़ना उन से किया जाये जो तूने फज्र से ले कर अब तक पढ़ा है तो यह चार कलिमे उस से भारी हो जायेंगे वह चार कलिमात यहैं: (तीन मर्तबा पढ़े)

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَبِحَمْدِهٖ عَدَدَ خَلْقِهٖ، وَرِضَانَفْسِهٖ،
وَزِنَةَ عَرْشِهٖ، وَمِدَادَ كَلِمَاتِهٖ۔ (رواه مسلم)

सुबहानल्लाही व बिहम्दिही अदद ख़ल्क़िही, व रिज़ा नफ्सिही, व ज़िनत अर्शिही, व मिदाद कलिमा तिही। (रवाहु मुस्लिम)

तर्जमा: अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ और

उसकी हम्द करता हूँ उसकी मख़्लूक़ के बक़द्र और उसकी रज़ा के बक़द्र और उसके अर्श के वज़न के बक़द्र और उसके कलिमों की रोशनाई के बक़द्र।

तमाम आसमान व ज़मीन की मख़्लूक़ की तस्बीह से ज़्यादा सवाब

अल्लाह के नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से इर्शाद फरमायाः ऐ आयशा! (रज़ि अल्लाहु अन्हा) मैं तुम्हें ऐसे कलिमात न सिखा दूँ कि जो उसको पढ़ ले तो अल्लाह पाक अपने (फज़ल) से इतना सवाब अता फरमाते है कि आसमान और ज़मीन में जितनी मख़्लूक़ात हैं वह सब मिल के अल्लाह पाक की जितनी तस्बीह करती हैं उन तस्बीहात का जो सवाब है वह सारा सवाब बल्कि उस से ज़्यादा उस पढ़ने वाले शख़्स को मिलता है वह मुख़्तसर कलिमा यह है:

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ وَاَضْعَافَ مَا يُسَبِّحُهٗ جَمِيْعُ خَلْقِهٖ كَمَا يُحِبُّ وَيَرْضٰى وَكَمَا يَنْبَغِىْ لَهٗ.

सुबहानल्लाहिल अज़ीमी व बिहम्दिही व अज़आफ मा युसब्बिहुहू जमीउ ख़ल्क़िही कमा युहिब्बु व यर्ज़ा व कमा यंबग़ी लहू।

तर्जमाः अल्लाह की ज़ात पाक है खुदाये बुजुर्ग व बरतर है और तारीफ उसी के लिए है उस से

कहीं ज़्यादा जो उसकी तमाम मख़्लूक़ तस्बीह बयान करती है जैसाकि वह चाहता और राज़ी होता है और जैसा कि उसके शायाने शान है। (कंज़ुल उम्माल जि. १ स. १०५०)

बख़्शा बख़्शाया उठेगा

जो शख़्स नमाज़ से फराग़त पर सिर्फ तीन मर्तबा यह मुख़्तसर कलिमा कह ले

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ لَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ

'सुबहानल्लाहिल अज़ीमी व बिहम्दिही ला हौला वला कुव्वत इल्ला बिल्लाही' तो वह अपनी जगह से इस हाल में उठेगा कि उसकी मग़्फिरत हो चुकी होगी।

तर्जमा : पाक है ख़ुदाये बुज़ुर्ग व बरतर तारीफ उसी के लिए है नहीं है कोई ताक़त व कुव्वत सिवाये अल्लाह के। (इब्ने सिनी, कंज़ुल उम्माल)

अल्लाह पाक नेमत का मुस्तहिक़ बना देता है

हज़रत इबने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो शख़्स तीन मर्तबा सुबह को:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَصْبَحْتُ مِنْكَ فِیْ نِعْمَةٍ وَّعَافِيَةٍ وَّسِتْرٍ

فَاَتِمَّ عَلَیَّ نِعْمَتَکَ وَعَافِیَتَکَ وَسِتْرَکَ فِی الدُّ
نْیَا وَالآخِرَۃِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अस्बहतु मिन्क फी नेअमतिंव्व आफियतिंव्व सितरिन फअतिम्म अलय्य नेमतक व आफियतक व सितरक फिद्दुनिया वल आख़िरह।

तर्जमा: ऐ अल्लाह मैंने सुबह की आप की जानिब से नेमत में आफियत में और परदा पोशी में, पस आप पूरा कर दीजिये मुझ पर नेमत को और अपनी आफियत और अपनी परदा पोशी को दुनिया और आख़िरत में ।

और तीन मर्तबा शाम को :

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَمْسَیْتُ مِنْکَ فِیْ نِعْمَۃٍ وَّعَافِیَۃٍ وَسِتْرٍ
فَاَتِمَّ عَلَیَّ نِعْمَتَکَ وَعَافِیَتَکَ وَسِتْرَکَ فِی الدُّنْیَا
وَالآخِرَۃِ۔

अल्लाहुम्म इन्नी अम्सैतु मिन्क फी नेमतिंव्व आफियतिंव्व सितरिन फअतिम्म अलय्य नेमतक व आफियतक व सितरक फिद्दुनिया वल आख़िरह।

तर्जमा: ऐ अल्लाह मैं ने शाम की आप की तरफ से नेमत और आफियत और परदा पोशी में पस आप पूरा कर दीजिये मुझ पर अपनी नेमत और अपनी आफियत और अपनी परदा पोशी को दुनिया और आख़िरत में। पढ़ लिया करे तो वह हक़दार

बन जाता है कि अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त उस पर अपनी नेमत पूरी करे। (इब्ने सिनी)

सिर्फ दस मर्तबा ला हौला वला कुव्वत इल्ला बिल्ला पढ़ने पर इनामे अज़ीम

सुबह को दस मर्तबा पढ़ने पर अल्लाह पाक के गज़ब से हिफाज़त, सोते वक़्त दस मर्तबा पढ़ने पर दुनियावी बलाओं से हिफाज़त। अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल अपने महबूब सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को मुख़ातब कर के इर्शाद फरमाते हैं कि आप अपनी उम्मत से कह दीजिये कि वह सुबह दस मर्तबा 'ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह' पढ़ ले तो मेरे ग़ज़ब से महफ़ूज़ हो जायेगी और शाम को दस मर्तबा पढ़ ले तो शैतानी चालों से महफ़ूज़ हो जायेगी और सोते वक़्त दस मर्तबा पढ़ ले तो दुनियावी बलाओं से हिफाज़त का इंतेज़ाम हो जायेगा। (कंजुल उम्माल जि. २ स. ७५, देलमी)

सय्यदुल इस्तिग़फार

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ لاَ اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنَا عَبْدُکَ وَاَنَا عَلٰی عَهْدِکَ وَوَعْدِکَ مَا اسْتَطَعْتُ اَعُوْذُبِکَ مِنْ شَرِّ مَا صَنَعْتُ، اَبُوْءُ لَکَ بِنِعْمَتِکَ عَلَیَّ وَاَبُوْءُ بِذَنْبِیْ فَاغْفِرْلِیْ فَاِنَّهٗ لَایَغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اَنْتَ۔ (بخاری ج ۲ / ۹۳۲/ابوداود ص ۶۹۱)

अल्लाहुम्म अन्त रब्बि ला इलाह इल्ला अन्त ख़लक़्तनी व अना अब्दुक व अना अला अहदिक व वअदिक मस्ततअतु अऊज़ुबिक मिन शर्रि म सनअतु, अबूउ लक बिनेमतिक अलय्य व अबूउ बिज़ंबी फग़्फिरली फइन्नहू ला यग़्फिरुज़्ज़ुनूब इल्ला अन्त।

(बुख़ारी जि. २ स. ९३६, अबू दाऊद स.६९१)

तर्जमा : ऐ अल्लाह तू मेरा रब है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं तूने मुझे पैदा फरमाया और मैं तेरा बंदा हूँ और मैं तेरे अहद पर और तेरे वादे पर क़ायम हूँ जहाँ तक मुझ से हो सके, मैं ने जो गुनाह किये हैं उनके शर से तेरी पनाह चाहता हूँ मैं अपने ऊपर तेरी नेमतों का इक़रार करता हूँ और अपने गुनाहों का इक़रार करता हूँ लिहाज़ा मुझे बख़्श दे क्योंकि तेरे अलावा कोई गुनाहों को नहीं बख़्श सकता।

जिस ने उसको यक़ीन के साथ शाम को पढ़ लिया और उसकी वफात उस रात हो गई तो वह जन्नत में दाख़िल होगा और जिस ने यक़ीन के साथ सुबह को पढ़ लिया और उसकी वफात उस दिन हो गई तो वह जन्नत में दाख़िल होगा।(बुख़ारी शरीफ)

अदायेगी क़र्ज़

हज़रत अबू वायल रहमतुल्लाह अलैहि फरमाते हैं कि एक मुकातब गुलाम ने हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में आ कर अर्ज़ किया कि मैं किताबत में मुक़र्र शुदा माल अदा करने से आजिज़ आ गया हूँ, आप उस बारे में मेरी मदद फरमायें। हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया, क्या मैं तुम्हें वह कलिमात न सिखाऊँ जो हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझे सिखाये थे? अगर तुम पर (यमन के) 'सीर' पहाड़ के बराबर भी क़र्ज़ हो तो भी अल्लाह पाक तुम्हारा क़र्ज़ अदा कर देगा, तुम यह दुआ पढ़ा करो:

اَللّٰهُمَّ اكْفِنِىْ بِحَلَالِكَ عَنْ حَرَامِكَ وَاَغْنِنِىْ بِفَضْلِكَ عَمَّنْ سِوَاكَ. (ترمذی ۱۹۷/۲، کنز العمال ۲۳۸/۶، مستدرک حاکم ۷۲۱/۱)

अल्लाहुम्मक्फिनी बिहलालिक अन हरामिक व अग़्निनी बिफज़्लिक अम्मन सिवाक। (तिर्मिज़ी जि. २ स. १९७, कंजुल अम्माल जि. ६ स. २३८, मुस्तदरक हाकिम जि. १ स. ७२१)

अपनी हाजत को अल्लाह पाक पर पेश करे

हज़रत हसन रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया मैं तुम्हें एक ऐसी हदीस न सुनाऊँ जो मैंने

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से कई मर्तबा सुनी और हज़रत अबू बकर रज़ि अल्लाहु अन्हु और हज़रत उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से भी कई मर्तबा सुनी है। मैंने अर्ज़ किया, ज़रूर सुनायें हज़रत समुरह रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया जो शख़्स सुबह और शाम

اَللّٰھُمَّ اَنْتَ خَلَقْتَنِیْ وَاَنْتَ تَھْدِیْنِیْ وَاَنْتَ تُطْعِمُنِیْ
وَاَنْتَ تَسْقِیْنِیْ وَاَنْتَ تُمِیْتُنِیْ وَاَنْتَ تُحْیِیْنِیْ ط

अल्लाहुम्म अन्त ख़लक्तनी व अन्त तहदीनी व अन्त तुतइमुनी व अन्त तस्क़ीनी व अन्त तुमीतुनी व अन्त तुहयीनी। पढ़े तो फिर अल्लाह पाक से जो मांगेगा अल्लाह पाक ज़रूर उसको अता फरमायेगा। (रवाहुत्तबरानी फिल औसत बिइस्नाद हसन, मजमउज़्ज़वाइद)

इस्मे आज़म

हज़रत बुरीदा रज़ि अल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने एक आदमी को इन अलफाज़ से दुआ करते हुए सुना:

اَللّٰھُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ بِاَنِّیْ اَشْھَدُ اَنَّکَ اَنْتَ اللّٰہُ لَآ
اِلٰہَ اِلَّآ اَنْتَ الْاَحَدُ الصَّمَدُ الَّذِیْ لَمْ یَلِدْ وَلَمْ یُوْلَدْ وَلَمْ
یَکُنْ لَّہٗ کُفُوًا اَحَدٌ.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक बिअन्नी अशहदु अन्नक अन्तल्लाहु ला इलाह इल्ला अन्तल अहदुस्समदुल्लज़ी लम यलिद व लम यूलद व लम यकुल्लहू कुफुवन अहद।

यह सुन कर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: तुम ने अल्लाह पाक से (उसके) ऐसे नाम से सवाल किया है कि जब उस से उस (नाम) के साथ सवाल किया जाये तो वह अता करता है और जब उस (नाम) के ज़रिये से दुआ की जाये तो वह क़बूल करता है। (अबू दाऊद १४९३, तिर्मिज़ी जि. २ स. १८५, इब्ने माजा, अत्तरग़ीबुत्तर हीब जि. २ स. ४८५)

दफये परेशानी व अदायेगी क़र्ज़ के लिए

हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि एक रोज़ रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मस्जिद में दाख़िल हुये तो अचानक एक अंसारी सहाबी नज़र आये जिन का नाम अबू उमामा था फरमाया ऐ अबू अमामा क्या बात है कि तुम ग़ैर नमाज़ के वक़्त मैं मस्जिद में नज़र आ रहे हो, पस बोले कि परेशानियों और क़र्ज़ो ने जकड़ रखा है ऐ अल्लाह के रसूल, फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कि क्या मैं तुम्हें दुआ का ऐसा तोहफा न पेश करूँ कि वह पढ़ने लगोगे तो अल्लाह पाक दूर कर देंगे तुम्हारी परेशानी और

अदा करवा देंगे तुम से क़र्ज़ को, (हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ि अल्लाहु अन्हु) फरमाते हैं कि उन्होंने अर्ज़ किया क्यों नहीं या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब सुबह हो और शाम हो तो यह दुआ पढ़ लिया करो:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْهَمِّ وَالْحُزْنِ وَاَعُوْذُ بِکَ مِنَ الْعَجْزِ وِالْکَسَلِ وَاَعُوْذُ بِکَ من الْجُبْنِ وَالْبُخْلِ وَاَعُوْذُبِکَ مِنْ غَلَبَةِ الدَّيْنِ وَقَهْرِ الرِّجَالِ.

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल्लहम्मी वल हुज़्नी व अऊज़ुबिक मिनल अज्ज़ी वल कसली व अऊज़ुबिक मिनल जुबनी वल बुख़्ली व अऊज़ुबिक मिन ग़लबतिद्दैनी व क़हरिर्रीजाल।

तर्जमा : ऐ अल्लाह मैं तेरी पनाह चाहता हूँ फिक्र और रंज से और तेरी पनाह चाहता हूँ बेबस हो जाने और सुस्ती से और तेरी पनाह चाहता हूँ बुज़दिली और कंजूसी से, और तेरी पनाह चाहता हूँ क़र्ज़ के ग़लबा से और लोगों के तशद्दुद से।

हज़रत अबू उमामा रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने इसी तरह किया पस अल्लाह तआला ने दूर कर दिया मेरी परेशानी को और अदा करा दिया मुझ से कर्ज़ा को। (अबू दाऊद जि.१ स.२१७,

मिश्कात स. २१५)

मामूलात की कमी पूरा कर देने वाली दुआ

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि फरमाया रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने जो शख़्स सुबह होते ही:

فَسُبْحَانَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ تُصْبِحُوْنَ، وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ، يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ، وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ.

(ابوداود ص ۶۹۲، ابن سنی ص ۵۳)

फसुबहानल्लाही हीन तुमसून व हीन तुस्बीहून, व लहुल हम्दु फिस्समावाती वलअर्ज़ि व अशिय्यंव्व हीन तुज़हीरून, युख़्रिजुल हय्य मिनल मैय्यति व युख़्रिजुल मैय्यित मिनल हैय्यि, व युहइल अर्ज़ि बाद मौतिहा व कज़ालिक तुख़रजून। (अबू दाऊद स. ६९२, इब्ने सिनी स. ५३)

तर्जमा: सो मैं अल्लाह की पाकी बयान करता हूँ शाम के वक़्त और सुबह के वक़्त और तमाम आसमानों और ज़मीन में उसी के लिए हम्द है और ज़वाल के बाद भी और ज़ोहर के वक़्त भी वह

जानदार को बेजान से और बेजान को जानदार से बाहर लाता है और ज़मीन को उसके मुर्दा होने के बाद ज़िन्दा करता है और इसी तरह तुम निकाले जाओगे।

पढ़ लिया करे तो उसकी जो कमी उस दिन रही होगी वह उस कमी को पूरा करने वाला शुमार होगा, और जो शाम के वक़्त पढ़ लिया करे तो वह अपनी रात की कमी को पूरा कर देने वाला शुमार होगा।

हिफाज़ते दीन व जान व औलाद दुआ सय्यदना अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु पर हज्जाज बिन यूसुफ सख़्त नाराज़ हुआ और कहा अगर फलाँ वजह न होती तो मैं तुम को क़त्ल कर देता। हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया तू हरगिज़ मुझे क़त्ल नहीं कर सकता। मुझे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने ऐसी दुआ बतला दी है जिस के ज़रिये हर ज़ालिम मरदूद शैतान से हिफाज़त हो जाती है (वह हमें ज़रर नहीं पहुंचा सकते) हज्जाज ने जब सुना तो घुटने के बल बैठ गया और कहने लगा चचा मुझे सिखा दो। हज़रत

अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया तो उसका अहल नहीं है फिर वफात के क़रीब उन्होंने यह दुआ अपने बाज़ लड़कों को बता दी थी।

بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى نَفْسِىْ وَدِيْنِىْ، بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى اَهْلِىْ وَمَالِىْ وَوَلَدِىْ، بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى مَا اَعْطَانِىَ اللّٰهُ، اَللّٰهُ رَبِّىْ لَآ اُشْرِكُ بِهٖ شَيْئًا، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ، اَللّٰهُ اَكْبَرُ وَاَعَزُّ وَاَجَلُّ وَاَعْظَمُ مِمَّا اَخَافُ وَاَحْذَرُ عَزَّجَارُكَ وَجَلَّ ثَنَاؤُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ اَللّٰهُمَّ اِنِّىْ اَعُوْذُبِكَ مِنْ شَرِّ نَفْسِىْ وَمِنْ كُلِّ شَيْطَانٍ مَّرِيْدٍ وَّمِنْ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِىَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ اِنَّ وَلِيِّىَ اللّٰهُ الَّذِىْ نَزَّلَ الْكِتَابَ وَهُوَ يَتَوَلَّى الصَّالِحِيْنَ۔ (جمع الجوامع للسیوطی)

बिस्मिल्लाही अला नफ्सी व दीनी, बिस्मिल्लाही अला अहली व माली व वलदी, बिस्मिल्लाही अला माआतनियल्लाहु, अल्लाहु रब्बी ला उशरिकु बिही शैअन, अल्लाहु अक्बरु, अल्लाहु अक्बरु अल्लाहु अक्बरु व अअज़्ज़ु व अजल्लु आज़मु मिम्मा अख़ाफु व अहज़रु अज़्ज़ जारुक व जल्ल सनाउक वला इलाह ग़ैरुक अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिन शर्री नफ्सी व मिन कुल्ली शैतानिम मरीदिंव्व मिन कुल्ली

जब्बारिन अनीदिन फइन तवल्लव फकुल हस्बियल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव अलैही तवक्कल्तु व हुव रब्बुल अर्शिल अज़ीमी इन्न वलिय्यिल्लाहुल्लज़ी नज़्ज़लल किताब व हुव यतवल्लस्सालिहीन।(जमउज जवामिउ लिस्सियूती)

तर्जमा : अल्लाह का नाम अपनी ज़ात पर और अपने दीन पर अल्लाह का नाम अपने घर वालों पर और अपने माल और अपनी औलाद पर अल्लाह का नाम उस चीज़ पर जो अल्लाह ने मुझे दी है अल्लाह ही मेरा रब है मैं उसके साथ किसी को शरीक नहीं ठहराता, अल्लाह बड़ा है, अल्लाह बड़ा है , अल्लाह बड़ा है, और ग़ालिब है और बड़े रुतबे वाला है और बड़ी अज़मत वाला है उस चीज़ से जिस से मैं डर रहा हूँ और ख़ौफज़दा हो रहा हूँ। तेरी पनाह ग़ालिब है और तेरी तारीफ बड़ी है तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है। ऐ अल्लाह पाक मैं तेरी पनाह चाहता हूँ अपने नफ्स के शर से और हर सरकश शैतान से और हर ज़िद्दी ज़ालिम से पस अगर वह रुगर्दानी करें तो तुम कह दो अल्लाह काफी है उसके अलावा कोई माबूद नहीं उसी पर मैंने भरोसा किया और वह बुजुर्ग अर्श का रब है बेशक मेरा दोस्त व मददगार है, जिस ने यह किताब नाज़िल फरमाई और वह नेक बन्दों की मदद किया

करता है।

दुआ हज़रत आदम अलैहिस्सलाम

हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब अल्लाह पाक ने हज़रत आदम अलैहिस्सलाम को ज़मीन पर उतारा तो वह उठ कर मुक़ामे काबा में आये और दो रकअत नमाज़ पढ़ कर इस दुआ को पढ़ा। अल्लाह तआला ने उसी वक़्त 'वही' भेजी कि ऐ आदम ! मैंने तेरी तौबा क़बूल की और तेरा गुनाह माफ किया और तेरे अलावा जो कोई मुझ से उन कलिमात से दुआ करेगा मैं उस के भी गुनाह माफ कर दूँगा और उसकी मुहिम को फतह कर दूँगा और शयातीन को उस से रोक दूँगा और दुनिया उसके दरवाज़े पर नाक घिसती चली आयेगी। अगरचे वह उसको न देख सके। वह दुआ यह है:

اَللّٰھُمَّ اِنَّکَ تَعْلَمُ سِرِّیْ وَعَلَانِیَتِیْ فَاقْبَلْ مَعْذِرَتِیْ وَتَعْلَمُ حَاجَتِیْ فَاَعْطِنِیْ سُؤْلِیْ وَتَعْلَمُ مَافِیْ نَفْسِیْ فَاغْفِرْلِیْ ذَنْبِیْ ،اَللّٰھُمَّ اِنِّیْٓ اَسْئَلُکَ اِیْمَاناً یُّبَاشِرُ قَلْبِیْ وَیَقِیْناً صَادِقاً حَتّٰی اَعْلَمَ اَنَّہٗ لَایُصِیْبُنِیْٓ اِلَّا مَا کَتَبْتَ لِیْ وَرِضًابِمَاقَسَمْتَ لِیْ. (طبرانی وبیہقی تفسیر الدر المنثور ۱/۱۴۳)

अल्लाहुम्म इन्नक तअलमु सिर्री व अलानियती फक़्बल मअज़िरती व तअलमु हाजती फ़आतिनी सूली व तअलमु मा फी नफ्सी फग़्फिरली ज़ंबी, अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ईमानंय्युबाशिरु क़ल्बी व यक़ीनन सादिक़न हत्ता आलमु अन्नहू ला युसीबुनी इल्ला मा कतबत ली व रिज़्म बिमा क़सम्त ली। (तबरानी, बेहक़ी तफ्सीर अद्दारुल मंसूर जि. १ स. १४३)

मसाइब और हादसात से हिफाज़त का वज़ीफा दुआ हज़रत अबू दरदा रज़ि अल्लाहु अन्हु

तलक़ बिन हबीब रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि एक आदमी हज़रत अबू दरदा रज़ि अल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और कहा कि आप का मकान जल गया। उन्होंने कहा नहीं जला। फिर दूसरा शख़्स आया उस ने भी यही ख़बर दी। हज़रत अबू दरदा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने कहा नहीं जला तीसरे शख़्स ने आ कर यह ख़बर दी कि आग लगी और उस के शरारे बलंद हुये लेकिन जब आप के मकान तक आग पहुंची तो बुझ गई। उस पर अबू दरदा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने कहा मुझे मालूम था कि अल्लाह पाक ऐसा नहीं करेगा उस ने कहा कि हमें नहीं मालूम कि हम आप की किस बात पर तअज्जुब

आया नहीं जला, उस पर (जो आप ने फरमाया) या मुझे मालूम था कि अल्लाह पाक नहीं जलायेगा उस पर। हज़रत अबू दरदा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया मैं ने यह इस वजह से कहा कि मैंने रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स यह दुआ सुबह पढ़ ले तो शाम तक और शाम को पढ़ ले तो सुबह तक किसी मुसीबत व हादसे में गिरिफ्तार न होगा और मैंने उसे पढ़ लिया था।

اَللّٰهُمَّ اَنْتَ رَبِّیْ، لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ، عَلَیْکَ تَوَکَّلْتُ وَاَنْتَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ، مَاشَاءَ اللّٰهُ کَانَ وَمَالَمْ یَشَأْ لَمْ یَکُنْ، وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِیِّ الْعَظِیْمِ، اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْاَحَاطَ بِکُلِّ شَیْءٍ عِلْمًا، اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُ بِکَ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ وَمِنْ شَرِّ کُلِّ دَابَّةٍ اَنْتَ آخِذٌ بِنَاصِیَتِهَا، اِنَّ رَبِّیْ عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ. (الدعاء/۲۴۳/ابوداؤد/ابن سنی/کنز العمال ۲/ص ۱۶۲)

अल्लाहुम्म अन्त रब्बि, ला इलाह इल्ला अन्त, अलैक तवक्कलतु व अन्त रब्बुल अर्शिल अज़ीमी, मा शा अल्लाहु कान व मा लम यशा लम यकुन, वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीमी, आलमु अन्नल्लाह अल कुल्लि शैइन क़दीरुंव्व

अन्नल्लाह क़द अहात बिकुल्ली शैइन इल्मा, अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ु बिक मिन शर्रि नफ्सी व मिन शर्रि कुल्लि दाब्बतिन अन्त आख़िज़ुन बिनासियतिहा, इन्न रब्बी अला सिरातिम मुस्तक़ीम। (अद्दुआ स. २४३, अबू दाऊद, इब्ने सिनी, कंज़ुल अम्माल जि.२ स. १६२)

तर्जमा : ऐ अल्लाह तू मेरा रब है, तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। तुझी पर मैंने भरोसा किया और तू बुज़ुर्ग अर्श का रब है। जो कुछ अल्लाह ने चाहा वह हो गया और जो अल्लाह पाक ने नहीं चाहा वह नहीं हुआ। गुनाहों से फिरना और नेकी की कुव्वत अल्लाह ही की तरफ से है। जो बलंद रुत्बे वाला और अज़मत वाला है। मैं जानता हूँ कि बेशक अल्लाह पाक हर चीज़ पर क़ादिर है और बेशक अल्लाह पाक का इल्म हर चीज़ को मुहीत (घेरे हुये) है। ऐ अल्लाह मैं आप की पनाह चाहता हूँ अपने नफ्स के शर से और हर जानवर के शर से जिस की पेशानी आप के क़ब्ज़े में है। यक़ीनन मेरा रब सिराते मुस्तक़ीम पर है।

ख़ौफ के वक़्त की दुआ

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि जब तुम किसी ख़ौफनाक ज़ालिम बादशाह से ज़ुल्म व तशद्दुद और ज़रर का ख़ौफ

महसूस करो तो यह दुआ पढ़ो:

اَللّٰهُ اَكْبَرُ اَللّٰهُ اَعَزُّ مِنْ خَلْقِهٖ جَمِيْعاً اَللّٰهُ اَعَزُّ مِمَّا اَخَافُ وَاَحْذَرُ، اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْمُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ اَنْ يَقَعْنَ عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ مِنْ شَرِّ عَبْدِكَ فُلَانٍ..... وَّجُنُوْدِهٖ وَاَتْبَاعِهٖ وَاَشْيَاعِهِمْ مِنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ، اَللّٰهُمَّ كُنْ لِّیْ جَاراً مِّنْ شَرِّهِمْ جَلَّ ثَنَاؤُكَ وَتَبَارَكَ اسْمُكَ وَلَا اِلٰهَ غَيْرُكَ. (الادب المفرد ص ۷۰۸، طبرانی ص ۱۲۹۵، کنز ۶۶۰)

अल्लाहु अक्बरु अल्लाहु अअज़्ज़ु मिन ख़ल्क़िही जमीअन अल्लाहु अअज़्ज़ु मिम्मा अख़ाफु व अहज़रु, अऊज़ु बिल्लाहिल्लज़ी ला इलाह इल्ला हुवल मुम्सिकुस्समावातिस्सबई अन यक़अन अलल अर्ज़ि इल्ला बिइज़्निही मिन शर्रि अब्दुक फुलानिन ...... व जुनूदिही व अतबाअिही व अशयाअिहिम मिनल जिन्नी वल इन्सी, अल्लाहुम्म कुल ली जारम मिन शर्रिहिम जल्ल सनाउक व तबारकस्मुक वला इलाह ग़ैरुक।

(अल अदबुल मुफ़र्रद स. ७०८, तबरानी स. १२९५, कंज़ स. ६६०)

तर्जमा : अल्लाह बड़ा है अल्लाह पाक अपनी सारी मख़्लूक़ से क़वी तर है। अल्लाह उस से बहुत ज़्यादा ग़ालिब है जिस में डर रहा हूँ और ख़ौफ ज़दा हूँ। मैं उस अल्लाह की पनाह चाहता हूँ जिस के

सिवा कोई माबूद नहीं है। जिस ने रोक रखा है सातों आसमान को ज़मीन पर गिरने से मगर जब अल्लाह का हुक्म हो जाये (मैं पनाह चाहता हूँ) तेरे फलाँ बन्दे और उसके लश्कर और उसके ख़िदमत गार और मददगार जिन व इन्स के शर से। ऐ अल्लाह ! तू उनकी शरारत से मेरा मुहाफिज़ बन जा तेरी तारीफ बड़ी है और बा बरकत है तेरा नाम और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं है।

नोट : मिन 'शर्रि अब्दिक फुलानि' पढ़ते वक़्त अपने उस दुश्मन का तसव्वुर करे जिस से डर महसूस हो।

हज़रत अब्दुल्लाह बि मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जब तुम किसी से डर महसूस करो तो यह पढ़ लो।

اَللّٰھُمَّ رَبَّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَمَنْ فِیْھِنَّ وَرَبَّ الْعَرْشِ الْعَظِیْمِ وَرَبَّ جِبْرَئِیْلَ وَمِیْکَائِیْلَ وَ اِسْرَافِیْلَ کُنْ لِیْ جَاراً مِّنْ فُلَانٍ وَّاَشْیَاعِہٖ اَنْ یَّفْرُطُوْا عَلَیَّ اَوْاَنْ یَّطْغَوْا عَلَیَّ اَبَداً عَزَّ جَارُکَ وَجَلَّ ثَنَاؤُکَ وَلَااِلٰہَ اِلَّا اَنْتَ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّۃَ اِلَّا بِکَ. (الدعاء/۱۰۵۷، کنزالعمال)

अल्लाहुम्म रब्बस्समावातिस्सबअी व मन

फीहिन्न व रब्बल अर्शिल अज़ीम व रब्ब जिबरईल व मीकाईल व इसराफील कुल ली जारम मिन फुलानिंव्व अशयाइही अंयफ्रुतू अलय्य और अंय्यतगू अलय्य अबदन अज़्ज़ जारुक व जल्ल सनाउक वला इलाह इल्ला अन्त वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिक। (अद्दुआ स. १०५७, कंज़ुल उम्माल)

तर्जमा : ऐ सातों आसमान और जो कुछ उस में है उस के रब और बुज़ुर्ग अर्श के रब और जिबरईल और मीकाईल और इसराफील के रब तू मुझे पनाह दे दे फलाँ से और उसकी जमात से कि वह मुझ पर कभी भी ज़ुल्म व ज़्यादती करें। तेरी पनाह ग़ालिब है और तेरी तारीफ बड़ी है और तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। न किसी को कोई कुव्वत है और न ताक़त है सिवाये तेरे।

ज़ालिम के ज़ुल्म से हिफाज़त

हज़रत अबू राफे रहमतुल्लाह अलैहि कहते हैं हज़रत अब्दुल्लाह बिन जाफर रज़ि अल्लाहु अन्हु ने (मजबूर हो कर) हज्जाज बिन यूसुफ से अपनी बेटी की शादी की और बेटी से कहा कि जब वह तुम्हारे पास अंदर आये तो यह दुआ पढ़ना:

لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ.

ला इलाह इल्लल्लाहुल हलीमुल करीमु सुबहानल्लाही रब्बिल अर्शिल अज़ीमी वल हम्दु लिल्लाही रब्बिल आलमीन।

हज़रत अब्दुल्ला रज़ि अल्लाहु अन्हु ने कहा जब हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम कोई सख़्त अमर पेश आता तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम यह दुआ पढ़ते। रावी कहते हैं (हज़रत अब्दुल्लाह की बेटी ने यह दुआ पढ़ी, जिसकी वजह से) हज्जाज उसके क़रीब न आ सका। (कंज़ुल अम्माल जि.७ स. ६९ हदीस १८०००)

फरिश्तों से भी सवाब लिखना मुश्किल हो गया

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला के एक नेक बंदे ने यह दुआ पढ़ी:

يَارَبِّ لَکَ الْحَمْدُ کَمَا يَنْبَغِیْ لِجَلَالِ وَجْهِکَ وَعَظِيْمِ سُلْطَانِکَ.

या रब्बि लकल हम्दु कमा यमबग़ी लिजलालि वजहिक व अज़ीमी सुलतानिक।

तर्जमा : ऐ मेरे रब आप ही के लिए हम्द है जैसा कि आप के रूये अनवर के जलाल और आप

की अज़ीम बादशाहत के मुनासिब है।

तो उसका सवाब लिखना फरिश्तों पर दुश्वार हो गया कि कैसे लिखें तो अल्लाह तआला यह जानते हुये कि उस बन्दे ने यह दुआ पढ़ी है फरिश्तों से सवाल करते हैं कि मेरे इस बन्दे ने क्या पढ़ा तो फरिश्तों ने अर्ज़ किया:

يَارَبِّ لَكَ الْحَمْدُ كَمَا يَنْبَغِيْ لِجَلَالِ وَجْهِكَ وَعَظِيْمِ سُلْطَانِكَ۔

या रब्बि लकल हम्दु कमा यमबग़ी लिजलाली वजहिक व अज़ीमी सुलतानिक।

यह पढ़ा तो अल्लाह रब्बुल इज़्ज़त ने फ़रमाया फिलहाल इसी तरह लिखो जिस तरह पढ़ा। जब मेरा बन्दा मुझ से मिलेगा मैं ही उसकी जज़ा और सवाब उसको दूँगा।(अहमद व इब्ने माजा स. २६९)

फरिश्ते को मदद के लिए हरकत में लाने वाली दुआ

हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि हुज़ूर अकर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के एक सहाबी की कुन्नियत अबू मुअल्लक़ थी और वह ताजिर थे अपने और दूसरों के माल से तिजारत किया करते थे और वह बहुत इबादत गुज़ार और परहेज़गार थे। एक मर्तबा वह सफर में गये।

उन्हें एक हथियारों से मुसल्लह डाकू मिला उस ने कहा अपना सारा सामान यहाँ रख दो। मैं तुम्हें क़त्ल करूंगा। उन सहाबी ने कहा कि तुम्हें माल लेना है वह ले लो, डाकू ने कहा नहीं, मैं तो तुम्हारा ख़ून बहाना चाहता हूँ। उन सहाबी ने कहा मुझे ज़रा मुहलत दो मैं नमाज़ पढ़ लूँ। उस ने कहा, जितनी पढ़नी है पढ़ लो। चुनान्चे उन्होंने वुज़ू कर के नमाज़ पढ़ी और यह दुआ तीन मर्तबा मांगी:

يَا وَدُوْدُ يَا ذَا الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ يَا فَعَّالاً لِّمَا يُرِيْدُ
اَسْئَلُكَ بِعِزَّتِكَ الَّتِىْ لَا تُرَامُ وَمُلْكِكَ الَّذِىْ لَا يُضَامُ
وَبِنُوْرِكَ الَّذِىْ مَلأَ اَرْكَانَ عَرْشِكَ اَنْ تَكْفِيَنِىْ
شَرَّ هٰذَا اللِّصِّ يَا مُغِيْثُ اَغِثْنِىْ.

या वदूदु या ज़ल अर्शिल मजीदु या फ़अ्आलल लिमा युरीदु अस्अलुक बिइज़्ज़तिकल्लती ला तुरामु व मुल्किकल्लज़ी ला युज़ामु व बिनूरिकल लज़ी मलअ अर्कान अर्शिक अन तक्फ़ियनी शर्र हाज़ल्लिस्सि या मुग़ीसु अग़िस्नी।

तो अचानक एक घोड़ा सवार नुमूदार हुआ जिस के हाथ में एक नेज़ा था जिसे उठा कर उसने अपने घोड़े के कानों के दरमियान बलंद किया हुआ

था। उस ने उस डाकू को नेज़ा मार कर क़त्ल कर दिया। फिर वह उस ताजिर की तरफ मुतवज्जह हुआ ताजिर ने पुछा तुम कौन हो? अल्लाह ने तुम्हारे ज़रिये मेरी मदद फरमाई हैं उस ने कह मैं चौथे आसमान का फरिश्ता हूँ जब आप ने पहली मर्तबा दुआ की तो मैंने आसमान के दरवाज़ों की खड़खड़ाहट सुनी जब आप ने दोबरा दुआ की तो मैंने आसमान वालों की चीख़ व पुकार सुनी फिर आप ने तीसरी मर्तबा दुआ की तो किसी ने कहा यह एक मुसीबत ज़दा की दुआ है मैंने अल्लाह की बारगाह में अर्ज़ किया कि उस डाकू को क़त्ल करने का काम मेरे ज़िम्मे कर दें फिर उस फरिश्ते ने कहा आप को खुशख़बरी हो कि जो आदमी भी वुज़ू कर के चार रकअत नमाज़ पढ़े और फिर यह दुआ मांगे उसकी दुआ ज़रूर क़बूल होगी चाहे वह मुसीबत ज़दा हो या न हो।(इब्ने अबिद्दुनिया, ह्यातुस्सहाबा जि. ३ स. ६०५)

जो शख़्स अल्लाह का नाम लेते लेते सो जाये उस पर अल्लाह का इनाम

हदीस पाक में है जब इंसान बिस्तर पर लेटने के लिए जाता है तो एक फरिश्ता उसकी तरफ लपकता है और एक शैतान भी दौड़ कर आता है। शैतान की कोशिश यह होती है कि इंसान का

आख़िरी बोल कोई बुराई का कलिमा हो और फरिश्ता कहता है तू किसी ख़ैर पर अपने अमल को ख़त्म कर। पस बन्दा अल्लाह का ज़िक्र करते करते सो जाता है तो शैतान मायूस हो कर भाग जाता है और फरिश्ता उसी बंदे के साथ रात गुज़ारता है।

नफ्स को क़ाबू में रखने का वज़ीफा

जिस शख़्स का नफ्स उसके क़ाबू में न हो वह सोते वक़्त सीने पर हाथ रख कर 'या मुमीतु' (ऐ मौत देने वाले) पढ़ते पढ़ते सो जाये तो इंशा अल्लाह उसका नफ्स उसका मुती हो जायेगा।(हिस्ने हसीन स. ५३)

आसमानी मुहाफिज़

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ.

अऊज़ु बिल्लाही मिनश्शैतानिर्रजीम

तर्जमा: मैं अल्लाह पाक की पनाह चाहता हूँ मलऊन शैतान से। हदीस शरीफ में आया है कि जो शख़्स दिन में दस मर्तबा शैतान से पनाह मांगेगा अल्लाह पाक उसको शैतान से बचाने के लिए एक फरिश्ता मुक़र्रर फरमा देगा। (हिसन हसीन)

दुआ बराये हिफाज़ते दीन व जान व माल

بِسْمِ اللّٰهِ عَلٰى دِيْنِىْ وَنَفْسِىْ وَوَلَدِىْ وَاَهْلِىْ وَمَالِىْ.

बिस्मिल्लाही अला दीनी व नफ्सी व वलदी व अहली व माली, (तीन बार पढ़े)

तर्जमा: अल्लाह का नाम मेरे दीन पर और मेरी जान और औलाद पर और मेरे घर वालों पर और मेरे माल पर।(कंज़ुल उम्माल जि. २ स. २३६)

इलहामे हिदायत और नफ्स के शर से हिफाज़त की दुआ

हज़रत इमरान बिन हसीन रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मेरे वालिद हज़रत हसीन रज़ि अल्लाहु अन्हु को दुआ के यह दो कलिमे सिखाये जिन को वह मांगा करते थे तीन बार:

اَللّٰهُمَّ اَلْهِمْنِیْ رُشْدِیْ وَأَعِذْنِیْ مِنْ شَرِّ نَفْسِیْ.

अल्लाहुम्म अलहिमनी रुशदी व अइज़नी मिन शर्री नफ्सी।

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! मेरे दिल में डाल दे मेरी सलाहियत और मुझ को पनाह दीजिये मेरे नफ्स के शर से। (तिर्मिज़ी जि. २ स. १८२)

मुस्तजाबुद्दावात बनने का अमल

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ وَ الْمُسْلِمِیْنَ وَالْمُسْلِمَاتِ–

अल्लाहुम्मग़्फिरजी व लिल मुमिनीन वल मुमिनाति वल मुस्लिमीन वल मुस्लिमात।

तर्जमा: ऐ अल्लाह मेरी मग़्फिरत फरमा और तमाम मोमिन मर्दों की और तमाम मोमिन औरतों की और तमाम मुसलामन मर्दों और औरतों की।

फायदा : हदीस शरीफ में आया है कि जो शख़्स दिन में २७ या २५ मर्तबा तमाम मोमिन मर्दों और औरतों के लिए मग़्फिरत की दुआ मांगेगा वह अल्लाह पाक के नज़दीक उन मुस्तजाबुद्दावात लोगों में (जिन की दुआयें अल्लाह के यहाँ मक़्बूल होती हैं) शामिल हो जायेगा जिन की दुआओं से ज़मीन वालों को रिज़्क़ दिया जाता है। (हिसन हसीन)

एक अरब से भी ज़्यादा नेकियाँ

इमाम तबरानी ने अपनी मुअजमे कबीर में एक हदीस नक़्ल फरमाई है। जिस में जनाब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया कि जो शख़्स रोज़ाना कम अज़ कम एक मर्तबा :

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْلِیْ وَلِلْمُؤْمِنِیْنَ وَالْمُؤْمِنَاتِ

'अल्लाहुम्मग़्फिर ली व लिल मुमिनीन वल मुमिनात'

पढ़ेगा उसको तमाम मुसलमानों में हर एक की

जानिब से एक एक नेकी मिलेगी।

नोट: इस वक़्त दुनिया में एक अरब से ज़्यादा मुसलमान हैं इस लिए जो शख़्स इस मुख़्तसर दुआ को पढ़ेगा उसको एक अरब से भी ज़्यादा नेकियाँ मिलेंगी।

बड़ी फज़ीलत

हज़रत अबू अय्यूब अंसारी रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरफूअन रिवायत है कि जब सूरह फातेहा, आयतल कुर्सी 'शहिदल्लाहु' और 'कुलिल्लाहुम्म मालिकुल मुल्की' से 'बिग़ैरिहिसाब' तक नाज़िल हुई तो अर्श से मुअल्लक़ हो कर फरयाद की कि क्या आप हम को ऐसी क़ौम पर नाज़िल फरमा रहे हैं जो गुनाहों का इर्तिकाब करेगी। इर्शाद फरमाया कि क़सम है मेरी इज़्ज़त व जलाल की और इरतिफाये मकान की जो लोग हर फर्ज़ नमाज़ के बाद तुम्हारी तिलावत करेंगे हम उनकी मग़्फिरत फरमा देंगे और जन्नतुल फिरदौस में जगह देंगे और हर रोज़ ७० मर्तबा नज़र रहमत से देखेंगे और उसकी ७० हाजतें पूरी रकेंगे जिसका अदना दर्जा मग़्फिरत है। बाज़ रिवायात में है कि हम उसके दुश्मनों पर उसको ग़लबा अता करेंगे। (तफ्सीरे रुहुल मानी प. ३ स. १०६)

जो शख़्स सूरह फातेहा एक मर्तबा एक, आयतल कुर्सी एक मर्तबा, और एक मर्तबा यह आयतें

'शहिदल्लाहु, कुलिल्लाहुम्म मालिकल मुल्क' पांचों नमाज़ों के बाद पढ़ेगा, तो जन्नत उसका ठिकाना होगा और हज़ीरतुल कुद्स में रहेगा और अल्लाह रोज़ाना ७० मर्तबा नज़रे रहमत से देखेंगे और ७० हाजतें उसकी पूरी करेंगे और उसकी मग़फिरत करेंगे। (इब्ने सिनी)

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ ٥ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ٥ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ٥ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَاِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ ٥ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ٥ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ ٥

اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ الْقَيُّوْمُ لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّ لَا نَوْمٌ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗ اِلَّا بِاِذْنِهٖ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ وَسِعَ كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا وَهُوَ الْعَلِيُّ الْعَظِيْمُ.

شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا بِالْقِسْطِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ.

قُلِ اللّٰهُمَّ مَالِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ

وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ مِمَّنْ تَشَآءُ وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ○ تُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَتُوْلِجُ النَّهَارَ فِى الَّيْلِ وَتُخْرِجُ الْحَىَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ○

हल हदीस: जो शख़्स फर्ज़ नमाज़ के बाद आयतल कुर्सी पढ़ने का ऐहतिमाम करे, वह शख़्स अज्र व सवाब के ऐतिबार से उस शख़्स की तरह होगा जिस ने अल्लाह पाक के नबीयों की मअियत में मिल कर जिहाद किया और शहीद हो गया। (कंजुल उम्माल जि. १ स. ५६९, अमलुल यवम वल्लौल स. ९३)

२. एक हदीस में है कि जो शख़्स फर्ज़ नमाज़ के बाद आयतल कुर्सी पढ़ेगा, उसको जन्नत में जाने से सिवाये मौत के कोई चीज़ नहीं रोक सकती। (कंजुल उम्माल जि. १ स. ५६९, अमलुल यवम वल्लैल स. १९०)

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर अक्रम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : जिस ने हर नमाज़ के बाद ३३ मर्तबा सुबहानल्लाह ३३ मर्तबा 'अल हम्दु लिल्लाह' और ३३ मर्तबा 'अल्लाहु अक्बर' कहा और एक मर्तबा ' ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू' पढ़ कर सौ की गिनती मुकम्मल कर

ली। तो उसके सारे गुनाह माफ कर दिये जायेंगे ख़्वाह वह समुन्द्र के झाग के बराबर ही क्यों न हों। (मुस्लिम जि. १ स. २१९)

हज़रत कअब बिन उजरा रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया : नमाज़ के बाद पढ़े जाने वाले चंद कलिमात हैं जिन का पढ़ने वाला, या फरमाया: करने वाला कभी ना मुराद नहीं होता। हर फर्ज़ नमाज़ के बाद ३३ मर्तबा 'सुबहानल्लाह' ३३ मर्तबा 'अल हम्दु लिल्लाह' और ३४ मर्तबा 'अल्लाहु अक्बर' पढ़ना। (मुस्लिम जि. १ स. २१९)

थोड़े वक़्त में बहुत ज़्यादा नेकी हासिल कीजिये

اَللّٰهُمَّ اغْفِرْ لِاُمَّةِ مُحَمَّدٍ ﷺ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْ اُمَّةَ مُحَمَّدٍ ﷺ اَللّٰهُمَّ أَصْلِحْ اُمَّةَ مُحَمَّدٍ ﷺ اَللّٰهُمَّ تَجَاوَزْ عَنْ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ ﷺ اَللّٰهُمَّ فَرِّجْ كُرَبَ اُمَّةِ مُحَمَّدٍ ﷺ اَللّٰهُمَّ اهْدِ النَّاسَ وَالْجِنَّ جَمِيْعاً.

अल्लाहुम्मग़्फिर लिउम्मती मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाहुम्मर्हम उम्मत मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाहुम्म अस्लिह उम्मत मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व

सल्लम अल्लाहुम्म तजावज़ अन उम्मति मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाहुम्म फर्रिज कुरब उम्मति मुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम अल्लाहुम्महदिन्नास वल जिन्न जमीआ।

तर्जमा : ऐ अल्लाह उम्मते मुहम्मदिया अला साहिबिहस्सलात वस्सलाम की मग़्फिरत फरमा, ऐ अल्लाह उम्मते मुहम्मदिया अला साहिबिहस्सलात वस्सलाम पर रहम फरमा, ऐ अल्लाह उमम्मते मुहम्मदिया अला साहिबिहस्सलात वस्सलाम की इस्लाह फरमा, ऐ अल्लाह उम्मते मुहम्मादिया अला साहिबिहस्सलात वस्सलाम से दरगुज़र का मामला फरमा, ऐ अल्लाह उम्मते मुहम्मादिया अला साहिबिहस्सलात वस्सलाम की परेशानियों को दूर फरमा, ऐ अल्लाह तमाम इंसान और जिन्नात को हिदायत फरमा।

बेटे के साथ माँ बाप के भी गुनाह माफ

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स जुमा की नमाज़ के बाद सौ बार:

سُبْحَانَ اللّٰهِ الْعَظِيْمِ وَبِحَمْدِهٖ.

'सुबहानल्लाहिल अज़ीमी व बिहम्दिही।

(अमलुल यवमी वल्लैल स. १३४)

तर्जमा : अज़ीमुश्शान अल्लाह की पाकी और उसकी हम्द बयान करता हूँ। पढ़े तो अल्लाह पाक उसके हज़ार गुनाह माफ फरमायेंगे और उसके वालिदैन के चौबिस हज़ार गुनाह माफ होंगे।

जब किसी मुसीबत ज़दा को देखे

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ عَافَانِیْ مِمَّا ابْتَلاکَ بِهٖ وَفَضَّلَنِیْ عَلٰی کَثِیْرٍ مِمَّنْ خَلَقَ تَفْضِیْلاً.

अल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी आफानी मिम्म ब्तिलाक बिही व फज़्ज़लनी अला कसीरिम मिम्मन ख़लक़ तफ्ज़ीला।

तर्जमा : तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस ने मुझे आफियत में रखा उस मुसीबत से जिस में मुबतला किया और मुझ को अपनी बहुत सी मख़्लूक़ पर फज़ीलत बख़्शी।

जो शख़्स किसी मुबतला मर्ज़ को देख कर यह दुआ पढ़ेगा वह उस मर्ज़ से महफ़ूज़ रहेगा। (अज़कार नववी स. २५८)

शिफाअत वाजिब

हज़रत रुवैफा बिन साबित रज़ि अल्लाहु अन्हु रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया जो शख़्स मुहम्मद

(सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) पर इस तरह दुरूद भेजे:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّاَنْزِلْهُ الْمَقْعَدَ الْمُقَرَّبَ عِنْدَكَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ.

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिंव अंज़िलहुल मक्अदल मुकर्रब इन्दक यवमल कियामती।

उसके लिये मेरी शिफाअत वाजिब हो जायेगी।

(बज़्ज़ार जि.६ स. २९९, तबरानी जि. ५ स. २५, मजमउज़्ज़ वाइद जि. १० स. १६३)

तमाम औक़ात में दुरूद

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ فِىْ اَوَّلِ كَلَامِنَا، اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ فِىْ اَوْسَطِ كَلَامِنَا، اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدٍ فِىْ آخِرِ كَلَامِنَا.

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन फी अव्वलि कलामिना, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिन फी औसति कलामिना, अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मादिन फी आख़िरी कलामिना।

तर्जमा: ऐ अल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लमसल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर रहमत नाज़िल फरमा हमारी शुरू गुफ्तगू में। ऐ अल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर रहमत नाज़िल फरमा हमारी गुफ्तगू के दरमियान में, ऐ अल्लाह मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर

रहमत नाज़िल फरमा हमारी गुफ्तगू के आख़िर में।

शैख़ुल इस्लाम अबूल अब्बास रह० ने फरमाया जो शख़्स दिन और रात में तीन तीन मर्तबा यह दुरूद शरीफ पढ़े वह गोया रात और दिन के तमाम औक़ात में दुरूद भेजता रहा।

८० साल की इबादत का सवाब
८० साल के गुनाह माफ

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से नक़्ल किया गया है कि जो शख़्स जुमा के दिन अस्र की नमाज़ के बाद अपनी जगह से उठने से पहले ८० मर्तबा यह दुरूद शरीफ पढ़े:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ وَعَلٰى آلِهٖ وَسَلِّمْ تَسْلِيماً.

अल्लाहुम्म सल्लि अलामुहम्मदिनिन्नबियिल उम्मिई व अला आलिही व सल्लिम तस्लीमा।

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! नबी उम्मी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आल पर रहमत नाज़िल फरमा और सलाम नाज़िल फरमा।

तो उसके ८० साल के गुनाह माफ होंगे और ८० साल की इबादत का सवाब लिखा जायेगा।

(फज़ाइले दुरूद, तबरानी, दार कुत्नी)

जुमा के दिन एक हज़ार दुरूद की फज़ीलत

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है की रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो जुमा के दिन एक हज़ार दुरूद पढ़ा करेगा वह जब तक अपना ठिकाना जन्नत न देख लेगा उस वक़्त तक उसे मौत न आयेगी। (तरग़ीब स. १०१, इब्ने शाहीन)

हज़रत इब्ने मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि उन्होंने ज़ैद बिन वहब से कहा कि देखो जुमा के दिन एक हज़ार दुरूद पढ़ने को न छोड़ना यह पढ़ा करो।

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ

(جلاء الافہام صفحہ ۳۸ القول البدیع صفحہ ۱۸۷)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिनिन्नबीयिल उम्मी। (जलाउल इफहाम स. ३८ अल कौलुल बदीअ स. १८७)

दुरूद बराये दफअे परेशानी व क़ज़ाये हाजात

सलातुन तुनज्जीना

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ وَّعَلٰى آلِ

سَيِّدِنَا وَمَوْلَانَا مُحَمَّدٍ صَلٰوةً تُنَجِّيْنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ الْاَهْوَالِ وَالْآفَاتِ وَتَقْضِىْ لَنَا بِهَا جَمِيْعَ الْحَاجَاتِ وَتُطَهِّرُنَا بِهَا مِنْ جَمِيْعِ السَّيِّئَاتِ وَتَرْفَعُنَا بِهَا أَعْلَى الدَّرَجَاتِ وَتُبَلِّغُنَا بِهَا أَقْصَى الْغَايَاتِ مِنْ جَمِيْعِ الْخَيْرَاتِ فِى الْحَيَاةِ وَبَعْدَ الْمَمَاتِ إِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ.

अल्लाहुम्म सल्लि अला सय्यिदना व मौलाना मुहम्मदिंव्व अला आलि सय्यिदिना व मौलाना मुहम्मदि सलातन तुनज्जीना बिहा मिन जमीअिल अहवालि वल आफाति वतक्ज़ी लना बिहा जमीअल हाजाती व तुतह्हिरना बिहा मिन जमीइस्सैय्यिआती व तरफउना बिहा अलद्दर्जाती व तुबल्लिगुना बिहा अक्सल ग़ायाती मिन जमीअिल ख़ैराती फिल हयाती व बअदल ममाती इन्नक अला कुल्लि शैइन क्दीर।

तर्जमा: ऐ अल्लाह ! हमारे आक़ा व मौला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर और हमारे आक़ा व मौला मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की आल पर ऐसा दुरूद नाज़िल फरमा जिस के ज़रिये आप हम को तमाम ख़ौफों और मुसीबतों से निजात अता फरमायें और उसके ज़रिये आप हम को तमाम बुराइयों से पाक फरमायें और उसके ज़रिये

आप हम को बलंद दर्जों (मर्तबों) पर पहुंचायें और उसके ज़रिये हम को दुनिया में और मरने के बाद तमाम भलाइयों के आख़िरी मर्तबा तक पहुंचायें यक़ीनन आप हर चीज़ पर क़ादिर हैं।

नोट : शैखुल इस्लाम हज़रत सय्यद हुसैन अहमद मदनी रह० आफात से तहफ्फुज़ के लिए बाद इशा सत्तर मर्तबा पढ़ने को फरमाया करते थे। (मकतूबात स. ९५)

सत्तर हज़ार फरिश्तों को मशक़्क़त में डालेगा

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का इर्शाद नक़्ल करते हैं जो शख़्स यह दुआ करे:

جَزَى اللّٰهُ عَنَّا مُحَمَّدًا ﷺ مَاهُوَ اَهْلُه‘۔

जज़ल्लाहु अन्ना मुहम्मदन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम मा हुव अहलुहू।

तर्जमा: अल्लाह जल्ला शानहू जज़ा दे हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और जो उनके अहल में हैं उनको हम लोगों की तरफ से जिस बदले के मुस्तहिक़ हैं।

तो उसका सवाब सत्तर हज़ार फरिश्तों को एक हज़ार दिन तक मशक़्क़त में डालेगा। (फज़ाइले

दुरूद शरीफ स. ४४)

७० हज़ार फरिश्तों की दुआ

जो शख़्स तीन मर्तबा :

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ السَّمِيْعِ الْعَلِيْمِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيْمِ۔

अऊज़ु बिल्लाहिस्समीअि लअलीमि मिनश्शै-तानिर्रजीम।

तर्जमा: मैं अल्लाह की जोकि बहुत सुनने वाला जानने वाला है पनाह चाहता हूँ मलऊन शैतान से।

पढ़ कर सूरह हश्र की दर्ज ज़ेल आख़िरी आयात सुबह व शाम एक एक मर्तबा पढ़े तो सुबह से शाम तक और शाम से सुबह तक ७० हज़ार फरिश्ते उसके लिए दुआये मग़्फिरत करते रहते हैं और मर जाये तो शहादत की मौत लिखी जाये। (तिर्मिज़ी, दारमी, इब्ने सिनी)

هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ،هُوَ اللّٰهُ الَّذِیْ لَا اِلٰهَ اِلَّا هُوَ، اَلْمَلِكُ الْقُدُّوْسُ السَّلَامُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ، سُبْحَانَ اللّٰهِ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ٥ هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ، لَهُ الْاَسْمَاءُ الْحُسْنٰى يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ، وَهُوَ

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ.

तर्जमा: वह ऐसा माबूद है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं वह जानने वाला है पोशीदा चीज़ों का और ज़ाहिर चीज़ों का वही बड़ा मेहरबान रहम वाला है। वह ऐसा माबूद है कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं। वह बादशाह है, पाक है, सलाम है अमन देने वाला है, निगहबानी करने वाला है, ज़बरदस्त है ख़राबी को दुरुस्त करने वाला है, बड़ी अज़मत वाला है, अल्लाह पाक लोगों के शिर्क से पाक है। वह माबूद है पैदा करने वाला है, ठीक ठीक बनाने वाला है, सूरत बनाने वाला है, उसके अच्छे अच्छे नाम हैं सब चीज़ें उसकी तस्बीह करती हैं जो आसमानों और ज़मीन में हैं और वही ज़बरदस्त हिक्मत वाला है।

जामे दुआ

हज़रत अबू उमामा रज़ि अल्लाहु अन्हु ने हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से अर्ज़ किया कि हुज़ूर दुआयें तो आप ने बहुत सी बाता दी हैं और सारी याद रहती नहीं कोई ऐसी मुख़्तसर दुआ बता दीजिये जो सब दुआओं को शामिल हो उस पर हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह दुआ तालीम फरमाई।

اَللّٰهُمَّ اِنَّا نَسْأَلُكَ مِنْ خَيْرِ مَاسَأَلَكَ مِنْهُ نَبِيُّكَ

مُحَمَّدٌ ﷺ وَنَعُوْذُ بِكَ مِنْ شَرِّ مَااسْتَعَاذَ مِنْهُ نَبِيُّكَ مُحَمَّدٌ ﷺ وَاَنْتَ الْمُسْتَعَانُ وَعَلَيْكَ الْبَلَاغُ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.

अल्लाहुम्म इन्ना नस्अलुक मिन ख़ैरि मा सअलक मिन्हु नबिय्युक मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व नऊजुबिक मिन शर्रि मस्तआज़ मिन्हु नबिय्युक मुहम्मदुन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम व अन्तल मुस्तआनु व अलैकल बलागु वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाही।

तर्जमा : ऐ अल्लाह! हम आप से उन भलाइयों को मांगते हैं जिन को आप से आप के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मांगा और हम आप की उन बुराइयों से पनाह चाहते हैं जिन से आप के नबी मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पनाह मांगी और आप ही से मदद मांगी जाती है और आप ही के ज़िम्मे पहुंचाना है और कोई ताक़त व कुव्वत नहीं है सिवाये अल्लाह के। (तिर्मिज़ी)

अल्लाह पाक से मुहब्बत की दुआ

हज़रत अबू दरदा रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: हज़रत दाऊद अलैहिस्सलाम की दुआ में यह कलिमात भी होते थे, ऐ अल्लाह मैं तुझ

से तेरी मुहब्बत तलब करता हूँ और उसकी मुहब्बत जो तुझ से मुहब्बत करता हो और तुझ से उस काम की दरख़्वास्त करता हूँ जो मुझे तेरी मुहब्बत तक पहुंचा दे ऐ अल्लाह अपनी मुहब्बत को मेरे दिल में, मेरी जान, मेरे माल और ठंडक पानी की मुहब्बत से भी ज़्यादा कर दे।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیۡ اَسْئَلُکَ حُبَّکَ وَحُبَّ مَنْ یُّحِبُّکَ وَالْعَمَلَ الَّذِیْ یُبَلِّغُنِیْ حُبَّکَ اَللّٰهُمَّ اجْعَلْ حُبَّکَ اَحَبَّ اِلَیَّ مِنْ نَّفْسِیْ وَاَهْلِیْ وَمِنَ الْمَآءِ الْبَارِدِ.

(ترمذی ۱۸۷/۲، کنز العمال ۲۰۹/۲، حلیۃ الاولیاء)

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक हुब्बक व हुब्ब मंय्युहिब्बुक वल अमलल्लज़ी युबल्लिगुनी हुब्बक अल्लाहुम्मजअल हुब्बक अहब्ब इलय्य मिन नफ्सी व अहली व मिनल माइल बारिद।(तिर्मिज़ी जि.२ स. १८७, कंजुल उम्माल जि.२ स.०९, हुलियतुल औलिया)

अल्लाह तआला की पनाह मांगना

हज़रत अबु हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है फरमाते हैं कि हुज़ूर अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया "अल्लाह तआला की पनाह मांगो मुसीबत की मशक़्क़त से, बदबख़्ती के लायक होने से, बुरी तक़दीर से और दुश्मनों की

ख़ुशी से। दुआ इस तरह है:

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنْ جُهْدِ الْبَلَآءِ وَدَرَکِ
الشَّقَآءِ وَسُوْٓءِ الْقَضَآءِ وَشَمَاتَةِ الْاَعْدَآءِ.
(مسلم شریف، بخاری شریف ۲/۹۳۹)

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिन जुहदिल बलाइ व दरकिश्शक़ाइ व सूइल क़ज़ाइ व शमाततिल आदाइ।(मुस्लिम शरीफ, बुख़ारी जि.२ स.९३९)

वालिदैन के हुक़ूक़ की अदायेगी के लिए दुआ

अल्लामा ऐनी रहमतुल्लाह अलैहि ने शरह बुख़ारी में एक हदीस नक़ल की है कि जो शख़्स एक मर्तबा यह दुआ पढ़े और उसके बाद यह दुआ करे कि या अल्लाह! उसका सवाब मेरे वालिदैन को पहुंचा दे तो उसने वालिदैन का हक़ अदा कर दिया। दुआ यह है:

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ، رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ
الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ، وَلَهُ الْكِبْرِيَاءُ فِی السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ. وَهُوَالْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ، لِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ
السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ، وَلَهُ الْعَظَمَةُ
فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَالْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ،
هُوَالْمَلِکُ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَرَبُّ الْاَرْضِ وَ رَبُّ

الْعٰلَمِيْنَ وَلَهُ النُّوْرُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ.

(عینی شرح بخاری)

अल हम्दु लिल्लाही रब्बिल आलमीन, रब्बिस्स-मावाति व रब्बिल अर्ज़ि रब्बिल आलमीन, व लहुल किबरियाउ फिस्समावाति वल अर्ज़ि वहुवल अज़ीज़ुल हकीम, लिल्लाहिल हम्दु रब्बिस्समावाति व रब्बिल अर्ज़ि रब्बिल आलमीन, वलहुल अज़मतु फिस्समावाति वल अर्ज़ि व हुवल अज़ीज़ुल हकीमु, हुवल मलिकु रब्बुस्समावाति व रब्बुल अर्ज़ि व रब्बुल आलमीन व लहुन्नूरु फिस्समावाति वल अर्ज़ि व हुवल अज़ीज़ुल हकीम। (अैनी शरह बुख़ारी)

तर्जमा : तमाम तरीफें अल्लाह तआला के लिए हैं जो तमाम जहानों का परवरदिगार है आसमानों और ज़मीन का रब है और तमाम आलमों का रब है उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और ज़मीन में और ग़ालिब है और हिक्मत वाला हे अल्लाह ही के लिए तमाम तारीफें और जो आसमानों और ज़मीन और तमाम जहानों का रब है और उसी के लिए बड़ाई है आसमानों और ज़मीन में और वह ग़ालिब है हिक्मत वाला है वही बादशाह हे आसमानों और ज़मीन का रब है और तमाम जहानों का रब है और उसी का नूर है आसमानों और ज़मीन में और वह

ग़ालिब है हिक्मत वाला है।

चार अज़ीम फायदे

हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स रोज़ाना सौ मर्तबा :

اَاِلٰـهَ اِلَّا الـلّٰـهُ الْـمَـلِـكُ الْـحَـقُّ الْمُبِيْنُ.

ला इलाह इल्लल्लाहुल मलिकुल हक़्क़ुल मुबीन।

तर्जमा: अल्लाह के अलावा कोई माबूद नहीं है बादशाह है हक़ है ज़ाहिर है।

पढ़े तो यह कलिमात उसके लिए फक़्र व फाक़ा से हिफाज़त का ज़रिया और क़ब्र की वहशत व तनहाई में उन्स का बाइस होंगे और उन कलिमात की बरकत से पढ़ने वाला ग़िना (ज़ाहिरी व बातिनी) हासिल कर लेगा और क़यामत के दिन उन कलिमात की बरकत से वह जन्नत के दरवाज़े पर दस्तक देगा।

तशरीह: इस हदीस से मालूम हुआ कि

لَاۤ اِلٰـهَ اِلَّا اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ.

'ला इलाह इल्लल्लाहुल मलिकुल हक़्क़ुल मुबीन' रोज़ाना सौ बार पढ़ने वाले को चार बड़े ,फायदे हासिल होंगे उन में से हर फायदा ऐसा है

जिस का हर शख़्स मुहताज है लिहाज़ा हर शख़्स को रोज़ उसकी तस्बीह पढ़ लेनी चाहिये। वह फ़ायदा यह हैं:

१. फ़क्र व फ़ाक़ा और मुआशी तंगी दूर होना।

२. और क़ब्र की वहशत दूर हो कर राहत व उन्स हासिल कोना।

३. ग़िना ज़ाहिरी व बातिनी नसीब होना।

४. जन्नत के दरवाज़े पर दस्तक देने और जन्नत में दाख़िल होने की सआदत मिलना।

छः नेमतें

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत उसमान ग़नी रज़ि अल्लाहु अन्हु हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुये और अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम! कुरआन की आयत 'लहू मक़ालीदुस्समावाति वल अर्ज़ि' यानी कि आसमान व ज़मीन की कुंजियाँ अल्लाह तआला के क़ब्जे में हैं। से क्या मुराद है ? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया : आसमान व ज़मीन की कुंजियों से यह कलिमात मुराद हैं।

سُبْحَانَ اللّٰهِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ وَلَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ

اَكْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ الْعَلِيِّ الْعَظِيْمِ ط اَلْاَوَّلُ

وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ يُحْيِى وَيُمِيْتُ
وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

सुबहानल्लाही वल हम्दु लिल्लाही वला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु वला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाहिल अलिय्यिल अज़ीम। अल अव्वलु वल आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल बातिनु बियदिहिल ख़ैरु युहयी व युमीतु व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर।

ऐ उसमान ! जो शख़्स यह कलिमा सुबह व शाम दस मर्तबा पढ़ेगा अल्लाह पाक उसको छः नेमतों से नवाज़ेंगे।

१. शैतान और उसके लश्कर से उसकी हिफाज़त की जायेगी।

२. उसको अज्र व सवाब का बड़ा ढेर दिया जायेगा।

३. हूरे अैन से उसका निकाह किया जायेगा।

४. उसके गुनाह माफ कर दिये जायेंगे।

५. वह जन्नत में हज़रत इबराहीम अलैहिस्स लातु वस्लाम के साथ होगा।

६. १२ फरिश्ते उसकी मौत के वक़्त हाज़िर होंगे और उसको जन्नत की बशारत सुनायेंगे और उसको क़ब्र से इज़्ज़त और ऐहतेराम के साथ ले जायेंगे। अगर वह क़यामत के हौलनाक हालात से घबरायेगा

तो फरिश्ते उसको तसल्ली देंगे कि घबराओ नहीं तुम क़यामत की हौलनाकियों से अमन में रहने वालों में से हो। फिर अल्लाह पाक उस से आसान तरीन हिसाब लेगा और जन्नत में ले जाने का हुक्म देंगे। चुनान्चे फरिश्ते उसको मैदाने हश्र से जन्नत की तरफ इस तरह इज़्ज़त व ऐहतेराम से पहुंचायेंगे जैसे दुल्हन को ले जाया जाता है और अल्लाह पाक के हुक्म से फरिश्ते उसको जन्नत में दाख़िल कर देंगे जब कि दूसरे लोग हिसाब व किताब की शिद्दत में मुबतला होंगे। (रूहुल मआनी स. २२,२३)

सारी मख़्लूक़ के बराबर अमल

हज़रत अबू बकर सिद्दक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैं रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास था अचानक एक शख़्स हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आये और सलाम किया। रसूले पाक सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने उनको सलाम का जवाब दिया और आप का चेहरये अनवर खुशी से दमक उठा और आप ने उनको अपने बराबर बिठा लिया फिर जब वह साहब (जिस काम के वास्ते आये थे वह अपना काम कर चुके) तो जाने के लिए उठे और जब कुछ दूर चले गये तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने मुझ से फरमाया ऐ अबू बक्र यह ऐसा शख़्स है कि

रोज़ाना (तमाम रूये) ज़मीन के रहने वालों के बराबर उस (अकेले) के अमल (अल्लाह तआला के यहाँ) पहुंचाये जाते हैं। हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने अर्ज़ किया (या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) यह (यह इतना सवाब उसको रोज़ाना) क्यों मिलता है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया यह जब भी सुबह उठता है तो मुझ पर दस मर्तबा (ऐसा) दुरूद शरीफ पढ़ता है (जो अपने सवाब में) सारी मख़्लूक़ के दुरूदों के बराबर है। मैंने अर्ज़ किया (या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) वह क्या दुरूद है? आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि वह दुरूद यह है:

اَللّٰهُمَّ صَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ عَدَدَ مَنْ صَلّٰى عَلَيْهِ مِنْ خَلْقِكَ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِ نِ النَّبِيِّ كَمَا يَنْبَغِيْ لَنَا اَنْ نُصَلِّيَ عَلَيْهِ وَصَلِّ عَلٰى مُحَمَّدِنِ النَّبِيِّ كَمَا اَمَرْتَنَا اَنْ نُصَلِّيَ عَلَيْهِ. (دار قطنی و ابن ماجہ)

अल्लाहुम्म सल्लि अला मुहम्मदिनिन्नबिय्यि अदद मन सल्ला अलैहि मिन ख़ल्क़िक व सल्लि अला मुहम्मदिनिन्नबिय्यि कमा यंबग़ी लना अन नुसल्लि अलैहि व सल्ली अला मुहम्मदिनिन्नबिय्यि कमा अमर तना अन नुसल्लिय अलैहि।(दार कुतनी व इब्ने माजा)

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो नबी और पैग़म्बर हैं इतनी तादाद में रहमते कामिला नाज़िल फरमा जितनी तादाद में आप की मख़्लूक़ ने उन पर दुरूद भेजा है और हज़रत मुहम्मद मुस्तफा सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो नबी और पैग़म्बर हैं इतनी तादाद में रहमते कामिला नाज़िल फरमां जितनी तादाद में हमारे लिए उन पर दुरूद भेजना मुनासिब है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर जो नबी और पैग़म्बर हैं इतनी तादाद में रहमते कामिला नाज़िल फरमा जितनी कि आप ने हमें उन पर दरूद भेजने का हुक्म दिया है।

बीस लाख नेकियाँ

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने अबी औफा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया जो शख़्स:

اَاِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَاشَرِيْكَ لَهٗ اَحَدًا صَمَدًا لَّمْ يَلِدْ وَلَمْ يُوْلَدْ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ.

ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू अहदन समदल्लम यलिद व सम यूलद व सलम यकुल्लहू कुफुवन अहद।

तर्जमा: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं वह अकेला है उसका कोई शरीक नहीं यक्ता है बेनियाज़ है न उस ने किसी को जना और वह न किसी से जना गया और उसका कोई हमसर नहीं है।

कहे तो अल्लाह तबारक व तआला उसके लिए बीस लाख नेकियाँ लिखेगा। (तरग़ीब व तरहीब)

फायदा : मज़कूरा कलिमा एक बार कहने पर बीस लाख नेकियाँ मिलती हैं अगर हर फर्ज़ नमाज़ के बाद या उस से पहले यह कलिमा कोई शख़्स एक बार कह लिया करे तो रोज़ाना बआसानी एक करोड़ नेकियाँ हासिल हो सकती हैं। आप भी हासिल कर लीजिये कल यह नेकियाँ इंशा अल्लाह तआला काम आयेंगी।

हाथ पकड़ कर जन्नत में दाख़िले का ज़िम्मेदार

हज़रत मुनीद रज़ि अल्लाहु तआला अन्हु एक अफरीक़ी सहाबी हैं यह फरमाते हैं कि मैं ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से सुना कि जो शख़्स सुबह को यह दुआ पढ़े तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मैं हाथ पकड़ कर उसको जन्नत में दाख़िल करने का ज़िम्मेदार हूँ।

رَضِيتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّبِالْإِسْلَامِ دِيْنًا وَّبِمُحَمَّدٍ نَّبِيًّا.

(الدعاء المسنون ص ۲۲۴، مجمع الزوائد ج ۲ ص ۱۱٦)

रज़ीतु बिल्लाही रब्बंव्व बिल इस्लामी दीनंव्व बि मुहम्मदिन नबिय्या। (अद्दुआउल मसनून स. २२४, मजमउज़्ज़वाइद जि. २ स. ११६)

तर्जमा : मैं अल्लाह तआला से राज़ी हूँ रब होने के ऐतेबार से और इस्लाम से दीन होने के ऐतेबार से और मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से नबी होने के ऐतेबार से।

जन्नत में दाख़िला

हज़रत अबू उमामा रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस ने यह दुआ सुबह को तीन मर्तबा पढ़ी और मर गया तो जन्नत में दाख़िल होगा। इसी तरह यह दुआ शाम को पढ़ ले और उसी रात मर जाये तो जन्नत में दाख़िल होगा।

اَللّٰهُمَّ لَكَ الْحَمْدُ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ رَبِّیْ وَاَنَا اَصْبَحْتُ عَلٰی عَهْدِكَ وَوَعْدِكَ مَا اسْتَطَعْتُ اَتُوْبُ اِلَيْكَ مِنْ سَيِّئِ عَمَلِیْ وَأَسْتَغْفِرُكَ لِذُنُوْبِیْ الَّتِیْ لَا يَغْفِرُهَا اِلَّا اَنْتَ.

(مجمع الزوائد جلد ۱۰، ص ۱۱۴، الدعا، جلد ۲ ص ۹۳٦، بسند ضعیف)

अल्लाहुम्म लकल हम्दु ला इलाह इल्ला अन्त रब्बी व अना अस्बहतु अला अहदिक ववअदिक मस्ततअतु अतूबु इलैक मिन सय्यिइ अमली व

अस्तग़्फिरुक लि ज़ुनूबिल्लती ला यग़्फिरुहा इल्ला अन्त। (मजमउज़्ज़वाइद जिल्द १० स. ११४ अद्दुआ, जि. २ स. ९३६, बिसनदिन ज़ईफ)

तर्जमा: ऐ अल्लाह आप के लिए तारीफ है। ऐ मेरे रब आप के सिवा कोई माबूद नहीं और मैंने सुबह किया और आप के अहद और वादे पर जितनी इस्तेताअत हो सकी मैं तौबा करता हूँ अपनी बद अमली से गुनाहों से तौबा करता हूँ जिसे कोई न माफ करेगा सिवाये आप के।

(इन दुआओं के मुतअल्लिक़) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम इस तरह क़सम खा कर फरमाते हैं कि इस तरह दूसरे के लिए नहीं फरमाते। क़सम ख़ुदा जिस बन्दे ने भी उसे तीन मर्तबा कहा और उसी दिन मर गया वह ज़रूर जन्नत में दाख़िल होगा। उसी शाम में तीन मर्तबा कहा और उसी रात मर गया जन्नत में दाख़िल होगा।

ख्याल रहे कि शाम को 'अस्बहतु' की जगह 'अम्सैतु' पढ़े।

जन्नत ख़ुद उसके लिए दुआ करने लगती है

हदीस पाक में है जो शख़्स अल्लाह पाक से सिर्फ तीन मर्तबा जन्नत का सवाल करता है तो

जन्नत खुद कहने लगती हे ऐ अल्लाह उसको मेरे अन्दर दाख़िल फरमा दीजिये और जो मुसलमान जहन्नम से सिर्फ तीन मर्तबा पनाह मांगता है तो जहन्नम खुद कहने लगती है ऐ अल्लाह उसको मुझ से पनाह दे दीजिये। वह दुआ यह है: (कंज़ुल उम्माल जि. २ स. ८७)

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ الْجَنَّةَ وَاَعُوْذُبِکَ مِنَ النَّار

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुकल जन्नत व अऊज़ुबिक मिनन्नार।

अल्लाह पाक जहन्नम को उस पर हराम कर देता है

जिस शख़्स ने यह पाकीज़ा और मुख़्तसर कलिमा (सच्चे दिल से) पढ़ लिया तो अल्लाह पाक से अपने ऊपर लाज़िम कर लिया कि जहन्नम की आग को उस पर हराम कर देंगे। वह मुख़्तसर और पाकीज़ा कलिमा यह है:

لَااِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ الْحَلِيْمُ الْكَرِيْمُ سُبْحَانَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ.

ला इलाह इल्लल्लाहुल हलीमुल करीमु सुब-हानल्लाही रब्बिल अर्शिल अज़ीमी वल हम्दु लिल्लाही रब्बिल आलमीन।

तर्जमा: अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह बड़े इल्म वाले और बड़े करीम हैं। अल्लाह पाक हर ऐब से पाक है। अर्शे आज़म के मालिक हैं। सब तारीफें अल्लाह पाक के लिए हैं जो तमाम जहानों के रब है। (कंजुल ईमान जि. २ स. ९७, देलमी)

दोज़ख से बरी

हज़रत अबू दरदा रज़ि अल्लाहु अन्हु नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से रिवायत करते हैं आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स एक मर्तबा 'ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बर।

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ.

अल्लाह के सिवा कोइ माबूद नहीं है और अल्लाह सब से बड़ा है।

कहता है तो अल्लाह तआला उस (के जिस्म का) एक चौथाई हिस्सा दोज़ख़ से बरी कर देते हैं अगर दो मर्तबा कहे तो उसके जिस्म का आधा हिस्सा जहन्नम से आज़ाद कर देता है और अगर चार मर्तबा यह कलिमा कहे तो अल्लाह पाक उसको मुकम्मल तौर पर दोज़ख़ से बरी कर देता है।(मजमउज़्ज़वाइद)

फायदा : रोज़ाना सुबह व शाम 'ला इलाह

इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु' चार चार मर्तबा कहना कुछ भी मुश्किल नहीं।

तमाम गुनाहों की बख़्शिश

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया रूये ज़मीन पर जो शख़्स भी एक मर्तबा

لَا اِلٰـهَ اِلَّااللّٰهُ وَاللّٰهُ اَكْبَرُ وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ.

'ला इलाह इल्लल्लाहु वल्लाहु अक्बरु व ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह।

तर्जमा : अल्लाह तआला के अलावा कोई माबूद नहीं है गुनाहों से बचना और नेकी की कुव्वत पाना सब अल्लाह ही की तरफ से है। कहे तो उसके सारे गुनाह मिटा दिये जायेंगे अगरचे वह समुन्द्र के झाग के बराबर हों। (अत्तरग़ीब)

फायदा : हर नमाज़ के बाद एक एक मर्तबा मज़कूरा कलिमात कह कर तमाम गुनाहों की माफी का सामान करना कितना आसान हैं इतने आसान अमल को तो हम ज़रूर कर लें।

सारे गुनाह माफ

जब मुअज़्ज़िन, अज़ान देते वक़्त

اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

'अशहदु अल्लाइला इल्लल्लाहु' पर पहुंचे तो एक मर्तबा पढ़ ले

رَضِيْتُ بِاللّٰهِ رَبًّا وَّ بِالْاِسْلَامِ دِيْنًا وَبِمُحَمَّدٍ صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ رَسُوْلًا وَّ نَبِيًّا ط

'रज़ीतु बिल्लाही रब्बंव्व बिल इस्लामी दीनन व बिमुहम्मदिन सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम रसूलंव्व नबिय्या। तो अल्लाह पाक पढ़ने वाले के सारे गुनाह माफ फरमा देगा। (मुस्लिम जि. स.१६७, तिर्मिज़ी जि. १ स. ५१, अबू दाऊद जि. १ स. ७८)

बीस हज़ार नेकियाँ

مَرْحَباً بِالْقَآئِلِيْنَ عَدْلاً مَرْحَباً بِالصَّلٰوةِ وَاَهْلًا

'मरहबम बिलक़ाइलीन अदलम मरहबम बिस्सलाती व अहला।

ख़तीबे बग़दादी ने रिवायत किया है कि हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख़्स मुअज़्ज़िन को अज़ान कहते हुये सुने उस वक़्त अगर यह दुआ पढ़े तो अल्लाह पाक उसके लिए:

१. बीस हज़ार नेकियाँ लिख देता है।

२. और उसके बीस हज़ार गुनाहों को मिटा देता है।

३. और बीस हज़ार दर्जात को बलंद कर देते हैं। (जामिउल अहादीस लिस्सियूती स. २२१)

हर नज़र पर एक मक़बूल हज

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलु करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो नेक औलाद वालिदैन (या उन में से किसी एक) पर शफक़त व मुहब्बत से नज़र डाले तो अल्लाह पाक उसको हर नज़र के बदले एक मक़बूल हज का सवाब अता फरमाते हैं (सहाबा रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन ने) अर्ज़ किया (ऐ अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) अगर कोई शख़्स रोज़ाना सौ मर्तबा उन पर नज़र डाले (जब भी हर नज़र पर उसको यह सवाबे अज़ीम मिलेगा?) आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया: हाँ (आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने यह भी फरमाया कि) अल्लाह पाक की ज़ात हमारी वहम व गुमान से बाला है और निहायत अज़ीम है और बहुत पाकीज़ा है (वह हर नक़्ज़ व अैब से पाक है लिहाज़ा हर नज़र पर यह सवाबे अजीम देना उसके लिए कुछ मुश्किल नहीं।)

(मिश्कात शरीफ)

फायदा : अगर आप के माँ बाप दोनों या उन में से कोई जिन्दा हो तो आप बड़े ख़ुश नसीब हैं।

दिल व जान से उन की ख़िदमत करें, उनकी दिली दुआयें हासिल कर लें और उन पर शफक़त व ऐहतेराम की हर नज़र पर एक मक़बूल हज का सवाब हासिल करें। इस तरह बआसानी सैंकड़ों हज का सवाब हासिल करने की आप सआदत हासिल कर सकते हैं हक़ तआला तौफीक़ अता फरमाये। आमीन!

हज़ कामिल का सवाब

हज़रत उमामा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने इर्शाद फरमाया जो शख़्स ख़ैर की बात सीखे या सिखाने के लिए मस्जिद में जाये तो उसका सवाब उस हाजी के सवाब की तरह है जिस का हज कामिल हो। (तबरानी, मजमउज़्ज़वाइद बहवाला मुन्तख़ब अहादीस स. ३०३)

दारैन की नेमतें मिलना

एक मर्तबा ज़ेल की आयत पढ़े, जब सहाबये किराम रज़ि अल्लाहु अन्हुम ने उसको पढ़ा अल्लाह पाक ने उनको दोनों जहान की नेमतों से नवाज़ा।

(तिर्मिज़ी)

حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ۔

हस्बुनल्लाहु व नेअमल वकील।

तर्जमा: हम को अल्लाह पाक काफी है और

वह बेहतरीन कारसाज़ है।

बेशुमार अज्र

जो शख़्स सुबह व शाम सौ मर्तबा यह कलिमा कहे वह ऐसा है जैसे उसने सौ हज किये

सुबहानल्लाह-سُبْحَانَ اللّٰہِ

तर्जमा: अल्लाह तआला की ज़ात पाक है।

जो शख्स सुबह व शाम सौ मर्तबा यह कलिमा कहे वह ऐसा है जैसे उस ने सौ मर्तबा घोड़ों पर अल्लाह तआला की राह में मुजाहिदीन को सवार किया यानी जिहाद के लिए सौ घोड़े दिये फरमाया उस ने सौ मर्तबा जिहाद किया।

'अल हम्दु लिल्लाह'. اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ

तर्जमा: तमाम तारीफें अल्लाह पाक के लिए है।

जो शख़्स सुबह व शाम सौ मर्तबा यह कलिमा कहे तो वह ऐसा है जैसे उसने हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम अलैहिस्सलाम की औलाद में से सौ गुलाम आज़ाद किये।

'ला इलाह इल्लल्लाहु' لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ

तर्जमा : अल्लाह पाक के सिवा कोई माबूद नहीं।

जो शख़्स सौ मर्तबा यह कलिमा कहे उस से उस रोज़ कोई शख़्स अफज़ल न होगा सिवाये उस शख़्स के जिस ने यह कलिमात इतनी ही बार या उस से ज़्यादा कहे हों।

'अल्लाहु अक्बर' اَللّٰهُ اَكْبَرُ
तर्जमाः अल्लाह तआला सब से बड़े हैं।
(तिर्मिज़ी, मिश्कात)

अल्लाह तआला उस के हक़ में काफी हैं

हज़रत बुरीदा रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिस शख़्स ने (मुनदर्जा ज़ेल) दस कलिमात को नमाज़ फज्र के वक़्त (पहले या बाद) कहा तो वह शख़्स उन कलिमात को पढ़ते हुये ही अल्लाह पाक को उसके हक़ में काफी होते और कलिमात पढ़ने पर अज्र व सवाब देते हुये पायेगा, पहले पाँच कलिमात दुनिया से मुतअल्लिक़ हैं और बाक़ी पाँच आख़िरत से मुतअल्लिक़ हैं।

दुनिया से मुतअल्लिक़

(١) حَسْبِيَ اللّٰهُ لِدِيْنِيْ۔

१. हस्बियल्लाहु लिदीनी।

(٢) حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَا اَهَمَّنِيْ۔

२. हस्बियल्लाहु लिमा अहम्मनी।

(٣) حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَنْ بَغٰى عَلَيَّ۔

३. हस्बियल्लाहु लिमम बग़ा अलय्या।

(٤) حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَنْ حَسَدَنِيْ۔

४. हस्बियल्लाहु लिमन हसदनी।

(٥) حَسْبِيَ اللّٰهُ لِمَنْ كَادَنِيْ بِسُوْءٍ۔

५. हस्बियल्लाहु लिमन कादनी बिसूइन।

१. काफी है मुझ को अल्लाह मेरे दीन के लिए।

२. काफी है मुझ को अल्लाह मेरे तमाम फिक्रों के लिए।

३. काफी है मुझ को अल्लाह मुझ पर ज़्यादती करने वाले शख़्स के लिए।

४. काफी है मुझ को अल्लाह उस शख़्स के लिए जो मुझ पर हसद करे।

५. काफी है मुझ को अल्लाह उस शख़्स के लिए जो धोका और फरेब दे मुझे बुराई के साथ।

आख़िरत से मुतअल्लिक़

(١) حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَوْتِ.

१. हस्बियल्लाहु इन्दल मौत।

(٢) حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمَسْأَلَةِ فِي الْقَبْرِ۔

२. हस्बियल्लाहु इन्दल मस्अलति फिल क़ब्र।

(٣) حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الْمِيْزَانِ۔

३. हस्बियल्लाहु इन्दल मीज़ान।

(٤) حَسْبِيَ اللّٰهُ عِنْدَ الصِّرَاطِ.

४. हस्बियल्लाहु इन्दस्सिरात।

(٥) حَسْبِىَ اللّٰهُ لَااِلٰهَ اِلَّاهُوَعَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ اُنِيْبُ.

५. हस्बियल्लाहु ला इलाह इल्ला हुव अलैहि तवक्कलतु व इलैहि उनीब।

१. काफी है अल्लाह मुझ को मौत के वक़्त।

२. काफी है मुझ को अल्लाह क़ब्र में सवाल के वक़्त।

३. काफी है मुझ को अल्लाह मीज़ान के पास।

४. काफी है मुझ को अल्लाह पुल सिरात के पास।

५. काफी है मुझ को अल्लाह उसके सिवा कोई माबूद नहीं मैंने उसी पर तवक्कुल किया और मैं उसी की तरफ रुजू करता हूँ। (दुर्रे मंसूर)

नूर का समुन्द्र, नूर का पहाड़, नूरानी फरिश्ते उनके हाथ में नूर की थैलियाँ

हदीस पाक में है बेशक अल्लाह का एक ख़ास समुन्द्र है जो नूर का है। उस के आस पास कुछ फरिश्ते हैं जो नूर के पहाड़ पर इस हाल में हैं कि उन के हाथ में नूर की थैलियाँ हैं।

سُبْحَانَ ذِى الْمُلْكِ وَالْمَلَكُوْتِ سُبْحَانَ ذِى الْعِزَّةِ وَالْجَبَرُوْتِ سُبْحَانَ الْحَيِّ الَّذِىْ لَا يَمُوْتُ سُبُّوْحٌ قُدُّوْسٌ رَبُّ الْمَلٰئِكَةِ وَالرُّوْحِ.

सुबहान ज़िल मुल्की वल मलकूती सुबहान ज़िल इज़्ज़ती वल जबरुती सुबहानल हय्यिल्लज़ी ला यमूतु सुब्बूहुन कुद्दूसुन रब्बुल मलाइकति वर्रूह।

यह ऐसा पाकीज़ा कलिमा है कि जो शख़्स उसको दिन में एक मर्तबा या महीना में एक मर्तबा या साल में एक मर्तबा या अपनी उम्र में एक मर्तबा भी पढ़ लेगा तो अल्लाह पाक उसके अगले भी गुनाह माफ फरमायेंगे और पिछले भी गुनाह माफ फरमायेंगे उसके गुनाह समुन्द्र के झाग के बराबर हों चाहे उसके गुनाह रेत के ढेर के बराबर हों चाहे उस ने मैदाने जिहाद से भागने वाला गुनाह किया हो। (दलमी अन अनस जि. २ स. ९७)

सूरये इनाम की इब्तिदाई तीन आयतों की फज़ीलत

जो शख़्स सूरह इनाम की (मुनदर्जा ज़ेल) तीन आयतें

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ط ثُمَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ یَعْدِلُوْنَ ۝ هُوَالَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِیْنٍ ثُمَّ قَضٰۤی اَجَلاً ط وَاَجَلٌ مُّسَمًّی عِنْدَهٗ ثُمَّ اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝ وَهُوَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَفِی الْاَرْضِ ط یَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَجَهْرَكُمْ وَیَعْلَمُ مَاتَكْسِبُوْنَ .

तक पढ़ेगा तो उस के लिए चालिस फरिश्ते मुक़र्रर किये जायेंगे वह चालिस फरिश्ते क़यामत तक इबादत करेंगे सारा सवाब पढ़ने वाले के आमाल में लिखा जायेगा और एक फरिश्ता आसमान से लोहे का गुर्ज़ ले कर नाज़िल होता है जब पढ़ने वाले के दिल में शैतान वसवसे डालता हे तो वह फरिश्ता उस गुर्ज़ से उसकी ख़बर लेता है। सत्तर परदे बीच में हायल हो जाते हैं। क़यामत के दिन अल्लाह रब्बुल आलमीन फरमायेगा तू मेरे ज़ेरे साया चल जन्नत के फल खा, हौज़े कौसर का पानी पी, सलसबील की नहर में नहा तू मेरा बन्दा मैं तेरा रब हूँ। (तफ्सीर दुर्रे मंसूर जि. ३ स. ३४५,३४६, कमालैन शरीफ शरह जलालैन शरीफ)

कुल हुवल्लाहु अहद की बरकत

हज़रत अब्दुल्लाह इब्ने शख़ीर रज़ि अल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जो शख़्स बीमारी की हालत में 'कुल हुवल्लाहु अहद' (पूरी सूरत) पढ़ता रहेगा और उसी बीमारी में उसका इंतेक़ाल हो जायेगा तो वह फितनये क़ब्र से महफूज़ रहेगा और क़यामत के दिन फरिश्ते उसको अपने हथेलियों पर रख कर पुल सिरात से गुज़ार देंगे और वह जन्नत में पहुंच जायेगा। (हुलिया अबू नईम)

सूरह यासीन

हज़रत अता बिन अबी रुबाह रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मुझे हुज़ूर सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद पहुंचा है कि जो शख़्स यासीन को शुरू दिन में पढ़े, उसकी तमाम दिन की हवाइज पूरी हो जायें।

एक रिवायत में है आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि मेरा दिल चाहता है कि दो सूरतें हर मोमिन के दिल में हों सूरये यासीन और सूरये मुल्क।

दूसरी हदीस में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया है कि हर चीज़ का दिल होता है और कुरआन मजीद का दिल सूरह यासीन है। जिस ने एक बार सूरह यासीन पढ़ी उसे दो बार कुरआन मजीद पढ़ने का सवाब अता होगा।

(तिर्मिज़ी, दार्मी जि. २ स. ४५७)

सूरह वाक़्या

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को यह इर्शाद फरमाते हुये सुना है कि जिस शख़्स ने हर रात सूरह वाक़्या पढ़ी उस पर फक़्र नहीं आयेगा।

और इब्ने मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु अपनी औलाद को हुक्म फरमाया करते थे कि हर शब में उस को पढ़ा करें। (बेहक़ी, मिश्कात स.१८९)

जादू से हिफाज़त

اَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ الَّذِىْ لَيْسَ بِشَىْءٌ اَعْظَمَ مِنْهُ وَبِكَلِمَاتِ اللّٰهِ التَّآمَّاتِ الَّتِىْ لَا يُجَاوِزُ هُنَّ بَرٌّ وَّلَافَاجِرٌ وَّ بِاَسْمَآءِ اللّٰهِ الْحُسْنٰى كُلِّهَا مَا عَلِمْتُ مِنْهَا وَمَا لَمْ اَعْلَمْ مِنْ شَرِّ مَاخَلَقَ وَبَرَءَ وَذَرَءَ ط

अऊज़ु बिल्लाहिल अज़ीमिल्लज़ी लैस बिशैइन आज़म मिन्हु व बिकलिमातिल्लाहित्ताम्मातिल लती ला युजाविजु हुन्न बर्रुव्व ला फाजिरुव्व बिअस्माइल्लाहिल लाहिल हुस्ना कुल्लिहा मा अलिमतु मिन्हा वमा लम आलम मिन शर्रि मा ख़लक़ व बरअवज़रअ।

हज़रत कअब अहबार रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि मैं इन कलिमात को अगर न पढ़ता तो यहूद अपने जादू के ज़ोर से मुझे गधा बना देते। उन कलिमात को सुबह व शाम पढ़ कर बेफिक्र हो जाता हूँ कि अब इंशा अल्लाह उनका जादू मुझ पर असर नहीं करेगा। (मारिफुल जि.१ स.२७६, मुअत्ता इमाम मालिक स. २७७)

सहर से हिफाज़त

हज़रत शाह अब्दुल अज़ीज़ रहमतुल्लाह अलैह ने आयाते सहर को दफ्ये सहर के सिलसिले में निहायत मुजर्रब और नफा बख़्श बयान किया है।

فَلَمَّآ اَلْقَوْا قَالَ مُوسٰى مَاجِئْتُمْ بِهِ السِّحْرُ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ○ وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمَاتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ○ وَاُلْقِىَ السَّحَرَةُ سَاجِدِيْنَ ○ قَالُوْآ اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعَالَمِيْنَ ○ رَبِّ مُوسٰى وَهَارُوْنَ ○ فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَاكَانُوا يَعْمَلُوْنَ ○ فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صَاغِرِيْنَ ○ اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سَاحِرٍ وَلَا يُفْلِحُ السَّاحِرُ حَيْثُ اَتٰى ○ (مجرباتِ عزیزی۔۱۹)

नज़र की झाड़

आमिर बिन रबीआ की रिवायत है कि (एक शख़्स को नज़र लग गई थी तो) आप ने उनके सीने पर हाथ मारा और साथ में दुआ पढ़ी:

بِسْمِ اللّٰهِ اَللّٰهُمَّ اَذْهِبْ حَرَّهَا وَ بَرْدَهَا وَوَصَبَهَا

'बिस्मिल्लाही अल्लाहु अज़हिब हर्रहा व बर्दहा व वसबहा' फिर आप ने फरमाया अल्लाह के हुक्म से खड़ा हो जाओ।

तर्जमा: अल्लाह के नाम से ऐ अल्लाह उसकी गर्मी उसकी ठंडक और तकलीफ दूर हो जाये। (अमलुल यवम निसई स. ५६४, स. ३६४)

जिन्नात से हिफाज़त

(वज़ीफये जिबरईल अलैहिस्सलाम)

हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि लैलतुल जिन (जिन्नात को जिस रात में आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने दावत दी थी) में एक जिन आग का शोला ले कर आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास आया। (आप को जलाना चाहा) तो हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) मैं ऐसे कलिमात न सिखा दूँ जिन्हें आप पढ़ेंगे तो उसकी आग बुझ जायेगी और वह मुंह के बल गिरेगा। वह यह हैं:

اَعُوْذُ بِوَجْهِ اللّٰهِ الْكَرِيْمِ وَكَلِمَاتِهِ التَّآمَّةِ الَّتِىْ لَا يُجَاوِزُهُنَّ بَرٌّ وَّلَا فَاجِرٌ مِّنْ شَرِّ مَايَنْزِلُ مِنَ السَّمَاءِ وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا وَمِنْ شَرِّ مَاذَرَءَ فِى الْاَرْضِ وَمَا تَخْرُجُ مِنْهَا وَمِنْ شَرِّ فِتْنَةِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمِنْ شَرِّ طَوَارِقِ اللَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِلَّا طَارِقًا يَّطْرُقُ بِخَيْرٍ يَارَحْمٰنُ.

(تفسیر ابن کثیر ج۴ ص۱۴۸، مجمع الزوائد ج۱۰ ص۱۴۳)

अऊज़ु बिवज्हिल करीमी व कलिमातिहित्ताम्मति ललती ला युजाविज़ुहुन्न बर्रुव्वला फाजिरुम मिन शर्रि मा यनज़िलु मिनस्समाई वमा यारुजु फीहा व मिन शर्रि मा ज़रअ फिल अर्ज़ि वमा तख़्रुजु मिन्हा व मिन शर्रि फित्नतल लैलीं वन्नहारी व मिन शर्रि तवारिक़िल्लैल वन्नहारि इल्ला तारिक़ंय्यतरुकु बिख़ैरिन या रहमान। (तफ्सीर इब्ने कसीर जि. २ स.१४८, मजमउज़्ज़वाइद जि. १० स. १४३)

सारे दिन शैतान के शर से हिफाज़त

हज़रत अली रज़ि अल्लाहु अन्हु ने फरमाया जो कोई सुबह की नमाज़ के बाद दस मर्तबा 'कुल हुवल्लाहु अहद' पढ़े वह सारा दिन गुनाहों से महफूज़ रहेगा चाहे शैतान कितना ही ज़ोर लगाये।

قُلْ هُوَاللّٰهُ اَحَدٌ ٥ اَللّٰهُ الصَّمَدُ ٥ لَمْ يَلِدْ وَلَمْ يُولَدْ ٥ وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُواً اَحَدٌ٥

(درمنثور ۶/۴۱۴، کنز العمال ۲/۱۵۱، حدیث ۳۵۴۰، تاریخ جنات وشیاطین)

जिस्म में दर्द वग़ैरह हो तो क्या पढ़े

हज़रत उसमान बिन अबिल आस रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से उन्होंने जिस्म में किसी दर्द व तकलीफ की शिकायत की तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया कि जिस हिस्से में दर्द हो वहाँ हाथ रखो

और यह पढ़ो।

بِسْمِ اللّٰهِ تین مرتبہ، اور سات مرتبہ اَعُوْذُ بِعَزَّةِ اللّٰهِ وَقُدْرَتِهٖ مِنْ شَرِّمَا اَجِدُ وَاُحَاذِرُ.

'बिस्मिल्लही' तीन मर्तबा, और सात मर्तबा 'अऊज़ु बिइज़्ज़तिल्लाही व कुदरतिही मिन शर्रिमा अजिदु व उहाज़िर'।

तर्जमा : कुदरत व इज़्ज़त ख़ुदावन्दी के वास्ते से उस बुराई से पनाह मांगता हूँ, जिसकी तक्लीफ और जिस से डर महसूस करता हूँ। (मुस्लिम जि. २ स. २२४, अज़कार स. ११४)

बुख़ार की दुआ

हज़रत इब्ने अब्बास रज़ि अल्लाहु अन्हुमा से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने तमाम दर्दों में और बुख़ार के मुतअल्लिक़ फरमाया कि यह पढ़े:

بِسْمِ اللّٰهِ الْكَبِيْرِ، نَعُوْذُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ مِنْ شَرِّ عِرْقٍ نَعَّارٍ وَمِنْ شَرِّ حَرِّ النَّارِ.

बिस्मिल्लाहिल कबीर, नअूज़ु बिल्लाहिल अज़ीमी मिन शर्रि इर्क़िन नअ्आरिव्व मिन शर्रि हर्रिन्नार।

तर्जमा: बुज़ुर्ग अल्लाह के नाम से, अज़मत वाले अल्लाह की पनाह मांगता हैं, हम जोश मारने

वाली बुराई से और आग दोज़ख़ की बुराई से। (इब्ने सिनी स. ५१५, इब्ने माजा स. ३५६६, हाकिम स. ४१४ बिसनदिन सहीह।)

राफे बिन ख़दीज की रिवायत है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया बुख़ार जहन्नम के असर से है उसे पानी से ठंडा करो और यह पढ़ो:

اِكْشِفِ الْبَاسَ رَبَّ النَّاسِ اِلٰهَ النَّاسِ (ابن سنی، صفحہ ۵۱۸)

'इक्शिफिल बास रब्बन्नासि इलाहन्नास' (इब्ने सिनी स. ५१८)

आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा के पास तशरीफ लाये तो देखा वह बीमार हैं और बुख़ार को बुरा भला कह रही हैं। आप ने फरमाया उसे बुरा न कहो यह तो अल्लाह के हुक्म के ताबे है। चाहो तो मैं तुम को एक दुआ बता दूँ तुम पढ़ोगी तो अल्लाह पाक बुख़ार दूर कर देगा।

اَللّٰهُمَّ ارْحَمْ جِلْدِیْ الدَّقِیْقَ، وَعَظْمِیْ الرَّقِیْقَ مِنْ شِدَّةِ الْحَرِیْقِ یَا اُمَّ مِلْدَمٍ اِنْ كُنْتِ آمَنْتِ بِاللّٰهِ الْعَظِیْمِ فَلَا تَصَدَّعِیْ الرَّاسَ وَلَا تُنْتِنِیْ الْفَمَ وَلَا تَاْكُلِیْ اللَّحْمَ وَلَا تَشْرَبِیْ الدَّمَ وَتَحَوَّلِیْ عَنِّیْ اِلٰی مَنْ یَّجْعَلُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا آخَرَ.

(سبل الهدیٰ، جلد ا، صفحہ ۲۲۳)

अल्लाहुम्मरहम जिल्दिद्दक़ीक़, व अज़मिर्रक़ीक़ मिन शिद्दतिल हरीकी या उम्म मिलदमी इन कुन्ती आमन्ती बिल्लाहिल अज़ीमी फला तसद्दअिर्रास वला तुनतिनिल फम वला ताकुलिल लहम वला तशरबिद्दम व तहव्विली अन्नी इला मंय्यजअल मअल्लाही इलाहा आख़र। (सुबुलुल हुदा जि. १ स. २२३)

उन्होंने कहा कि बता दीजिये चुनान्चे आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने बता दिया। (ख़साइले कुबरा जि. २ स. १७५, बेहक़ी)

आँख आने की दुआ

हज़रत अनस रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम जब किसी की आँख आ जाती आप की या आप के अहल असहाब में से किसी की, तो यह दुआ पढ़ते:

اَللّٰهُمَّ مَتِّعْنِیْ بِبَصَرِیْ وَاجْعَلْهُ الْوَارِثَ مِنِّیْ وَاَرِنِیْ فِیْ الْعَدُوِّ ثَاْرِیْ وَانْصُرْنِیْ عَلٰی مَنْ ظَلَمَنِیْ.

अल्लाहुम्म मत्तिनी बिबसरी वजअलहुल वारिस मिन्नी व अरिनी फिल अदुव्वि सारी वन्सुरनी अला मन ज़लमनी।

तर्जमा : ऐ अल्लाह मेरी निगाह से मुझे फायदा पहुंचाइये और उस से हम को फायदा पहुंचाइये, दुश्मन की गिरिफ्त दिखाइये, जिस ने मुझ पर जुल्म

किया उसके मामला में मेरी मदद कीजिये। (नज़लल अबरार स. २६७)

ज़ख़्म फुनसी वग़ैरह की दुआ

हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जब किसी आदमी के हाथ में या और किसी मुक़ाम पर ज़ख़्म फुनसी फोड़ा हो तो उंगली रख कर यह दुआ (झाड़) करे।

بِسْمِ اللّٰهِ تُرْبَةُ اَرْضِنَا بِرِيْقَةِ بَعْضِنَا يُشْفٰى سَقِيْمُنَا بِــاِذْنِ رَبِّــنَــا.

बिस्मिल्लाही तुबतु अरज़िना बिरिक़ती बाज़िना युशफा सक़ीमुना बिइज़्नि रब्बिना।

तर्जमा : अल्लाह के नाम से हमारी ज़मीन की मिट्टी बाज़ के थूक के साथ हमारे मरीज़ को ख़ुदा की इजाज़त से शिफा दी जाये। (बुख़ारी स. ८५५, मुस्लिम स. २ स. २२३, इब्ने सिनी स. ५२६)

हज़रत सुफियान जो राविये हदीस हैं वह इस तरह झाड़ते थे कि अंगुश्त शहादत ज़मीन पर रख कर उठाते थे फिर यह दुआ पढ़ते थे।

अल्लामा नववी ने शरह मुस्लिम में उसकी शरह करते हुये कहा कि लुआबे दहन उंगली में लगा कर मिट्टी लगाये फिर जहाँ ज़ख़्म हो वहाँ उंगली रख

कर यह दुआ पढ़े।(शरह मुस्लिम स. २३२, नज़लल अबरार स. २७२)

साँप बिच्छू का झाड़

हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ैद रज़ि अल्लाहु अन्हु ने ज़िक्र किया है कि हम लोगों ने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम पर डंक (बिच्छू साँप वग़ैरह) की एक झाड़ को पेश किया तो आप ने इजाज़त दी और फरमाया यह एक अहद है(जो सुलेमान अलैहिस्सलाम) ने डंक मारने वाले जानवरों से लिया है कि वह ज़रर न पहुंचायें और वह यह है:

بِسْمِ اللّٰهِ شَجَّةٌ قَرْنَةٌ مِلْحَةٌ بَحْرٌ قَفَطَا.

(نزل الابرار صفحہ ۲۶۹، حصن، صفحہ ۳۷۲، ابن سنی صفحہ ۵۲۳)

बिस्मिल्लाही शज्जतुन क़रनतुन मिलहतुन बहरुन क़फता। (नज़लल अबारर स. २६९ हिस्न स. ३७२, इब्नें सिनी स. ५२३)

रावी ने बयान किया कि अलक़मा के साथ एक आदमी था उसको (बिच्छू ने या और किसी ने) डस लिया चुनान्चे यह पढ़ा गया तो बिल्कुल सही सालिम हो गया। (नज़लल अबरार स. २६९)

अल्लामा क़हहिस्तानी बयान करते हैं कि हम ने अपने मशाइख़ से सुना है कि उस झाड़ के साथ 'सलामु अला नूहिन फिल आलमीन' भी मिला लिया करे क्योंकि तूफाने नूह के वक़्त साँप और बिच्छू वग़ैरह ने हज़रत नूह अलैहिस्सलाम से यह अर्ज़

किया था कि आप हमें कश्ती पर सवार कर लें। हम आप से यह अहद करते हैं कि जो आप का नाम लेगा और 'सलामुन अला नूहिन फिल आलमीन' पढ़ेगा उसको हम नुक़्सान न पहुंचायेंगे। (क़ौले मुतीन शरहे हिस्न स. ३७३)

हज़रत अली कर्रमल्लाहु वजह से मनकूल है कि नबीये करीम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को बिच्छू ने डस लिया तो आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने पानी और नमक मंगवाया और हाथ फेरते हुये (जहाँ काटा था) पढ़ने लगे।

'कुल या अय्युहल काफिरून, कुल अऊज़ु बिरब्बिल फलक़, और कुल अऊज़ु बिरब्बिन्नास।

(इतक़ान जि. २ स. २११)

तंगदस्ती का इलाज इस्तग़फार की कसरत

हज़रत अबू हुरैरह रज़ि अल्लाहु अन्हु से मरवी है कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जिसे ख़ुदाये पाक नेमत से नवाज़े वह 'अल हम्दु लिल्लाह' कसरत से पढ़ा करे और जिसे रंज व ग़म से ज़्यादा साबक़ पढ़े वह 'इस्तिग़फार' पढ़ा करे और जिसे रिज़्क़ में तंगी हो वह 'ला हौल वला कुव्वत इल्ला बिल्लाह' ख़ूब कसरत से पढ़ा करे।

(अद्दुआ स. २१३, अत्तरग़ीब जि. २ स. ४६८)

वुसअते रिज़्क़ की चंद अहम मसनून दुआयें

١. اَللّٰهُمَّ ارْزُقْنَا مِنْ فَضْلِكَ وَلَا تَحْرِمْنَا رِزْقَكَ وَبَارِكْ لَنَا فِيْمَا رَزَقْتَنَا وَاجْعَلْ غِنَاءَ نَا فِيْ اَنْفُسِنَا وَاجْعَلْ رَغْبَتَنَا فِيْمَا عِنْدَكَ. (کنز العمال جلد ۲، صفحہ ۲۱۰)

अल्लाहुम्मरजुक़्ना मिन फज़्लिक वला तहरिम ना रिज़्क़क व बारिक लना फीमा रज़क़तना वजअल ग़िनाअना फी अनफुसिना वजअल रग़्बतना फीमा इन्दक। (कंज़ुल उम्माल जि. २ स. २१०)

तर्जमा : ऐ अल्लाह हमें अपने फज़्ल से रिज़्क़ अता फरमा और हमें अपने रिज़्क़ से महरूम न फरमा और जो रिज़्क़ हमें नवाज़ें उस में बरकत अता फरमा और हमारे दिल को ग़िना अता फरमा और जो तेरे पास हे हमें उस की रग़बत अता फरमा।

اَللّٰهُمَّ ابْسُطْ عَلَيْنَا مِنْ بَرَكَاتِكَ وَرَحْمَتِكَ وَفَضْلِكَ وَرِزْقِكَ. (سبل الہدیٰ جلد ۴ صفحہ ۲۲۷ عن رفاعہ ابن رافع، حاکم جلد ۱ صفحہ ۵۰۷)

अल्लाहुम्मबसुत अलैना मिन बरकातिक व रहमतिक व फज़्लिक व रिज़्क़िक। (सुबुस्सबील जि. ४ स. २२७ अन रफाअ इब्ने राफिअ, हाकिम जि. १ स. ५०७)

तर्जमा : ऐ अल्लाह हम पर अपनी बरकतों,

रहमतों और अपने फज़्ल और अपने रिज़्क को ख़ूब वसी फरमा दे।

ग़ज़वये उहद के मौके पर जबकि अहले ईमान को हर तरफ से परेशानियों का समाना करना पड़ा तो उस मौके पर जो दुआ मांगी थी उसका यह टुकड़ा है।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ ضَعِیْفٌ فَقَوِّنِیْ وَاِنِّیْ ذَلِیْلٌ فَاَعِزَّنِیْ وَاِنِّیْ فَقِیْرٌ فَاَغْنِنِیْ. (حاکم مجمع الزوائد جلد۱۰، صفحہ۱۷۹، عن بریدہ وابن مسعود)

अल्लाहुम्म इन्नी ज़ईफुन फकुव्विनी व इन्नी ज़लीलुन फअइज़्ज़नी व इन्नी फकीरुन फअग़निनी। (हाकिम मजमउज़्ज़वाइद जि. १० स. १७९, अन बुरीदा व इब्ने मसऊद)

तर्जमा : ऐ अल्लाह ! मैं कमज़ोर हूँ मुझे कुव्वत अता फरमा मैं ज़लील हूँ इज़्ज़त अता फरमा में तंगदस्त हूँ ग़िना अता फरमा।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْئَلُکَ غِنَائِیْ وَغِنَامَوْلَایَ.

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलुक ग़िनाई व ग़िना मौलाया। (मजमउज़्ज़वाइद जि.१० स. १७९, अन अबी सरमा, कंज़ुल उम्माल स. २१३)

तर्जमा: ऐ अल्लाह! अपनी ग़िना और अपने आल औलाद की ग़िना का आप से सवाल करता हूँ।

اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَعُوْذُبِکَ مِنَ الْفَقْرِ وَالْقِلَّةِ وَ الذِّلَّةِ

وَاَعُوْذُبِکَ اَنْ اَظْلِمَ اَوْ اُظْلَمَ. (ابوداود عن ابی ہریرۃ، صفحہ ۲۱۶)

अल्लाहुम्म इन्नी अऊज़ुबिक मिनल फक़री वल किल्लति वज़्ज़िल्लति व अऊज़ुबिक अन अज़लिम अव उज़लम। (अबू दाऊद अन अबी हुरैरह स. २१६)

तर्जमा: ऐ अल्लाह मैं फिक्र व गुरबत और तंगी व ज़िल्लत से पनाह चाहता हूँ और ज़ुल्म या मज़लूम होने से हिफाज़त चाहता हूँ।

बाज़ार का वज़ीफा

हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ि अल्लाहु अन्हु फरमाते हैं कि जिस ने बाज़ार में:

لَا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ يُحْيِيْ وَيُمِيْتُ وَهُوَ حَيٌّ لَا يَمُوْتُ بِيَدِهِ الْخَيْرُ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ.

ला इलाह इल्लल्लाहु वहदहू ला शरीक लहू लहुल मुल्कु व लहुल हम्दु युहई व युमीतु व हुव हय्युल्ला यमूतु बियदिहिल ख़ैरु व हुव अला कुल्लि शैइन क़दीर।

तर्जमा : नहीं है कोई माबूद सिवाये अल्लाह के यक्ता है वह उसका कोई शरीक नहीं उसकी है सलतनत उसी की है तारीफ वही ज़िन्दा करता है और मारता है उसी के इख़्तियार में भलाई है। वह हर चीज़ पर कुदरत रखता है। (तिर्मिज़ी, जि. २ स.

१८, इब्ने माजा स. १६१, हाकिम, जि. १ स.८३८)

पढ़ा उसे दस लाख नेकियाँ मिलेंगी। दस लाख गुनाह उसके माफ होंगे। दस लाख उसके दर्जे बलंद होंगे।

मुसनदे हाकिम की रिवायत भी है कि दस लाख उसके दर्जे बलंद होंगे। (जि. १ स. ८३९)

तिर्मिज़ी की एक रिवायत और इब्ने माजा में मज़ीद यह है कि उसके लिए जन्नत में घर बनाया जायेगा। यही ऐसा ज़िक्र है जिस में इस क़द्र सवाब है चुनान्चे बाज़ार यह मुक़ामे ग़फलत है।

एक लाख नेकियाँ

हज़रत उम्मे सलमा रज़ि अल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया जो शख़्स सुबह के वक़्त यह दुआ पढ़ ले उसके लिए एक लाख नेकियाँ लिखी जायेंगी और अगर इंतेक़ाल हो जाये तो उसकी रूह को सब्ज़ परिन्दों की शक्ल में जन्नत में आज़ाद छोड़ दिया जायेगा जहाँ चाहे फिरे।

اَلْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِىْ تَوَاضَعَ كُلُّ شَىْءٍ لِعَظَمَتِهٖ وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِىْ ذَلَّ كُلُّ شَىْءٍ لِعِزَّتِهٖ وَالْحَمْدُلِلّٰهِ الَّذِىْ خَضَعَ كُلُّ شَىْءٍ لِمُلْكِهٖ. (الدعا جلد۲ صفحہ۹۴۴، مجمع الزوائد)

अल लिल्लाहिल्लज़ी तवाज़अ कुल्लु शैइन

लिअज़मतिही वल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ज़ल्ल कुल्लु शैइन लिइज़्ज़तिही वल हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़ज़अ कुल्लु शैइन लिमुल्किही। (अद्दुआ जि.२ स. १४४, मजमउज़्ज़वाइद)

तमाम तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिस की अज़्मत के सामने सारी चीज़ें झुकी हैं और तारीफें उस अल्लाह के लिए हैं जिसकी इज़्ज़त के सामने सारी चीज़ें ज़लील हैं और अल्लाह के लिए है सारी तारीफ जिस को हुकूमत और सलतनत के सामने सब झुके हैं।

शबे क़द्र की दुआ

हज़रत आयशा रज़ि अल्लाहु अन्हा फरमाती हैं कि मैंने आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से पूछा कि ऐ अल्लाह के रसूल अगर मैं शबे क़द्र पा लूँ तो क्या पढ़ूँ आप सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने फरमाया, यह दुआ पढ़ो:

اَللّٰهُمَّ اِنَّكَ عَفُوٌّ تُحِبُّ الْعَفْوَ فَاعْفُ عَنِّىْ.

अल्लाहुम्म इन्नक अफुव्वुन तुहिब्बुल अफव फअफु अन्नी।

तर्जमा : ऐ अल्लाह आप माफ करने वाले हैं आप को माफी पसंद है। हमें माफ फरमा दीजिये। (अज़कार सिन्नववी स. १६३, अमलुल यवम निसई स. २७७, अद्दुआ जि. २ स. १२८, बिसनदिन हसन)

इस्तिस्क़ा की दुआ

اَللّٰهُمَّ اَسْقِنَا غَيْثًا مُغِيْثًا مَرِيْأً مَرِيْعاًغَيْرَضَارٍّ عَاجِلاً غَيْرَ آجِلٍ. (اذکار صفحہ ۱۱۵۰ ابوداود صفحہ ۱۶۵، بسند حسن)

अल्लाहुम्म अस्क़िना ग़ैसन मुग़ीसन मरिअन मरीअन ग़ैर ज़ार्रि आजिलन ग़ैर आजिलिन। (अज़कार स. ११५०, अबू दाऊद स. १६५, बिसनदिन हसन)

तर्जमा : ऐ अल्लाह हम पर ऐसा मींह बरसा जो फरयाद रसी करने वाला हो और अरज़ानी पैदा करने वाला नफा देने वाला हो न कि नुक़सान पहुंचाने वाला हो, जल्दी बरसने वाला हो न कि देर से बरसने वाला हो।

मुनाजात मंजूम (उर्दू)

अज़: जनाब मुहतरम मुहम्मद शम्सुल हुदा कैसी अल फारूकी साहब मरहूम

ऐज़ाज़ी मजिस्ट्रेट देवरिया, यूपी

सज़ा वार हम्द व सना है खुदा
इबादत के लायक़ नहीं दूसरा
जहानों में तेरी खुदाई भी है
तेरे हाथ हाजत रवाई भी है
तेरे हाथ में है सफेद व सियाह
मैं एक बन्दये आसी व रु सियाह
मेरा फह्म व इदराक महदूद हैं
मआसी से सब राह मसदूद हैं
बजुज़ तेरे कोई सहारा नहीं
ज़बाँ को तलब का भी यारा नहीं
इसी वास्ते अर्ज़ है ऐ खुदा
तेरी शाने रहमत का है वास्ता
दुआ जो कभी हज़रत आदम ने की
दुआ जो कभी नूह व मरियम ने की
दुआयें जो करते थे तेरे ख़लील
अता हो वह सब मुझ को रब्बे जलील
दुआयें जो कीं तुझ से याकूब ने
दुआयें जो कीं हज़रत अय्यूब ने
दुआयें हुईं कै़दे शाही में जो
दुआयें हुईं बतने माही में जो

दुआ थी जो क़ल्बे सुलेमान में
दुआयें हुईं जो बयाबान में
दुआ जो कभी तुझ से मूसा ने की
दुआ जो कभी हज़रत ईसा ने की
दुआयें जो हज़रत मुहम्मद ﷺ ने कीं
दुआयें जो आले मुहम्मद ने कीं
अबद तक हर एक लहज़ा रब्बे अनाम
तू भेज उन पे लाखों दुरूद व सलाम
दुआयें जो शाम व सहर में हुईं
दुआयें जो बहर और बर में हुईं
दुआयें जो तेरे अमीरों ने कीं
दुआयें जो तेरे फ़क़ीरों ने कीं
दुआयें जो यतीमों, हक़ीरों ने कीं
दुआयें जो तेरे असीरों ने कीं
दुआयें जो कीं तेरे महबूब ने
दुआयें जो कीं तेरे मजज़ूब ने
दुआयें जो कीं तेरे बीमार ने
तेरे इश्क़ में तेरे सरशार ने
दुआयें जो करते थे सब अंबिया
दुआयें जो करते थे सब असफ़िया
अबू बकर व फ़ारूक़ उसमाँ अली
दुआयें जो करते थे तेरे वली
दुआयें जो कीं हाजी इमदाद ने
जो की उनके मुर्शिद ने, उसताद ने

जो थी हज़रत अशरफ के मामूल में
लिखें जो मुनाजात मक़बूल में
मेरे शह वसी ने मुनाजात में
दुआयें जो कीं ख़ास औक़ात में
मुनाजात हज़रत अब्दुल हलीम
मुझे भी वही बख़्श दे ऐ करीम
दुआयें जो उनकी किया हो क़बूल
हुमाँ अज़ मन ख़स्ता जान व मलूल
बहन भाई ज़ौजा और औलाद को
ख़ुदा बख़्श दे मेरे अजदाद को
चची को चचा को भी माँ बाप को
है आसाँ बहुत बख़्शना आप को
तेरी शान अमजद की है बख़्श दे
जो उम्मत मुहम्मद की है बख़्श दे
ख़ुदाया इस उम्मती की इस्लाह कर
इस उम्मत पे कर दे करम की नज़र
यह हैं नाम लेवा तेरे आज भी
यह रहम व करम के हैं मुहताज भी
मुहम्मद ﷺ पे या रब सलात दवाम
मुहम्मद ﷺ पे या रब हों लाखों सलाम
मेरे क़लब को एक ख़ुदा फेर दे
तेरा ज़िक्र अब ज़िन्दगी घेर दे
ग़िना से मेरे सीना मामूर कर
तू मुहताज की बे कसी दूर कर

बचा शिर्क व कुफ्र और बिदआत से
कि हों बहरहवर तेरी बरकात से
तू चाहे तो हो मेरा आसा हिसाब
न लिखा हो क़िस्मत में मेरी अज़ाब
अमल मेरे हमराह कोई नहीं
कि मुझ सा भी गुमराह कोई नहीं
मासी से भरपूर है ज़िन्दगी
उसी की है अब तुझ से शरमिन्दगी
खुदाया यह सर ले के जाऊँ कहाँ
गुनाहों की गठरी छुपाऊँ कहाँ
इलाही! यह सर दोश पर बार है
गुनाहों का सर पर एक अंबार है
अमल की हयात अपनी मादूम है
खुदा जाने क्या मेरा मक्सूम है
करम कर कि क़अरे मुज़ल्लत में हूँ
खुदाया! मुहम्मद ﷺ की उम्मत में हूँ
मुहम्मद कि साक़ीये कौसर भी हैं
वही शफिअे रोजे़ महशर भी हैं
वह शमसुज़्जुहा और बदरुद्दुजा
वह ख़ैरुल वरा और अलमुल हुदा
वह इज़्ज़े अरब और अैनुन्नईम
अफव्वुन हफिय्युन रऊफुन रहीमुन
उन्हें जब शिफाअत का पाया मिले
मुझे उन के दामन का साया मिले

मुनाजात सय्यदुत्ताइफा हज़रत हाजी इमदादुल्लाह साहब मुहाजिर मक्की रह०

इलाही यह आलम है गुलज़ार तेरा
अजब नक़्शे कुदरत नुमूदार तेरा
जहाँ लुत्फे गुल है वहीं ख़ारे ग़म है
है गुलख़ार में, गुल में है ख़ार तेरा
तू अव्वल तू आख़िर तू ज़ाहिर तू बातिन
तू ही है तूही या कि आसार तेरा
इलाही मैं हूँ बस ख़तावार तेरा
मुझे बख़्श है नाम गफ्फार तेरा
अफू किस से चाहे गुनहगार तेरा
कहो कैसे छूटे गिरिफ्तार तेरा
न कोई है मेरा न मैं हूँ किसी का
तू मेरा मैं आजिज़ दिल अफगार तेरा
इलाही बता छोड़ सरकार तेरी
कहाँ जावे यह बन्दा नाचार तेरा
निगाहे करम टिक भी काफी है तेरी
अगरचे हूँ बन्दा बहुत ख़्वार तेरा
मर्ज़ लादावा की दवा किस से चाहूँ
तू शाफी है मेरा, मैं बीमार तेरा
सिवा तेरे कोई नहीं मेरा या रब
तू मौला है मैं अब्दे बेकार तेरा

किया अपने दर से अगर दूर उसको
किधर जावे आजिज़ यह नाचार तेरा
सदा ख़्वाबे ग़फलत में सोता रहा मैं
न एक दम हुआ आह बेदार तेरा
चला नफ्स व शैतान के अहकाम पर मैं
न माना कोई हुक्म ज़िन्हार तेरा
बुरे काम में उम्र अफसोस खोई
किया मैं न अच्छा कोई कार तेरा
मेरे मुश्किलें हुईं आसान यक दम
जो होवे करम मुझ पे एक बार तेरा
ख़बर लीजियो मेरी उस दम इलाही
खुले जबकि बख़्शिश का बाज़ार तेरा
हों जुलमाते इसयाँ से हसनात रोशन
जो हो महरे रहमत नमूदार तेरा
गुनाह मेरे हद से ज़्यादा हैं या रब
मुझे चाहिये रहम बिसयार तेरा
तेरा नाम शीरीं हलावत है दिल की
हर एक बात से खुश है तकरार तेरा
इलाही रहे वक़्त मरने के जारी
बतस्दीक़े दिल लब पे इक़रार तेरा
इलाही कुबूल हो मुनाजात मेरी
कि रद करना हरगिज़ नहीं कार तेरा
नबीये करीम आल असहाब सब पर

दुरूद व सलाम होवे हर बार तेरा
मेरे पीर उसताद माँ बाप पर भी
इलाही रहे रहमे बिसयार तेरा

मुनाजात ख़्वाजा अज़ीजुल हसन साहब मजज़ूब रह०

ज़ाहिर मुतीअ व बातिन ज़ाकिर मदाम तेरा
ज़िन्दा रहूँ इलाही हो कर तमाम तेरा
बिगड़े निज़ामें दीं को मेरे भी ठीक कर दे
हर दो सिरा में क्या क्या है इंतेज़ाम तेरा
छोड़ूँ न ज़िन्दगी भर पाबंदिये शरीअत
हो मिस्ले ज़ुल्फे दिलबर मरगूब दाम तेरा
बातिन में मेरे या रब बस जाये याद तेरी
हर दम रहे हुज़ूरी, दिल हो मुक़ाम तेरा
दिल को लगी हो धुन लैल व नहार तेरी
मज़कूर हो ज़बाँ पर हर सुबह व शाम तेरा
दुनिया से हो रुख़्सत इस तरह गुलाम तेरा
हो दिल में याद तेरी हो लब पे नाम तेरा
है ख़ूबिये दो आलम एक हस्ने ख़ात्मा पर
सर करना उस मुहिम का अदना है काम तेरा
रोज़े जज़ा न देखूं मैं इंतेक़ाम तेरा
अपने करम से करना मुझ को भी उन में शामिल
जिन पर अज़ाब या रब होगा हराम तेरा

औरों के आगे रुसवा करना न मुझ को मौला
आगे तेरे ख़जल है आसी गुलाम तेरा
देना जगह मुझे भी बंदों में ख़ास अपने
जब मुनअक़िद हो या रब दरबारे आम तेरा
महशर में हो पहुंच कर इस तिशना लब को हासिल
तेरे नबी के हाथों कौसर का जाम तेरा
हो जो जुमला अंबिया पर असहाब व औलिया पर
दायम सलात तेरी पैहम सलाम तेरा

शजरये पीराने चिश्त अहले बहिश्त रह०

हम्द है सब तेरी ज़ाते किबरिया के वास्ते
और दुरूद व नात ख़त्मुल अंबिया के वास्ते
और सब असहाब व आले मुस्तफा के वास्ते
दर बदर फिरती है ख़लक़ते इलतजा के वास्ते
आसरा तेरा है पर मुझ बेनवा के वास्ते
रहम कर मुझ पर इलाही औलिया के वास्ते
क़ल्बे ग़ाफिल को हमारे कर दे ज़ाकिर ऐ ख़ुदा
अपना नूरे मारफत मुझ को आत कर ऐ ख़ुदा
शह मिंबरे मज़हरे लुत्फ व ज़िया के वास्ते
हो हुज़ूरी तेरे दर की जाँ गुज़ीं दिल में मेरे
हिल्म और जूद व सख़ा में जो मुझे कामिल करे
हजरत अब्दुल हलीमे बाख़ुदा के वास्ते
दूर कर दिल से निफाक़ व किब्र व तुग़ियान व गुरूर
शह कर अता इश्क़ व वफा सिद्क़ व सफा इख़्लास व नूर

शह वसीउल्लाह शैख़े बासफा के वास्ते
दीन में मुझ को शर्फ दे हक़ में दे मुझ को उलू
दूर कर दिल से मेरे हर मुनक़सत और हर गुलू
मोलवी अशरफ अली जुल अला के वास्ते
ख़ल्क़ को होती है हज से ज़्यारते ख़ाना नसीब
कर मुझे अपने मदद से हज़े मर्दाना नसीब
हाजीये इम्दादिल्लाह ज़ुल अता के वास्ते
पाक कर जुलमाते इसयाँ से इलाही दिल मेरा
कर मुनव्वर नूरे इरफाँ से इलाही दिल मेरा
हज़रत नूरे मुहम्मद पुर ज़िया के वास्ते
ऐसे मरने पर करूँ कुरबान या रब लाख ईद
अपनी तेग़े इश्क़ से कर ले अगर मुझ को शहीद
हाजी अब्दुर्रहीम अहले ग़ज़ा के वास्ते
कर वह पैदा दर्दे ग़म मेरे दिल अफग़ार में
बार पाँव जिस से ऐ बारी तेरे दरबार में
शैख़ अब्दुल बारी शाहे बेरिया के वास्ते
शिर्क व इसयान व ज़लालत से बचा कर ऐ करीम
कर हिदायत मुझको अब राहे सिराते मुस्तक़ीम
शाहे अब्दुल हादी पीरे हुदा के वास्ते
दीन व दुनिया की तलब इज़्ज़त न सरदारी मुझे
अपने कूचे की अता कर ज़िल्लत व ख़्वारी मुझे
शाहे अज़दुद्दीन अज़ीज़े दूसरा के वास्ते
दे मुझे इश्क़े मुहम्मद और मुहम्मदियों में गिन

हो मुहम्मद ही मुहम्मद विर्द मेरा रात दिन
शह मुहम्मद और मुहम्मदी अतक़िया के वास्ते
हुब्बे हक़ हुब्बे इलाही हुब्बे मौला हुब्बे रब
अलगर्ज़ कर दे मुझे महवे मुहब्बत सब का सब
शह मुहिब्बुल्लाह शैख़ बा सफा के वास्ते
गरचे मैं ग़र्क़े शक़ावत हूँ सआदत से बईद
पर तवक़्क़ो है करे मुझ से शक़ी को तू सईद
बू सईदे असअदे अहले वरा के वास्ते
क़ाले अबतर हाले अबतर सब मेरे अबतर हैं काम
लुत्फ से अपने मेरे कर मुल्क दीं का इंतेज़ाम
शह निज़ामुद्दीन बलख़ी मुक़तदा के वास्ते
है यह सब दीन मेरा और यही सब मुल्क व माल
यानी अपने इश्क़ में कर मुझ को बाजाह व जलाल
शह जलालुद्दीन जलीले असफिया के वास्ते
हुब्बे दुनियावी से कर के पाक मुझ को ऐ हबीब
अपने बाग़े कुद्स की कर सैर तू मेरे नसीब
अब्दे कुद्दूस शहे सिद्क़ व सफा के वास्ते
कर मुअत्तर रूह को बूये मुहम्मद से मेरी
और मुनव्वर चश्म कर रूये मुहम्मद से मेरी
ऐ ख़ुदा शैख़ मुहम्मद रहनुमा के वास्ते
कर अता राहे शरीअत रूवे अहमद से मुझे
और दिखा नूरे हक़ीक़त ख़ूये अहमद से मुझे
शैख़ अहमद आरिफ साहब अता के वास्ते

खोल दे राहे तरीक़त क़ल्ब पर या हक़ मेरे
कर तजल्लियें हक़ीक़त कल्ब पर या हक़ मेरे
अहमद अब्दुल हक़ शह मलिक बक़ा के वास्ते
दीन व दुनिया का नहीं दर कार कुछ जाह व जलाल
एक ज़र्रा दर्द का या हक़ मेरे दिल में तू डाल
शह जलालुद्दीं कबीरूल औलिया के वास्ते
है मुकद्दर ज़ुलमते इसयाँ से मेरा शम्से दीं
कर मुनव्वर नूर से इरफाँ के मेरा शम्स दीं
शैख़ शम्सुद्दीन तुर्क शुम्सुज़्जुहा के वास्ते
ऐ मेरे अल्लाह रख हर वक़्त हर लैल व नहार
इश्क़ में अपने मुझे बेसब्री व बेताब व क़रार
शैख़ अलाउद्दीन साबिर बा रज़ा के वास्ते
दे मलाहत मुझ को हक़ तमकीनिये ईमान से
और हलावत बख़्श गंजे शक्र इरफान से
शह फरीदुद्दीन शकर गंजे बक़ा के वास्ते
इश्क़ की रह में हुये जो औलिया अकसर शहीद
ख़ंजरे तस्लीम से अपने मुझे भी कर शहीद
ख़्वाजा कुतुबुद्दीन मक़तूले वला के वास्ते
बे तेरे है नफ्स व शैताँ दर पये ईमान व दीं
शह मुईनुद्दीं हबीबे किबरिया के वास्ते
या इलाही बख़्श ऐसा बेख़ुदी का मुझ को जाम
जिस से उठ जाये परदये शर्म व हया नंग व नाम
ख़्वाजये उसमान बाशर्म व हया के वास्ते

दूर कर मुझ से ग़मे मौत व हयात मुस्तआर
ज़िंदा कर ज़िक्रे शरीफे हक़ से ऐ परवरदिगार
शह शरीफे ज़िंदनी बा अत्क़िया के वास्ते
आतिशे शौक़ इस क़द्र दिल में मेरे भर ऐ वदूद
हर बुने मू से मेरे निकले तेरी उलफत का दूद
ख़्वाजये मौदूद चिश्ती पारसा के वास्ते
रहम कर मुझ पर तू अब चाहे ज़लालत से निकाल
बख़्श इश्क़ व मारफत का मुझ को या रब मुल्क माल
शाह बु यूसुफ शहे शाहो गदा के वास्ते
मस्त और बेखुद बना बूये मुहम्मद से मुझे
मुहतरम कर ख़्वारिये कूये मुहम्मद से मुझे
बु मुहम्मद मुहतरम शाहे वला के वास्ते
सदक़े अहमद के यह है उम्मीद तेरी ज़ात से
कि बदल कर दे मेरे इसयान को हसनात से
अहमदे अबदाल चिश्ती बा सख़ा के वास्ते
हद से गुज़रा रंजे फ़ुरक़त अब तू ऐ परवरदिगार
कर मेरे शामे ख़िज़ाँ को वसल से रोज़े बहार
शैख़ अबू इसहाक़ शामी खुश अदा के वास्ते
शादी व ग़म से दो आलम की मुझे आज़ाद कर
अपने दर्द व ग़म से यारब दिल को मेरे शाद कर
ख़्वाजये ममशाद अलवी बुल अला के वास्ते
है मेरे तू पास हर दम लेकिन मैं अंधा हूँ पर
बख़्श वह नूरे बसीरत जिस से तू आवे नज़र

बु हबैरा बुसरा पेशवा के वास्ते
ऐश व इशरत से दो आलम के नहीं मतलब मुझे
चश्मे गिरयाँ सीना बिरयाँ कर अता या रब मुझे
शैख़ हुज़ैफा मरअशी शाहे सफा के वास्ते
ने तलब शाही की ने ख़्वाहिश गदाई की मुझे
बख़्श अपने दर तलक ताक़त रिसाई की मुझे
शैख़ इबराहीम अदहम बादशाह के वास्ते
राहज़न मेरे हैं दो क़ज़ाक़ बा गुर्ज़े गिराँ
तू पहुंच फरयाद को मेरी कहीं ऐ मुसतआँ
शह फ़ुज़ैल बिन अयाज़ अहले दुआ के वास्ते
कर मेरे दिल से तू ऐ वाहिद दूई का हर्फ दूर
दिल में और आँखों में भर दे सर बसर वहीदत का नूर
ख़्वाजा अब्दुल वाहिद इब्ने ज़ैद शाह के वास्ते
कर इनायत मुझ को तौफीक़े हसन ऐ जुल मनन
ताकि हों सब काम मेरे तेरी रहमत से हसन
शैख़ हसन बस्री इमामुल औलिया के वास्ते
दूर कर दिल से हिजाबे जहल व ग़फलत मेरे रब
खोल दे दिल में दरे इल्म हक़ीक़त मेरे रब
हादिये आलम अली शेरे ख़ुदा के वास्ते
कुछ नहीं मतलब दो आलम के गुल व गुलज़ार से
कर मुशर्फ मुझ को तू दीदारे पुर अनवार से
सरवरे आलम मुहम्मद मुस्तफा के वास्ते
आ पड़ा दर पर तेरे मैं हर तरफ से हो मलूल

कर तू उन नामों की बरकत से दुआ मेरी क़बूल
या इलाही अपनी ज़ाते किब्रिया के वास्ते
उन बुज़ुर्गों के नईं या रब ग़र्ज़ हर कार में
कर शिफाअत का वसीला अपने तू दरबार में
मुझ ज़लील व ख़्वार व मिसकीन व गदा के वास्ते
इस दूई ने कर दिया है दूर वहदत से मुझे
कर दूई को दूर कर पुरनूर वहदत से मुझे
ता हों सब मेरे अमल ख़ालिस रज़ा के वास्ते
कर दिया इस अक़्ल ने बेअक़्ल व दीवाना मुझे
कर ज़रा इस होश से बेहोश व मसताना मुझे
या हक़ अपने आशिक़ाने बा वफा के वास्ते
चर्ख़े इसयाँ सर पे है ज़ेरे क़दम बहरे अलम
चार सू है फौजे ग़म कर जल्दी अब बहरे करम
कर रिहाई का सबब इस मुब्तिला के वास्ते
अगरचे मैं बदकार व नालायक़ हूँ ऐ शाहे जहाँ
पर तेरे अब छोड़ कर दर को बता जाऊँ कहाँ
कौन है तेरे सिवा मुझ बेनवा के वास्ते
है इबादत का सहारा आबिदों के वास्ते
और तकिया ज़ोहद का है ज़ाहिदों के वास्ते
है असाये आह मुझ बेदस्त व पा के वास्ते
ने फ़क़ीरी चाहता हूँ ने अमीरी की तलब
ने इबादत ने ज़ोहद ने ख़्वाहिशे इल्म व अदब
दर्दे दिल पर चाहिये मुझ को ख़ुदा के वास्ते

अक़्ल व होश व फ़िक्र और नेमाये दुनिया बेशुमार
की अता तूने मुझे पर अब तो ऐ परवरदिगार
बख़्श वह नेमत जो काम आवे सदा के वास्ते
गर्चे आलम में इलाही मैंने सई बिसियार की
पर न कुछ तुहफा मिला लायक़ तेरे दरबार की
जान व दिल लाया वले तुझ पर फिदा के वास्ते
गर्चे यह हदिया मेरे नाक़ाबिले मंज़ूर है
पर जो हो मक़बूल क्या रहमत से तेरी दूर है
कुश्तग़ाने तेग़े तस्लीम व रज़ा के वास्ते
हद से अबतर हो गया है हाल मुझ नाशाद का
कर मेरे इमदादुल्लाह वक़्त है इमदाद का
अपने लुत्फ़ व रहमते बेइन्तिहा के वास्ते

ख़त्म शुद